विजयेश्वर पञ्चाङ्ग

कृष्णं वन्दे जगत्गुरुम्

वन्दे मातरम्

शारदा
गुरुमुखी
कन्नड़
ओड़िया
प्रणवे च दृढ़ा मतिः
सिन्धी
गुजराती
असमिया
स वै "हिन्दू"
मराठी
बांगला
तमिल
मलयालम्
तेलुगु

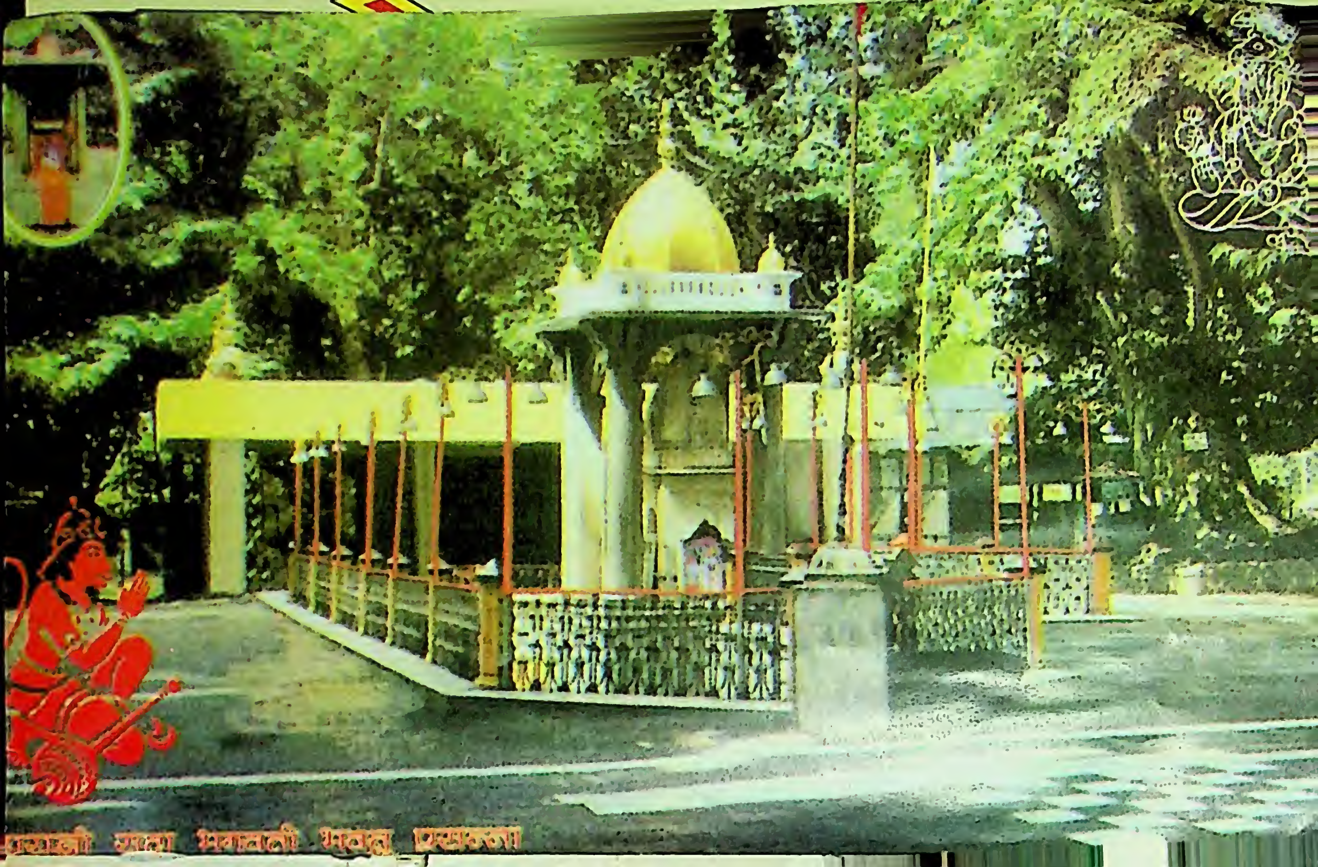
भगवती भवतु प्रसन्ना

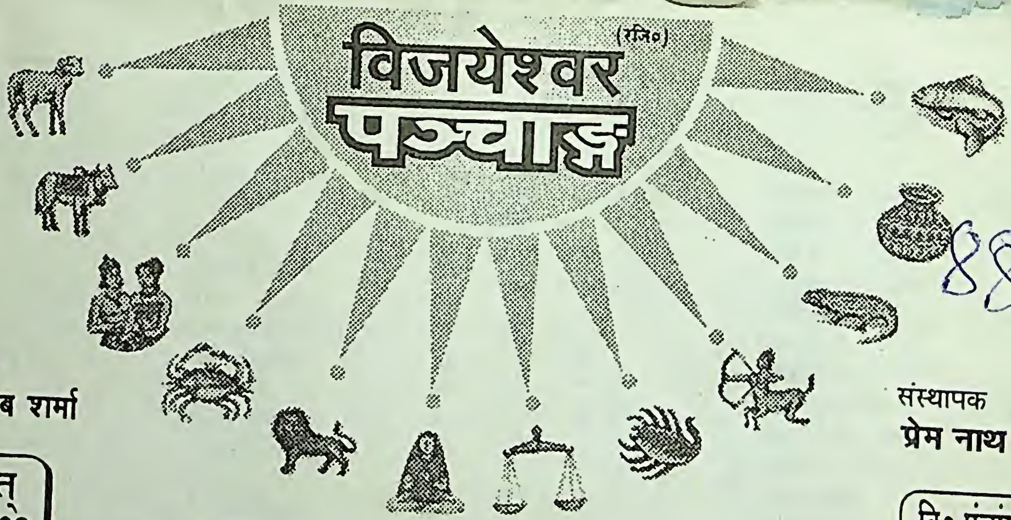

विजयेश्वर पञ्चाङ्ग (रजि०)

885

पञ्चाङ्ग प्रवर्तक
ज्यो० आप्ताब शर्मा

संस्थापक
प्रेम नाथ शास्त्री

ई० सम्वत्
2001-2002

वि० पंचांग सम्वत्
317

सप्तर्षि सम्वत्
5077

काश्मीरी पण्डितों का
विस्थापन सम्वत्
11

विक्रमी सम्वत्
2058

विजयेश्वर पचांग कार्यालय के कार्यकर्ता :
ओंकार नाथ शास्त्री
भूषण लाल ज्योतिषी (एम.ए.)
अवतार कृष्ण ज्योतिषी
विमर्श ज्योतिषी, सुमन ज्योतिषी

Price 30.00

विषय सूची

दो शब्द	3	नारायण स्तुति	65	आरती	103	जातक मिलाप	167
जरा सुनिये	4	गुरु स्तुति	67	भवसर कुस तरि	104	आमदनी खर्च	180
शिव रात्रि	5	विष्णु प्रार्थना	68	पर्व और त्यौहार	106	वारह मासों का परिचय	184
ब्राह्मी विद्या	6	शिव चामर	69	मल मास	112	श्राद्ध कव	188
नित्य नियम विधि	7	गायत्री चालीसा	70	अनमोल वचन	113	ग्रहण विवर्ण	189
गौरी स्तुति	9	गणेश स्तुति	73	गृहस्थियों के नियम	114	निषेध समय	190
शिव स्तुति	14	शिवाय नमः	75	प्रश्नोत्तरी	115	गण्डान्त	190
शिव संकल्प	18	दुर्गा स्तोत्र	77	मांस खाना पाप	119	ग्रह संचार	191
कृष्णं वन्दे	21	शिवाष्टकं	79	तपर्ण	120	जयन्तियां यज्ञ	193
अष्टादश श्लोकी गीता	25	अच्युताष्टकं	83	गोत्र	121	मूल नक्षत्र चक्र	195
सप्तश्लोकी गीता	31	शिव स्तोत्र	84	काश्मीर के तीर्थ	121	आश्लेषा चक्र	196
सप्तश्लोकी दुर्गा	34	रुद्राष्टकं	86	सिद्ध महापुरुष	124	भविष्यवाणी	197
वन्दे महापुरुष	38	दुर्गा स्तुति	88	जगद्धर भट्ट	126	पञ्चांग	203
स्तोत्र	47	सरस्वती वन्दना	89	लल्ल वाक्य	129	मुहूर्त	229
देवी प्रार्थना	55	भज गोविन्दं	90	स्वामी परमानन्द	134	राशि के अनुसार मुहूर्त	261
शंकर प्रार्थना	58	गणेश स्तुति	94	गायत्री मंत्र का महत्व	137	राशिफल	271
लिंगाष्टक	61	आरती	95	धर्मशास्त्र	143	साढसती, ढय्या	304
शिवोहं	63	तेरे पूजन को	96	श्राद्ध संकल्प विधि	151	सारणी	307
विष्णु स्तुति	64	आरती गणेश	97	जन्म दिन पूजा	153	हमारे प्रकाशन	319
		शिव आरती	98	प्रेप्युन	160	हमारी पुस्तकें मिलेगी	320
		आरती लक्ष्मी जी	100	इन्द्राक्षी	165		
		आरती गंगा जी	102				

दो शब्द नये वर्ष का विजयेश्वर पंचांग आप के हाथों में हैं यह इस पंचांग का 317 वां वर्ष है अर्थात् यह 317 वर्षों से काश्मीरी पण्डितों की सेवा करता आ रहा है तथा काश्मीरी पण्डितों ने भी इस को यथायोग्य स्थान दिया यहां तक कि यह काश्मीरी पण्डित समाज का पथ प्रदर्शक बन गया, इस पंचांग ने भी इन 317 वर्षों में बहुत सा उत्थल पुत्थल वातावरण देखा परन्तु काश्मीरी पण्डितों के सहयोग के कारण ही यह आज अपनी चरम सीमा पर पहुंचा है विशेष तौर से स्व० पं० प्रेमनाथ शास्त्री के देहावसान के पश्चात् जिस प्रकार का सहयोग काश्मीरी पण्डितों ने दिया हम उन के आभारी है और आशा करते हैं कि आगे भविष्य में भी वह अपना सहयोग देते रहेंगे। ***"आप का सहयोग - हमारी सेवा"***

शास्त्री जी के कुछ अधूरे कार्यों को अमली रूप देने में हम पूरा प्रयत्न कर रहे हैं पिछले वर्ष हमने **महिम्नापार का हिन्दी रूपान्तरण** (2) **विजयेश्वर नित्य नियम विधि** अर्थात् रोज़ाना नियम पूर्वक पाठ करने की पुस्तक (3) **बहुरूप गर्भ** (मोटे टाईप में) हिन्दी - उर्दू में (4) **श्री शारदासहस्त्र नामावल्ली** (5) **दसवां दिन (दहिम-दोह)** प्रकाशित किया।

'विजयेश्वर पञ्चांग' जो 317 वर्षों से काश्मीरी पण्डित समाज की सेवा करता आया है में जो भी मुहूर्त, पर्व, त्यौहार इत्यादि लिखे गये हैं हर प्रकार से शास्त्रसम्मत, शुद्ध तथा सही हैं।

- ओमकार नाथ शास्त्री

— जरा सुनिये —

1. यदि आप को विजयेश्वर पंचांग के विषय में कुछ पूछना हो
2. यदि आप को ज्योतिष, धर्म शास्त्र, कर्मकाण्ड अथवा किसी प्रकार की कोई समस्या हो
3. यदि आप सम्पादक से मिलना चाहते हो
4. यदि आप शुद्ध तथा सही जन्मपत्री बनवाना चाहते हो

स्वरदूत-555607 पर सम्पर्क करें। (हम आपकी सेवा के लिये हर समय उपलब्ध हैं)

विजयेश्वर पंचांग कार्यालय (रजि०)

अजीत कॉलोनी (एक्स.)
गोल गुजराल, जम्मू

शिव रात्रि अथवा जन्माष्टमी

हर वर्ष एक ही होगी

काश्मीरी पण्डित जो सारस्वत ब्राह्मण हैं तथा जिन को 24 संस्कार किये जाते है एक ही त्यौहार को अलग-अलग मनाते है इस से बढ कर कोई पाप नहीं है परन्तु पाप उन अनाडियों को लगता है जिन को ज्योतिष, धर्मशास्त्र के साथ दूर का वास्ता भी नहीं है वह इन महान पर्वों पर समाचारपत्रों में लेख दे कर जनता को भ्रम में डालते हैं कई महानुभाव कुलरीति का तर्क देते हैं परन्तु कुलरीति तथा धर्म शास्त्र का आपस में कोई सम्बन्ध नहीं है, कई महानुभाव यह तर्क भी देते हैं कि छुट्टी जिस दिन होगी उसी दिन जन्माष्टमी या शिव रात्रि होगी जो कि बिल्कुल गलत है यदि किसी भी महानुभाव को इस विषय में किसी प्रकार का संशय हो तो वह हम से सम्पर्क करके अपने संशय को दूर कर सकता है यदि हम से सम्पर्क करने की हिम्मत नहीं है तो ज्योतिषयों की सभी बुलाकर वह अपने संशय को दूर कर सकता है उस के लिये भी हम हर समय उपलब्ध है।

शास्त्रों में दर्ज है "कि धर्म शास्त्र के विरुद्ध काम करने वाला तथा समाज को दो टुकडों में बांटने वाला अवश्य पाप का भागी होता हैं।"

प्रवन्धक

ब्राह्मी-विद्या

ॐ ॐ ॐ त्रिगुणपुरुष क्षेत्रचर, मोहं भिन्धि, रजस्तमसी भिन्धि, प्राकृत-पाशजालं-सावरणं परिहर, सत्वं ग्रहाण-पुरुषोत्तमोसि, सोम-सूर्यानल, प्रवर, परमधामन् ब्रह्म विष्णुमहेश्वरस्वरूप, सृष्टिस्थिति-संहारकारक, भ्रू-मध्य-निलय, तेजोसि-धामासि-अमृतात्मन् ॐ तत्सत् हँसः, शुचिषत्, वसुरन्त-रिक्षसत् होता वेदिषत्, अतिथि-दुरोणसत्, नृषत्-वरसत्-ऋतसत्- व्योमसत्, अब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं, परंब्रह्म-स्वरूप, सर्वगत सर्वशक्ते, सर्वेश्वर, सर्वेन्द्रिय-ग्रन्थि भेदं कुरु, परमं-पदं परामर्शय परमार्ग ब्रह्म-द्वारं सर, कुमार्ग-जहि-षट्-कोशिकं शरीरं-त्यज, शुद्धोसि बुद्धोसि विमलोसि क्षमस्व स्वपदम्-आस्वादय स्वाहा।

नित्य प्रार्थना विधिः

पूर्व दिशा की ओर मुख करके धूपदीप जला कर शुद्ध आसन पर पद्मासन से बैठकर आदिदेव-भगवान् गणेश का ध्यान करते हुये पढें:-

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतु-र्भुजम्, प्रसन्न वदनं ध्याये, सर्वविघ्नो-पशान्तये।
अभिप्रीतार्थ-सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैर्-अपि, सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै, गणा-धिपतये नमः।
बिभ्रत्-दक्षिण-हस्तपद्म-युगले, दन्ताक्षसूत्रे शुभे,
वामे मोदक-पूर्णपात्र, परशु नागो-पवीती त्रिदृक्।
श्रीमान्-सिंहयुगासनः श्रुतियुगे, शंखौ वहन् मौलिमान्,
दिश्यात्-ईश्वरपुत्र-ईश भगवान्, लम्बोदरः-शर्म-नः।।
सिन्दूर-कुंकुम-हुताशन-विद्रुमार्क, रक्ताब्ज-दाडिम-निभाय-चतु-र्भुजाय।
हेरम्ब-भैरव गणेश्वर-नायकाय, सर्वार्थसिद्धि-फलदाय गणेश्वराय।।
मुख्यं द्वादश-नामानि गणेशस्य महात्मनः। यः पठेत्-तु शिवोक्तानि स लभेत्-सिद्धिम्-उत्तमाम्। प्रथमं वक्रतुण्डं तु, चैकदन्तं द्वितीयकम्, तृतीयं कृष्णपिंगं

तु, चतुर्थं च कपर्दिनम्, लम्बोदरं पंचमं तु, षष्ठं विकटम्-एवच, सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं, धूम्रवर्णं तथाष्टमं, नवमं भालचन्द्रं तु, दशमं तु विनायकम्, एकादशं गणपतिं, द्वादशं मन्त्र-नायकम्, पठते श्रृणुते यस्तु, गणेश-स्तवम्-उत्तमं, भार्यार्थी लभते भार्या, धनार्थी विपुलं धनम्, पुत्रार्थी लभते पुत्रम्, मोक्षार्थी परमं पदम्, इच्छाकामं तु कामार्थी, धर्मार्थी धर्मम्-अक्षयम्।। सुमुखैश्चैक-दन्तश्च, कपिलो गजकर्णकः, लम्बोदरश्च विकटो, विध्नराजो गणाधिपः। धूम्र-केतु-गणाध्यक्षो, भालचन्द्रो गजाननः, द्वादशै-स्तानि-नामानि, गणेशस्य महात्मनः, य पठेत्-श्रृणुयात्-वापि स लभेत् सिद्धिम्-उत्तमाम्। विद्यारम्भे विवाहे च, प्रवेशे निर्गमे तथा संग्रामे संकटे चैव, विघ्नस्तस्य न जायते।।

गीता प्रवचन

(अर्थ व्याख्या सहित काश्मीरी भाषा में)

प्रेम नाथ शास्त्री के जबान से

हरे राम, हरे राम, राम राम, हरे - हरे
हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे - हरे

गौरीस्तुतिः

ॐ लीलारब्ध-स्थापित-लुप्ताखिल-लोकां, लोकातीतै-र्योगिभिर्-अन्तर्-हृदि-मृग्याम्।
बालादित्य-श्रेणि-समान-द्युति-पुञ्जां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थ :—जो जगदम्बा विना किसी परिश्रम के सृष्टि को बनाती है पालन करती है और नाश करती है, योग के अन्तिम अवस्था पर पहुंचे हुये योगी जिस शक्ति रूपी मां को हृदय में ढूंढ़ते हैं, उदित होते हुये असंख्य सूर्यों जैसी प्रकाश वाली, कमल जैसे नेत्रों वाली माता गौरी (योगाग्नि से जलाये हुये शरीर के कारण गौर वर्ण वाली) की मैं स्तुति करता हूँ।

आशा-पाश-क्लेश-विनाशं विदधानां, पादाम्भोज-ध्यान-पराणां पुरुषाणाम्।
ईशीम्-ईशाङ् गार्ध हरां तां तनुमध्यां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थ :—जो भक्त जन उस शक्ति रूपी माता के चरण कमलों के ध्यान में लगे हुए हैं, उन के आशा के

बन्धनों से पैदा हुए कष्टों को नाश करने वाली, शक्तिशाली, शंकर के आधे शरीर पर अधिकार वाली, सूक्ष्म कमर वाली, कमल जैसे नेत्रों वाली, माता गौरी की मैं स्तुति करता हूँ।

प्रत्याहार-ध्यान-समाधि-स्थितिभाजां, नित्यं चित्ते निर्वृत्तिकाष्ठां कलयन्तीम्।
सत्य-ज्ञाना-नन्दमयीं तां तडित्-आभां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थ :—प्रत्याहार, ध्यान तथा समाधि के साधना में लगे हुये भक्तों के चित्त में आनन्द उत्पन्न करने वाली, सत्य ज्ञान तथा आनन्द स्वरूप वाली, बिजली की जैसी प्रकाशवाली, कमल जैसे नेत्रों वाली गौरी माता की मैं स्तुति करता हूँ।

चन्द्रापीडा-नन्दितमन्द-स्मितवक्त्रां, चन्द्रापीडा-लंकृत-लोला-लकभाराम्।
इन्द्रोपेन्द्रा-द्यर्चित पादाम्बुजयुग्मां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थ :—भगवान् शंकर को आनन्दित करने वाले मुस्कराहट से युक्त मुख वाली, भगवान् शंकर के निमित सजाये हुये घूंघट वाले बालों की भार वाली, इन्द्र तथा नारायण जिसके चरणों की पूजा करते हैं उस कमल जैसे नेत्रों वाली गौरी माता की मैं स्तुति करता हूँ।

नाना कारैः शक्ति-कदम्बै-र्भुवनानि, व्याप्य स्वैरं क्रीडति यासौ स्वयमेका।
कलयाणीं तां कल्पलताम्-आनतिभाजां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थ :—भिन्न-भिन्न शक्तियों से भूः, भुवः, स्वः लोकों में व्याप्त होकर जो मां अकेली स्वतंत्र रूप से खेलती

रहती है, जो कल्याण रूप से शरण में आये हुए के लिए कल्पलता है अर्थात् हर कामना को पूर्ण करने वाली है ऐसी ही कमल जैसी नेत्रों वाली मां की मैं स्तुति करता हूँ।

मूलाधारात्-उत्थित-वर्त्ती विधिरन्ध्रं, सौरं-चान्द्रं धाम विहाय ज्वलिताङ्गीम्।
स्थूलां सूक्ष्मां सूक्ष्मतरां ताम्-अभिवन्द्यां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थ :—सूर्य लोक और चन्द्रमा लोक से गुज़र कर मूलाधार से उठी हुई ब्रह्म रन्ध्र तक पहुंची हुई प्रकाश रूप, स्थूल, सूक्ष्म तथा कारण शरीर में व्याप्त, प्रणाम के योग्य, कमलों जैसी नेत्रों वाली माता गौरी की मैं स्तुति करता हूँ।

आदि-क्षान्ताम्-अक्षर मूर्त्या, विलसन्तीं, भूते भूते भूत-कदम्बं प्रसवित्रीम्।
शब्द-ब्रह्मा-नन्द-मयीं ताम्-अभिरामां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थ :—'अ' से लेकर 'क्ष' तक अक्षर रूप में विलास करने वाली, युग-युग में प्राणियों को उत्पन्न करने वाली, शब्द ब्रह्मस्वरूप आनन्दमई उस सुन्दर मां का, जिस के नेत्र कमल के समान हैं मैं स्तुति करता हूँ।

टिप्पणी : पट्दलों में 'अ' से लेकर 'क्ष' तक अक्षर अंकित हैं जिन को मात्रिकायें कहते हैं, योगियों के मत से पट् दलों में अन्तिम मात्रा 'क्ष' है जो आज्ञाचक्र में अंकित है इसी कारण इस श्लोक में 'अ' से 'क्ष' तक का वर्णन है जबकि वर्णमाला में पहला अक्षर 'अ' है और अन्तिम अक्षर 'ह' है। **"शब्द ब्रह्म"** योगी की जब कुण्डलिनी जाग्रत होती है तो उससे **'स्फुट'** अर्थात् शब्द होता है, उसका पहला शब्द **'नाद'** कहलाता है

इसी प्रकार जीव सृष्टि में पहला उत्पन्न होने वाला शब्द 'ब्रह्म' कहलाता है।

यस्याः कुक्षौ लीनम्-अखण्ड़ं, जगत्-अण्डं, भूयो भूयः प्रादुर्-अभूत्-अक्षतमेव।
भर्त्रा सार्धं तां स्फटिकाद्रौ, विहरन्तीं, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थ :—जिस जगदम्बा की गोद में यह सब सृष्टि लय हो जाती है फिर बार-बार किसी खण्डन के बिना फिर से उत्पन्न होती है प्रकाश के केन्द्र ब्रह्मरन्ध्र में सदाशिव के साथ विहार करती हुई अथवा बर्फ से ढ़क्के हुए सफेद हिमालय पर्वत पर विहार करने वाली कमल जैसे नेत्रों वाली गौरी माता की मैं स्तुति करता हूं।

यस्याम्-एतत्प्रोतम्-अशेषं मणिमाला, सूत्रे यत्-वत् क्वापि चरं चाप्यचरं च।
ताम्-अध्यात्म-ज्ञानपदव्या-गमनीयां, गैरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थ :—जिस शक्ति में यह सारी चराचर सृष्टि ऐसे पिरोई हुई है जैसे सूत्र में रत्न गुथे हुये होते हैं उसी शक्ति रूपी मां को जो आध्यात्मज्ञान से जानी जाती है जिस के नेत्र कमलों के समान हैं उसी मां की मैं स्तुति करता हूँ।

नित्यः सत्यो निष्कल एको जगदीशः साक्षी यस्याः सर्गविधौ सहंरणे च।
विश्वत्राण-क्रीडन शीलां शिवपत्नीं, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थ :—जिस महामाया के सृष्टि बनाते समय अथवा संहार करते समय सदा शिव जो नित्य, सत्य, सजातीय इत्यादि तीन भेदों से रहित हैं जो आप के बनाने के काम में केवल साक्षी रूप में रहते हैं, जगत की रक्षा करना

जिन का एक खेल है उसी कमल जैसी नेत्रों वाली गौरी माता की मैं स्तुति करता हूँ।

प्रातः काले भावविशुद्धिं विदधानो, भक्त्या नित्यं जल्पति गौरीदशकं यः।

वाचां सिद्धिं सम्पत्तिम्-उच्चैः शिवभक्तिं, तस्या-वश्यं पर्वत-पुत्री विदधाति।।

अर्थ :—जो प्रातः काल शुद्ध हृदय से युक्त और संकल्प विकल्प रहित होकर भक्ति से नित्य इन दस गौरी माता के श्लोकों का उच्चारण करता है उस भक्त को सिद्धि, ऐश्वर्य, भगवान् शंकर की भक्ति पार्वती माता अवश्य देती है।

सर्वमङ्गल-मङ्गल्ये, शिवे-सर्वार्थ-साधिके शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तु ते।।

सर्वमङ्गल = भक्त की सभी शुभकामनायें सिद्ध करने में, ***मङ्गला*** = सुन्दर अथवा कल्याण कारी, ***शिवे*** = (देवी पुराण में शिवा शब्द मुक्ति का वाचक है) हे मोक्ष देने वाली, ***सर्वार्थसाधिके*** = धर्म, अर्थ काम, मोक्ष देने वाली, ***शरण्ये*** = दुःखों से रक्षा करने वाली, ***त्र्यम्बके*** = अग्नि, सूर्य, चन्द्रमा रूप तीन नेत्र वाली ***गौरि*** = दक्ष के यज्ञ में योग-अग्नि में भस्म बनी हुई, हे गौर वर्णवाली ***नारायणि*** = विष्णु की लक्ष्मी रूपा शक्ति वाली हे माता, ***नमः*** = नमस्कार ***अस्तु*** = हो, ***ते*** = तुम्हें।

अर्थ :—सभी शुभकामनाओं को सिद्ध करने से सुन्दर अथवा कल्याणकारी, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को देने वाली, दुःखों से रक्षा करने वाली अग्नि चन्द्रमा, सूर्य रूप तीन नेत्रों वाली, दक्ष प्रजापति के यज्ञ में योग अग्नि में भस्म बनी हुई अतः गौरवर्णवाली, विष्णु की लक्ष्मी रूपा शक्तिवाली माता तुम्हें नमस्कार हो।

अभिनवगुप्त कृत शिवस्तुतिः

इस स्तुति के बारे में जनश्रुति चलती आई है, "जब अभिनवगुप्त स्वेच्छा से अपना पंचभौतिक शरीर छोड़ने के लिये किसी रम्य एकान्त भूमि की तलाश में जन्मभूमि काश्मीर के घने जंगलों में घूम रहे थे, उस समय उनकी शिष्य मण्डली उन के साथ थी, उसी समय शैवशास्त्रों के रचयिता अभिनवगुप्त ने इस स्तुति की रचना की है शिष्यमण्डली के साथ इस शिवस्तुति के गूँज में ही मनोवाँछित स्थान पर पहुँच कर अभिनवगुप्त पञ्चभौतिक शरीर छोडकर ब्रह्मलीन हुये।

ॐ व्याप्त-चराचर-भाव-विशेषं, चिन्मयम्-एकम्-अनन्तम्-अनादिम्।
भैर-व-नाथम्-अनाथ-शरणयम्, तन्मय-चित्ततया-हृदि वन्दे।। 11

भावार्थः मैं अभिनवगुप्त मन की एकाग्रता से उस शंकर की हृदय में वन्दना करता हूँ, जो शंकर अखिल चराचर सृष्टि में ओत प्रोत है। जो ज्ञान रूप है, अनन्त है। भैरवों का स्वामी है और अनाथों को शरण देने वाला है।

त्वन्मयम्-एतत्-अशेषम्-इदानीं, भाति मम त्वत्-अनुग्रह शक्त्या
त्वं च महेश सदैव ममात्मा, स्वात्ममयं मम तेन समस्तम्।। 2 ।।

अर्थः यह चराचर सृष्टि आप का ही रूप है, ऐसा मुझे आप की अनुग्रहशक्ति से प्रतीत होता है, परन्तु हे शंकर मेरी आत्मा ही आप हैं, अतः यह सारा जगत् मेरा ही रूप है, ऐसा भी मैं अनुभव करता हूँ।

स्वात्मनि-विश्वगते त्वयि नाथे, तेन न संसृति-भीतेः कथास्ति
सत्-स्वपि दुर्धर-दुःख विमोह, त्रास-विधायिषु कर्म-गणेषु।। 3 ।।

अर्थः हे नाथ ! भयंकर दुःख मोह उत्पन्न करने वाले कर्मो के जाल में फंसे हुये, आप के भक्त इस भावना से कि विश्व आप का ही रूप है अतः वे संसार के क्षणिक दुःखों से डरते नहीं हैं, क्योंकि डर अथवा भय तब होता है जब दूसरा हो, जब आप के बिना कोई दूसरा है ही नहीं तो डर कहाँ "भयं द्वितीयात्"

अन्तक ! मां प्रति मा दृशम्-एनां, क्रोध-कराल-तमां विदधीहि
शंकर-सेवन-चिन्तन-धीरो, भीषण-भैरव-शक्ति-मयोस्मि ।। 4 ।।

अर्थः हे यमराज ! क्रोध से कराल भयंकर दृष्टि से मेरी ओर न देख, जबकि मैं हर समय शंकर सेवन

के चिन्तन में लगा रहता हूँ, जिस सेवा चिन्तन से मैं भैरवशक्ति का पुंज बना हूँ अतः आप की यह कराल क्रोधभरी दृष्टि मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकती है।

इत्थम्-उपोढ-भवन्मय-संवित्, दीधिति-दारित-भूरि-तमिस्रः
मृत्यु-यमान्तक कर्म-पिशाचै, र्नाथ ! नमोस्तु न जातु बिभेमि ।। 5 ।।

अर्थः हे शंकर सब कुछ आप का ही रूप है ऐसी संवित् के जागृत होने से मेरा अज्ञानरूपी अन्धकार नष्ट हो चुका है, अतः मैं यमराज के परिवारभूत पिशाच आदि से डरता नहीं हूँ, हे नाथ मेरा आप को बार-बार नमस्कार हो।

प्रोदित-सत्य-विबोध-मरीचि-प्रोक्षित-विश्व-पदार्थ-सतत्वः
भाव-परामृत-निर्भरपूर्णे, त्वय्यहम्-आत्मनि निर्वृतिम्-एमि ।। 6 ।।

अर्थः हे शंकर ! आप के सत्यज्ञानरूप किरणों से विश्व के पदार्थ तथा सभी तत्व सिंचित अथवा हरकत में है। ऐसे ही इस ज्ञान के प्रकट होने पर मैं श्रद्धा के अमृत से परिपूर्ण आप के ही स्वरूप भूत अपने ही आत्मा में परमानन्द का अनुभव करने लगता हूँ।

मानस-गोचरम्-एति, यदैव-क्लेश-तनु-ताप-विधात्री
नाथ ! तदैव मम-त्वत्-अभेद, स्तोत्र-परामृत-वृष्टिर्-उदेति ।। 7 ।।

अर्थः शरीर के ताप को उत्पन्न करने वाली कष्ट की दशा को जब मैं मन से महसूस करने लगता हूँ, उसी समय मेरे अन्दर आप के अनुग्रह से प्राप्त अभेद वृष्टि का उदय होता है, जिस के प्रभाव से मैं किसी प्रकार का कष्ट अनुभव नहीं करता हूँ।

शंकर ! सत्यम्-इदं व्रत, दान-स्नान-तपो-भव-ताप-विनाशि
तावक-शास्त्र-परामृत, चिन्ता-सिध्यति चेतसि-निर्वृति-धारा ।। 8 ।।

अर्थः हे शंकर ! यद्यपि व्रत-दान-तप से संसार के दुःखों का नाश होता है, शैवशास्त्र के चिन्तनमात्र से ही मन में अमृत की धारायें प्रवाहित होने लगती हैं।

नृत्यति गायति हृष्यति गाढं, संवित्-इयं मम भैरवनाथ।
त्वां प्रियं आप्य सुदर्शनम्-एकं, दुर्लभम्-अन्यजनैः समयज्ञम् ।। 9 ।।

अर्थः हे मेरे भैरवनाथ ! मेरी दृढ़ संवित् यज्ञादिकों से अप्राप्य आप के अलौकिक दर्शन प्राप्त करके कभी नाचती है कभी गायन करती है कभी हर्ष का अभिनय करती है।

वसु-रस-पौषे कृष्ण-दशम्यां, अभिनव-गुप्तः स्तवम्-इमम्-अकरोत्
येन विभु-भव-मरु-सन्तापं, शमयति झटिति जनस्य दयालुः ।। 10 ।।

भावार्थः भक्तों पर दयालु आध्यात्मिक बलवाले अभिनवगुप्त ने सम्वत् 68 पौषकृष्णदशमी को यह शंकरस्तुति की है जिस के उच्चारण श्रवण मनन से क्षणमात्र में दयालु शंकर संसार रूपी मरुस्थल के दुःखों का नाश करता है। प्रत्यभिज्ञाहृदय, स्पन्द सन्दोह, बोधविलास पराप्रवेशिका आदि शैवशास्त्रों के रचयिता आचार्य क्षेमराज के गुरु, अद्वैतसिद्धान्त के सर्वश्रेष्ठ व्याख्याता "तन्त्रालोक" जैसे महान् शैवग्रन्थ के निर्माता **अभिनवगुप्त** की उपरिलिखित स्तुति संक्षिप्तभावार्थ सहित पाठको को अर्पित है, यह स्तुति विशेषतया हर एक काश्मीरी पण्डित को कण्ठस्थ करनी चाहिये ताकि हमारी आगामी सन्तति अपने आदरणीय पूर्वज काश्मीर के गौरवभूत आचार्य अभिनवगुप्त को भूल न जायें।

शिवसंकल्प (यजुर्वेद से)

यत्-जाग्रतो-दूरम्-उदेति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरं-गमं ज्योतिषां ज्योतिर्-एकं- तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु ।। 1 ।।

अर्थः जो मन जागते हुये मनुष्य का दूर चला जाता है, और सोते हुये का निकट आ जात है, जो परमात्मा के साक्षात्कार का एकमात्र साधन है, जो ज्ञानेन्द्रियों का प्रकाशक और प्रवर्तक है, मेरा वह मन शिव, (कल्याणकारी) संकल्प वाला हो।

येन कर्मा-ण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यत्-अपूर्वं यक्षम्-अन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिव संकल्पम्-अस्तु।। 2 ।।

अर्थः कर्मयोगी विद्वान् जिस मन के द्वारा हर एक कर्म को यज्ञ के ढाँचे में डालते हैं, जो इन्द्रियों का अध्यक्ष है, जो समस्त प्रजा के हृदय में निवास करता है, वह मेरा मन शिव संकल्प वाला हो।

यत्-प्रज्ञानम्-उत चेतो धृतिश्च यत्-ज्योतिर्-अन्तर्-अमृतं प्रजासु।
यस्मात्-न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पम्-अस्तु।। 3 ।।

अर्थः-जो मन ज्ञान का करण है जो धैर्यरूप है, जो समस्त प्रजा के हृदय में रह कर उन की इन्द्रियों को प्रकाशित करता है, जो मृत्यु होने पर भी अमर रहता है, जिस के बिना कोई भी कर्म किया नहीं जाता है वह मेरा मन शिवसंकल्प वाला हो।

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतम्-अमृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु।। 4 ।।

जिस अमृतरूप मन के द्वारा भूत-भविष्य वर्तमान की सभी वस्तुयें जानी जाती हैं, जिस के द्वारा सात होता वाला शरीर रूपी यज्ञ सम्पन्न होता है मेरा वह मन शिवसंकल्प वाला हो (सात होता:-पांच ज्ञानेन्द्रिय मन और बुद्धि)

यस्मिन्-ऋचः साम यजूँषि, यस्मिन् प्रतिष्ठिता-रथनाभौ-इवाराः।
यस्मिन्-चितं सर्वम्-ओतं प्रजानां तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु।। 5 ।।

अर्थः जिस मन में रथचक्र की नाभि में अरियों के समान वेद प्रतिष्ठित है, जिस में सब पदार्थों से सम्बन्ध रखने वाला सम्पूर्ण ज्ञान ओत प्रोत है, मेरा वह मन शिवसंकल्प वाला हो।

सुषा-रथिर्-अश्वान्-इव, यन्मनुष्यान् नेनीयते-अभीशुभिर्-वाजिनःइव।
हृत्प्रतिष्ठं यत्-अजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु।। 6 ।।

अर्थः योग्य सारथि जैसे घोड़ों का संचालन करता है और लगाम के द्वारा घोडों का नियन्त्रण करता है, वैसे ही प्राणियों का संचालन तथा नियन्त्रण करने वाला हृदय में रहने वाला कभी बूढा-न होने वाला, अधिक तेज भागने वाला मेरा मन शिव संकल्प वाला हो।

"कृष्णं वन्देजगत्-गुरुम्"

भगवत् गीता के आरम्भ में भगवान् कृष्ण ने यद्यपि कोई मंगल श्लोक कहा नहीं है परन्तु निम्नलिखित 9 श्लोक किसी कृष्ण भक्त ने बनाए हैं। किसी-किसी भगवद्गीता में यह 9 श्लोक छपे हुए मिलते हैं परन्तु कश्मीरी पण्डित परम्परा से प्रायः यह श्लोक गीता के आरम्भ में पढ़ते हैं इसी कारण से इस वर्ष हमने यह श्लोक अर्थ सहित जन्त्री के पाठ प्रकरण में जोड़े हैं।

ॐ पार्थाय प्रतिबोधितां भगवता नारायणेन स्वयं
व्यासेन ग्रथितां पुराण-मुनिना मध्ये महाभारतम्।
अद्वैतामृत-वर्षिणीं भगवतीम्-अष्टादशा-ध्यायिनीम्
अम्बत्वाम्-अनुसन्दधामि भगवत्-गीते भव-द्वेषिणीम्।। 1।।

अर्थ—भगवान् कृष्ण से अर्जुन को समझाई गई, वेदव्यास से महाभारत में ग्रथित की गई, अद्वैत-अमृत की वर्षा करनेवाली, अठारह अध्याय वाली, ऐसी ही माता भगवद्गीते, तुम्हारा मैं मन से ध्यान करता हूं।

नमोस्तु ते व्यास विशालबुद्धे फुल्लारविंदा-यतपत्र-नेत्र।
येन त्वया भारत-तैल-पूर्णः प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीपः।। 2।।

अर्थ—हे विशाल बुद्धि वाले, हे प्रफुल्लित कमल नेत्र वाले वेदव्यास जी ! आप ने महाभारतरूप तैल से पूर्ण ज्ञानमय दीपक जलाया, ऐसे आपको नमस्कार हो।

प्रपन्न-पारिजाताय तोत्र-वेत्रैक-पाणये।

ज्ञानमुद्राय कृष्णाय गीतामृत-दुहे नमः।। 3।।

अर्थ—शरणागत के कल्पवृक्ष, हाथ में चाबुक लिए हुए, ज्ञान मुद्रा युक्त (ज्ञानरूप) गीता अमृत के दुहने वाले भगवान् कृष्ण को नमस्कार हो।

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।

पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्।। 4।।

अर्थ—सभी उपनिषद् मानिए गौ हैं, इस उपनिषद रूपी गौवों को दुहने वाला गोपाल नन्दन भगवान् कृष्ण हैं, अर्जुन बछड़ा है, जो स्वयं दूध गाय के स्तनों से पीकर अपना पेट भरता है और दूसरों के लिए भी निकलवाता है, जिन गौओं से दूध निकलवाता है वही गीता अमृत है, जिस अमृत को पीने वाले बुद्धिमान पुरुष हैं।

वसुदेव सुतं देवं कंसचाणूर-मर्दनम्।

देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगत्-गुरुम्।। 5।।

अर्थ—वसुदेव के पुत्र, कंस और चाणूर को मारने वाले, देवकी को परमानन्द देने वाले, जगत् गुरु भगवान् कृष्ण को मैं प्रणाम करता हूं।

भीष्मद्रोणतटा जयत्‌रथ-जला गान्धार-नीलोत्पला
शल्य-ग्राहवती कृपेण वहनी कर्णेन वेलाकुला।
अश्वत्थाम-विकर्ण-घोर-मकरा दुर्योधना-वर्तिनी
सोत्तीर्णा खलुपाण्डवैः रणनदी कैवर्तके केशवः।। 6।।

अर्थ—जिस युद्धरूपी नदी के भीष्म और द्रोण दोनों तट हैं, जिसमें जयत् रथ जल हैं, गान्धार नील कमल हैं, शल्य ग्रह (ग्रसने वाला) जलचर है, कृप प्रवाह है, कर्ण लहरे हैं, अश्वत्थामा और विकर्ण घोरमकर हैं, दुर्योधन भंवर है, ऐसी युद्धरूपी नदी निश्चय करके पाण्डवों से मल्लाह भगवान् कृष्ण द्वारा उत्तीर्ण की गई है।

पाराशर्यवचः सरोजं-अमलं, गीतार्थ-गन्धोत्कटं
नानाख्यानक-केशरं-हरिकथा, सम्बोधना बोधितम्।
लोके सज्जन-षट्पदैर्-अहर्-अहः पेपीयमानं मुदा
भूयात्-भारत-पंकजं, कलिमल-प्रध्वंसिनः श्रेयसे।। 7।।

अर्थ—पाराशर्य (वेदव्यास) के वचनरूपी सर में उत्पन्न हुए निर्मल गीता-अर्थ रूप उत्कट गन्धवाला, नाना प्रकार के प्रसंगरूप सुगन्धित फूलवाला, हरिकथा (ज्ञान की कथाओं) से जो प्रफुलित है, संसार में सत्पुरुषरूप भ्रमरों से आनन्दपूर्वक प्रतिदिन पिया जाने वाला, कलियुग के पापों का नाश करने वाला ऐसा यह महाभारत रूप कमल हमारा कल्याण करे।

मूकं करोति वाचालं पंङ्गुं लङ्घयते गिरिं।

यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्द-माधवम्।। 8।।

अर्थ—मैं उस परमानन्द लक्ष्मीपति को नमस्कार करता हूं, जिनकी कृपा गूंगे को वाचाल और लंगडे को पर्वत उलंघन करनेवाला बना देता है।

यं ब्रह्मा-वरुणेन्द्र-रुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै,

वेंदैः सांग, पद, क्रमो-पनिषदै-र्गायन्ति यं सामगाः।

ध्याना-वस्थित तत्-गतेन मनसा, पश्यन्ति यं योगिनो

यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः।। 9।।

अर्थ—ब्रह्मा, इन्द्र, रुद्र और वायु देवता जिस परमात्मा की दिव्य स्तोत्रों से स्तुति करते हैं, सामवेद के गाने वाले (उद्गाता) अङ्ग; पद, क्रम, उपनिषदों सहित वेदों से जिसको गाते हैं, योगी लोग ध्यान में स्थित तद्गत हुए मन से जिनका दर्शन करते हैं, देवता और असुरगण (कोई भी) जिनके अन्त को नहीं जानते उन परमदेव भगवान् कृष्ण को मेरा नमस्कार हो।

अष्टादशश्लोकी गीता

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै-
वेंदैः साँगपद-क्रमोप-निषदै-र्गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थित-तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरा-सुर-गणा देवाय तस्मै नमः।।

अर्थ-जिनका ब्रह्मा, वरुण, इन्द्र, और मरुद्गण दिव्य स्तोत्रों द्वारा स्तुति करते हैं, सामवेदके गानेवाले अंग, पद, क्रम और उपनिषदों के सहित वेदों द्वारा जिनका गान करते हैं, योगीजन ध्यान में स्थित तद्गत हुए मनसे जिनका दर्शन करते हैं, देवता और असुरगण (कोई भी) जिनके अन्तको नहीं जानते, उन (परमपुरुष नारायण) देव के लिए मेरा नमस्कार है।

निमित्तानि च पश्यामि-विपरीतानि केशव
न च श्रेयो-नुपश्यामि हत्वा स्वजनम्-आहवे।। 1 ।।

अर्थ- अर्जुन भगवान् से कहता है, कि अब मुझे सब लक्षण उल्टे दिखाई देते हैं, ऐसे मुझे प्रतीत नहीं होता है कि अपने सम्बन्धियों को युद्ध में मारकर कुछ कल्याण हो सकेगा।अध्याय 1 श्लोक 31

योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय।
सिद्ध्य-सिद्ध-योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।। 2 ।।

अर्थ-फल की आशा छोड़ कर सिद्धि हो या न हो फिर भी अपने मन की वृत्ति समान रखनी चाहिये, इस प्रकार की चित्त की समवृत्ति को योग कहते हैं, इस योग से युक्त होकर मनुष्य अपने सब कर्म करे।

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्।
इद्रियार्थान्-विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते।। 3 ।।

अर्थ-जो हठ से कर्मेन्द्रियों को रोकता है परन्तु अन्दर ही अन्दर मन से विषयों का चिन्तन करता है उस मूर्ख को मिथ्याचारी कहते हैं। अध्याय 3 श्लोक 6

श्रद्धावान्-लभते ज्ञानं तत्-परः संयतेन्द्रियः
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिम्-अचिरेणाधिगच्छति।। 4 ।।

अर्थ-ईश्वर गुरु और धर्म शास्त्रों में श्रद्धा रखने वाला मनुष्य ज्ञान को प्राप्त करता है और ज्ञान होने

पर उसको शान्ति प्राप्त होती है। अध्याय 4 श्लोक 39

यतेन्द्रिय मनो बुद्धि-र्मुनि-मोक्ष-परायणः

विगतेच्छा-भय क्रोधो-यः सदा मुक्त एव सः।। 5 ।।

अर्थ-जो मनुष्य इन्द्रियों, मन और बुद्धि को वश में रखता है और केवल ब्रह्मशान्ति प्राप्त करने में लगा रहता है वह सदा मुक्त है। अध्याय 5 श्लोक 28

युक्ताहार-विहारस्य युक्त-चेष्टस्य कुर्मसु

युक्त-स्वप्ना-व बोधस्य योगो भवति दुःखहा।। 6 ।।

अर्थ- यथायोग्य आहार विहार करने वाला कर्मो को यथायोग्य ढंग से करने वाला यथायोग्य निद्रा करने और योग्य समय पर उठने वाले साधक का योग दुःख को दूर करने वाला होता है।

अध्याय 6श्लोक 17

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया,

मामेव ये प्रपद्यन्ते मायाम्-एतां-तरन्ति-ते।। 7 ।।

अर्थ-परमात्मा की सत्वरज तमोगुणमयी माया को पार करना कठिन है जो मुझ ईश्वर को प्राप्त करते

हैं वह इस माया से पार हो जाते हैं। अध्याय 7 श्लोक 14

अग्निर्-ज्योतिर्-अहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम्
तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः।। 8 ।।

अर्थ-उत्तरायण काल के छः मास के शुक्ल पक्ष में दिन के प्रकाश में प्रदीप्त अग्नि के समय जो ब्रह्मज्ञानी इस शरीर को छोड़कर चले जाते हैं वे ब्रह्म को प्राप्त होते हैं। अध्याय 8 श्लेक 24

अपि चेत्-सुदुराचारो भजते माम्-अनन्यभाक्
साधुर्-एव स मन्तव्यः सम्यक्-व्यव-सितोहि-सः।

अर्थ- बड़े से बड़ा दुराचारी यदि अनन्यभाव से मेरा भजन करेगा तो यह समझ लेना चाहिये कि वह साधु हो जायेगा। अध्याय 9 श्लोक 30

यो माम्-अजम्-अनादिम्-च वेत्ति-लोक-महेश्वरम्
असंमूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते।।

अर्थ-जो मुझे जन्म रहित, आदि रहित सब लोकों का स्वामी समझता है वह संसार में अज्ञान से छूटकर यानी ज्ञानी बनकर सब पापों से मुक्त होता है। अध्याय 10 श्लोक 3

मत्कर्म कृत्-मत्परमो मत्-भक्तः संघ-वर्जितः
निर्वैरः, सर्व-भूतेषु यः स मामेति पाण्डव।।

अर्थ-हे अर्जुन जो मेरे लिये कर्म करता है, जो मुझे परमश्रेष्ठ मानता है जो भोगों का संग छोड़ता है और सब प्राणियों के विषय में वैर रहित होता है मेरा वही भक्त मुझे प्राप्त करता है।

अध्याय 11 श्लोक 55

श्रेयो हि ज्ञानम्-अभ्यासात्, ज्ञानात्-ध्यानं विशिष्यते,
ध्यानात्-कर्म-पलत्याग, स्त्यागात्-शान्तिर्-अनन्तरम्।।

अर्थ-अभ्यास योग से ज्ञान योग श्रेष्ठ है, ज्ञान योग से ध्यान योग की विशेषता अधिक है, ध्यान योग से कर्मफल का त्याग उत्तम है, कर्मफल का त्याग करने से शीघ्र ही शान्ति मिलती है।

अध्याय 12 श्लोक 12

क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्व-क्षेत्रेषु भारत
क्षेत्र-क्षेत्र ज्ञयोर्ज्ञानं-तत्-यत्-ज्ञानं मतं मम।।

अर्थ-हे भारत! सब क्षेत्र में रहने वाले मुझे तू क्षेत्रज्ञ समझ जो क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ का ज्ञान है वही मेरा ज्ञान है।

अध्याय 13 श्लोक 2

मां च यो -व्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते,
स गुणान्-सम्-अतीत्य-तान्-ब्रह्म्-भूयाय कल्पते।।

अर्थ-जो एक निष्ठ भक्ति भाव से मेरी सेवा करता है वह इन गुणों को लांघ कर ब्रह्म के महत्व को प्राप्त करने योग्य बन जाता है।

अध्याय 14 श्लोक 26

निर्मान-मोहा जितसंग-दोषा अध्यात्म-नित्या विनि-वृत्तकामा:
द्वन्द्वै-र्विमुक्ता सुख दुःख संज्ञैर्गच्छन्त्य मूढा:पदम्-अव्ययं-तत्।।

अर्थ-जो अभिमान रहित, मोह रहित, अनासक्त आत्मनिष्ठ भोगवासना रहित, द्वन्द्वभाव से दूर और ज्ञानी है, वह उस अविनाशी परम पद को प्राप्त होते हैं।

अध्याय 15 श्लोक 5

यः शास्त्र-विधिम्-उत्सृज्य वर्तते काम-कारतः।
न स सिद्धिम्-अवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्।।

अर्थ- जो शास्त्र विधि को त्याग कर मनमाना आचरण करता है उसे न सिद्धि मिलती है न सुख मिलता है और न श्रेष्ठ गति ही प्राप्त होती है।

अध्याय 16 श्लोक 23

मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौनम्-आत्म-विनिग्रहः।
भाव-संशुद्धिर्-इत्येतत्-तपो मानसम् उच्यते।।

अर्थ- मन को प्रसन्न रखना, शान्ति का अवलम्बन करना, मौन धारण करना, संयम करना और आत्मशुद्धि करना मानसिक तप है। अध्याय 17 श्लोक 16

सर्व-धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्व-पापेभ्यो मोक्ष-यिष्यामि मा-शुचः।।

अर्थ-सब धर्मों को छोड़कर मुझ अकेले (ईश्वर) की शरण आये मैं तुम्हें सब पापों से मुक्त करूँगा, तू शोक मत कर। अध्याय 18 श्लोक 66

सप्तश्लोकी गीता

ॐ इत्येकाक्षंर ब्रह्म, व्याहरन्-माम्-अनुस्मरन्
यः प्रयाति त्यजन् देहं, स याति परमां गतिम्।.

अर्थ- योग धारण में स्थित ओंकार रूपी एकाक्षर ब्रह्म का उच्चारण करता हुआ और मेरा (परमेश्वर) का चिन्तन्र करता हुआ जो साधक देह त्यागता है वह नि:सनदेह श्रेष्ठगति को प्राप्त होता है।

अध्याय 8 श्लोक 13

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या। जगत्-प्रहृष्य-त्यनुरज्यते च।।

रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति। सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघा: 1. 2।।

अर्थ-हे हृषीकेश यह ठीक ही है आपका कीर्तन करने से जगत् प्रसन्न होता है और उसमें उसकी प्रीति होती है, राक्षस तुम से डर कर दिशाओं में भाग जाते हैं और सभी पुरुषों के समुदाय आपको प्रणाम करते हैं।

अध्याय 11 श्लोक 36

सर्वत: पाणिपादं तत्-सर्वतोक्षि-शिरोमुखम्।

सर्वत: श्रुतिमत्-लोके सर्वम्-आवृत्य-तिष्ठति।। 3 ।।

अर्थ-इस लोक में उसके सर्वत्र हाथ, पांव सब ओर आँख, सिर और मुख और सब ओर कान हैं वह सर्वत्र व्याप कर रह रहा है।

अध्याय 13 श्लोक 13

कविं पुराणम्-अनुशासितारम्। अणोरणीयांसम्-अनु-स्मरेत्-यः।।
सर्वस्य धातारम्-अचिन्त्यरूपम्। आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्।। 4 ।।

अर्थ- जो अन्तकाल में सर्वज्ञ पुरातन नियन्ता अणु से भी सूक्ष्म, सब के धारण कर्ता अचिन्त्य स्वरूप अन्धकार से परे रहने वाले सूर्य के समान तेजस्वी ईश्वर का स्मरण करता है-वह उसी दिव्य परमात्मा को प्राप्त होता है। अध्याय 8 श्लोक 9

उर्ध्वमूलम्-अधः-शाखम्-अश्व-त्थं प्राहुर्-अव्ययम्।
छन्दांसि-यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्।। 5 ।।

अर्थ- संसार का वृक्ष अनादि अनन्त चारों ओर फैला है, इसके ज्ञान रूपी पत्ते सबको शीतल छाया देने वाले हैं, शाखायें ऊपर नीचे फैली है, इनमें सत्त्व-रज तम गुणों का रस भरपूर भरा है, शब्द स्पर्श रूप रस गंध विषयों के सुखदायी कोमल अंकुर लगे हैं और इनकी कर्मों से सम्बन्ध जोड़ने वाली जड़े चारों ओर फैली हुई है। अध्याय 15 श्लोक 1

सर्वस्य चाहं हृदि संनिविष्टो मत्तः स्मृतिर्-ज्ञानम्-अपोहनं च।
वेदैश्च सर्वैर्-अहमेव वेद्यो वेदान्त-कृत्-वेद विदेव-चाहम्।। 6।।

अर्थ- मैं ईश्वर सबके हृदयों में रहता हूँ, मुझसे ही सब को स्मरण, ज्ञान विस्मरण और अज्ञान होता है मैं ही सब वेदों के द्वारा जानने योग्य हूं और मैं ही वेदान्त शास्त्र का निर्माण करने वाला और वेद का ज्ञाता हूं।

अध्याय 15 श्लोक 15

मन्मना-भव-मत्-भक्तो मत्-याजी मां नमस्कुरु।
मामे-वैष्यसि युक्त्वैवम्-आत्मानं मत्-परायणः।। 7 ।।

अर्थ- मुझमें मन लगा, मेरा भक्त बन, मेरे निमित्त भजन् कर, मुझे नमस्कार कर, इस तरह मुझमें परायण होकर मेरे साथ आत्मा का योग करने से तू मुझे प्राप्त कर लेगा।

अध्याय 9 श्लोक 34

सप्तश्लोकी दुर्गा

ज्ञानि-नाम्-अपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।
बलात्-आकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।। 1 ।।

अर्थः भगवती माहमाया देवी ज्ञानियों के भी चित को बलपूर्वक खींच कर मोह में डाल देती है।।1।।

अध्याय 1 श्लोक 55

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-अशेष-जन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिम्-अतीव शुभां ददासि।
दारि-द्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वत्-अन्या
सर्वोप-कार-करणाय दयार्द्र-चित्ता।। 2 ।।

अर्थः माँ दुर्गे! आप स्मरण करने पर सब प्राणियों का भय हर लेती है, और स्वस्थ पुरुषों द्वारा चिन्तन करने पर उन्हें परम कल्याण रूपी बुद्धि देती है, दुःख दरिद्रता हरनेवाली देवी आप के बिना कौन है जिस का चित्त सब का उपकार करने के लिये सदा ही दयार्द्र रहता है।।2।। अध्याय 4 श्लोक 17

सर्व-मंगल-मंगल्ये शिवे सर्वार्थ-साधिके,
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते।। 3 ।।

अर्थः हे माँ! तुम सब प्रकार का मंगल करने वाली मंगलमयी हो, कल्यांण करने वाली शिवा हो, सब पुरुषार्थो को सिद्ध करने वाली, शरणागत-वत्सला, तीन नेत्रों वाली तथा सब की पीड़ा दूर करने वाली, नारायणी देवी, तुम्हें नमस्कार है। अध्याय 11 श्लोक 10

शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायणे
सर्वस्यार्ति-हरे देवि नारायणि नमोस्तु ते।। 4 ।।

अर्थः शरण में आये हुये, दीनों एवं पीड़ितों की रक्षा में लगी रहने वाली, तथा सब की पीड़ा दूर करने वाली, नारायणी देवी तुम्हें नमस्कार है। अध्याय 11 श्लोक 12

सर्व-स्वरूपे सर्वेशे सर्व-शक्ति-समन्विते,
भयेभ्यस्त्राहि-नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तुते।। 5 ।।

अर्थः सर्वरूपा, सर्वेश्वरी तथा सब प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न, दिव्यरूपा दुर्गे सब भयों से हमारी रक्षा करो, तुम्हें नमस्कार है। अध्याय 11 श्लोक 24

रोगान्-अशेषान्-अपहंसि तुष्टा
रुष्टा-तु कामान् सकलान्-अभीष्टान्
त्वाम्-आश्रितानां न विपत्-नराणां
त्वाम्-आश्रिता ह्या श्रयतां प्रयान्ति।। 6 ।।

अर्थः हे देवी ! तुम प्रसन्न होने पर सब रोगों को नष्ट करने वाली, और कुपित होने पर मनोवांछित सभी कामनाओं का नाश कर देती हो। जो लोग तुम्हारी शरण में जा चुके हैं, उन पर विपत्ति आती ही नहीं है, तुम्हारी शरण में गये हुये मनुष्य दूसरों को शरण देने वाले हो जाते है।।6।।

अध्याय 11 श्लोक 29

सर्वा-बाधा-प्रशमनं त्रैलोक्य-स्याखिलेश्वरि
एवम्-एव त्वया कार्यम्-अस्मत्-वैरि-विनाशनम्।। 7 ।।

अर्थः हे सर्वेश्वरि ! जिस प्रकार तुम ने मधुकैटभ का नाश किया तुम उसी प्रकार तीनों लोकों की सभी बाधाओं को शान्त करो और हमारे शत्रुओं का नाश करती रहो। अध्याय 11 श्लोक 29

इति सप्तश्लोकी दुर्गा समाप्ता

* *

भगवान् कृष्ण कहते हैं

जो व्यक्ति श्रद्धा से गीता संवाद (गीता प्रवचन) सिर्फ सुनेगा ही, वह मुक्त होकर, पुण्यात्मा जहां पहुंचते हैं उन शुभलोकों को वह भी पावेगा।

अध्याय 18 श्लोक 71

वन्दे महापुरुष ते चरणारबिन्दम्

ध्येयं सदा परिभवघ्नं-अभीष्टदोहं
तीर्थास्पदं शिव-विरिञ्चि-नुतं शरण्यम्।
भृत्यार्तिहं प्रणतपाल ! भवाब्धिपोतं
वन्दे-महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।। 1।।

अन्वय-शब्दार्थ

महापुरुष = हे भगवान् कृष्ण, **प्रणतपाल !** = प्रणाम करने वालों की रक्षा करने वाले, **ते** = आपके, **चरणारबिन्दं** = चरण कमल को, **ध्येयं** = जो ध्यान करने के योग है, **सदा** = हर समय, **परिभवघ्नं** = अपमानादि दु:खों का नाश करने वाला, **अभीष्ट दोहं** = इछित पदार्थों का देने वाला, **तीर्थास्पदं** = तीर्थों का स्थान, **शिवविरिञ्चिनुतं** = शंकर और ब्रह्मा जिस को झुकते हैं, **शरण्यं** = रक्षा करने वाला, **भृत्यार्तिहं** = दासों अथवा भक्तों के दु:खों का नाश करने वाला, भवाब्धिपोतं= संसार सागर से पार करने वाला जहाज़।।

अर्थ :–हे महापुरुष-हे प्रणतपाल भगवान कृष्ण! मैं आपके उस चरण कमल को प्रणाम करता हूँ, जो चरण कमल ध्यान करने योग्य हैं, जो दु:खों का नाश करने वाला है, जो इच्छित पदार्थों का देने वाला है, जिस में सभी तीर्थ टिके हुये हैं, शंकर और ब्रह्मा जिस को झुकते हैं, जो रक्षा करने वाला हैं, जो भक्तों के दु:खों का नाश करने वाला है, जो भवसागर से पार करने के लिए जहाज़ है।

त्यक्त्वा सुदुस्त्यज–सुरेप्सित–राज्यलक्ष्मीं
धर्मिष्ठ–आर्य–वचसा यत्–अगात्–अरण्यम्।
मायामृगं दयित–येप्सितं–अनुधावत्
वन्दे महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।।2।।

धर्मिष्ट = धर्मात्मा, आर्य = श्रेष्ठ राजा दशरथ के कहने से, सुदुस्त्यज = जिस का त्याग करना बहुत ही कठिन है, सुरेप्सित = देवता जिस को चाहते हैं, ऐसी राज्यलक्ष्मीं = राज्यपाठ को, त्यवत्वा = छोड कर, यत् = जो (चरणकमल) अरण्यं = जंगल को, अगात् = गया, मायामृगं = माया शरीरधारी, मृगं = हिरण को, दयितयेप्सितं = सीता से चाहा हुआ, अनुधावत् = पीछे दौड़ पड़ा।

अर्थ–धर्मात्मा राजा दशरथ के कहने से (ऐसी राज्य लक्ष्मी) ऐसा राजपाठ जिस का त्याग करना बहुत ही कठिन

है, जिस को देवता चाहते हैं-ऐसे राज्यपाठ को छोडकर (ठुकराकर) जो चरणार-बिन्द जंगल में गया, सीता से चाहे हुये, माया शरीरधारी मृग के पीछे जो चरण कमल दौड पडा, ऐसे ही प्रशंसनीय कार्य रामावतार में जिस चरणकमल ने किया था उसको मैं नमस्कार करता हूँ।

श्रीमत्-सरोरुह-यवाँकुश-चक्रचाप
मत्स्या-ङ्कितं नव-विल्लोहित-पल्लवाभम्
लक्ष्म्यालयं परममंगलं-आत्मरूपं
वन्दे महापुरुष! ते-चरणारबिन्दम्।। 3।।

अन्वय-शब्दार्थ

श्रीमत् = *शोभायमान,* ***सरोरुह*** = *कमल,* ***यव*** = *जव,* ***अंकुश*** = *लोहे की वह छड़ी जिस से हाथी हाँका जाता है (काश्मीरी में टोंग)* ***चक्र*** = *गोलाकार चिह्न,* ***चाप***= *धनुष,* ***मत्स्य*** = *मछली (इन सामुद्रिक चिह्नों से)* ***अंकितं*** = *निशानवाला,* ***नव*** = *नये,* ***विल्लोहित*** = *लाल,* ***पल्लव*** = *बाल पत्र की,* ***आभम्*** = *शोभावाला,* ***लक्ष्म्यालयं*** = *लक्ष्मी का घर,* ***परमंगलं*** = *अधिक मंगलदायक,* ***आत्मरूपं*** = *परमात्मा का ही प्रत्यक्षरूप,* ***ते*** = *आपके,* ***चरणारबिन्दं*** = *चरण कमल को,* ***वन्दे*** = *प्रणाम करता हूँ।*

अर्थ–मैं आप के उस चरण कमल को प्रणाम करता हूँ, जो शोभायुक्त है, जो चरणारबिन्द कमल, जव, अंकुश, चक्र, धनु, मछली इन सामुद्रिक राज योग वाले चिह्नों से युक्त हैं जो लाल बालपत्र की जैसा शोभावाला है जो लक्ष्मी का घर है, जो परम-मंगलदायक है, जो परमात्मा का ही प्रत्यक्षरूप है।

वृन्दावनान्तरं–अगात्–अनुगोकुलानां
संचार्य सर्वपशुभिः स्वविवृद्ध–कामी।
संचिन्तयत्–अगगुरो–र्मृगपक्षिणां यत्
वन्दे महापुरुष! ते चरणार बिन्दम्।। 4।।

अन्वय-शब्दार्थ

स्वविवृद्धकामी *= अपने गोकुल की वृद्धि का इच्छुक (भगवान् कृष्ण)* ***गोकुलानां–अनु*** *= गोकुल के पश्चात्,* ***वृन्दावनान्तरं*** *= वृन्दावन में,* ***अगात्*** *= गया,* ***सर्वपशुभिः*** *= सभी गोकुल के पशुओं के साथ,* ***संचार्य*** *= दौड़धूप करके अथवा (घूमघाम कर)* ***यत्*** *= जिस चरणकमल ने,* ***मृगपक्षिणां*** *= मृगपक्षी गोओं को,* ***अगगुरोः*** *= गोर्वधन पर्वत के नीचे,* ***संचिन्तयत्*** *= एकत्रित किया,* ***ते*** *= आप के,* ***तत् चरणारबिन्दं*** *= उस चरणकमल को* ***वन्दे*** *= मैं नमस्कार करता हूँ।*

अर्थ—जो भगवान् कृष्ण अपने कुल की वृद्धि का इच्छुक था, गोकुल के सभी पशुओं के साथ दोड़धूप करके जो चरण कमल वृन्दावन में गया, जिस चरणारबिन्द ने सभी मृगपक्षी गोओं को गोवर्धन पर्वत के नीचे एकत्रित किया था, हे महापुरुष भगवान् आप के उसी चरणारबिन्द को मैं प्रणाम करता हूँ।

यत्-गोपिका-विरह-जाग्नि परीतदेहाः
तप्तस्तनेषु विजहुः परिरभ्य तापम्।
रासे तदीय कुच-कुँकुम-पङ्कलिप्तं
वन्दे महापुरुष! ते चरणार-बिन्दम्।।5।।

अन्वय शब्दार्थ

गोपिका = गोपिकाओं के, ***विरहजा*** = विरह से उत्पन्न हुये, ***अग्निपरीत*** = अग्नि से घेरे हुये, **देहाः** = शरीरवाली, **तपस्तनेषु** = जलन से पीडित स्तनों में, ***यत्*** = जिस चरणबिन्द को, ***परिरभ्य*** = स्पर्श करके, ***तापं*** = जलन, ***विजहुः*** = समाप्त हुई, ***रासे*** = रास लीला में, ***तदीय*** = उन गोपिकाओं के, ***कुच*** = स्तनों पर जो, ***कुँकुम*** = ***पङ्कलिप्तं*** = केसर का लेप था उस से लिप्त, ***ते-चरणार-बिन्दम्*** = आप के चरणाकमल को ***वन्दे*** = प्रणाम करता हूँ।।

अर्थ—रासलीला में गोपिकाओं के स्तनों के केसरलेप से लिप्त जिस चरणारबिन्द को (आलिंगन) स्पर्श करके, विरह

की अग्नि से घेरे हुये गोपिकाओं के जलन से पीडित स्तनों का ताप दूर हुआ था हे महा पुरुष कृष्ण! मैं उस चरणारबिन्द को प्रणाम करता हूँ।।

कालीय-मस्तक-विघटन-दक्षम्-अस्य
मोक्षेप्सुभि-र्विरहदीन-मुखाभिर्-आरात्।
तत्-पत्निभिः स्तुतम्-शेष-निकामरूपं
वन्दे महापुरुष! ते चरणार-बिन्दम्।।6।।

अन्वय शब्दार्थ

कालीय = *कालीनाग के,* ***मस्तक*** = *सिर के,* ***विघटन*** = *नष्ट करने में (फोडने में)* **दक्षं** = *निपुण, तत् -* ***पत्निभिः*** = *उस कालीनाग की पत्नियों ने,* ***मोक्षेप्सुभिः*** = *मोक्ष की इच्छावाली,* ***विरह-दीन-मुखाभिः*** = *कालीनाग के विरह से दीन मुखवाली,* ***आरात्*** = *समीप में बैठी हुई,* ***अशेष-निकाम-रूपं*** = *अत्यन्तश्रद्धासे,* ***स्तुतम्*** = *स्तुति किया हुआ,* ***ते*** = *आपके* ***चरणारबिन्दं*** = *चरण कमल को,* ***वन्दै*** = *नमस्कार करता हूँ।*

अर्थ—पति के विरह से दुःखित, पति के मुक्ति की इच्छावाली, कालीनाग की स्त्रियों ने, कालीनाग के समीप बैठकर जिस चरणारबिन्द की-अनन्य भक्ति से स्तुति की थी, जो चरणारबिन्द कालीनाग के मस्तक फोडने में (नष्ट करने

में) निपुण था, हे महापुरुष, मैं आप के उस चरणारबिन्द को नमस्कार करता हूँ।

ज्ञानालयं श्रुतिविमृग्यं-अनादिम्-अर्च्यम्
ब्रह्मादिभि र्हृदि-विचन्त्यं-अगाध-बोधैः।
संसार-कूप-पतितो-त्तरणाव-लम्बम्
वन्दे महापुरुष! ते चरणारबिन्दम्।।7।।

अन्वय-शब्दार्थ

ज्ञानालयं *= जो ज्ञान का घर है,* ***श्रुति-विमृग्यं*** *= वेद जिस को ढूँढते हैं,* ***अनादिम्*** *= जिस का आद्य नहीं है,* ***अर्च्यं*** *=जो पूजा के योग्य है,* ***ब्रह्मादिभिः*** *= ब्रह्मादि देवता,* ***हृदि*** *= हृदय में,* ***विचन्त्यम्*** *= जिस का चिन्तन करते हैं,* ***अगाध बोधैः*** *= अधिक ज्ञानी (ज्ञान के भण्डार)* ***संसार कूप*** *= संसार के कुयें में,* ***पतितं*** *= घिरे हुओं को,* ***उत्तरण*** *= पारलेने में,* ***अवलम्बं*** *= सहारा बने हुये।*

अर्थ—जो ज्ञान का घर है, वेद जिस को ढूँढते हैं, जो आद्यन्त रहित है, जो पूजा के योग्य है, जो ज्ञान का भण्डार है। ब्रह्मादि देवता हृदय में जिस का चिन्तन करते हैं, संसाररूपी कुएँ में गिरे हुओं को पार करने में जो सहारा बना है-हे महापुरुष कृष्ण मैं आपके उस चरणारबिन्द को नमस्कार करता हूँ।

येनाङ्क-बालवपुषः स्तनपान-बुद्धेः
त्वत्-अँघ्रिणा-हृतमऽनो विपरीत चक्रम्।
विध्वस्त-भाण्डम्-अपतत् भुवि गोपमूर्तेः
वन्दे महापुरुष! ते चरणारबिन्दम्।।7।।

अन्वय-शब्दार्थ

*येन = जिस कृष्ण ने, **अङ्कबालवुपुषः** = गोद में उठाने योग्य छोटे शरीर वाले, **स्तन पानबुद्धेः** = दूध पीने की इच्छा वाले, **त्वत्** = आप के, **अँघ्रिणा** = पावों से, **हृतम्** = लात मारा हुआ, **विध्वस्तभाण्डम्** = तोडे हुये बर्तनों से युक्त, **विपरीतचक्रम्** = उल्टा दिया हुआ, **अनः** = छकडा, **गोपमूर्तेः भुवि** = नन्दगोप के अँगान में, **अपतत्** = जिस चरणारबिन्द से गिरा, उस, **ते** = आपके, **चरणारबिन्दं** = चरण कमल को, **वन्दे** = नमस्कार करता हूँ।*

अर्थ–गोद में उठाने योग्य छोटे शरीरवाले, दूध पीने के इच्छुक श्रीकृष्ण के पाँवों से लात मारा हुआ, तोडे हुये दूध के बर्तनों से भरा हुआ उल्टा दिया हुआ छकडा नन्दगोप के आँगन में जिस चरणारबिन्द ने गिराया उस आपके चरण कमल को हे महापुरुष मैं नमस्कार करता हूँ।

इत्यष्टकं पठति यः परमस्य पुंसो
नारायणस्य निरयार्णव-तारणस्य
सर्वाप्तिमाशु-हृदये कुरुते मनुष्यः
संप्राप्य-देहविलयं लभते च मोक्षम्।।8।।

अन्वय-शब्दार्थ

नारायणस्य *= सृष्टि का बनाने वाला तथा लय करने वाला,* ***निरयार्णव*** *= कष्ठों से भरे सागर से-****तारणस्य*** *= पार करने वाले,* ***परमस्य पुंसः*** *= भगवान कृष्ण के,* ***इति*** *= ऐसे ही,* ***अष्टकं*** *= यह आठ श्लोक,* ***यः मनुष्यः*** *= जो मनुष्य,* ***आशु*** *= विना विलम्ब के,* ***हृदये*** *= हृदय में,* ***कुरुते*** *= धारण करता है,* ***सर्वाप्तिम्-संप्राप्य*** *= सभी सुख ऐश्वर्य प्राप्त करके,* ***देह विलयं लभते*** *= आवागवन से मुक्त हो जाता है*

अर्थ—सृष्टि के बनाने तथा लय करने वाले, कष्टों से भरे सागर से पार करने वाले, भगवान कृष्ण के यह आठ श्लोक जो मनुष्य हृदय में धारण करता है, भक्ति से पढता है, वह मनुष्य सभी ऐश्वर्य प्राप्त करके, आवागमन के चक्र से मुक्त हो जाता है।

प्रातः स्मरण मंगलस्तोत्रम्

उत्तिष्ठो-त्तिष्ठ गोविन्द, उत्तिष्ठ गरुड़-ध्वज,
उत्तिष्ठ-कमलाकान्त, त्रैलोक्ये मंगलं कुरु।। 1 ।।
मंगलं भगवान् विष्णुः, मंगलं गरुड-ध्वजः,
मंगलं पुण्डरीकाक्षः मंगलायतनं हरिः।। 2 ।।
मूकं करोति वाचालं, पंगुं लंघयते गिरिम्
यत् कृपा तम्-अहं वन्दे, परमानन्द-माधवम्।। 3 ।।
नमो ब्रह्मण्य-देवाय, ग्रोब्रह्मण-हिताय च
जगत्-हिताय कृष्णाय, गोविन्दाय नमोनमः।। 4 ।।

कृष्णाय वासुदेवाय, देवकी-नन्दनाय च
नन्द-गोपकुमाराय, गोविन्दाय नमो नमः।। 5 ।।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वम्-एव,
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव।। 6 ।।

एक-श्लोकी-नवग्रहस्तोत्रम्

ब्रह्मा-मुरारिः-त्रिपुरान्त-कारी, भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च,
गुरुश्च शुक्रःशनि-राहु केतवः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

इस एकश्लोकी नवग्रह स्तोत्र के नित्यपाठ से नवग्रहों की शान्ति होती है।

एकश्लोकी रामायण

आदौ राम-तपोवनादि-गमनं, हत्वा मृगं कांचनं
वैदेही-हरणं जटायु-मरणं, सुग्रीव सम्भाषणम्।
वाली निर्दलनं समुद्र तरणं, लंकापुरी-दाहनं
पश्चात् रावण कुम्भकर्ण-हननं, चैतत्-हि-रामायणम्।। 1 ।।

श्रीरामस्तुतिः

श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि
सुग्रीवमित्रं परमं पवित्रं, सीताकलत्रं नवमेघ-गात्रम्।

कारुण्य-पात्रं शतपत्र-नेत्रं, श्रीराम-चन्द्रं सततं नमामि। 1 ।

अर्थः- सुग्रीव के मित्र, परमपावन, सीता के पति नवीन मेघ के समान शरीर वाले। करुणा के सिन्धु, कमल के समान नेत्रवाले श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ।

संसार-सारं निगम-प्रचारं-धर्मावतारं हृतभूमि-भारम्।
सदाविकारं सुखसिन्धु-सारं-श्रीराम-चन्द्रं सततंनमामि।। 2 ।।

अर्थः- असार संसार का सारवस्तु, वेदों का प्रचार करने वाले, धर्म के अवतार, भू-भार हरण करने वाले, सदा विकार रहित, आनन्द सिन्धु के सारभूत, श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ।।

लक्ष्मी-विलासं जगतां निवासं-लंकाविनाशं भुवन-प्रकाशम्।
भू-देव-वासं शरत्-इन्दुहासं-श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।। 3 ।।

अर्थः- लक्ष्मी से विलास करने वाला, जगत् का निवास, लंकानाश करने वाला, भुवनों को प्रकाशित करने वाला, ब्राह्मणों को शरण देने वाला, शरत् चन्द्र हास्यवाला, श्रीरामचन्द्र का मैं निरन्तर नमन करता हूँ।

मन्दार-मालं-वचने रसालं - गुणैर्विशालं हत-सप्त-तालम्
क्रव्याद-कालं सुर-लोकपालं- श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।। 4 ।।

अर्थः-मन्दारपुष्प माला वाले, रसीले वचन बोलने वाले, गुणों में महान्, साततााल वृक्ष भेदने वाले, राक्षसों के काल, देवलोक पालक, श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ।।

वेदान्त-गानं सकलैः समानं - हतारि-मानं-त्रिदश-प्रधानम्।
गजेन्द्र-यानं विगतावसानं - श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।। 5 ।।

अर्थः-वेदान्त द्वारा गेय, सबके साथ एक जैसा, शत्रुओं का नाम मर्दन करने वाला, देवताओं में गजेन्द्र सवारी करने वाले, अन्त-रहित-श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ।

श्यामाभि-रामं नयना-भिरामं, गुणाभिरामं, वचनाभिरामम्।
विश्व-प्रणामं कृतभक्तकामं, श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।। 6 ।।

अर्थः- श्याम सुन्दर, नेत्रों को आनन्द देने वाला, गुणों से मनोहर, मधुर वचन बोलने वाले विश्व वन्दनीय, भक्तजनों की कामनायें पूर्ण करने वाले, श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ।

लीलाशरीरं रणरंगधीरं, विश्वैकसारं रघुवंश-हारम्।
गम्भीरनादं जितसर्व-वादं, श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।। 7 ।।

अर्थः- लीला के लिये शरीर धारण करने बाले रणस्थली में धीर, विश्व के सार, रघुवंश में श्रेष्ठ, गम्भीरवाणी बोलने वाले, समस्तवादों को जीतने वाले, श्रीरामचन्द्र को मैं प्रतिक्षण प्रणाम करता हूँ।

खले कृतान्तं स्वजने विनीतं - सामोपगीतं मनसाऽप्रीततम्।
रागेणगीतं वचनात्-अतीतं - श्रीराम चन्द्रं सततं नमामि।। 8 ।।

अर्थः- दुष्टों के लिये मृत्युरूप, अपने भक्तों के लिये नम्रभाव वाले, सामवेद के द्वारा स्तुत, मन के अगोचर प्रेम से गान करने वाले योग्य, वचनों से अग्राह्य, श्रीरामचन्द्र को मैं सर्वदा नमस्कार करता हूँ।

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।

।।कलिसन्तरणोपनिषद्''

नवग्रहपीडाहरस्तोत्रम्

सूर्य ग्रहाणाम्-आदिर्-आदित्यो-लोकरक्षण-कारकः
विषमस्थान-सम्भूतां-पीडां-हरतु-मे रविः। 1 ।

चन्द्र रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः
विषम-स्थान सम्भूतां पीडां हरतु मे विधुः। 2 ।

भौम भूमिपुत्रो महातेजो जगतां भयकृत् सदा
वृष्टिकृद्-वृष्टि-हर्ता च पीडां हरतु मे कुजः। 3 ।

बुध उत्पातरूपो जगतां चन्द्र पुत्रो महाद्युतिः
सूर्यप्रिय करो विद्वान्, पीडां हरतु मे बुधः। 4 ।

बृहस्पति	देवमन्त्री विशालाक्षः सदा लोकहिते रतः अनेक शिष्यसम्पूर्णः पीडां हरतु मे गुरुः। 5 ।
शुक्र	दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः प्रभुस्तारा ग्रहाणां च पीडां हरतु मे भृगुः। 6 ।
शनि	सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः मन्दाचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु मे शनिः। 7 ।
राहु	महाशिरो महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु मे शिखी। 8 ।
केतु	अनेक-रूप-वर्णश्च शतशोथ सहस्त्रशः उत्पादरूपो जगतां पीडां हरतु मे तमः। 9 ।

नवग्रहों की उपासना

ग्रह	मन्त्र	समय	संख्या
सूर्य	"ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः"	प्रातः	7,000
चन्द्रमा	"ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः"	सन्ध्या	11,000
भौम	"ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः"	प्रातः	10,000
बुध	"ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः"	प्रातः	9,000
बृहस्पति	"ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः"	सन्ध्या	19,000
शुक्र	"ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः"	सूर्योदय	16,000
शनि	"ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः"	सन्ध्या	23,000
राहु	"ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः"	रात्रौ	18,000
केतु	"ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः"	रात्रौ	17,000

देवी प्रार्थना

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-अशेषजन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिम्-अतीव शुभां ददासि।
दारिद्रय-दुःखभय-हारिणि का त्वत्-अन्या, सर्वोपकार-करणाय दयार्द्रचित्ता।।

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद, प्रसीद मात-र्जगतोखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वारि पाहि विश्वं त्वं-ईश्वरी देवि चराचरस्य।
पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः, परं तेषां मध्ये विरलतरलोहं तव सुतः।
मदीयोयं त्यागः समुचितम्-इदं नो तव शिवे, कुपुत्रो जायेत क्वचित्-अपि कुमाता न भवति।।
जगत्-मातर्-मातः तव चरणसेवा न रचिता, न वा दत्तं देवि द्रविणम्-अपि भूयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निर्-उपमं यत्-प्रकुरुषे, कुपुत्रो जायेत क्वचित्-अपि कुमाता न भवति।।
शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायाणे, सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोस्तु ते।
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तयै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्य-भिधीयते, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण, संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतिषु स्मृतिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु भ्रांतिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।

आनन्दसुन्दर-पुरन्द्र-मुक्तमाल्यं, मौलौ हठेन निहितं महिषासुरस्य
पादाम्बुजं भवतु मे विजयाय मञ्जु, मञ्जीर-शञ्जित-मनोहरम्-अम्बिकायाः
उत्तप्त-हेमरुचिरे त्रिपुरे पुनीहि, चेत्तश्चि-रन्तनम्-अघौघवनं लुनीहि,

कारागृहे निगड-बन्धन-पीड़ितस्य, त्वत्संस्मृतौ झट्-इति मे निगडा-स्त्रुट्यन्तु माया कुण्डलिनी, क्रिया-मधुमती, कालीकला-मालिनी मातंगी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी शक्ति शंकर-वल्लभा त्रिनयना वाक्वादिनी भैरवी, ह्रींकारी त्रिपुरा परा परमयी माता-कुमारीत्यसि। महाबले महोत्साहे, महाभय-विनाशिनि। त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये, शत्रूणां भयवर्धिनि। सर्वमंगल-मंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके, शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते।।

शंकर प्रार्थना

प्रणतोस्मि महादेव, प्रपन्नोस्मि सदाशिव, निवारय महामृत्युं, मृत्युंजय नमोस्तुते।
मृत्युंजय महादेव, पाहि मां शरणागतम्, जन्ममृत्यु-जरारोगैः, पीडितं भवबन्धनात्।

कर्पूर-गौरं करुणावतारं, संसार-सारं भुजगेन्द्र-हारम्।
सदा रमन्तं हृदयारबिन्दे, भवं भवानी सहितं नमामि।।

हर शम्भो महादेव, विश्वेशामरवल्लभ। शिव शंकर सर्वात्मन्, नीलकण्ठ नमोस्तुते।

तव तत्त्वं न जानामि, कीदृशोसि महेश्वर, यादृशोसि महादेव, तादृशाय नमो नमः।
आधीनाम्-अगदं दिव्यं व्याधीनां मूलकृन्तनम् उपद्रवाणां दलनं महादेवम्-उपास्महे।।
आत्मा त्वं गिरजा मतिः, परिजनाः प्राणाः शरीरं गृहं, पूजा ते विषयो-पभोगरचना,
निद्रा समाधिस्थितिः। संचारोऽपि परिक्रमः पशुपते, स्तोत्राणि सर्वा गिरो, यत्यत्
कर्म करोमि देव भगवन्, तत् तत् तवाराधनम्।

नागेन्द्र-हाराय त्रि-लोचनाय, भस्मांग-रागाय महेश्वराय।
देवाधि-देवाय दिगम्बराय, तस्मै नकाराय नमः शिवाय।।

मातंग-चरमाम्बर-भूषणाय, समस्त-गीर्वाण-गणा-र्चिताय,
त्रैलोक्य-नाथाय पुरान्तकाय, तस्मै मकाराय नमः शिवाय।

शिवा-मुखाम्भोज-विकासनाय, दक्षस्य यज्ञस्य विनाशकाय
चन्द्रार्क-वैश्वानर-लोचनाय, तस्मै-शिकाराय नमः शिवाय।।

वशिष्ठ-कुम्भोत्भव-गौतमादि, मुनीन्द्र-वन्द्याय गिरीश्वराय।

श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय, तस्मै वकाराय नमः शिवाय।।
यज्ञ-स्वरूपाय जटाधराय, पिनाक-हस्ताय सनातनाय,
नित्याय शुद्धाय निरंजनाय, तस्मै यकाराय नमः शिवाय।
वपुष्प्रादुर्भावात् अनुमितम्-इदं-जन्मनि पुरा।
पुरारे नैवाहं क्वचित्-अपि भवन्तं प्रणतवान्।।
नमन्मुक्तः सम्प्र-त्यतनुर्-अहम्-अग्रे प्यनतिमान्, महेश क्षन्तव्यं तत्-इदम्-अपराध-द्वयम्-अपि ।। करचरणकृतं वाक्-कायजं कर्मजं वा, श्रवण-नयनजं वा, मानसं वाऽ पराधम्।
विदितम्-अविदितं-वा, सर्वम्-एतत्-क्षमस्व, जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो।।

लिंगाष्टकम्

ब्रह्मा मुरारिःसुरार्चित लिंगं, निर्मल-भासित-शोभित-लिंगम्।
जन्मज-दुःख-विनाशक-लिंगं, तत्प्रणमामि सदा शिव-लिंगम्।। 1 ।।

देव-मुनि-प्रवरा-र्चितलिंगं, कामदहं करुणाकर-लिंगम्।।
रावण-दर्प-विनाशित-लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम्।। 2 ।।

सर्व-सुगन्धि सुलेपित-लिंगं, बुद्धिविवर्धन-कारण-लिंगम्।।
सिद्ध-सुरासर-वंदित-लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम्।। 3 ।।

कनक-महामणि-भूषित-लिंगं, फणिपति-वेष्टित-शोभित-लिंगम्।।
दक्ष-सुयज्ञ-विनाशक लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम्।। 4 ।।

कुंकम-चंदन-लेपितलिंगं, पंकज-हार-सुशोभित-लिंगम्।।
संचित-पाप-विनाशन-लिंगं, तत्प्रणमामि-सदाशिव लिंगम्।। 5 ।।
देव-गणार्चित सेवित लिंगम्, भावेर्भक्तिभिरेव च लिंगम्।।
दिन-कर-कोटि-प्रभा-कर लिंगम् तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम्।। 6 ।।
अष्ट-दलोपरि वेष्टित-लिंगं, सर्व-समुद्-भव-कारण-लिंगम्।।
अष्ट-दरिद्र-विनाशित-लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम्।। 7 ।।
सुरगुरू-सुरवर-पूजित-लिंगम्, सुरवन-पुष्प-सदा-र्चित-लिंगम्।।
परात्परं-परमात्मक-लिंगम्, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम्।। 8 ।।
लिंगाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत्-शिव-सन्निधौ
शिवलोक मवाप्नोति शिवेन सह मोदते।

(इति लिंगाष्टकस्तोत्रं सम्पूर्णम्)

शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं

मनो बुद्ध्य-हंकार-चित्तानि नाहं, नच श्रोत्र-जिह्वे नच घ्राण-नेत्रे।
नच व्योम-भूमि-र्न तेजो न वायुः, चिदानन्द-रूपः शिवोऽहं शिवोऽहं। 1।
नच प्राण-संज्ञो न वे पंचवायुः, न-वा सप्त-धातु-र्न वा पंचकोशः
व वाक्-पाणिपादं न चोपस्थ-पायुः, चिदानन्द-रूपः शिवोहं शिवोहम्। 2 ।
नमे द्वेषरागौ न मे लोभ मोहौ, मदो नैव मे नैव मात्सर्य-भावः
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्षः, चिदानन्द रूपः शिवोहं शिवोहम्। 3 ।
न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं, न मन्त्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञः
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्। 4 ।
न मृत्यु-र्न शंका न मे जातिभेदः पिता नैव मे नैवा माता च जन्म।

न बन्धु-र्न मित्रं गुरु-नैव शिष्य: चिदानन्दरूप: शिवोऽहं शिवोऽहम् 5।
अहं निर्विकल्पी निराकाररूपो लघुत्वात्-च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम्
न चा संगतं नैव मुक्ति-र्न मेय: चिदानन्दरूप: शिवोऽहं शिवोऽहम्। 6 ।

इति-श्रीमत्-शंकराचार्य-विरिचितं निर्वाणषटकं सम्पूर्णम्

विष्णुस्तुति:

जय नारायण, जय पुरुषोत्तम, जय वामन कंसारे।
उद्धर मामसुरेशविनाशिन् पतितोहं संसारे।।
घोरं हर मम नरकरिपो, केशव कल्मषाभारं।
माम्-अनुकम्पय दीनम्-अनाथं, कुरु भव-सागरपारम्।। घोरं हर मम०।। 1।।
जय जय देव जया-सुरसूदन, जय केशव जय विष्णो।
जय लक्ष्मीमुख-कमल-मधुव्रत, जय दशकन्धर जिष्णो। घोरं हर मम०।। 2 ।।

यद्यपि सकलम्-अहं कलयामि हरे नहि किम्-अपि स सत्वम्।
तत्-अपि न मुञ्चति माम्-इदम्-अच्युत, पुत्रकलत्र-ममत्वं। घोरं हर मम०।। 3।।
पुनर्-अपि जननं पुनर्-अपि मरणं, पुनर्-अपि गर्भ-निवासम्।
सोढुम्-अलं-पुनर्-अस्मिन्-माधव, माम्-उद्धर निजदासम्। घोरं हर मम०।। 4 ।।
त्वं जननी जनकः प्रभुर्-अच्युत, त्वं सुहृत्-कुलमित्रम्।
त्वं शरणं शरणा-गतवत्सल, त्वं भव-जलधि-वहित्रं।। घोरं हर मम०।। 5 ।।
जनक-सुता-पति-चरण-परायण, शंकर-मुनिवर-गीतं।
धारय मनसि कृष्ण-पुरुषोतम, वारय संसृति-भीतिम्।। घोर हर मम०।। 6 ।।

नारायणस्तुतिः

अच्युतं केशवं रामनारायणं, कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्।।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं जानकीनायकं राम चन्द्रं भजे।।

सूरजं शैशवं सत्यभा-माधवं, श्रीधरं श्रीपतिं-राधिका-राधितम्।
इन्दिरा-मन्दिरम् चेतसा सुन्दरं, देवकीनन्दनं नन्दजं संभजे।।
अँगनाम्-अँगनाम्-अन्तरे माधवो, माधवं माधवं चान्तरे-णांगना।
सत्यभा-कल्पिते मण्डले मध्यगः, सञ्जगौ वेणुना देवकीनन्दनः।।
बालिका-बालिका बाललीला-लयः, संग-सन्दर्शित-भ्रू-लता-विभ्रमः।
गोपिका गीत-दत्ता-वदानः स्वयं, संजगौ वेणुना देवकी-नन्दनः।।
जयतु जयतु देवो देवकीनन्दनोयं, जयतु जयतु कृष्णो, वृष्णिवंश-प्रदीपः।
जयतु जयतु मेघ, श्यामलः कोमलांगो, जयतु जयतु पृथ्वी-भारनाशो मकुन्दः।।

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।

गुरुस्तुतिः

वन्देहं सच्चिदानन्दं भेदातीतं जगद् गुरुम्
नित्यं पूर्णं निराकारं निर्गुणं सर्व-संस्थितम्। 1 ।
परात्परतरं ध्येयं नित्यम्-आनन्दकारणम्
हृदयाकाश-मध्यस्थं शुद्धस्फटिक-सन्निभम्। 2 ।
नमामि सद् गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणम्
शिरसा योगपीठस्थं धर्मकार्मार्थ-सिद्धये। 3 ।
अखण्ड-मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुर-वे नमः। 4 ।
अज्ञानतिमरान्धस्य ज्ञानञ्जन-शलाकया
चक्षुर्-उन्मीलितं येन तस्मै श्री-गुरवे नमः। 5 ।

हरौ रुष्टे गुरु-स्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन
सर्वदेव-स्वरूपाय तस्मै श्री-गुर-वे नमः। 6 ।
चैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरञ्जनम्
बिन्दु-नादकलातीतं तस्मै श्री-गुर-वे नमः। 7 ।
शिष्यानां मोक्षदानाय लीलया-देहधारिणे
सदेहेपि विदेहाय तस्मै श्री-गुर-वे नमः। 8 ।
ज्ञानिनां ज्ञानरूपाय प्रकाशाय प्रकाशिनाम्
विवेकिनां विवेकाय विमर्शाय विमर्शिनाम्। 9 ।
पुरस्तात्-पार्श्वयोः पृष्ठे नमस्कुर्याम्-उपर्यधः
सदामत्-चित्तिरूपेण विधेहि भवदासनम्। 10 ।

विष्णु प्रार्थना

शान्ताकारं भुजंगशयनं पद्मनाभं सुरेशं । विश्वाधारं गगनसदृश्यं मेघवर्ण शुभाङ्गम्। लक्ष्मी कान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यान गम्यं। वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्। १ । यस्य हस्ते गदा चक्रं गुरुडो यस्य वाहनं। शंखः करतले यस्य स मे विष्णुः प्रसीदतु । २ । यद्बाल्ये यश्च कौमारे यद्यौवने कृतं मया। वयः परिणतौ यश्च यक्ष्च जन्मान्तरेषुच। कर्मणा मनसा वाचा यापापं समुपार्जितं तन्नारायण गोविन्द क्षमस्व गुरुडध्वज। ३ । त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखस्त्मेव त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्व ममदेव देव। ४ । तत्रैव गंगा यमुना चवेणी, गोदावरी सिंधु सरस्वती च सर्वाणि तीर्थानि वसंति तत्र, यत्राच्युतोदार कथा प्रसंगः। ५ । नमामि नारायण पादपंकजं करोमि नारायण पूजनं सदा। वदामि नारायण नाम निर्मलं, स्मरामि नारायण तत्वम व्ययम। ६ । गो कोटिदानं ग्रहणेषु, काशी, प्रयागं गंगाऽयुतकल्पवासः। यज्ञायतं मेरु सुवर्णदानं, गोविंदनाम्ना न कदापि तुल्यम्।। ध्येयः सदा सवितृमण्डल मध्यवर्ती नारायणः सरसिजासन- सन्निविष्ठः। केयूरवान-कनक- कुण्डलवान्-किरीटी हारी हिरण्य-वपुर्धृत शङ्खचक्रः। ८ । करार बिन्देन पदारबिन्दं मुखारबिन्दं विनिवेशययन्तं। अश्वत्थपत्रस्य पुटेयान, बालं मुकुन्दं मनसा स्मारामि। ९ । गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे, गोविन्द गोविन्द रथांगपाणे। गोविन्द गोविन्द मुकुंद कृष्ण, गोविन्द गोविन्द नमो नमस्ते। १० ।

शिव-चामर-स्तुतिः

ॐ अतिभीषण कटुभाषण यमकिङ्कर पटली
कृत-ताडन-परिपीडन-मरणागम-समये।
उमया सह मम चेतसि यमशासन निवसन्
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम्।। 1 ।।
अतिदुर्नय चटुलेन्द्रिय रिपु-सञ्चय दलिते
पविकर्कश कटुजल्पित खलगर्हण-चलिते।
शिवया सह ममचेतसि शशिशेखर निवसन्
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर में हर दुरितम्।। 2 ।।
भव भञ्जन सुर-रञ्जन खलवञ्चन पुरहन्
दनुजान्तक मदनान्तक रतिजान्तक भगवन्।
गिरिजावर करुणाकर परमेश्वर भयहन्
शिवशङ्कर शिव शङ्कर हर में हर दुरितम्।। 3 ।।
शक्रशासन कृतशासन चतुराश्रम विषये
कलिविग्रह भवदुर्ग्रह रिपुदुर्बल समये।
द्विज-क्षत्रिय-वनिता शिशुदर कम्पित हृदये
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर में हर दुरितम्।। 4 ।।
भवसम्भव विविधामय परिपी-डितवपुषं
दयितात्मज ममताभर-कलुषी-कृत-हृदयम्।
करु मां निजचरणार्चन निरतं भव सततं
शिव शंकर शिवशंकर हर में हर दुरितम्।। 5 ।।

गायत्री चालीसा

ॐ भूर्भवः स्वः ॐ युतजननी
गायत्री नितकलिमल दहनी।
अक्षर चौबीस परम पुनिता
इनमें बसे शास्त्र श्रुति गीता।
शाश्वत सतोगुणी सत् रूपा
सत्य सनातन सुधा अनूपा।
हंसारूढ सितम्बर धारी
स्वर्णकान्ति शुचि गगन बिहारी।
पुस्तक पुष्प कमण्डलु माला
शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला।
ध्यान धरत पुलकित हियहोई
सुख उपजत दुख दुरमति खोई।

कामधेनु तुम सुर तरु छाया
निराकर की अद्भुत माया।
तुम्हरी शरण गहै जो कोई
तरै सकल संकट सों सोई।
सरस्वती लक्ष्मी तुम काली
दिपै तुम्हारी ज्योति निराली।
तुम्हरी महिमा पार न पावै
जो शारद शत मुख गुन गावैं।
चार वेद की मातु पुनीता
तुम ब्रह्माणी गौरी सीता।
महा मन्त्र जितने जग माहीं
कोऊ गायत्री सम नाहीं।

सुमरत हिय में ज्ञान प्रकासै
आलस्य पाप अविद्या नासै।
सृष्टि बीज जग जननि भवानी
कालरात्रि वरदा कल्याणी।
ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुर जेते
तुमसों पावें सुरता तेते।
तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे
जननि हिं पुत्र प्राण ते प्यारे।
महिमा अपरम्पार तुम्हारी
जै जै जै त्रिपदा भय हारी।
पूरित सकल ज्ञान-विज्ञाना
तुम सम अधिक न जग में आना।
तुमहि जानि कछु रहे न शेषा
तुमहिं पाय कछू रहै न कलेषा।

जानत तुमहिं तुमहिं ह्वै जाई
पारस परसि कुधातु सुहाई।
तुम्हरी शक्ति दिपै सब ठाईं
माता तुम सब ठौर समाई।
ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेरे
सब गतिवान् तुम्हारे प्रेरे।
सकल सृष्टि की प्राण विधाता
पालक पोषक नाशक त्राता।
मातेश्वरी दया व्रतधारी
तुम सम तरे पातकी भारी।
जा पर कृपा तुम्हारी होई
ता पर कृपा करे सब कोई।
मन्द बुद्धि ते बुद्धि बल पावें
रोगी रोग रहित ह्वै जावें।

दारिद्र मिटै कटै सब पीरा
नासै दुख हर भव भीरा।
गृह क्लेश चित चिन्ता भारी
नासै गायत्री भय हारी।
सन्तति हीन सुसन्तति पावें
सुख सम्पत्ति युत मोद मनावें।
भूत पिशाचं सबै भय खावें
यम के दूत निकट नहीं आवें।
जो सधवा सुमिरैं चितलाई
अछत सुहाग सदा सुखदाई।
घर बर सुख प्रबल हैं कुमारी
विधवा रहें सत्य व्रत धारी।
जयति जयति जगदम्ब भवानी
तुम सम और दयालु न दानी।
जो सद्गुरु से दीक्षा पावैं
सो साधन को सफल बनावें।

सुमिरन करै सुरुचि बडभागी
लहैं मनोरथ गृही विरागी।
अष्ट सिधि नव निधि की दाता
सब समर्थ गायत्री माता।
ऋषि मुनि तपस्वी योगी
आरत अर्थी चिन्तित भोगी।
जो जो शरण तुम्हारी आवैं
सो सो निज वांछित फल पावैं।
बल विद्या शील सुभाऊ
धन वैभव यश तेज उछाहू।
सकल बढ़ें सुख नाना
जो यह पाठ करै धर ध्याना।

यह चालीसा भक्तियुत, पाठ करै जो कोय
तापर कृपा प्रसन्नता, गायत्री की होय।

गणेश स्तुति:

आयसय शरण करतम क्षमा
ओं श्री गणेशाये नमः।
गणपत गणेश्वर हे प्रभो
कलिराज़ राजन हुन्द विभो
पज़ि लोलु पादन तल नमः।।ॐ
गुडनी च्यय छुय आधिकार
कलिकालकुय चय ताजदार
पज़ि लोलु पादन तल प्यमा।।ॐ
मूषक च़्य वाहन शूभवुन
त्रन लूकनय मंज़ फेरवुन
सहायक म्य रोज़तम हर दमः।।ॐ
यज्ञस ज़पस व्यवहारम्य

गुड़ छिय सुरान प्रथकारसय
कारस अनान छुःख चय जमः।।ॐ
सुन्दर लम्बोदर एक दन्त
स्मरन चाञ बतियन म्ये अन्द।
रति वेल, सुन्दर छुम समः।।ॐ
स्मरन यि चानी यिम करान
भवसागरस अपोर तरान
रट्अ सानि नावे चय नमा।।ॐ
रमरन यि चानी भक्ति ज़न
पूरण गछान तम्यसुन्द छु प्रन।
चरणोदकुक अमृत चमा।।ॐ
ज़गतुक महेश्वर चय पिता।

सीत रूप्र सित धर्मच सत्ता।
माता च्य गौरी श्री वुमा।।ॐ
बाह नाव सुन्दर शूभवज
स्वर्गस गछान तिम बोलवज
पूरण करुम पूरण तमा।।ॐ
आमुत भक्त च्यय छुय शरण
प्योमुत खोरन तल छुय परण।
वर दिथ कास्तम चथ गमा।ॐ
सुबह प्यठ भखत, छिय लारान
प्रेयम पोश ह्यथ छिय प्रारान।
छुयख च्यानि पूजि लागनुक तमा।ॐ
गणेशबल प्यठ आख चीलथअय
अंग-अंग संअीदरा मीलथय
गोअड़ बोअज म्यन प्रार्थना।।ॐ

शारदा पढ़िये

शारदा पढ़ कर अपनी सभ्यता तथा संस्कृति को जीवित रखें। हमारा कर्त्तव्य है कि हम शारदा लिपि की रक्षा करें क्योंकि यह हमारे बुजूर्गों का धरोहर है यदि आप शारदा पढ़ना चाहते हैं तो हमारे कार्यालय से शारदा प्राईमर मुफ्त ले सकते हैं।

संस्कृत पढ़िये

यदि आप कर्मकाण्ड को जीवित रखना चाहते हैं तो संस्कृत भाषा पढ़िये क्योंकि कर्मकाण्ड की सभी पुस्तकें संस्कृत भाषा में है मेरे ओर से सभी छोटी-वड़ी संस्थाओं से प्रार्थना है कि संस्कृत पढ़ने तथा पढ़ाने के लिये हर मौहल्ले में केन्द्र खोले तभी हम अपनी मर्यादा तथा कर्मकाण्ड को जीवित रख सकते हैं।

शिवाय नमः ओं नमः शिवाय

आधार ज़गतुक कुनुय छु मन्त्र शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
त्रिपंच नयनो ही आदि दीवो, जटा मुकट छुय गंडिथ च्य़ दीवो
चन्द्र-अर्द्ध शेखर, त्रिलोचनाय, शिवाय नमः ओं, नमः शिवाय।।
च्य़ नील कंठो जटन छय-गंगा, च मोक्षदायक गुसोञ्य नंगा
अलक्ष अगोचर छ्य़पन गुफाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाय।।
बिहिथ छय गौरी च्य सूत्य नालय, वलिथ छुय सर्पन हुंदुय दुशालै
सहस्त्र सूर्यि तीज़ च्य़ मंज़ जटाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाय।।
अथस च्य़ डाबर चू बीन वायान, कपाल-माल त्रिशूल धारान
भक्तयन अभय छुख दिवान यछ़ाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाय।।

रटिथ चू अंकुश खडगधारिथ, धनुर धनन मंज पिनाक चारथि
वुदनि बू डंड्वथ करय हा माये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाय।।
भवाय दीवो शर्वाय दीवो, भस्माय दीवो सुरान च्य़ ज़ीवो
च्य़ जीव पूज़ान छिय भावनाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
संसार सुदरस, म्य तार तारुम, अमर बनावुम शिव मार्ग हावुम
वोलुस कुकर्मव कुवासनाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाय।।
अनाथ बन्धो दयायि सागर, संसार की दुःख म्य यिम छि तिम च़ठ
ज़गतस दया कर च ह्यथ ओमाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाय।

हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

दुर्गा सिद्ध मन्त्र स्तोत्र

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद, प्रसीद मातर् जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं, त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य।।

अर्थ:- शरणागत की पीड़ा को दूर करने वाली देवी! हम पर प्रसन्न होओ। पूरे विश्व की जननी! प्रसन्न होवो। हे विश्वेश्वरि! विश्व की रक्षा करो। हे देवी! तुम चराचर जगत् की अधीश्वरी (स्वामी) हो।

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या, विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत, त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्ति हेतुः।।

अर्थ:- हे देवी! तुम अनन्त वलयुक्त वैष्णवी शक्ति हो, इस विश्व की बीजरूपा परा माया हो, आप ने इस पूरे विश्व को मोहित कर रखा है, आप ही प्रसन्न होने पर इस पृथ्वी पर मोक्ष की प्राप्ति कराती हो।

विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः, स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।
त्वयैकया पूरितम् अम्बयैतत्, का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः।।

अर्थः- हे देवी! समस्त विद्यायें आप के ही अलग-अलग रूप हैं संसार में जितनी भी स्त्रियां हैं सब आप की ही मूर्तियां है, हे जगत् अम्बा! एक मात्र आपने इस पूरे विश्व को व्याप्त कर रखा है आप की स्तुति क्या हो सकती है आप स्तवन करने योग्य पदार्थों से परे हो।

विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं, विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।
विश्वेशवन्ध्या भवती भवन्ति, विश्वाश्रया ये त्वयि भक्ति नम्राः।।

अर्थः- हे विश्वेश्वरि! आप विश्व का पालन करती हो, आप विश्व रूपा हो, इस कारण आप समस्त विश्व को धारण करती हो आप भगवान् विश्वनाथ की भी वन्दनीया हो, जो लोग भक्तिपूर्वक आप के सामने सिर झुकाते हैं वे सम्पूर्ण विश्व को आश्रय देने वाले होते हैं।

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
द्रारिद्र्-दुःख भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोप कारकरणाय सदार्द्रचित्ता।।

अर्थः- मां दुर्गे! आप स्मरण करने पर सब प्राणियों का भय दूर करती है और स्वस्थ पुरुषों द्वारा चिन्तन करने पर उन्हें कल्याणमयी बुद्धि प्रदान करती है। दुःख दरिद्रता और भय हरने वाली देवी! आप के सिवा दूसरी कौन है जिस का चित सबका उपकार करने के लिये हमेशा दयार्द्र रहता है।

सर्वमङ्गल-मङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्रम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।

अर्थः- सभी शुभकामनाओं को सिद्ध करने से सुन्दर अथवा कल्याणकारी धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को देने वाली दुःखों से रक्षा करने वाली, अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य रूपी तीन नेत्रों वाली, दक्ष प्रजापत के यज्ञ में योग अग्नि में भस्म बनी हुई अतः गौर वर्ण वाली, विष्णु की लक्ष्मी रूपा शक्ति वाली माता तुम्हें नमस्कार हो।

शरणागत दीनार्त परित्राण परायणे। सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोस्तु ते।।

अर्थः- शरण में आये हुये दीनों एवं पीडितों की रक्षा में संलग्न रहने वाली तथा सब की पीडा दूर करने वाली नारायणी देवी! आप को नमस्कार है।

शिवाष्टकम्

शीतांशु-शुभ्र कलया कलितो-त्तमाङ्गं, ध्यान स्थितं धरणिभृत्तनयार्चितं तम्।
काला-नलोप-महला हल-कृष्ण कण्ठं, श्री शंकरं कलिमलापहरं नमामि।।

अर्थः- सुन्दर चन्द्रमा की शुभ्रकला से आप का शिरो भाग शोभित है, पर्वतराज हिमालय की कन्या पार्वती जी स्वयं ही आप की पूजा अर्चा करती है, संसार को जलन से बचाने के लिये कालानल के समान महा भीषण हलाल पी जाने से आप का कण्ठ काला हो गया है, इस कलिकाल का मल दूर करने में आप अपना सानी नहीं रखते, ऐसे ध्यान में मग्न आप शंकर को मेरा प्रणाम।

गायन्ति यस्य चरितानि महात्-भुतानि, पद्मोद्-भवोद्-भवमुखाः सततं मुनीन्द्राः ध्यायन्ति यं यमितम्-इन्दु-कलावतं सं, सन्तः समाधि-निरतास्तम् अहं नमामि।।

अर्थः- आप के अत्यन्त अद्भुत चरितों का गान ऐसे-वैसे नहीं, नारदादि बड़े-बड़े महामुनि तक किया करते हैं, साधु शिरोमणि योगीश्वर भी समाधि लगा कर आप ही का ध्यान करते रहते हैं ऐसे आप शंकर को पुनरपि मेरा प्रणाम।

त्रैलोक्यम्-एतत्-अखिलं ससुरासुरञ्च, भस्मीभवेत्-यदि न यो दययार्द्र देहः।
पीत्वाऽहरद्गरलम्-आशु भयं तदुत्थं, विश्वा-वनैक-निरताय-नमोस्तु-तस्मै।।

अर्थः- हे शंकर! आप बड़े ही दयालु हैं, आप की दया सीमा रहित है, जब समुद्र मन्थन से हलाहल निकलने पर उस की आग असह्य हो गई, तब उस कालकूट का पान स्वयं करके तीनों लोकों को जल जाने से बचा लिया, संसार की रक्षा का इतना ख्याल रखने वाले आप के चरणों में मैं अपना सिर रखता हूँ।

नो शक्यम्-उग्र तपसापि युगान्तरेण, प्राप्तुं यद्-अन्य सुर पुङ्गवतस्त देव।
भक्तया सकृत्प्रणम्-अनेन-सदा-ददाति, यो नौमि नम्रशिरसा च तमाशुतोषम्।।

अर्थः- युग-युगान्त-पर्यन्त तपस्या करने पर भी जो फल प्राप्ति भक्तों को अन्य सुर पुङ्गवों से भी नहीं हो सकती, वही आप को भक्ति भावपर्वूक प्रणाम मात्र करने से आप के सच्चे भक्तों को सुलभ

हो जाती है, क्योंकि आप आशुतोष हैं (अर्थात् थोड़ी सेवा से प्रसन्न होने वाले) मैं आप के सामने अपना सिर झुकाता हूँ।

भूति प्रियोऽपि वितरत्यनिशं विभूतिं, भक्ताय यः फणिगणानपि धारयन् सन्।
हन्ति प्रचण्ड भव भीम भुजङ्ग भीतिं, तस्मै नमोस्तु सततं मम शंकराय।।

अर्थः- आप स्वयं ही विभूति-प्रिय हैं, वह प्यारी वस्तु विभूति अपने भक्तों को रोज़ ही लुटाया करते है, स्वयं आप महा भंयकर नागों के कण्ठे और मालायें आदि धारण करते है उधर आप ही जन्म-मरण रूपी भीम भुजङ्ग के भय से अपने सेवकों की रक्षा करते हैं हे मेरे शंकर ! आप को मेरा नमस्कार।

येषां भयेन विबुधा रजनी चराणां, नो तत्यजुर्हिम-महीध्र-गुहा गृहाणि।
हत्वा ददौ गिरिश तानपि शै़व धाम, त्वत्तः परोऽस्ति परमेश्वर को दयालुः।।

अर्थः- हे शंकर! जरा उन राक्षसों का स्मरण कर जो इतने पराक्रमी हो गये थे कि वह देवों का तरह-तरह से उत्पीड़न करने लगे थे यहां तक कि देवता उन के भय से हिमालय की गुफाओं में छिपे रहते थे। ऐसे अत्याचारी और पापी राक्षसों को भी मार कर आप ने पुण्य लोक भेज दिया, क्या आप से कोई अधिक दयालु देवता कही हैं ? आप यथार्थ में परमेश्वर हैं।

पाप प्रसाधनरता दितिजा अपीन्द्रं, सद्यो विजित्य सुरधाम-धराधिपत्यम्।
यस्य प्रसादलवलेश-वशादवाप्ताः, तस्मै ममास्तु विनतिः परमेश्वराय।।

अर्थः- लङ्केश्वरादि राक्षस पुण्यात्मा नहीं थे वे महा उत्पातकारी और पापिष्ठ थे परन्तु आप का सच्चा सेवक होने के कारण महीन्द्र को जीतकर देव लोक के अधीश्वर बन बैठे, आप से बढकर मुझे कोई परमेश्वर्यशाली और कोई देवता दिख नहीं पड़ता, मेरी विनती स्वीकार करो।

अर्चा कृता न तव नाम हर स्मृतन्न, नो भक्तवत्सल कृतं तव किञ्चिदन्यत्।
वीक्ष्य स्वपादकमलोपनतं तथापि, माम् पाहि कारुणिक-मौलिमणे महेश।।

अर्थः- मैं पापी आप से किस मुंह से कुछ याचना करूं, मैंने कभी भूल कर भी आप की अर्चना नहीं की है, कभी भूल से भी आप का नाम नहीं लिया है, कभी भूल कर भी आप की कोई सेवा नहीं की है, फिर भी यह देख कर कि यह आप के चरणों पर पड़ा है और नाक रगड़ रहा है आशा है आप मुझ पर भी कृपा करेंगे, क्योंकि आप आशुतोष होकर परम भक्त वत्सल भी हैं।

गीता पढ़िये या सुनिये

अच्युताष्टकम्

अच्युतं केशवं रामनारायणं, कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्।
श्रीधरं माधवं गोपिका वल्लभं, जानकी नायकं रामचन्द्रं भजे।।
अच्युतं केशवं सत्य-भा-माधवं, माधवं, श्रीधरं राधिकाऽऽराधितम्।
इन्दिरा मन्दिरं चेतसा सुन्दरं, देवकी नन्दनं नन्दनं सन्दधे।।
विष्णवे जिष्णवे शंखिने चक्रिणे, रुक्मिणी रागिणे जानकी जानये।
वल्लवी-वल्लभा-याऽर्चिता-ऽऽत्मने, कंस-विध्वंसिने-वंशिने-ते-नमः।।
कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण, श्रीपते वासुदेवाजित श्रीनिधे।
अच्युतानन्त हे माधवाधोक्षज, द्वारका नायक द्रौपदी रक्षक।।
राक्षस-क्षोभितः-सीतया-शोभितो, दण्डकारण्य-भू-पुण्यता-कारणः।
लक्ष्मणेनाऽन्वितो-वानरैः-सेवितो-गस्त्य-सम्पूजितो-राघवः-पातु-माम्।।
धेनुकारिष्टको-ऽनिष्टकृत्-द्वेषिणां, केशिहा-कंसहृत्-वंशिका-वादिकः।
पूतना कोपकः सूरजा खेलनो, बाल गोपालकः पातु मां सर्वदा।।

विद्युत-द्योतवान्-प्रस्फुरत्-वाससं, प्रावृडम्-भोदवत्-प्रोल्लसत्-विग्रहम्।
वन्यया मालया शोभितोरः स्थल, लोहितांघ्रिद्वयं वारिजाक्ष भजे।।
कुञ्चितैः-कुन्तलैः-भ्राजमा-नानं, रत्न-मौलिं-लसत्-कुण्डले-गण्डयो।
हारकेयूरकं-कंकण-प्रोज्जवलं, किंकिर्णी-अंजुलं-श्यामलं-तं-भजे।।
अच्युतस्या-षृकं-यः-पठेत्-इष्टदं, प्रेमतः-प्रत्यहं-पूरुषः-सस्पृहम्।
वृत्ततः सुन्दरं कर्तृ विश्वम्भरं तस्य वश्यो हरिर्जायते सत्त्वरम्।।

शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्र हाराय त्रिलोचनाय, भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय, तस्मै नकाराय नमः शिवाय।।
मन्दाकिनी-सलिल-चन्दन-चर्चिताय, नन्दीश्वर-प्रमथनाथि-महेश्वराय।
मन्दारपुष्प-बहुपुष्प-सुपूजिताय तस्मै मकाराय नमः शिवाय।।
शिवाय-गौरी-वन्दनाब्ज-वृन्द, सूर्याय-दक्षाऽध्वर-नाशकाय।

श्रीनीकलण्ठाय वृषध्वजाय, तस्मै शिकाराय नमः शिवाय।।
वसिष्ठ-कुम्भोद्भव-गौतमार्य, मुनीन्द्र-देवाऽर्चित-शेखराय।
चन्द्रार्क-वैश्वानर-लोचनाय, तस्मै वकाराय नमः शिवाय।।
यक्षस्वरूपाय जटाधराय, पिनाकहस्ताय समातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय, तस्मै यकाराय नमः शिवाय।।
पंचाक्षरम्-इदिं पुण्यं यः पठेत्-शिव-सन्निधौ।
शिवलोकम्-अवाप्नोति-शिवेन-सह-मोदते।।

शिवषडक्षरस्तोत्रम्

ॐकारं विन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः।।
तमन्ति ऋषयो देवा, नमन्ति-अप्सरसां गणाः।
नरा नमन्ति देवेश नकाराय नमो नमः।।

महादेवं महात्मानं महाध्यानं परायणम्।
महापापहरं देवं मकाराय नमो नमः।।
शिवं-शान्तं-जगन्नाथं, लोका-नुग्रह-कारकम्।
शिवमेकपदं नित्यं शिकाराय नमो नमः।।
वाहनं वृषभो यस्य वासुकिः कण्ठभूषणम्।
वामे शक्तिधरं देवं यकाराय नमो नमः।।
यत्र यत्र स्थितो देवः सर्वव्यापी महेश्वरः।
यो गुरुः सर्वदेवानां यकाराय नमो नमः।।
षड्-अक्षरं-इदं-स्तोत्रं-यः-पठेत्-शिव-सन्निधौ।
शिव-लोकं-अवाप्नोति, शिवेन-सह-मोदते।।

श्री रुद्राष्टकम्

नमामि-ईशं-ईशान-निर्वाण-रूपं, विभुं-व्यापकं-ब्रह्म-वेद-स्वरूपम्।
अजं-निर्गुणं-निर्विकल्पं-निरीहं, चिदा-कारम्-आकाशवासं-भजेऽहम्।।

निराकारं-ओंकार-मूलं-तुरीयं, गिरा-ज्ञान-गोतीतं-ईशं-गिरीशम्।
करालं-महाकाल-कालं-कृपालं, गुणा-गार-संसार-पारं-नतोऽहम्।।
तुषाराद्रि-सङ्काश-गोरं-गभीरं, मनो-भूत-कोटि-प्रभासी-शरीरम्।
स्फुरन्-मौलिकल्लोलिनी-चारु-गङ्गा, लसत्-भाल-बालेन्दु-कण्ठे-भुजङ्गा।।
चलत्-कुण्डलं-शुभ्रनेत्रं-विशालं-प्रसन्नाननं-नीलकण्ठं-दयालुम्।
मृगाधीश-चर्माम्बर-मुण्डमालं, प्रियं-शङ्करं-सर्वनाथं-भजामि।।
प्रचण्डं-प्रकृष्टं-प्रगल्भं-परेशं, अखण्डं-भजे-भानु-कोटि-प्रकाशम्।
त्रयी-शूल-निर्मूलनं-शूल-पाणिं, भजेऽहं-भवानीपतिं-भाव-गम्यम्।।
कलातीत-कल्याण-कल्पान्त-कारी, सदा-सज्जना-नन्ददाता-पुरारिः।
चिदानन्द-वन्दोह-मोहाप-हारी, प्रसीद-प्रसीद-प्रभो-मन्मथारिः।।
न-यावत्-उमानाथ-पादार-विन्दं, भजन्तीह-लोके-परे-वा-नराणाम्।
न-तावत्-सुखं-शान्ति-सन्ताप-नाशं, प्रसीद-प्रभो-सर्व-भूताधिवासं।।
न जानामि-योगं-जयं-नैव-पूजां, नतोऽहं-सदा-सर्वदा-देव-तुभ्यम्।
जरा-जन्म दुखौघता-तप्यमानं, प्रभो-पाहि-शापात्-नमामीश-शम्भो।।

रुष्द्राष्टकं-इदं प्रोक्तं, विप्रेण हर तुष्टये।
ये पठन्ति नरा-भक्त्या, तेषां शम्भुः प्रसीदति।।

दुर्गास्तुति

नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे, नमस्ते जगद्व्यापिके विश्वरूपे।
नमस्ते जगद्वन्द्य-पादारविन्दे, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
नमस्ते जगच्चिन्त्यमानस्वरूपे, नमस्ते महायोगिनि ज्ञानरूपे।
नमस्ते नमस्ते सदानन्दरूपे, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
अनाथस्य दीनस्य तृष्णातुरस्य, भयार्तस्य भीतस्य बद्धस्य जन्तोः।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारकर्त्री, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
अरण्ये रणे दारुणे शत्रुमध्ये, ऽनले सागरे प्रान्तरे राजगेहे।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारनौका, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
अपारे महादुस्तरेऽत्यन्तघोरे, विपत्सागरे मज्जतां देहभाजाम्।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारहेतुः, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।

नमश्चण्डिके चण्डदुर्दण्डलीला, समुत्खण्डिताखण्डिताशेषशत्रो।
त्वमेका गतिर्देव निस्तारबीजं, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
त्वमेवाघभावाधृतासत्यवादीर्न, जाताजितक्रोधनात् क्रोधनिष्ठा।
इडा पिङ्गला त्वं सुषुम्णा च नाडी, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
नमो देवि दुर्गे शिवे भीमनादे, सरस्वत्यरुन्धत्यमोघस्वरूपे।
विभूतिः शची कालरात्रिः सतिः त्वं, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।

सरस्वती वंदना

श्वेत-पद्मासना देवी श्वेत-पुष्पोप-शोभिता।
श्वेताम्बर-धरा नित्या श्वेत-गन्धानु लेपना।।
श्वेताक्षी शुक्ल वस्त्रा च श्वेत-चन्दन-चर्चिता।
वरदा सिन्धु-गन्धर्वैः ऋषिभिः स्तूयते सदा।।
स्तोत्रेणाऽनेन तां देवीं जगद्धात्रीं सरस्वतीम्।
ये स्तुवन्ति त्रिकालेषु सर्वविद्या लभन्ति ते।।

या देवी स्तूयते नित्यं ब्रह्मेन्द्र-सुर-किन्नरैः।
सा ममैवाऽस्तु जिह्वाग्रे पद्महस्ता सरस्वती।।

भज गोविन्दं भज गोविन्दं

दिनमपि रजनी सायं प्रातः शिशिरवसन्तौ पुनर् आयातः।
कालः क्रीडति गच्छति-आयु-तदपि न मुञ्चति-आशावायुः।।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ-करणे।
अग्रे वह्निः पृष्ठे भानू रात्रौ चिबुक-समर्पित जानुः
करतल भिक्षा तरु तल वासः, तदपि न मुञ्चति-आशा-पाशः।।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

यावत्-वित्तोपार्जन-सक्तः तावत् निज-परिवारो रक्तः।
पश्चात्-धावति-जर्जर-देहे वार्ता पृच्छति कोऽपि न जेहे।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, मूढमते।

जटिलो मुण्डी लुञ्चित-केशः, काषायाम्बर-बहु कृत वेषः।
पश्यन्नपि च न पश्यति मूढ, उदर-निमितं-बहु कृत वेषः।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, मूढमते।

भगवत्-गीता-किञ्चित्-अधीता, गङ्गा-जल-लव-कणिका पीता।
सकृदपि यस्य मुरारि-समर्चा, तस्य यमः किं कुरुते चर्चा।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, मूढमते।

अङ्गं गलितं पलितं मुण्ड़ं, दशनविहिनं-जातं-तुण्डम्।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं, तदपि न मुञ्चति-आशा-पिण्डम्।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, मूढमते।

बालः-तावत्-क्रीडा-सक्तः, तरुणःतावत्-तरुणी-रक्तः।
वृद्धः-तावत्-चिन्ता-मग्नः, परमे-ब्रह्मणि-कोऽपि-न-लग्नः।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, मूढमते।

पुनरपि-जननं-पुनरपि-मरणं, पुनरपि-जननी-जठरे-शयनम्।
इह संसारे-खलु-दुस्तारे, कृपयाऽ पारे-पाहि-मुरारे।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

पुनरपि-रजनी-पुनरपि-दिवसः, पुनरपि-पक्षः-पुनरपि-मासः।
पुनरपि-अयनं-पुनरपि-वर्ष, तदपि-न-मुञ्चति-आशा-मर्षम्।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

वयसि-गते-कः-कामविकारः, शुष्के-नीरे-कः-कासारः।
नष्टे-द्रव्ये-कः-परिवारो, ज्ञाते-तत्वे-कः-संसारः।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

नारीस्तन भर-नाभि निवेशं, मिथ्या-माया-मोहा-वेशम्।
एतत्-मांस-वसादि-विकारं, मनसि-विचारय-बारम्-बारम्।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

कः-त्वं-कोऽहं-कुत-आयातः, का-मे-जननी-को-मे-तातः।
इति-परि-भावय-सर्वम्-असारं, विश्वं-त्यक्त्वा-स्वप्न-विचारम्।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

गेयं-गीता-नाम-सहस्त्रं, ध्येयं-श्री-पति-रूपं-अजस्त्रम्।
नेयं-सज्जन-सङ्गे-चितं, देयं-दीन-जनाय-च-वित्तम्।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

यावत्-जीवो-निवसति-देहे, कुशलं-तावत्-पृच्छति-गेहे।
गत-वति-वायौ-देहापाये, भार्या-बिभ्यति-तस्मिन्-काये।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

सुखतः-क्रियंते-रामा-भोगः, पश्चात्-हन्त-शरीरे-रोगः।
यद्यपि-लोके-मरणं-शरणं, तदपि-न-मुञ्चति-पापा-चरणम्
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

कुरुते-गङ्गा-सागर-गगनं, व्रत-परि-पालनम्-अथवा-दानम्।
ज्ञान-विहीनः-सर्व मतेन, मुक्तिः-न-भवति-जन्मशतेन
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

गणेश स्तुति

हेमजा सुतं भजे गणेशं ईश नन्दनम्।, एकदन्त वक्र तुण्ड नाग यज्ञ सूत्रकम्।।
रक्त गात्र धूम्र नेत्र शुक्ल वस्त्र मण्डितम्।, कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तुते गजाननम्।।
पाशपाणि चक्रपाणि मूषकाधि रोहिणम्।, अग्निकोटि सूर्य ज्योति वज्रकोटि पर्वतम्।।
चित्रमाल भक्तिजाल भालचन्द्र शोभितम्।, कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुतेगजाननम्।।
विश्ववीर्य विश्वसूर्य विश्वकर्म निर्मलम्।, विश्वहर्ता विश्वकर्ता यत्र तत्र पूजितम्।।
चतुर्मुखं चतुर्भुजं सेवितं चतुर्युगम्।, कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुतेगजाननम्।।
भूत भव्य हव्य कव्य भर्गो भार्गव वन्दितम्।, देव वह्नि काल जाल लोकपाल वन्दितम्।।

पूर्ण ब्रह्म सूर्यवर्ण पुरुषं पुरान्तकम्।, कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुतेगजाननम्।।
ऋद्धि बुद्धि अष्टसिद्धि नव निधान दायकम्।, यज्ञकर्म सर्वधर्म सर्व वर्ण अर्चितम्।।
भूतधूत दुष्ट मुष्ट दान्वै सर्दार्चितम्।, कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुतेगजाननम्।।
हर्ष रूप वर्ष रूप पुरुष रूप वन्दितम्।, शोर्प कर्ण रक्त वर्ण रक्त चन्दन लेपितम्।।
योग इष्ट योग सृष्ट योग दृष्टि दायकम्।, कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुतेगजाननम्।।

आरती

दुर्गति-नाशिनि दुर्गा जय-जय, काल-विनाशिनि काली जय-जय।
उमा-रमा-ब्रह्माणी जय-जय, राधा-सीता-रुक्मिणि जय-जय।।
साम्ब सदाशिव, साम्ब सदाशिव, साम्ब सदाशिव जय शंकर।
हर-हर शंकर दुःखहर सुख कर, अघ-तम-हर हर हर शंकर।।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण-कृष्ण हरे हरे।।

जय-जय दुर्गा, जय मा तारा, जय गणेश जय शुभ-आगारा।
जयति शिवाशिव जानकि राम, गौरी शंकर सीताराम।।
जय रघुनन्दन जय सियाराम, व्रज-गोपी-प्रिय राधे श्याम।
रघुपति राघव राजा राम, पतितपावन सीताराम।।

तेरे पूजन को भगवान्

तेरे पूजन को भगवान, बना मन मन्दिर आलीशान।
किसने जानी तेरी माया, किसने भेद तुम्हारा पाया।।
हारे ऋषि-मुनि कर ध्यान, बना मन मन्दिर आलीशान।
तू ही जल में तू ही थल में, तू ही मन में तू ही वन में।
तेरा रूप अनूप महान, बना मन मन्दिर आलीशान।
तू हर गुल में, तु बुलबुल में, तू हर डाल के पातन में।

तू हर दिल में है मुर्तिमान, बना मन मन्दिर आलीशान।
तूने राजा रंक बनाये, तूने भिक्षुक राज बिठाये।।
तेरी लीला ऐसी महान, बना मन मन्दिर आलीशान।
झूठे जग की झूठी माया, मूर्ख इस में क्यों भरमाया।।
कर कुछ जीवन का कल्याण, बना मन मन्दिर आलीशान।।

आरती गणेश जी

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।
एक दंत दयावंत, चार भुजा धारी। मस्तक पर सन्दूर सोहे, मूसे की सवारी।।
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।
अंधन को आंख देत, कोढ़िन को काया। बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया।
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।
हार चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा। लड्डुअन का भोग लगे, संत करे सेवा।।
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।

शिवजी की आरती

शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं
सर्व विश्व का जो परमात्मा है,
सभी प्राणियों की वही आत्मा है।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ,
शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं
जिसे शस्त्र काटे न अग्नि जलावे
न पानी गलावे न मृत्यु मिटावे।
वही आत्मा सच्चिादानन्द मैं हूँ
शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं।।
अजर और अमर जिस को वेदों ने गाया
यही ज्ञान अर्जुन को हरि ने सुनाया।
अमर आत्मा है मरण शील काया
सभी प्राणियों के जो घट में समाया।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ
शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं
है तारी से तारों में प्रकाश जिस का
है चन्द्र व सूर्य में है वास जिस का
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ
शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं
शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं

आरती शंकर जी

जय शिव ओंकारा, भज जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्द्धंगी धारा, ओ३म् हर हर महादेव।।

एकानन चतुरानन पंचानन राजे, स्वामी पंचानन राजे।
हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजे, ओ३म् हर हर महादेव।।

दो भुज चारु चतुर्भुज दश भुज अति सोहे, स्वामी दस भुज अति सोहे।
तीनों रूप निखरत, त्रिभुवन-जन मोहे, ओ३म् हर हर महादेव।।

अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी, स्वामी मुण्डमाला धारी।
त्रिपुरारी कंसारी करमाला धारी, ओ३म् हर हर महादेव।।

श्वेताम्बर पिताम्बर बाघाम्बर अंगे, स्वामी बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक गरूड़ादिक भूतादिक संगे, ओ३म् हर हर महादेव।।

कर मध्ये सुकमण्डलु चक्र त्रिशूल धारी, स्वामी चक्र त्रिशूल धारी।
सुखकारी दुखहारी जग-पालन कारी, ओ३म् हर हर महादेव।।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका, स्वामी जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका, ओ३म् हर हर महादेव।।
त्रिगुण स्वामी की आरती जो कोई नर गावे, स्वामी जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे, ओ३म् हर हर महादेव।।

आरती लक्ष्मी जी

ओ३म् जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशदिन सेवत, हर विष्णु दाता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता।।
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तु ही जग माता, मैया तु ही जग माता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता।।

दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-सम्पति दाता। मैया तु ही सुख-सम्पति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता।।

तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता, मैया तु ही शुभदाता।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता।।

जिस घर में तुम रहती, सब सद्‌गुण आता, मैया सब सद्‌गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता।।

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता, मैया वस्त्र न हो पाता।
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता।।

शुभ-गुण मंदिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता, मैया क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाला, ओ३म् जय लक्ष्मी माता।।

महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई जन गाता, मैया जो कोई जन गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता।।

गंगा माँ

ओ३म् जय गंगे माता, मैया जय गंगे माता।
जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता, ओ३म् जय गंगे माता।
चन्द्र सी ज्योति तुम्हारी, जल निर्मल आता, मैया जल निर्मल आता।
शरण पड़े जो तेरी, सो नर तर जाता, ओ३म् जय गंगे माता।
पुत्र सागर के तारे, सब जग को ज्ञाता, मैया सब जग को ज्ञाता।
कृपा दृष्टि हो तुम्हारी, त्रिभुवन सुख दाता, ओ३म् जय गंगे माता।
एक बार जो प्राणी, शरण तेरी आता, मैया शरण जो तेरी आता।
यम की त्रास मिटाकर, परमगति पाता, ओ३म् जय गंगे माता।
आरती मातु तुम्हारी, जो नर नित गाता, मैया जो नर नित गाता।
सेवक वही सहज में, मुक्ति को पाता, ओ३म् जय गंगे माता।

आरती

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे, ओ३म् जय जगदीश हरे।।
जो ध्यावे फल पावे दुःखविनशे मन का, स्वामी दुःखविनशे मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवे कष्ट मिटे तन का, ओ३म् जय जगदीश हरे।।
मात-पिता तुम मेरे शरण पड़ूँ मैं किसकी, स्वामी शरण पड़ूँ मैं किसकी।
तुम बिन और ना दूजा आस करूँ मैं जिसकी, ओ३म् जय जगदीश हरे।।
तुम-पूरण-परमात्म तुम अन्तर्यामी, स्वामी तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी, ओ३म् जय जगदीश हरे।।
तुम-करुणा के सागर तुम पालन कर्त्ता, स्वामी तुम पालन कर्त्ता।
मैं सेवक तुम स्वामी कृपा करो भर्त्ता, ओ३म् जय जगदीश हरे।।
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति, स्वामी तुम सबके प्राणपति।
किस विधि मिलों दयामय तुमको मैं कुमति, ओ३म् जय जगदीश हरे।।

दीन बन्धु दुःख हर्ता रक्षक तुम मेरे, स्वामी रक्षक तुम मेरे।
अपने चरण लगावो द्वार पड़ा में तेरे, ओ३म् जय जगदीश हरे।।
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा, स्वामी पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा, ओ३म् जय जगदीश हरे।।

भवसर कुस तरि

आदि प्रभातन युस दय नाव स्वरि।, सुय हा यमि भवसर तरि लो लो।।
भावनाइ सान सुस तस पूजा करि, सुय हा यमि भवसर तरि लो लो।।
सुलि प्रभातन श्रान ध्यान करि, गरि गरि हर हर परि लो लो।।
द्वख त संकट तस पान भगवान् हरि, सुय हा यमि भवसर तरि लो लो।।
गृहस्थ आश्रम कुय युस व्रत दरि, लूक सीवाई प्यठ मरि लो लो।।
निष्काम कर्मन लोला युस बरि, सुय हा यमि भवसर तरि लो लो।।
सन्तोष व्रच प्यठ मन युस थ्यर करि, हर सात सुय व्रत दरि लो लो।

सुख त शान्ती हुंद युस हलमा बरि, सुय हा यमि भवसर तरि लो लो।
श्वास आश्वासस दय नाव युस स्वरि, दय सुन्द ध्याना दरि लो लो।
लय रोजि तथ मंज कारूबारा करि, सुय हा यमि भवसर तरि लो लो।।
पऽछय सीवाय प्यठ पान अर्पण करि, बेलूस बऽग रावि घरि लो लो।
ड्यक मुचरिथ युस दान धर्मा करि, सुय हा यमि भवसर तरि लो लो।।
हु त ब्ह मशरावि सारिनीय लोल भरि, लोलुक सोदा करि लो लो।
जीव जाचन सूत लो लुच माय बरि, सुय हा यमि भवसर तरि लो लो।।
काम क्रूध लूभ मोह अहंकार यस खरि, सत-असत वार सर करि लो लो।
अपज़िस दुय करि पजरस लोल बरि, सुय हा यमि भवसर तरि लो लो।।
तरवुन करनोव आलव दिवान तरि, कंसि मा छु तरुन घर लो लो।
आलुस त्राविथ उद्यूग युस करि, सुय हा यमि भवसर तरि लो लो।।
प्रथ शायि मंज़ जानुन कुस वास करि, सोरुय कस मंज! स्वरि लो लो।
बेबस जानिथ देह अद त्याग करि, सुय हा यमि भवसर तरि लो लो।।

व्रत

पर्व और त्यौहार

पिछले वर्ष मैं ने 'व्रत' के विषय में थोड़ा बहुत लिखा था इस वर्ष पर्व तथा त्यौहार के विषय में लिख रहा हूँ सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर यह तीनों विषय आपस में ओत प्रोत हैं प्रत्येक में एक-एक गुण प्रधान है और शेष आंशिक रूप से मिश्रित हैं

पर्वः- व्रत का बडा भाई है, 'व्रती' व्रत को स्वाधीन रूप में अकेला या जन समुदाय के साथ कर सकता है परन्तु पर्व में अगणित लोग होने पर तथा तीर्थ स्थानादि में जाने आदि के कारण से उस का स्वरूप बदल जाता है इस प्रकार के पर्वोत्सवों से केवल स्थानीय जनता को ही नही, देश देशान्तरों के अगणित मनुष्यों को अनेक प्रकार का लाभ होता है, पर्व में सवार्धिक मनुष्य एकत्रित होते है, पर्व तीर्थादि पर या मन्दिरों में भी सम्पन्न होते हैं जैसे रक्षावन्धन, जन्माष्टमी, कुम्भ पर्व इत्यादि

त्यौहारः- पहले कहा गया है कि व्रत, पर्व और त्यौहार किसी अंश में एक ही हैं केवल उपासना के न्यूनाधिक और साधान के भेद से उन के स्वरूप सूक्ष्म, दीर्ध और महतम हो जाते हैं, त्यौहार में यथा योग्य मनुष्य एकत्रित होते है, त्यौहार घर, बाहिर, हर जगह सम्पन्न होते हैं त्यौहारों में अलग अलग प्रकार के भोजन-पदार्थ बनाये जाते है कोई भी त्यौहार हो उस में चाहे किसी भी देवता की पूजा हो कुछ न कुछ मिष्ठान्न अवश्य बनता है जैसे दशहरा, होली, दीपावली, इत्यादि।

हमारे कुछ पर्वः- गत वर्ष भी मैं ने कुछ पवों के विषय में लिखा था हो सकता उनके विषय में थोडी बहुत

जानकारी आप को मिली होगी इस वर्ष भी कुछ पर्वों के विषय में लिख रहा हूँ। हमारा जो भी कोई पर्व है उस के पीछे कुछ न कुछ पृष्ठ भूमि रही है।

जंग त्रयः- *(गन गौर व्रत या गौरी तृतीया)* यह दिन चैत्र नवरात्रों का तीसरा दिन है यह दिन स्त्री समाज में एक पर्व के रूप में मनाया जाता है हम काश्मीरी पण्डित इस पर्व को '**जंग त्रय**' के रूप मे तथा शेष सभी इस को गन गौर *(अथवा गौरी तृतीया)* के रूप में मनाते है शास्त्रों में दर्ज है कि आज के दिन भगवान् शंकर ने पार्वती को तथा पार्वती जीने समस्त स्त्री समाज को सुहागिन रहने का वरदान दिया था। यह व्रत विवहिता लड़कियाँ के लिये पति का अनुराग उत्पन्न करने वाला व्रत है इसी कारण हमारी लड़कियां, बहनें, मातायें अपने मायके जाकर अपने माता-पिता से सुहागिन रहने का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं क्योंकि माता पिता से बढ़कर कोई भी इस संसार में नहीं है।

दुर्गाष्टमीः- यह पर्व चैत्र शुक्ल अष्टमी को मनाया जाता है इस को अशोक व्रत भी कहते हैं कूर्म पुराण के अनुसार इस दिन 'अशोक' वृक्ष की पूजा करने की प्रथा भी है ऐसा करने से व्रती सदैव शोक रहित रहता है। भविष्य पुराण के अनुसार इस दिन भवानी का प्रार्दुभाव हुआ था, नवरात्रों के पश्चात् इसी दिन दुर्गा का विसर्जन किया जाता है इस लिये इस को '**दुर्गाष्टमी**' भी कहते है।

रामनवमीः- यह व्रत चैत्र शुक्ल नवमी को मनाया जाता है इस दिन पुनर्वसु, नक्षत्र तथा कर्क लग्न पर कौशल्या की कोख से भगवान् राम का जन्म हुआ है, भारतीय संस्कृति में यह दिन पुण्य का पर्व माना जाता है, महाकवि तुलसीदास ने भी इसी दिन से '**रामचरित्र मानस**' की रचना आरम्भ की थी, इस व्रत से हमें मर्यादा पुरुषोत्तम

के चरित्र, आदर्शों, गुरुसेवा, शरणागत की रक्षा, भ्रातृ प्रेम, मातृ-पितृ भक्ति, एक पतिव्रता इत्यादि चरित्रों के अपनाने की प्रेरणा मिलती है।

अछिन त्रयः- *(अक्षिया तृतीया)* यह पर्व वैशाख शुक्ल तृतीया को मनाया जाता है शास्त्रानुसार इस दिन का किया हुआ तप, दान अक्षयफलदायक होता है इसी लिये इस को अक्षया तृतीया कहते हैं। इसी दिन परशुराम जयन्ती भी मनाई जाती है, ज्योतिष में भी इस दिन का बडा महत्व है यह पांच स्वयं सिद्ध मुहूर्तों में से एक मुहूर्त है अर्थात् मुहूर्त न होने पर भी आप इस दिन कोई भी शुभ काम कर सकते हैं।

संकट चतुर्थीः- यह व्रत प्रत्येक महीने की कृष्णपक्ष चतुर्थी को किया जाता है भविष्य पुराण के अनुसार यदि किसी प्राणी को निकट भविष्य में किसी अनिष्ट की आशंका हो या पहले से ही वह संकटों व मुसीबतों से घिरा हो तो उसे छुटकारा पाने के लिये **'संकट चतुर्थी'** का व्रत रखा जाता है।

नवरात्र नवरात्रों का शाब्दिक अर्थ है नौ रातें, भगवती दुर्गा इन नौ रातों में नव रूप धारण करती है (1) *शैल पुत्री* (2) *ब्रह्मचारिणी* (3) *चन्द्रघण्टा* (4) *कूष्माण्डा* (5) *स्कन्धमाता* (6) *कत्यायनी* (7) *कालरात्रि* (8) *महागौरी* (9) *सिद्धिदात्री*। नव रात्र वर्ष में दो बार आते हैं एक चैत्र में दूसरा आश्विन में। काश्मीरी पण्डितों का नवरेह भी चैत्र के नवरात्र पर होता है और नये सम्वत्सर का आरम्भ भी चैत्र नवरात्र से होता है ऐसा क्यों? ब्रह्म पुराण में लिखा है :-

चैत्रे मासे जगद् ब्रह्मा ससर्जा प्रथमेऽहनि, शुक्ल पक्षे समग्रं तु तदा सूर्योदये सति।।

अर्थात् ब्रह्मा ने चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के सूर्योदय पर इस सृष्टि की रचना की है इसी कारण सम्वत्सर का आरम्भ भी आज के दिन से ही होता है। **विजयेश्वर पंचांग** का आरम्भ भी इसी दिन से होता है।

नवरात्र चैत्र और अश्विन में ही क्यों होते है?

ऋतु विज्ञान के अनुसार यह दोनों मास सर्दी, गर्मी की सन्धि के महत्व पूर्ण मास हैं। ऋतुयें 6 मानी जाती हैं परन्तु वस्तुतः वे दो ही हैं शीत और ऊष्ण *(सर्दी और गर्मी)* शीत का पदार्पण आश्विन में आरम्भ होता है और गर्मी का चैत्र से। एक ऋतु का पदापर्ण होने से पूरे संसार में हलचल आरम्भ हो जाता है, वृक्ष, लता, जल, आकाश और वायुमण्डल सभी में परिवर्तन होने लगता है यह हमारे स्वास्थ्य पर विशेष प्रभाव डालता है, शास्त्र कारों ने भी इन्ही मासों *(चैत्र तथा आश्विन)* में शरीर को पूर्ण स्वस्थ रखने के लिये नव दिनों का विशेष विधान किया है भगवती महामाया की आराधना के लिये जौ बोये जाते हैं वर्ष का पहला अन्न जौ होने से सब अन्नों में प्रधान अन्न है भगवान् कृष्ण ने भी श्रीमद् भागवत् में कहा है **"औषधीनामहं यवः"** अर्थात् औषधियों में मैं जौ के रूप में हूँ, शास्त्रों में भी आता है **'यवोऽसि धान्य राजोऽसि'** अर्थात् तुम जौ हो आप धान्यों के राजा हो। उन नव दिनों में नित्य ब्राह्मी मुर्हूत में उठ कर नियम पूर्वक व्रत रख कर भगवती की आराधना की जाती है 9 दिनों तक एक वक्त फलाहार करते हुये, भूमिशयी बन कर ब्रह्मचर्य का पालन किया जाता हैं **"स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु"** के अनुसार सम्पूर्ण स्त्रियों को जगदम्बा का ही रूप माना जाता है।

नवरात्रों में कन्या पूजन क्यों? नवरात्रों के अन्त पर अष्टमी या नवमी के दिन छोटी-छोटी कन्याओं

का पूजन करते हैं शास्त्रों में दर्ज है **"स्त्रियः समस्तास्तव देवि! भेदाः"** अर्थात् समस्त नारी महामाया का ही रूप है उन में भी नग्निका (जिन को स्त्री पुंभिदा का ज्ञान न हो तथा अपने अंग ढांपने का भी बोध न हो) निर्विकार होने के कारण दुर्गा रूप में पूजने योग्य हैं। हमारे प्रत्येक धार्मिक त्योहार में सामाजिक बन्धन भी अवश्य होता है जैसे कि कुमारिका पूजन का पहला नियम है पूजक को ज्ञान प्राप्ति के लिये ब्राह्मण कन्या का, बल प्राप्ति के लिये क्षत्रिय कन्या का, धन प्राप्ति के लिये वैश्य कन्या का और शत्रु विजय के लिये शद्र कन्या का पूजन करना चाहिये इसे चारों वर्गों में आपस में आदान प्रदान होता हैं और समाजिक संघठन भी दृढ़ होता है जिस की ज़रूरत पूरे देश को है।

शिव रात्रि (हेरथ) काश्मीरी पण्डितों का विशेष तथा महत्वपूर्ण 'व्रत' है, महाशिवरात्रि का पर्व पूरे भारत में मनाया जाता है परन्तु मनाने का डंग अलग अलग है हम काश्मीरी पण्डित फाल्गुन कृष्ण प्रतिपदि (हुरि अकदोह) से ही इस व्रत की तयारी में लग जाते है यह पर्व हम पूरे 15 दिन तक मनाते है, कश्मीरी पण्डित जहाँ भी है शिवरात्रि को अवश्य मनाता है इस शुभ अवसर पर अलग अलग प्रकार के पकवान बनाये जाते है, पूजा करने के लिये पूजाघर को सज़ाया जाता है तथा परिवार के सभी सदस्य इकट्ठे होकर रात देर तक पूजा में लीन होते है तत्पश्चात् भोजन करते है इस को प्रदोष व्रत भी कहते है प्रदोष व्रत प्रत्येक मास के कृष्ण तथा शुक्ल पक्ष में त्रयोदशी को किया जाता है इस दिन भगवान् शिवजी की पूजा की जाती है **'भैरव याग'** में लिखा है कि फाल्गुन कृष्णपक्ष त्रयोदशी को शंकर की दृष्टि से घडे में से ज्योति रूप वटुक भैरव आधी रात्रि में प्रकट हुये है।

प्रदोष किस को कहते है? प्रदोष का वास्तविक अर्थ है सूर्यास्त या सायं काल या रात्रि का आरम्भ। **"प्रदोषोऽस्तमयादूर्ध्वं घटिका द्वयमिष्यते"** अर्थात् सूर्यास्त से दो घड़ी रात बीतने तक का समय प्रदोष कहलाता है। हम *'शिव रात्रि'* कभी **द्वादशी** को कभी **'त्रयोदशी'** को मनाते हैं ***ऐसा क्यों***?

इस विषय मे हमारे धर्म शास्त्र, निर्णय सिन्धु, इत्यादि ग्रन्थों में विस्तार पूर्वक लिखा है परन्तु यह किसी भी शास्त्र में नही लिखा है कि एक ही सम्प्रदाय के लोग एक ही व्रत को कई लोग एक दिन तथा कई लोग दूसरे दिन मनाये। हम हभी कश्मीरी पण्डित सारस्वत ब्राह्मण है इस में किसी प्रकार का सन्देह किसी को नही है यदि एसी बात है तो एक ही व्रत को दो भागों में बाटना कहाँ का विधान है।

शिवरात्रि कब मनानी चाहिये शास्त्रों के अनुसार :-

(1) यदि फाल्गुन कृष्णपक्ष द्वादशी तथा त्रयोदशी को दोनों दिन त्रयोदशी प्रदोष में हो ऐसा होने पर जिस दिन अर्ध रात्रि में त्रयोदशी हो उसी दिन **"शिव रात्रि"** मनानी चाहिये।

(2) जब दोनों दिन द्वादशी तथा त्रयोदशी को अर्ध रात्रि में त्रयोदशी होगी तो ऐसा होने पर जिस दिन प्रदोष में त्रयोदशी हो उसी दिन **"शिव रात्रि"** मनानी चाहिये।

(3) जब द्वादशी या त्रयोदशी को दोनों दिन प्रदोष में त्रयोदशी न हो ऐसा होने पर जिस दिन अर्ध रात्रि में त्रयोदशी हो उसी दिन **"शिव रात्रि"** मनानी चाहिये।

(4) जब द्वादशी तथा त्रयोदशी दोनों अर्ध रात्रि में हूँ तो प्रदोष तथा अर्ध रात्रि वाली त्रयोदशी के दिन **"शिव रात्रि"** मनानी चाहिये।

इस वर्ष 10 मार्च 2002 को द्वादशी रात के 12 बज कर 20 मिन्ट तक है तथा त्रयोदशी 11 मार्च को रात के 2 बज कर 37 मिन्ट तक है अर्थात् इस दिन 11 मार्च को त्रयोदशी प्रदोष तथा अर्धरात्रि को है इस कारण **11 मार्च 2002 को शिव रात्रि है।**

जन्माष्टमी:- भगवान् कृष्ण का जन्म भाद्रकृष्ण पक्ष अष्टमी बुधवार को रोहिणी नक्षत्र में अर्ध रात्रि के समय वृष राशि के चन्द्रमा में हुआ है जन्माष्टमी कब मनाई जाये शास्त्रों में दर्ज है कि जिस दिन अर्ध रात्रि में अष्टमी हो उसी दिन जन्माष्टमी मनानी चाहिये इस वर्ष 11 अगस्त को सप्तमी रात के 1 बजे 10 मिनट तक है और 12 अगस्त को अष्टमी रात के 1 बजे 25 मिनट तक है अर्थात् 12 अगस्त को अर्ध रात्रि में अष्टमी है इस कारण **'जन्माष्टमी'** का व्रत 12 अगस्त को ही है।

नोट:- यदि किसी भी महानुभाव को विजयेश्वर पंचांग के किसी भी विषय में कुछ संशय हो तो दूरभाष 555607 पर सम्पर्क करके अपने संशय को दूर कर सकता है।

अधिमास मलमास पुरुषोत्तम मास

सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में जाना संक्रान्ति कहलाता है, जिस चान्द्र मास में संक्रान्ति नही होती है तो उस को अधिमास, मलमास अथवा पुरुषोतम मास कहते हैं। यह सामान्य 32 मास 16 दिन 4 घड़ी बीतने के पश्चात आता है। *शास्त्रों में दर्ज है :-* **"संक्रान्ति रहित : सितादिश्चान्द्रो मलमासः",**

"असंक्रान्ति मासोधिमासः स्पटः स्यात्"।

मलमास में कर्तव्याकर्तव्य का ज्ञान (शास्त्रानुसार)

(1) यदि वार्षिक श्राद्ध से पहले मलमास हो तो तेराह मास का वर्ष होता है अर्थात् 13 मासों के पश्चात् वार्षिक श्राद्ध आता है।

(2) यदि मलमास में ही किसी का मृत्यु हो तो उस के बारह मास के पश्चात ही वार्षिक श्राद्ध होता है।

(3) मलमास में कोई भी शुभ कार्य नही किया जाता है।

इस वर्ष अधिमास (मलमास) 17 सिप्तम्बर को 3 बजे 57 मि॰ से आरम्भ होकर 16 अक्टूबर रात को 4 बज कर 53 मि॰ पर समाप्त होता है इस कारण 17 सिप्तम्बर से 16 अक्टूबर तक कोई शुभ काम नही करना चाहियें। इस विषय में यदि किसी को कोई संशय होगा तो 555607 पर सम्पर्क करके अपने संशाय को दूर कर सकता है।

महापुरूषों के अनमोल वचन

(1) चिन्ताओं का रास्ता हमारे अपने विचारों के कारण ही खुलता है।

(2) तनाव ग्रस्त रहने से स्वास्थ्य विगडता है और आयु कम होती है।

(3) अपने आप पर संयम रखने वाले ही सुख की नींद सोते है।

(4) जो कुछ आप के पास है उसी पर सन्तोष करो।

(5) कुछ नही करोगे तो कुछ नही बनोगे।

(6) जो कत्तर्व्य से बचता है लाभ से वंचित रहता है

(7) आत्मविश्वास का अभाव ही सब अंधविश्वास का जड है।

(8) यदि आप भला चाहते हैं तो किसी का बुरा न करो।

(9) यदि आप सुख चाहते हैं तो किसी को दुखी न करो।

(10) यदि आप शन्ति चाहते हैं तो क्रोध और लोभ छोड दो।
(11) यदि आप विद्या चाहते हो तो विद्या का दान करो।
(12) यदि आप मेवा चाहते हो तो बडों की सेवा करो।
(13) डर और शक के विचार जिन्दगी में ज़हर गोल देते हैं।
(14) सतसंग से अन्धे को आंख और मुरदे को जीवन मिलता हैं।
(15) सत संग दुखों से छुटकारा दिलाता है और मन को शान्ति देता है।
(16) प्रेम करना पाप नही है पर प्रेम को लेकर पागल् हो जाना अनुचित है।
(17) प्रेम की कसौटी त्याग है।
(18) मन, वाणी और शरीर का पूरे समयम में रहना ही ब्रह्मचर्य है।
(19) अज्ञान जैसा दूसरा शत्रु नही है।
(20) टूट जाओ पर अन्याय के आगे मत झुको।

गृहस्थों के लिये साधारण नियम

(1) प्रातः काल सूर्योदय से पहले उठो।
(2) उठते ही भगवान् का स्मरण करो।
(3) शौच-स्नानादि से निवृत्त होकर भगवान् की उपासना, तपर्ण आदि करो।
(4) समय पर सात्विक भोजन करो।
(5) रोज प्रातः काल माता, पिता, गुरू आदि वड़ों को प्रणाम करो।
(6) इन्द्रियों के वश न होकर, उन को वश में करके उन से यथायोग्य काम लो।
(7) धन कमाने में छल, कपट, चोरी, असत्य और वेईमानी का त्याग करो।
(8) पूरे परिवार का पालन प्रेम से करो।
(9) अपनी हैसियत के अनुसार दान करो
(10) अतिथि का सच्चे मन से सत्कार करो।
(11) सब कामों को वडी सुन्दरता, सफाई और नेक नियती से करो।

(12) किसी का अपमान तिरस्कार और अहित न करो।
(13) मन, वचन और शरीर से पवित्र और परोपकारी बनो।
(14) विलासिता से बचे रहो - अपने लिये खर्च कम करो।
(15) स्वावलम्भी बन कर रहो - दूसरे पर अपने जीवन का भार न डालो।
(16) निकम्मे कभी मत रहो।
(17) अन्याया का पैसा तथा दूसरे के हक का पैसा घर में न आने दो।
(18) सब काम भगवान् की सेवा के भाव से - निष्काम भाव से करने की चेष्टा करो।
(19) जीवन का लक्ष्य भगवत्प्रप्ति है, भोग नही - सारे काम इसी लक्ष्य की साधना के लिये करो।

प्रश्नोत्तरी

प्र॰: *पुण्य किसे कहते है?*
उ॰: परोपकार ही पुण्य है, वेद विहित कर्म ही पुण्य है।
प्र॰: *पाप किसे कहते है?*
उ॰: दूसरों को पीडा पहुचाना ही पाप है, वेद निषिद्ध हेय कर्म ही पाप है
प्र॰: *शुचि किसे कहते है?*
उ॰: धार्मिक दृष्टि से पवित्र वस्तु को शुचि कहते हैं।
प्र॰: *व्रत कितने समय का होता है?*
उ॰: आप ने जो भी व्रत रखना हो वह दूसरे दिन सूर्योदय तक होता है जैसा कि आप रात के बारह बजे तक मानते है वह शास्त्र के विरूद्ध है। व्रती को चाहिये कि वह दूसरे दिन सूर्योदय तक व्रत रखें।
प्र॰ : *जप के कितने भेद हैं?*
उ॰ : शास्त्रों में जप के तीन भेद है :-
वाचिक - उपांशु - मानसिक
(1) जप करते समय मन्त्र यदि दूसरा सुन सके तो वह '**वाचिक**' जप कहलाता है।
(2) जप करते समय मन्त्र यदि अपने आप को ही

सुनाई दे तो वह '**उपांशु**' जप कहलाता है।

(3) जप करते समय यदि जीभ वह होंठ न हिलें तथा मन ही मन ध्यान करते जप किया जाये तो '**मानसिक**' जप कहलाता है।

प्र० : *जप माला किस चीज़ की बनी हुई होनी चाहिये तथा उस में कितने मणके होनें चाहिये?*

उ० : निम्नलिखित पदार्थों में माला बनाई जा सकती है परन्तु एक ही माला में दो पदार्थों का मिश्रण नही होना चाहिये। (1) *रूद्राक्ष* (2) *शंख* (3) *कमल गट्ठे* (4) *मोती* (5) *स्पटिक* (6) *मणि* (7) *रत्न* (8) *स्वर्ण* (9) *मूंगा* (10) चान्दी (11) *कुशमूल*। समस्त कामना सिध्दि के लिये 108 मणियों की माला का प्रयोग करना चाहिये।

प्र० : ***यज्ञोपवीत क्या है?***

उ० : यज्ञोपवीत शब्द 'यज्ञ' और '**उपवीत**' इन दो शब्दों के संयोग से बना है जिस का अर्थ है यज्ञ को प्राप्त करने वाला वेद में लिखा है:- '**यज्ञो वै विष्णुः**' अर्थात् परमात्मा को प्राप्त कराने वाला 'यज्ञ के लिये धारण किये जाने वाला उपवीत (सूत्र) '**यज्ञेन संस्कृतमुपवीतम्**' अर्थात् यज्ञ से पवित्र किया हुआ सूत्र। कुछ व्याख्या कारों का मत है '**यज्ञार्थ-उपवीतां-यज्ञोपवीतम्**' यज्ञ के लिये जो सूत्र धारण किया जाये अथवा जिस के धारण करने पर मनुष्य को यज्ञ करने का अधिकार प्राप्त हो उसे '**यज्ञोपवीत**' कहा जाता है।

यज्ञोपवीत को ब्रह्म सूत्र भी कहते हैं क्यों?

जब ब्रह्मचारी गुरुकुल में होता था तो वह स्वयं अपने हाथ से कपास का सूत्र कातता था, सूत्र कातते समय वह ब्रह्मचारी लगातार "ॐ" शब्द, का उच्चारण करता था "ॐ" चूंकि ब्रह्म का नाम है इस लिये यज्ञोपवीत को

'**ब्रह्म सूत्र**' भी कहते हैं।

जातकर्म (काह नेथर) क्या है?

जातकर्म संस्कार का तात्पर्य उस के नाम से ही स्पष्ट है जातकर्म का वास्तविक अर्थ है वे क्रियाये जो बच्चे को उत्पन्न होने पर की जाती है 10 दिन तक अशौच होने के कारण जातकर्म तथा नाम काण संस्कार ग्यारहवें अथवा बारहवें दिन में करने का विधान है इस दिन बच्चे को औषधियों से स्नान इत्यादि करके सब सम्बन्धियों के सामने यज्ञ में वेद मन्त्रों से आहुतियां दी जाती है जैसे :- **"अश्मा भव, परशुर्भव-हिरण्यमश्रुतं भव-सजीव शरदः शतम्।"**

अर्थः- हे बालक ! तू पत्थर की भान्ति द्रढ तथा कुल्हाडे की भान्ति शत्रु विनाशक बन, स्वर्ण के समान स्वच्छ तथा तेजस्वी बन, तू सौ वर्ष तक जी, इत्यादि इस प्रकार की पावन वेद ऋचाये बालक के निर्मल हृदय पर दृढता, पराक्रम, तेज आदि शुभ गुणों की छाप छोडती है जो कि बच्चे के भविष्य के लिये ज़रूरी है। यदि ग्यारहवें अथवा बारहवें दिन बच्चे का जातकर्म नही किया जायेगा तो एक वर्ष तक मुर्हूत अनुसार आप जातकर्म कर सकते हैं।

नाम करण क्या है?

जात कर्म के दिन ही बच्चे का नाम भी रखा जाता है परन्तु नाम करण संस्कार का अपना अलग ही महत्व है क्योंकि किसी के गुण अवगुण जानने के लिये '**नाम**' को एक प्रमुख स्थान मिला है, सभी विद्वान, व्यक्ति, लेखक, कवि, वैज्ञानिक इत्यादि अपनी वस्तु का नाम बहुत सोच समझ कर रखते हैं प्राचीन काल में भी '**यथा नाम तथा गुणः**' जैसा नाम वैसा गुण के सिद्धान्त पर बहुत बल दिया जाता था, नाम का प्रभाव विजली से भी

अधिक चमत्कारी है मनु महाराज ने कहा है :- ***"आयुर्वचोऽभिवृद्धिश्च सिद्धिर्व्यवहृतेस्तथा"***

अर्थः- नाम करण के दो प्रयोजन है बच्चे के तेज तथा आयु की वृद्धि इन दोनो प्रयोजनों के लिये यह एक उत्सव के रूप में मनाया जाता है इस में अपने सभी सम्बन्धी गुरूजन एवं मित्र सम्मिलित होते है और वैदिक मन्त्रों से अग्नि में आहुतियां डाली जाती है तथा बच्चे के दीर्घायुः के लिये प्रार्थना की जाती है।

शंख फूंकने (बजाने) से क्या लाभ है?

शंख अर्थात् बडा समुद्रीय घोंघा, जो विशेषतया देवतादि के सामने बजाया जाता है और पवित्र माना जाता है और प्रायः प्रत्येक धार्मिक पर्व पर बजाया जाता है। शंख के विषय में *अर्थववेद* में लिखा है :- **"शंखेन हत्वा रक्षांसि"** अर्थात् शंख बजाने से राक्षस मर जाते हैं। *यजुर्वेद* में लिखा है:- **"अवरस्पराय शंखध्वम्"** अर्थात् शत्रुओं का हृदय दहलाने के लिये शंख बजाया जाता है।

शास्त्रों में लिखा है:- ***यस्तु शंखध्वनि कुर्यात्पूजा काले विशेषतः।***
विमुक्तः सर्वपापेन विष्णुना सह मोदते।।

अर्थात्ः- जो पुरुष विशेषता से पूजा के समय शंख बजाता है उस के सव पाप नष्ट हो जाते हैं और विष्णु भगवान् के साथ आन्नद करता है। भारत के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक **जगदीशचन्द्र बसु** ने अपने यन्त्रों द्वारा दिखाया है कि एक बार शंख फूंकने (बजाने) पर जहां तक उस की ध्वनि जाति है वहां तक अनेक बीमारियों के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं, रोज शंख फूंकने से वायुमण्डल कीटाणुओं से रिक्त होता है। जो महानुभाव नित्य शंख बजाता है उस को फेफड़े का रोग कभी भी नही होगा।

मांस खाना पाप (शास्त्रों के आधार पर)

स्वामांसं परमांसेन यो वर्धयितुम् इच्छति, नारदः प्राह धर्मात्मा नियतं सोवसीदति।।

अर्थः- जो दूसरे के मांस से अपना मांस बढाना चाहता है वह निश्चय से दुःख उठाता है।

आहर्ता चानुमन्ता च विशस्ता क्रयविक्रयी, संस्कर्ता चोप भोक्ता च खादकाः सर्व एव ते।।

अर्थः- जो हत्या के लिय पशु पालता है, जो उसे मारने की अनुमति देता है, जो उस का वध करता है, जो खरीदता है, बेचता है, पकाता है, खाता है वे सब के सब खाने वाले ही माने जाते हैं तथा सब पाप के भागी होते हैं।

ये भक्षयन्ति मांसानि भूतानां जीवितैषिणाम्, भक्ष्यन्ते तेऽपि भूतैस्तैरिति मे नास्ति संशयः।।

अर्थः- जो जीवित रहने की इच्छा वाले प्राणियों के मांस को खाते है वे दूसरे जन्म में उन्ही प्राणियों द्वारा भक्षण किये जाते हैं इस में किसी प्रकार का संशय नही है।

मां स भक्षयते यस्मात् भक्षयिष्ये तमप्यहम्।

अर्थः- आज मुझे वह खाता है तो कभी मैं भी उसे खाओं गा।

यत्र प्राणि-वधो धर्म : अधर्मस्तत्र कीदृशः, ब्राह्मणो यत्र मांसाशी चांडालस्तत्र कीदृशः।

अर्थः- जहां प्राणिहत्या धर्म माना जाता है अधर्म के विषय में वहां क्या कहा जाये, जहां ब्राह्मण ही मांस खाता हो वहां चण्डाल कैसा होगा। --

देव यज्ञे पितृश्राद्धे तथा मागंल्य कर्मणि, तस्यैव नरके वासो यो कुर्यात् जीवघातनम्।
अर्थः- देव यज्ञ पर पितृश्राद्ध पर किसी अच्छे पर्व पर जो मांस का प्रयोग करता है उसे अवश्य नरक मिलता है।

"मा हिंस्यात्सर्वा भूतानि" *(वेद)* ***अर्थः***- किसी भी प्राणि का वध न करो।

तर्पण क्या देवता, ऋषि तथा पितरों को किया हुआ जल *तर्पण* मिलता है?

इस प्रकार के प्रश्न पिंडदान-अन्नदान तर्पणादि के बारे में किये जाते हैं। यह बात सही है कि नदी के तट पर अथवा घर में या जहां कहीं भी हम तर्पण, पिंडदान इत्यादि करते है वह वहां ही पडा रहता है जहां हम करते है वह कंही जाता नहीं है परन्तु यह तर्पणदि अपने पूर्वजों को याद करने का एक निमित बनता है प्रातः उठ कर स्नानादि करके पितरों (अपने माता-पिता) को याद करना अथवा उन के निमित कुछ देना हमारा सौभाग्य है उन पितरों को याद करते ही हमारे मन की सूक्ष्म लहरें उन पितरों को वे जहां भी हूं, जिस योनि में हूं अवश्य पहुंच जाती हैं आज के वैज्ञानिक कहते हैं कि रोशनी से अधिक तेज़ रफतार वाली कोई पदार्थ संसार में नही है परन्तु **यजुवेर्द** कहता है **"यत् जाग्रतो दूरं-उदैति"** अर्थात् मन से अधिक तेज़ रफतार का कोई पदार्थ न ही है तर्पण करते हुये अथवा पिण्ड दान करते हुये श्रद्धा से तपर्ण करने वाला स्वयं साक्षी है तर्पण या पिण्डदान करने वालो को अवश्य मानसिक शन्ति मिलती है यदि हमारे अन्ताकरण को शान्ति मिलती है तो इस से वड कर और क्या प्रमाण होना चाहिये, हमारे स्मरण किये हुये पितरों को भी शान्ति अवश्य मिली होगी। तर्पण के लिये गोत्र की आवश्यकता होती है।

गोत्र क्या है? यह बात सुप्रसिद्ध है कि हमारे पूर्वज ऋषि या मुनि थे जैसा कि स्वामी विवेकानन्द ने भी कहा है:- हमारे वंश का चलाने वाला अथवा जन्म देने वाला जो ऋषि या मुनि हुआ है उसी ऋषि के नाम से वंश चल पडता है परन्तु काश्मीर में पठान शासन के पश्चात हम़ काश्मीरी गोत्र, शाखादि के महत्व को भूल गये और हमारे गोत्रों के साथ बहुत निरर्थक शब्द जुड गये जिस कारण हम यह समझने में द्विविधा में पडते हैं कि हमारे वंश का चलाने वाला कौन ऋषि है, कुछ गोत्र ऐसे स्पष्ट हैं जिन के समझने में कोई उलझन नही होती है जैसे दत्तात्रेय, वासिष्ठ, कौशिक, आत्रेय इत्यादि इसी प्रकार कुछ उपपद वाले गोत्र दरभारद्वाज़ इत्यादि भारद्वाज़ व्याकरण से शुद्ध है परन्तु इस के साथ जुड़ा हुआ दर शब्द निर्थक है यदि आप का गोत्र ढांवा ढोल स्थिति का है अर्थात् आप को अपने गोत्र के विषय में कुछ मालूम नहीं है तो धर्म शास्त्र में उस का समाधान है कि उस का गोत्र **"काश्यप"** है अर्थात् कश्यप की सन्तति, अतः उन काश्मीरी पण्डितों को जिन को गोत्रपति के बारे में संशय हो तो वे अपना गोत्र **'काश्यप'** माने।

काश्मीर के दक्षिण प्रान्त के तीर्थ

पिछले वर्ष भी विजयेश्वर पंचांग में कुछ प्राचीन तीर्थों के विषय में लोगों की जानकारी के लिये लिखा था इस वर्ष भी और कुछ तीर्थों के विषय में लिख रहा हूँ :-

गोसांई गुण्ड : यह तीर्थ स्थान अनन्तनाग से वेरीनाग जाते हुये रास्ते में लारखी पोरा गांव से 2 किलोमीटर की दूरी पर है यह दर्शनीय स्थान **स्वामी आत्माराम जी** की तपोभूमी रही है यहां पर अनेक माहत्माओं ने

साधना करके मोक्ष प्राप्त किया है यहां का शान्त वातावरण प्रत्येक मनुष्य को मोहित करता है।

नागडंडी : यह तीर्थ अनन्तनाग से कोई 8 किलोमीटर की दूरी पर है यहां पर प्रति वर्ष श्रावण शुक्लपक्ष पंचमी को एक महायज्ञ होता है, विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी के तत्वावधान में श्री राम कृष्ण महासम्मेलन आश्रम द्वारा संचालित यह तीर्थ आकर्षण का केन्द्र बना है।

मार्तण्ड : यह तीर्थ स्थान अनन्तनाग से 5 किलोमीटर की दूरी पर है इस तीर्थ स्थल को **सूर्य तीर्थ-मटटन**-तथा **भवन** नाम से भी जाना जाता है ऐतिहासिक दृष्टि से इस का नाम मार्तण्ड है '**मार्तण्ड**' का वास्तविक अर्थ है सूर्य। यहां पर ललिता दित्य ने एक विशाल मन्दिर का निर्माण किया था जिस का अवशेष आज भी अतीत की याद ताजा कराता है, यहां पर एक सुन्दर तथा स्वच्छ जल का एक कुण्ड है इस कुण्ड की थोडी दूरी पर एक छोटी सी नदी बहती है जिस को '**चाका**' कहते हैं यहां पर विजया सप्तमी के दिन तथा अधिकमास में पितरों का श्राद्ध करने के लिये हज़ारों की सख्या में लोग पूरे भारत वर्ष से आते हैं इस के अतिरिक्त माघ शुक्ल पक्ष सप्तमी को भी यहां पर यात्रा लगती है।

डुमटबल : यह रमणीक स्थान अनन्तनाग से कुकर नाग जाते हुये रास्ते मे सागाम गाओं से 4 किलोमीटर की दूरी पर पहाडों के बीच में है यहां पर स्वच्छ पानी का एक छोटा सा कुण्ड तथा एक मन्दिर भी है यह स्थान नारद जी की तपो भूमी रहा है यहां पर वैशाख शुक्लपक्ष एकादशी (नारद एकादशी) को यात्रा लगती है जिस में हज़ारों भक्त जन सम्मिलित होते है। यह स्थान '**नोर**' नाम से भी प्रसिद्ध है।

अकिनगामा :- यह दिव्य स्थान अनन्तनाग से 9 किलोमीटर की दूरी पर अच्छाबल के नजदीक स्थित है यहां

'शिवाभगवति' की स्थापना है यहां पर हर वर्ष चैत्र शुक्लपक्ष तथा आश्विन शुक्ल पक्ष नवमी को एक यात्रा लगती है जिस में हज़ारों श्रद्धालु दूरदराज़ इलाकों से आकर शिवा भगवति की पूजा अर्चना करते हैं।

अनन्तनाग :- यह तीर्थ स्थान अपने नाम से ही जाना जाता है इस का वास्तविक अर्थ है अनन्नत=ज्यादा, नाग=चश्मे जहां पर ज्यादा चशमे हैं यह काश्मीर के दक्षिण में बहुत बडा तथा सुन्दर ज़िला है यहां पर स्वच्छ चश्मों के अतिरिक्त गन्धक पानी के चश्मे भी हैं जिन में नहाने से बहुत प्रकार के चमडी रोग दूर हो जाते हैं यहां पर एक बहुत पुराना शिव मन्दिर भी है यहां पर प्रतिवर्ष भाद्र शुक्लपक्ष चतुर्दशी (अनन्त चतुर्दशी) को यात्रा लगती है जिस में हज़ारों श्रद्धालु भाग लेते हैं इस के साथ ही थोडी दूरी पर अनन्तनाग का **'देवी बल'** आता है इस तीर्थस्थान पर मां दुर्गा का एक बहुत प्राचीन मन्दिर तथा एक छोटा सा कुण्ड है इस कुण्ड में हमेशा पानी होता है परन्तु जब यह कुण्ड पानी से भर जाता है तो वह किसी अनिष्ट का सूचक भी माना जाता है

कपालमोचन :- यह तीर्थस्थान अनन्तनाग से 30 किलोमीटर की दूरी पर शोपियान के साथ ही है यहां पर प्रतिवर्ष श्रावण शुक्ल पक्ष द्वादशी को यात्रा लगती है यहां पर कम आयु वाले वच्चों का श्राद्ध किया जाता है।

विष्णुपाद :- यह रम्य तीर्थस्थान अनन्तनाग ज़िले में शोपियान से अहरबल जाते हुये 14,000 फुट की ऊँचाई पर स्थित है इतिहास के अनुसार भगवान् विष्णु ने अपना पांव यहां पर रखा है इस कारण इस को **विष्णु पाद** कहते है इस झील की आकृती भी पाद (पैर) जैसी ही है।

(शेष अगले वर्ष के पंचांग में)

कर्मकाण्ड को यदि जीवित रखना है तो संस्कृत पढ़ो।

कश्मीर के सिद्ध महापुरुष

शैवाचार्य स्वामी श्री राम जी महाराजः- स्वामी जी का जन्म पौष कृष्ण पक्ष द्वादशी 1855 ईस्वी को काज़ीयार हवाकदल श्रीनगर काश्मीर में हुआ, उन के पिता जी का नाम शुकदेव जी था, स्वामी जी ने अपनी शिक्षा इत्यादि श्री मनसाराम मोंगा जी से प्राप्त की, वह एक ग्रहस्थी साधु थे, वह एक सिद्ध तथा सच्चे शिव उपासक थे, *स्वामी महताब काक, स्वामी विद्याधर* तथा *स्वामी गोविंद कौल जलाली* इत्यादि इन के प्रधान भक्तजन थे, स्वामी जी *शैव दर्शन* के कर्मठ गुरू थे इन का *श्री रामशैव (त्रिक)* आश्रम आज भी फातेहकदल श्रीनगर तथा त्रिलोकपुरा गोल गुजराल जम्मू में चल रहा है

ज्योतिषाचार्य श्री केशव भट्टजी :- प्रातः स्मरणीय दिव्य महापुरुष ज्योतिषी केशवभट्ट जी का जन्म विक्रमी 1830 में हुआ था वे वेदमाता महागायत्री के उपासक थे, वे संस्कृत, ज्योतिष, कर्मकाण्ड, धर्म शास्त्र के प्रकाण्ड पण्डित थे, उन्होंने काश्मीरी पण्डितों की परंपरा को बचाने लिये कर्मकाण्ड सम्बन्धित सभी पुस्तक प्रकाशित किये यदि इस समय भी काश्मीरी पण्डितो के पास कर्म काण्ड सम्बन्धित कोई पुस्तक उपलब्ध है तो वह ज्योतिषी केशव भट्ट के परिश्रम का ही फल है पूरा काश्मीरी पण्डित समाज उनका ऋणी है।

श्री काक जी :- इस पुण्यात्मा का जन्म पौष शुक्ल पक्ष प्रतिपदा 1744 ईर्स्वी को गांव हांगलगुण्ड में हुआ था जो अनन्तनाग से 20 किलोमीटर दूरी पर है वे बाल्यावस्था से ही समाधी निष्ठ हो जाते थे उन का बाल्यकाल गांव अच्छन पुलवामा में गुजरा है क्योंकि उस को अपनी मासी ने दत्तक लिया था बाल्यकाल में उन पर देवस्थान

जगन्नाथ की कृपा दृष्टि रही वह पूरा समय उसी देवस्थान पर बिताते थे, मासी के देहावसान के पश्चात वह फिर ने हांगलगुण्ड आये तथा दरियां के किनारे वैठ कर समाधि लगाते थे आज कल उसी स्थान पर उनकी समाधी भी बनी हुई है उन्हों ने बहुत प्रकार के वाक कहे हैं जो बहुत ही लोक प्रिय है, स्वामी जी का निर्वाण दिवस **ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष द्वितीया** को नगरोटा में मनाया जाता है जहां पर उन की समाधि भी बनाई गई है।

स्वामी कृष्ण जू राज़दान:- स्वामी जी का जन्म भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्थी तदनुसार 19 अगस्त 1850 ईस्वीं को वनपुह गांव में हुआ, वनपुह जम्मू काश्मीर राजमार्ग पर स्थित है, स्वामी जी भगवान् शंकर के अनन्य भक्त ही नही अपि तु वह एक कवि भी थे वह अपनी कवितओं द्वारा भगवान् शिव की आराधना करते थे, उन का वनाया हुआ **'शिव लग्न'** एक काव्य संग्रह बहुत ही लोक प्रिय है उन के गुरू श्री मुकुन्द राम शास्त्री एक प्रकाण्ड पण्डित थे, स्वामी जी मार्ग शुक्ल पक्ष अष्टमी तदनुसार 13 दिसम्बर 1926 ईस्वी को ब्रह्मलीन हुये।

(शेष अगले वर्ष के पंचांग में)

मानसिक शान्ति देने वाला मन्त्र

ॐ नमः शम्भवाय च मयो भवाय च
नमः शंकराय च मयस्कराय च
नमः शिवाय च शिवतराय च।

जगद्धर भट्ट के विलाप

(भगवान् शंकर के सामने)

गत वर्ष के पंचांग में मैंने तीन श्लोकों का हिन्दी रूपान्तरण प्रस्तुत किया था इस वर्ष और तीन श्लोकों का रूपान्तरण प्रस्तुत कर रहा हूँ, जिन श्लोकों की व्याख्या पं॰ प्रेमनाथ शास्त्री जी ने काश्मीरी भाषा में कैसट् के रूप में की है जो कि बाजार में उपलब्ध है।

श्री जगद्धर भट्ट भगवान् शंकर के सामने विलाप करते हुये अपनी वाणी को दिलासा देते हुये कहता है।

एषा निसर्गकुटिला यदि चन्द्रलेखा, स्वर्गापगा च यदि नित्य तरङ्गितेयम्।
देवी दयार्द्रहृदया तु नगेन्द्र कन्या, धन्या करिष्यति न ते निबडामऽवज्ञा।।

इस श्लोक में जगद्धर भट्ट अपनी वाणी माता को समझाता है कि आप भगवान् शंकर की स्तुति करने में किसी प्रकार की ढील न बरतें, मैं जानता हूँ कि आप की सिफारिश करने वाले तीनों स्त्रियां ही हैं परन्तु सब स्त्रियों का स्वभाव एक जैसा नहीं होता है जिस के विषय में लल्लेश्वरी ने कहा है **“क्यंह छयह अदल तू बदल”** भगवान् शंकर के साथ रहने वाली तीनों स्त्रियां अलग-अलग स्वभाव की हैं, पहले आप चन्द्रमकला को देखें इस का नाम अपने गुणों के अनुसार ही है **‘कुटिला’**

अर्थात् टेडी अर्थात् अन्दर से कुछ बाहर से कुछ, मनुष्य का प्रधान गुण **"आर्जव"** माना जाता है अर्थात् अन्दर बाहर एक जैसा अर्थात् **'खुली किताब'** परन्तु यह चन्द्रकला उस के उलट है इस कारण उस पर कोई विश्वास नहीं है, दूसरी गंगा माता है, यह बहुत चंचल है यह एक सैकण्ड भी टिक नहीं सकती है, और इस में क्षण-क्षण, अलग-अलग प्रकार की लहरें उठती रहती हैं इस पर भी कोई विश्वास नहीं है यदि अब आशा की कुछ किरण है वह है पार्वती पर विश्वास, क्योंकि वह हिमालय की बेटी है, हिमालय का अर्थ है बर्फ पर घर जैसे बर्फ थोड़ी-सी गर्मी लगने से ही पिगल जाता है इसी प्रकार पार्वती का मन भी किसी का दुःख देखने से पिगल जाता है, हिमालय की लड़की होने के कारण पार्वती बहुत शीतल है क्योंकि माता-पिता का कोई गुण या अवगुण बच्चे में भी होता है, मुझे पूरा विश्वास है कि पार्वती माता मेरी वाणी की सिफारिश करेगी जिसके कारण जगद्धर भट्ट की वाणी से की हुई स्तुति भगवान् शंकर अवश्य स्वीकार करेगा, इस कारण हे वाणी देवी! आप लगातार स्तुति करते जाये।

पापः खलोहमिति नार्हसि मां विहातुं, किं रक्षया कृतमतेर्-अकतोभयस्य।
यस्मादसाधुर्-अधमोहमऽ पुण्य कर्मा, तस्मात् तवास्मि सुतराम्-अनुकम्पनीयः।।

जगद्धर भट्ट शंकर से कहता हैः- हे शंकर! मैं पापी हूँ, मैं दुष्ट हूँ मैं दीन हूँ, संसार सागर में डूबा हुआ हूँ इस प्रकार का पापी समझकर आप मेरा तिरस्कार करते है परन्तु आप ने उस रावण का

उद्धार किया जो बहुत पापी था, जो ब्रह्म घाती, परस्त्री परायण था जो देवताओं को पीड़ा देने वाला था परन्तु मैं जगद्धर भट्ट जिस को आप की अर्थात् श्रद्धा है मैं केवल आप की स्तुति ही नहीं करता हूँ अपितृ स्तुति करते-करते मैं ज़ार ज़ार रोता भी हूँ यदि आप मुझ जैसे पापी का अनुग्रह नहीं करेगे तो क्या उस पुण्यात्मा अथवा मुक्तात्मा समाधि निष्ठ योगी का जिस को आप के अनुग्रह की आवश्यकता ही नहीं है, आप की आवश्यकता मुझ जैसे पापी को ही है। हे शंकर! आप को मुझ जैसा पापी पात्र कहां मिलेगा जिस का आप अनुग्रह करोगे, मैं आप के अनुग्रह का पात्र हूँ ऐसा समय हाथ से मत जाने दो, मेरा उद्धार करो।

स्वैरव यद्यपि गतोहमधः कुकृत्यैः, तत्रापि नाथ! न तवास्म्य-वलेपमात्रम्।
दृप्तः पशुः पतति यः स्वयमन्ध कूपे, नोपेक्षते तमपि कारुणिको हि लोकः।।

हे शंकर! यदि आप मुझ से कहेंगे कि आप ने पूर्व जन्म में इसी प्रकार के कुकर्म किये हैं तो उन कुकर्मों का फल भोगो अब मेरे सामने विलाप करने अथवा जोर-जोर रोने अथवा चिल्लाने से क्या होगा? क्योंकि **"अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्"** अर्थात् मनुष्य जिस प्रकार के शुभाशुभ कर्म करता है उस प्रकार शुभाशुभ फल भी वह अवश्य प्राप्त करता है। परन्तु मैंने पुराणों में पढ़ा है कि आप ने तारकासुर जैसे क्रूर पापी राक्षस का उद्धार किया है क्या मैं उस राक्षस से भी गया गुजरा हूँ, आप जैसे महान देवता के दरबार में इस प्रकार का भेदभाव नहीं होना चाहिये,

आप के विषय में वेद कहते हैं:- "**तमीश्वराणां परमं महेश्वरम्**" आप को वेदों ने सर्वश्रेष्ठ देवता माना है क्या मैं आप के दरबार से खाली हाथ जाऊं? यदि कोई दीन या हीन मनुष्य किसी साधारण मनुष्य के शरण जाता है वह भी उस का उद्धार अवश्य करता है। यदि कोई विचार रहित पशु अचानक किसी कुँए में गिर जाता है तो दयालु मनुष्य अपनी जान की बाजी लगा कर उस पशु को कुँए से बाहर निकालता है, हे शंकर! आप मुझे विचारहीन नर पशु मानिये, उद्धार अथवा अनुग्रह करना आप का स्वाभाविक गुण है, हो सकता है मुझे स्तुति करनी आती नहीं है। एक शंकर भक्त ने कहा है कि स्तुति करने से शंकर को खुश करना एक सस्ता ढंग है परन्तु आंसुओं से भगवान् शंकर को रिझाना महत्वपूर्ण तथा अमूल्य ढंग है, हे शंकर! क्या आप देखते नहीं कि मैं स्तुति करते-करते जोर जोर से रोता हूँ परन्तु ऐसा करने पर भी आप मुझ पर अनुग्रह नहीं करते हैं मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि अन्तर्यामी होने के कारण आप मेरे खास तीन अवगुणों को जानते हुये आप मुझे ठुकराते हैं। वे तीन अवगुण कौन से है पढ़िये अगले वर्ष के पंचांग में।

लल्ल-वाख (लल्ल-वाक्य)

गत वर्ष के अनुसार इस वर्ष भी मैं तीन लल्ल वाक्यों का हिन्दी रूपान्तरण प्रस्तुत कर रहा हूँ, जिन की व्याख्या पं० प्रेम नाथ शास्त्री ने काश्मीरी भाषा में की है जो विजयेश्वर कैसटों के माध्यम से

बाजार में उपलब्ध हैं।

*द्रब्याय यलि छावनस द्रब्य कनि प्यठूय, सज़ तूह साबन मछूनम यचूय।
सूच्य यलि फिरनसू हनि-हनि कचूय, अदूह लल्य म्यह प्रवूम परमूह गथ।।*

संस्कृत पद्यानुवादः- पूर्वं फेनिल मेलनेन रजको मां प्रस्तरेऽपोथयत्
पश्चात् सौचिक कर्तरी कृतसिता गात्रेष्वहं समभवम्
एवं साधन शोधिता तनुरभूत् योग्या प्रियस्यार्पणे
धन्याहं निजजीवने दुर्लभां प्राप्ता तु परमां गतिम्।।

अर्थ व्याख्याः- कपड़ा बनने के पश्चात् इस कपड़े को धोने के लिये धोबी के पास भेजा जाता है, धोबी धोने से पहले कपड़े को सोडा तथा साबुन से ज़ोर-ज़ोर से रगड़ता है, इस दुःख रूपी रगड़ को भी कपड़ा सहन करता है यह कपास के फूल की **पांचवी भूमिका** है। जब धोबी फटाक-फटाक कर इस कपड़े को बार-बार पत्थर पर मारता है परन्तु कपड़े ने हिम्मत नहीं हारी आगे बढ़ता गया, फिर इस कपड़े पर धोबी ने गर्म अस्त्री आदि भी फेरी परन्तु कपड़े ने धोबी से दिये गये कष्टों को सहन किया। अब कपड़ा बिल्कुल साफ-सुथरे रूप में तैयार है यह है कपड़े की **छटी भूमिका**। अब इस कपड़े को दर्ज़ी कांट छांट करके सूई से छलनी करके सिलाई करता है और यह पहनने के लिये अमूल्य कपड़ा बन जाता है यह है कपड़े की **सातवीं भूमिका**।

क्वश पोश तेलदीप ज़ल ना गच्छे, सद्भाव ग्वरूह कथ युस मनि ह्यये।
शम्भुहस स्वरि नित्य पनन्ये यच्छे, सय दपिजि सहजूह अक्रिय मा ज्यदे।।

अर्थः- जो साधक श्रद्धा से गुरु मन्त्र को मन में रखेगा तथा नित्य अनन्य भक्ति से परमशिव की अराधना करता होगा इस प्रकार का साधक सहज अवस्था को प्राप्त करता है यह अवस्था प्राप्त करने पर साधक (भक्त) को और कुछ करने को कहता नही है, तथा आवागमन के बन्धन से छुटकारा प्राप्त करता है इस के अतिरिक्त भगवान् शिव को दर्भ, तिल, दीप इत्यादि अर्पण की भी आवश्यकता नहीं है इस की पुष्टि अध्यात्म रामायण का निम्नलिखित श्लोक भी करता है:-

यावत् शरीरादिषु माययात्मधीः, तावत् विधेयो विधिवाद कर्मणाम्।
नेतेति वाक्यैरखिलं निषध्य तत्, ज्ञात्वा परात्मानमथ त्येजेत क्रिया।।

अर्थः- जब तक साधक (भक्त) सहज आनन्द अवस्था को प्राप्त नहीं करेगा तब तक शास्त्र विधि अनुसार यज्ञ-अनुष्ठादि करना चाहिये फिर अनुष्ठादि के बन्धन में फंसे रहना नहीं चाहिये जैसे एक छोटा पौधा लगाने पर हम उस की रक्षा के लिये उसके चारों ओर लकड़ी का एक जंगला जैसा रखते है परन्तु जब यह छोटा पौधा एक बड़े वृक्ष का रूप लेता है उस समय वह जंगल उसके लिये रूकावट का कारण बनता है लल्लीश्वरी इस वाक्य में यही कहती है कि जब साधक सहज अवस्था प्राप्त करता है फिर उस को यज्ञ-अनुष्ठानादि की कोई आवश्यकता नहीं होता है परन्तु इस अवस्था

को प्राप्त करने के लिये शास्त्र विधि अनुसार अनुष्ठानादि का करना जरूरी है लल्लीश्वरी ने कई वाक्यों में '**सहज**' शब्द का प्रयोग किया है यह शब्द शैव दर्शन के साथ सम्बन्धित है "**सहज़**" का अर्थ है "**ज्ञातस्य ज्ञानम्**" अर्थात् जाने हुये का जानना, जीवात्मा खुद ही शिव है, वह पहचान होनी ही सहज पहचान है। जीवात्मा परमात्मा का अंश है, शैव शास्त्र के अनुसार जीवात्मा शकित का केन्द्र होने पर भी पांच प्रमुख शक्तियों से युक्त है वह शक़्तियां हैं, **चित्त, आनन्द, इच्छा, ज्ञान, क्रिया** परन्तु शक्ति का केन्द्र होने पर भी यह जीव अपने आप को हीन दीन, मानता है जिन आवरणों के कारण मनुष्य की यह दशा होती है वेदान्त के अनुसार वे तीन हैं **मल, विक्षेप, आवरण** और शैव दर्शन के अनुसार उन को **आणवमल, मायीय मल, कार्म मल** कहते हैं। जिस आवरण से जीवात्मा शक्तिशाली होने पर भी अपने आप को दीन हीन मानता है उस को "**आणव मल**" कहते हैं। जब तीवात्मा अपने आप को दूसरे प्राणियों अथवा वस्तुओं से भिन्न मानता है तथा जिस अविद्या या माया से जीव में यह भेदभाव उत्पन्न होता है उस को '**मायीय मल**' कहते हैं। पुण्य पाप रूप कर्म वासना जो मनुष्य के आवागवन का कारण बनता है, वह वासना जिसे उत्पन्न होती है उस को "**कार्म मल**" कहते हैं।

गगन चूय भूतल चूय, चूय द्यन पवन तूह राथ।
अर्घ चन्दन पोश पोन्य चूय, चूय छुक सोरुय लाग्य ज़ि क्याह।।

आकाशो भूर्वायुरापोनिलश्च, रात्रिश्चाह श्वेति सर्व त्वमेव।
तत्कीयत्वात पुण्पमर्धादि चत्वं, त्वतपूजार्थं नैव किचिल्लभेहम्।

अर्थः- हे शंकर! आप ही आकाश हैं आप ही पृथ्वी हैं आप ही जल, अग्नि हैं आप ही रात और दिन हैं आप ही अर्घ, चन्दन, फूल, जलादि सामग्री है जब आप ही सब कुछ हैं तो आप को आप का वस्तु क्या भेंट करूँ।

पंचस्तवी कार भी इस लल्ल वाक्य की पुष्टि इस श्लोक से करता हैंः-

त्वं चन्द्रिका शशिनि तिग्मरुचौ रुचिस्त्वं, त्वं चेतनासि पुरुषे पवने बलं त्वम्।
त्वं स्वादुतासि सलिले शिखिनि त्वमुष्मा, निःसारमेव निखिलं त्वत् ऋते यदि स्यात्।।

अर्थः- हे माता! आप चन्द्रमा में चान्दनी के रूप में है, आप सूर्य में प्रकाश के रूप में हैं आप प्राणियों में चेतना के रूप में हैं आप वायु में बल के रूप में है, आप जल में मिठास के रूप में हैं, आप अग्नि में गर्मी के रूप में हैं, आप के बिना सारा विश्व सार रहित है लल्लीश्वरी कहती है यदि शिव हर जगह हर वस्तु में व्याप्त है तो फिर कौन सी वस्तु शिव को भेंट करूँ।

ईशावास्योपनिषद् इस की पुष्टि करते हुये कहता हैः-

"ईशावास्यमिदं सर्व यत् किं च जगत्यां जगत्"

अर्थः- जो कुछ भी जड़ चेतन रूप दिखाई देता है वह सब सर्वशक्तिमान परमात्मा ने घेरा है जिधर देखता हूँ उधर तू ही तू हैं।

(शेष अगले वर्ष के पंचांग में)

स्वामी परमानन्द

(जमींदारी की लीला वेदान्त के ढांचे में)

पिछले वर्ष भी मैं ने स्वामी परमानन्द की लीला का हिन्दी रूपान्तरण दिया था जिसकी व्याख्या पं॰ प्रेम नाथ शास्त्री ने काश्मीरी भाषा में कैसट के माध्यम से की है जो, कि बाजार में उपलब्ध है इस वर्ष भी दो श्लोकों का हिन्दी रूपान्तरण प्रस्तुत कर रहा हूँः-

लोल के आल फाल तुलनविथ, वैरूचि यट्फुरि-दत फुटरविथ।
वहरुक स्नेह युथ न रोज्यस तल, सन्तोष व्यालि भुवि आनन्द फल।।

अर्थः- किसान प्रेमपूर्वक अपने हल से जमीन जोतता है फिर मिट्टी के वड़े टोडो का 'यटफुरि' से तोड़ता है, फिर कुछ दिनों के लिये धूप के लिये छोड़ता है जिस के कारण वर्ष भर का गीलापन दूर हो जाता है, यदि इसी प्रकार किसान प्रेमपूर्वक जमीन को खेती के लिये तैयार करेगा फिर उस को सन्तोषजनक धान्य की पैदावार होगी और वह सन्तोष रूपी बीज का आनन्द फल प्राप्त करे। यही पद्य वेदान्त के ढांचे मेंः- इस पद्य में "**लोल के आल फाल**" भक्ति का इशारा है। नारद सूत्र में "**ईश्वरानुरक्ति भक्तिः**" अर्थात् ईश्वर को प्रेम करना भक्ति कहलाती है भक्ति में मैं (अहम) को मिटाना पडता है वहां केवल भगवान् ही रहता है, साधक या भक्त को यही विश्वास

रहता है कि जो कुछ भी मैं करता हूँ मुझे भगवान् ही करवाता है, यही विश्वास भक्ति कहलाता है इसी भक्ति रूपी हल से काम, क्रोध, मोह, लोभ व द्वेष अभिमानादि शत्रु रूपी टोडों का नाश करके सन्तोष रूपी बीज का आनन्द अनुभव करता है।

विचार बठ्य त बेर लदिथ क्यथ, श्रुच यन द्यन शुचरविथ वथ।
समदृष्टि पातजन अद फेरि जल, सन्तोष ब्यालि बुवि आनन्द फल।।

अर्थः- हे किसान! खेती में अच्छी प्रकार से पानी चलने के लिये आप को विशेष रूप से तीन चीजों का ध्यान रखना है पहला है खेत के किनारे की अच्छी प्रकार से देखभाल करनी, कहीं ऊपर से पानी निकल न जाये। 2. वह नाली जिस से खेती में पानी जाता हो उस को साफ-सुथरा रखना, ताकि पानी चलने में किसी प्रकार की रूकावट ना हो। 3. पातज अर्थात् जिस स्थान से एक खेत से दूसरे खेत को पानी जाता हो उसको **'पोतज'** कहते है उस स्थान का भी ख्याल रखना कही वहां पानी अटक न जाये, जब किसान इन तीन चीजों का ध्यान अच्छी प्रकार से रखेगा तो सन्तोषजनक धान की पैदावार होगी और आप को आनन्द फल का अनुभव होगा।

यही पद्य वेदान्त के ढांचे में:- स्वामी परमानन्द कहते हैं जब पूरे ज़मीन में अलग-अलग खेत होने पर भी समान रूप से पानी की रफतार एक जैसी होगी अर्थात् पूरा विश्व अलग-अलग होने पर भी साधक को भगवत् रूप ही प्रतीत होता है जो कि साधना की अन्तिम भूमिका है राम गीता

भी इस की पुष्टि करती है।

यावत् न पश्येदखिलं मदात्मकं, तावन्मदाराधन तत्परो भवेत्।

अर्थः- हे लक्ष्मण। जब तक आप को पूरा विश्व राम रूप ही देखेगा नहीं मानिये तब तक आपकी साधना पूरी नहीं हुई है जब आप को यह अनुभव होगा कि इस भिन्न-भिन्न नाम रूपात्मक सृष्टि का आधार वही परम शिव है तो जानिये आप की साधना पूरी हुई है। दृष्टान्त के रूप में आप एक फरशी चादर लीजिये उस पर अलग-अलग प्रकार की तस्वीरें होती है परन्तु जिस पर वह तस्वीरें हैं वह खद्दर की एक ही चादर है इसी विषय में शैव के प्रकाण्ड पण्डित उत्पल देव कहता है।

"यद्यथास्थित पदार्थ दर्शनं, युण्मदर्चन महोत्सव च यः"

अर्थः- हे शंकर। आप की भक्ति का लक्ष्य है सब भिन्न-भिन्न पदार्थों में आप चित रूप शिव का अभिन्न दर्शन"। **"सम दृष्टि पातजन अद फेरि जलुक"** अर्थात् हर ओर से शिव ही शिव का होना। हे साधक फिर ही आप को आनन्द फल का अनुभव होगा।

(शेष अगले वर्ष के पंचांग में)

अपने बच्चों को कश्मीरी भाषा सिखाकर अपनी सभ्यता की रक्षा करे।

गायत्री मन्त्र का महत्व

गायत्री की महिमा सभी वेदों तथा पुराणशास्त्रों में सविस्तार दर्ज है- अथर्व-वेद में स्वयं वेदभगवान् का कहना है-"**स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्, आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्**" **अर्थः**-मेरे द्वारा स्तुति की गई द्विजों को पवित्र करने वाली वेदमाता गायत्री आयु प्राण सन्तति पशु कीर्ति धन बह्मतेज देने वाली है।

"गायत्री मन्त्र"

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्-सवितुर् वरेण्यं, भर्गो-देवस्य धीमहि, धियो यो-नः प्रचोदयात्

अर्थः- में उस शक्ति का चिन्तन करता हूँ जो शक्ति **ॐ** ब्रह्मरूप हैं, **भूर्भुवः स्वः** जो शक्ति तीनों लोकों में व्याप्त है, **तत्**-जिस को वेदों ने तत् नाम से पुकारा है **सविता**-जो शक्ति इस सृष्टि को बनाती है, पालन करती है, नाश करती है, "**वरेण्यम्**" जो वरण करने के योग्य है, **भर्गः**- जो तेजो रूप है, **देवः** जो द्योतनशील है, अथवा ऐश्वर्यवाली है, ऐसी उस महान् शक्ति का **धीमहि**- चिन्तन करता हूँ, वह शक्ति '**धियः**' मेरी बुद्धि को, **प्रचोदयात्**- सत् कर्मो में प्रेरित करे।

मैं उस शक्ति का चिन्तन करता हूँ, जो ब्रह्मरूप हैं, जो शक्ति तीनों लोकों में व्याप्त है, जिस को वेद "तत्" नाम से पुकारते हैं, जो शक्ति इस सृष्टि को बनाती, पालन तथा संहार करती है, जो वरण करने (अपनाने) के योग्य है, जो तेजोरूप है, जो ऐश्वर्य देने वाली है ऐसी ही उस महान् शक्ति का मैं चिन्तन करता हूँ, वह शक्ति मेरी बुद्धि को सत्कर्मों में लगाये।

गायत्री मन्त्र का महत्व क्यों ?

शब्दनित्य है (शब्द ब्रह्म) वर्तमान विज्ञान भी यही मानता है, आज जो बातें हम करते हैं, अथवा हमारे मन की लहरें आकाश में अथवा सृष्टि के अन्तराल में किसी न किसी रूप में विद्यमान रहती है, सृष्टि के आरम्भ से ही ऋषि मुनि साधक गायत्री मन्त्र के अनुष्ठान करते आये हैं, उन ऋषियों मुनियों साधकों की साधनायें भावनायें तपश्चर्यायें इस छोटे से गायत्री मन्त्र के पीछे तेजोपुंज के रूप में एकत्रित है, जो व्यक्ति इस गायत्री मन्त्र का उच्चारण अथवा जप करता है उस साधक की सफलता में वह तेजोपुंज अवश्य सहायक बनता है, साधक ज्यों ही इस मन्त्रराज का जप अथवा उच्चारण करने लगता है तो उसी क्षण में इस मंत्र के प्रभाव का अनुभव करने लगता है, यही है इस गायत्री मन्त्र के महत्व का रहस्य।

गायत्री जपविधिः-

शुद्ध आसन पर पद्मासन पर पूर्व की ओर मुख कर के पानी का एक लौटा और एक थाली तर्पण

के लिये रख कर नमस्कार करते हुये पढ़े (यदि नदी के तट पर करना हो तो थाली की आवश्यकता नहीं):-
प्रणवस्य ऋषि ब्रह्मा गायत्रं छन्द एवच, देवोग्नि-र्व्याहृतिषु च विनियोगः प्रकीर्तितः, प्रजापते-र्व्याहृतयः पूर्वस्य परमेष्ठिनः। व्यस्ताश्चैव समस्ताश्च ब्राह्मम्-अक्षरम्-ओम्-इति। व्याहृतीनां समस्तानां दैवतं तु प्रजापतिः, व्यस्तानाम्-अयम्-अग्निश्च वायुः सूर्यश्च-देवताः। छन्दश्च व्यहृतीनाम्-एकाक्षराणम्-उक्ताख्यम्-द्व्यक्षराणाम्-अत्युक्-ताख्यम्। विश्वामित्र-ऋषि-श्छन्दो, गायत्रं सविता तथा, देवतो-पनये जप्ये गायत्र्या योग उच्यते आवाहयामि गायत्रीं, सर्व-पाप-प्रणाशि-नीम्। न गायत्र्याः परं जप्यं, नव्याहृति-समं हुतम्, आगच्छ बरदे देवि, जप्ये मे सन्निधौ भव। गायन्तं त्रायसे यस्मात्-गायत्री त्वं ततः स्मृता, अग्नि-र्वायुश्च सूर्यश्च, बृहस्पत्याप-एव-च, इन्द्रश्च-विश्वे-देवाश्च देवताः सम्-उदाहृताः। एवम्-आर्ष-छन्दो दैवतं विनियोगं चानुस्मृत्य। गायत्र्या शिखाम्-अबद्ध्य गायत्र्यैव समन्ततः, आत्मन-श्चापः परिक्षिप्य, प्राणायामं कुर्यात्, ओजोसीति गायत्रीम्-आवह्य देवानाम्-आर्षम् (अपने आप को छिडकें अंजलि धारण करते हुये पढ़ें:-ओजोसि सहोसि बलम्-असि भ्राजोसि देवानां धाम नामासि, विश्वम्-असि-विश्वायुः, सर्वम्-असि-सर्वायुः, अभि-भूः-अंगन्यास-कीजिये-दोनों हाथों की ऊँगलियों से स्पर्श करते हुये पढ़ें: "अ" नाभौ (नाभिको) "उ" हृदि (हृदय को) "म" शिरसि (सिरको)।। ॐ"भूः"-अंगुष्ठाभ्यां नमः (दोनों अंगूठों को) "भुवः तर्जनीभ्यां नमः (अंगूठे के साथ वाली ऊँगलियों को), "स्वः" मध्यमाभ्यां नमः (बीचवाली ऊँगलियों को) "महः" अनामिकाभ्यां नमः, (सब से छोटी अंगुली की साथ वाली ऊँगलियों को "जनः" कनिष्ठकाभ्यां नमः

(छोटी ऊँगलियों को "तपः सत्यं " करतल पृष्ठाभ्यां नमः (दोनो हाथ के तलवों को आपस में स्पर्श करें। "भू." पादयोः (पावों को) "भुवः" जान्वोः (गुठनों को) "स्वः" गुह्ये (गुह्यस्थान को) "महःनाभौ (नाभि को) "जनः" हृदि (हृदय को) "तपः" कण्ठे (गले को) "सत्यं" शिरसि (सिर को), ॐ "भूः" हृदयाय नमः "भुवः" शिरसि स्वाहा, "स्वः" शिखायै वौषट् (चोटी को) महःकवचाय हुँ, (वस्त्रों को) जनः नेत्राभ्यां वौषट् (नेत्रों को) "तपः सत्यम्-अस्त्राय फट्" चुटकी मारे।। "तत्-सवितुर्" अंगुष्ठाभ्यां नमः, "वरेण्यं" तर्जनीभ्यां नमः, "भर्गो-देवस्य मध्यमाभ्यां नमः, "धीमहि" अनामिकाभ्यां नमः, "धियो योनः" कनिष्ठकाभ्यां नमः, "प्रचोदयात्" करतल करपृष्ठाभ्यां नमः तत् "पादयोः सवितुर्" जान्वोः (गुठनों को) "वरेण्यं" कट्यां कमर को, भर्गो नाभौ "देवस्य" हृदये "धीमहि" कण्ठे "धियोः,"नासिकायां "यो" चक्षुषोः (नेत्रों को) "नः ललाटे (माथे को) "प्रचोदयात्" शिरसि,।। "तत् सवितुर्" हृदयाय नमः "वरेण्यं " शिर-से स्वाहा, "भर्गो देवः" शिखायै.वौषट् 'धीमहि' कवचाय हुँ (वस्त्रों को "धियो योनः "नेत्राभ्यां वौषट् 'प्रचोदयात् अस्त्रायाय फट् (चुटकी मारिये) "आपः" स्तनयोः (स्तनों को) "ज्योतिः" नेत्रयोः, "रसो" मुखे "अमृतं" ललाटे "ब्रह्म-भूभुर्वः स्वरों" (शिसि) प्राणायाम करके तर्पण कीजियेः-

ॐ अस्य गायत्री शापविमोचन-मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषि गायत्री च्छन्दः वरुणो देवता ब्रह्मशाप-विमोचने विनियोगः। (तर्पण करते रहिये)

शापविमोचन

ओ३म्-यत्-ब्रह्मेति ब्रह्मविदो विदुः-त्वां पश्यन्ति धीराः।
सुमनसो-वा गायत्री त्वं ब्रह्मशापात्-विमुक्ता भव ।। 1 ।।
ओ३म्-अर्क-ज्योतिर् अहं ब्रह्मा ब्रह्म ज्योतिर्-अहं शिवः
शिव-ज्योतिर्-अहं विष्णुः शिव-ज्योतिः शिवः परम्।। 2 ।।
गायत्री त्वं वशिष्ठ शापात्-विमुक्ता भव।
ॐ अहो देवि महादेवि दिव्ये सन्ध्ये सरस्वति।
अजरे अमरे चैव ब्रह्मयोनि नमोस्तुते।
गायत्रि त्वं विश्वामित्र-शपात्-विमुक्ता भव।। 3 ।।

गायत्री का ध्यान करते हुये पढ़ेः-

मुक्ता-विद्रुम-हेम-नील-धवल, छायै-र्मुखैः-त्रीक्षणैः

युक्ताम्-इन्दु-निबद्ध-रत्न-मुकटां, तत्त्वात्म-वर्णात्मिकाम्
गायत्रीं वरदा-भया-ड्.कुश-करां शूलं कपालं गुणं
शंखं चक्रम्-अथार-बिन्दु-युगलं हस्तै-र्वहन्तीं भजे।। 1 ।।
आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि।
गायत्रि छन्दसां-मात-र्ब्रह्म-योने नमोस्तुते।। 2।।

यह मन्त्र तीन बार पढ़ कर-गायत्री मन्त्र का जप करें

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्-वेरण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ

यदि माला से जप करना है तो जप समाप्त करके माला सिर पर रख कर प्राणायाम करके तर्पण करते हुये पढ़े:- **देवा-गातु-श्रोत्रिया: देवा गातुविदो, गातुं वित्वा-गातु-मित मनसस्-पत-इमं देवयज्ञं स्वाहा, वाचे स्वाहा वातेधाः** नमो धर्मनिधानाय नमः सुकृत-साक्षिणे। नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः

जप करने का स्थान:- घर के उस कमरे में जप करें जहां आप की एकाग्रता में किसी प्रकार का विघ्न न पड़े, नदी के तट पर जप करना अधिक लाभदायक रहता है। जप की विधि आसन प्राणायाम आदि की जानकारी इसी जन्त्री के जपप्रकरण में देखिये।

क्या महिलाओं को गायत्री साधना जप अनुष्ठान आदि करने का अधिकार है ?

वेदों शास्त्रों पुराणों के स्वाध्याय से यह स्पष्ट होता है कि पुरुष हो या स्त्री दोनों गायत्री उपासना के अधिकारी हैं, प्राचीनकाल में गार्गी, मैत्रेयी देवयानी, लोपामुद्रा आदि महिलाओं ने गायत्री शक्ति की उपासना से ही आत्मा को समुन्नत बनाया था सावित्री ने एक वर्ष तक गायत्री की साधना की थी जिस साधना से ही वह अपने पति को यमराज से लौटा सकी। स्त्री और पुरुष दोनों ही गायत्री माता की सन्तान है, स्त्री सधवा हो या विधवा अपने जीवन को सफल बनाने के लिये गायत्री मन्त्र का जप किया करें।

धर्मशास्त्र

धार्मिक रीति रिवाज भी संस्कृति के ही अंग माने जाते हैं, पंरतु जब वे रीति रिवाज धर्मशास्त्र के आधार पर हूँ, कहीं कहीं धर्मशास्त्रों में मतभेद पाया जाता है, ऐसी दशा में देशाचार की भी प्रामाण्यता होती है- इन बातों को ध्यान में रखकर ही धर्मशास्त्र की चन्दबाते समय समय पर काम आने वाली निम्नलिखित हैं।

सगोत्रः- जिन का आपस में एक ही गोत्र हो सगोत्री कहलाते हैं- सगोत्रियों का आपस में विवाह

करना निषेध हैं, मातृपक्ष से पांच पीढी तक पितृपक्ष से सात पीढी तक विवाह नहीं कर सकते हैं।

दत्तकः- (मंगत लाना) अपने खानदान से दत्तक लाना धर्मशास्त्र के अनुसार उत्तम माना जाता है, दूसरे वंश का भी दत्तक लाया जा सकता है, साला (पत्नी का भाई) दत्तक लाना धर्मशास्त्र से निषेध है।

मुण्डनः- माता अथवा पिता के मरने पर मुण्डन करना पुत्र के लिये आवश्यक है, यदि बड़ा लड़का घर में न हो अथवा किसी कारण से क्रिया कर्म दाह संस्कार आदि न कर सके तो कोई भी पुत्र कर सकता है।

क्रिया कर्म का अधिकारी पुत्र, दाह संस्कार पर घर में न होने पर बारवें दिन तक जिस दिन भी घर पहुँचे उस दिन से ही व्रतधारी रह कर क्रिया कर्म कर सकता है, परन्तु क्रिया कर्म आरम्भ करने से पहले मुण्डन करना आवश्यक है।

अशौचः- दो प्रकार का होता है, जन्म का अशौच जिसे सूतक कहते हैं और दूसरा मरने का अशौच, जिस को मृतक कहते हैं, ब्राह्मणों को दस दिन, क्षत्रियों को 12 दिन और शूद्र को 30 दिन का अशौच होता है, बिना विवाह के कन्या का, पिता के घर में मृत्यु हो तो तीन दिन का अशौच होता है, विवाहित लड़की को 10 दिन के अन्दर जिस दिन भी माता पिता के मृत्यु का सन्देह मिले तो उस दिन से लड़की को तीन दिन का अशौच होता है।

दो अशौचः- एक साथ दो अशौच होने पर पहले अशौच के समाप्त होने पर ही दूसरे अशौच की

भी शुद्धि होती है, उदाहरण के रूप में, किसी के पिता की मृत्यु होती है उस के दसवें दिन से पहले किसी दिन (पैतृव्य) चाचा की मृत्यु हो ऐसी दशा में जिस दिन पहला अशौच समाप्त होता उसी दिन दूसरा अशौच भी समाप्त होता है, यदि जन्म के अशौच पर मरने का अशौच पड़े तो मरने का अशौच समाप्त होने पर यदि दसवें दिन मरने के अशौच पर फिर से मरने का अशौच पड़े तो ही शुद्धि होती है, यदि दसवें दिन मरने के अशौच पर फिर से मरने का अशौच पड़े तो मरने का अशौच समाप्त होने पर ही शुद्धि होती है, ऐसी स्थिति में दूसरा अशौच समाप्त होने पर दो दिन के लिये अधिक अशौच रहता है, यदि 11 वें दिन मरने के अशौच पर फिर से मरने का अशौच पड़े तो अशौच समाप्त होने के बाद अधिक तीन दिन तक अशौच रहता है। सूतक का अशौच हो या मृतक का अशौच 11वां दिन करना आवश्यक है, 12वां दिन अशौच समाप्त होने के पश्चात् भी किया जाता है, षड्मासिक पर भी किया जा सकता है।

छलुनः- दसवें दिन तक छलुन आवश्यक है, यदि लड़की दसवें दिन तक छलुन का कार्य न करे तो उस को ग्यारवें बारबें दिन के क्रियाकर्म में सम्मिलित होने का अधिकार नहीं है, छलुन के लिये शुभवार होनी चाहिये, यह बात याद रखें हिन्दू संस्कृति के अनुसार सूर्योदय से सूर्योदय तक वार होती है 12 बजे रात से वार बदलती है ऐसा न मानिये, जिस समय छलुन करना हो उस समय शुभवार होनी चाहिये, शुभवार है सोमवार, बुधवार, शुक्रवार, परन्तु बृहस्पतिवार शुभवार होने पर भी छलुन के लिये निषेध है, पंचक भी छलुन के लिये निषेध है।

अस्थि संचयः- फूल प्रवाहित करना, मृत्यु के पश्चात् दस दिन के अन्दर ही गंगा में प्रवाहित करें यदि ऐसा न हो सके तो एक वर्ष के अन्दर किसी भी दिन प्रवाहित करें।

यदि बच्चा मरा हुआ उत्पन्न हो अथवा उत्पन्न होते ही मरे उस बच्चे को लट्ठे में लपेट कर पृथ्वी को अर्पण करें, घर से गोद में उठाकर गड्ढा खोदने तथा पृथ्वी में अर्पण करने के समय तक लगातार **"ॐ नमः शिवाय"** मन्त्र का बार-बार उच्चारण करें, दाँत निकलने तक जिस बच्चे का मृत्यु हो जाये उसका दाह संस्कार न करें अपितु उस को भी पृथ्वी अर्पण करें, दान्त निकलने के पश्चात् जो बच्चा मरे उस का दाह संस्कार करें, यज्ञोपवीत संस्कार के बिना कोई भी लड़का किसी भी आयु का हो उस की मृत्यु होने पर दाह संस्कार के पश्चात् दसवाँ दिन अवश्य करें, 11वां और बारवां दिन न करें, उस बालक के निमित आने वाले किसी शुभ वार पर बालकों को भी पूरी भोजनादि से तृप्त करें, उस मृतक बालक को जिन वस्तुओं पाठ्य पुस्तकों की ओर प्रवृत्ति हो किसी निर्धन-विद्यार्थी को ऐसी वस्तुयें पुस्तकें वस्त्रादि दानरूप में दीज़िये, या कोई आर्थिक सहायता कीजिये ताकि उसकी पढ़ाई आगे चल सके। **श्रद्धया-देयम्-अश्रद्धया-देयम्"** देना ही शान्ति का मार्ग है।

श्राद्धः- श्राद्ध की जो तिथि हो, जन्त्री में उस मास की वह तिथि देखें, यदि उस तिथि के साथ "दिवा" "दि" का चिन्ह हो तो श्राद्ध एक दिन पहले होता है, यदि प्रविष्ठ "प्र" की निशानी हो तो श्राद्ध अपने ही दिन होगा, दिवा-प्रविष्ठ के आधार से जन्त्री में, श्राद्ध और मध्याह्न दर्ज है वहीं से देखिये। श्राद्ध के दिन अधिक भोजन न खायें, दिन को न सोये, ब्रह्मचर्य का पालन करें, दूसरे घर में खाना न खाइये, शराब अथवा किसी मादक द्रव्य का प्रयोग न कीजिये।

मासिक श्राद्ध (मासवार) :- मासवार की जो तिथि हो उस तिथि का मध्याह्न देखना आवश्यक है मध्याह्न श्राद्ध किस दिन का कब होगा विजेयश्वर जन्थरी में दर्ज है यदि श्राद्ध करने में आप असमर्थ हैं तो विधि अनुसार संकल्प करें। (श्राद्ध संकल्प विधि जन्थरी में दर्ज है) तथा अपने गुरुदेव को भोजन दक्षिण आदि से तृप्त करें।

षठ् मासिक श्राद्ध :- (षडमोस) मृतक के श्राद्ध की जो तिथि हो, मध्याह्न के आधार से उस तिथि का श्राद्ध कब होगा उस दिन एक दिन पहले षठ्–मासिक–श्राद्ध (षडमोस) करें और निश्चित मध्याह्न के दिन मासवार करें। जब किसी के षडमोस (षठ्–मासिक–श्राद्ध) में किसी प्रकार का विघ्न पडे तो षडमोस वार्षिक श्राद्ध (वहरवर) तक किसी भी निश्चित मासवार तिथि पर किया जा सकता है।

वार्षिक श्राद्ध :- (वहरवृर) देखते समय इस बात का ख्याल रखें यदि आप हर श्राद्ध में मध्याह्न देखते हैं तो वार्षिक श्राद्ध की तिथि में भी मध्याह्न देखिये यदि आप मध्याह्न देखते नहीं हैं तो निश्चित श्राद्ध की तिथि को 'दिवा' 'प्रतिष्ठ' के आधार से देखिये, मध्यान्ह के आधार से अथवा दिवा प्रविष्ठ के आधार से जिस दिन निश्चित तिथि का श्राद्ध आयेगा उस दिन से एक दिन पहले मासवार होगी। जब किसी के वार्षिक श्राद्ध (वहरवर) में किसी प्रकार का विघ्न आ पडे अर्थात् वह निश्चित तिथि पर वार्षिक श्राद्ध कर न सके तो वह वार्षिक श्राद्ध पितृपक्ष में निश्चित तिथि पर कर सकता है अथवा अगले वर्ष में जब वार्षिक श्राद्ध होगा तो उसी दिन वहरवर भी कर सकता है।

जब किसी अविवाहित लड़की की मृत्यु हो तो क्या करें?

अविवाहित लड़की के मृत्यु पर तीन दिन का आशौच होता है उस की आत्मा को शान्ति दिलाने के लिये इन तीन दिनों तक आपके घर में भगवत्–गीता अथवा राम गीता की गूंज रहनी चाहिये, तीसरे दिन इस के निमित गरीब बच्चों में पुस्तकें अथवा किसी अनाथालय में दान के रूप में कुछ दे सकते हैं, उस का दसवां इत्यादि नही होता है।

श्राद्ध करने न करने के सम्बन्ध में **:** विवाह यज्ञोपवीत आदि संस्कार के पश्चात् छः मास तक श्राद्ध न करें, परन्तु इस बात को भूलिये मत, वह धर्माशास्त्र की आज्ञा माता पिता के श्राद्ध पर लागू नहीं है, बल्कि माता पिता का श्राद्ध अवश्य करना चाहिये, यदि किसी पितर का श्राद्ध करना हो परन्तु तिथि मास का ज्ञान न हो तो ऐसी स्थिति में मार्गकृष्णपक्ष अमावसी के दिन श्राद्ध करें, यदि श्राद्ध करने में आप असमर्थ हैं तो विध्यनुसार संकल्प करें, किसी योग्य पात्र को भोजन दक्षिणा आदि से तृप्त करें और स्वयं व्रतधारी रहिये, एक समय शुद्ध भोजन खाइये, श्राद्ध के दिन मांस का प्रयोग न करें, भगवान् व्यास का कहना है *''देवयज्ञे पितृश्राद्धे तथा मांगल्य कर्मणे, तस्यैव नरके वासो यो कुर्यात् जीवघातनम्''* जो गृहस्थी पितृश्राद्ध विवाहादि मंगल कर्म में जन्मोत्सव आदि में मांस का प्रयोग करता है, वह नरक में जाता है।

ज्येष्ठ महीना :– यदि कन्या और वर दोनों ही ज्येष्ठ अर्थात् प्रथम गर्भ के हूँ तो उन का विवाह ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिये परन्तु दोनों में से यदि केवल एक ही ज्येष्ठ हो तो ज्येष्ठ मास में विवाह कर सकते हैं, यदि ज्येष्ठ मास में विवाह करना जरूरी हो तो ज्येष्ठ महीना में जब तक सूर्य कृतिका

नक्षत्र में रहेगा कृतिका नक्षत्र में सूर्य कब तक रहेगा? (विजयेश्वर पंचांग में देखिये) तब तक विवाह करने में कोई दोष नहीं है। यज्ञोपवीत संस्कार के लिये ज्येष्ठ महीना तथा ज्येष्ठ लड़का होना निषेध नही है।

पंचक :- धनिष्ठा नक्षत्र के उत्तरार्ध से रेवती नक्षत्र के अन्त तक पांच नक्षत्र (धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, रेवती) पंचक कहलाता है। पंचक में कौन–कौन काम करना निषेध है? दाह संस्कार, छलुन, दक्षिण की ओर जाना, मिट्टी, तेल, मिट्टी के बरतन, लकड़ी काटनी अथवा घर लानी, छत ल्यण्टर इत्यादि डालना तथा विवाह संस्कार में मस मुचरून निषेध है, शेष सभी कामों के लिये पंचक शुभ माना जाता है।

देव गौण :- देवगौण के लिये कोई मुहूर्त, वार, तिथि इत्यादि देखने की कोई जरूरत नहीं हैं, विवाह तथा यज्ञोपवीत का देवगौण सात दिन पहले भी हो सकता है। देवगौण करके विवाह अथवा यज्ञोपवीत संस्कार के दिन तक यदि जन्म का अशौच पडे तो अशौच का दोष नहीं होता है, यदि यज्ञोपवीत अथवा विवाह संस्कार का दिन निश्चित किया हो और जन्म अशौच पडे तो यज्ञोपवीत अथवा विवाह संस्कार का दिन बदल लेना चाहिये यदि ऐसा न हो सके तो संस्कार के समय "कूष्माण्ड" की ऋचाओं से अग्नि में घी की आहुतियां डालने से शुद्धि होती है परन्तु मृतक के अशौच पर धर्मशास्त्र की यह आज्ञा लागू नही है अर्थात् मृतक अशौच पडने पर यज्ञोपवीत तथा विवाह संस्कार न करें।

त्र्यहः :- जब किसी तिथि का क्षय होता है अर्थात् जब तिथि गुम होती है उस दिन हम जन्थरी में त्र्यहः लिखते हैं जैसे विक्रमी 2056 में चैत्र शुक्ल पक्ष षष्ठी भौमवार 23 मार्च को हम ने त्र्यहः

लिखा है उस दिन षष्ठी तिथि प्रातः 6 बजे 50 मिनट (षदि 6–50) तक ही है फिर सप्तमी तिथि आरम्भ हो कर रात के 4 बजे 42 मिनट पर समाप्त होती है जैसे (सप्र. प्र 4–42) अर्थात् वह दूसरे दिन प्रातः सूर्य उदय से पहले ही समाप्त होती है उसी कारण इस प्रकार की तिथि को हम गुम होना मानते है यदि इस गुम तिथि (त्र्यहः पर किसी का जन्म दिन होगा तो उसे अपना जन्म दिन षष्ठी को ही मनाना चाहिये क्योंकि सप्तमी तिथि गुम है इसी प्रकार कभी–कभी शुक्ल पक्ष अष्टमी भी गुम होती है तो वह व्रत भी सप्तमी को ही रखना चाहिये इसी प्रकार यदि किसी का श्राद्ध इत्यादि हो वह भी पहली तिथि पर ही करना चाहिये।

त्रिस्पृक् :- जिस दिन अधिक तिथि होती है हम उस दिन त्रिस्पृक् अथवा (दिन अधिक) जन्थरी में लिखते हैं अर्थात् उस दिन एक ही तिथि दो दिन रहती है जैसे 2056 में वैशाख कृष्ण पक्ष द्वितीया 2 अप्रैल तथा 3 अप्रैल को है यदि इस प्रकार की तिथि पर आप का जन्म दिन अथवा कोई देवव्रत (अष्टमी इत्यादि फाके) आये तो यह दूसरी तिथि पर (3 अप्रैल) पर मनाना चाहिये, यदि श्राद्ध अथवा कोई भी पितृ कार्य ऐसी तिथि पर आये तो वह पहली तिथि (2 अप्रैल) के दिन ही मनाना चाहिये।

* *

भगवान् कृष्ण कहते हैं

जो व्यक्ति श्रद्धा से गीता संवाद (गीता प्रवचन) सिर्फ सुनेगा ही, वह मुक्त होकर, पुण्यात्मा जहां पहुंचते हैं उन शुभलोकों को वह भी पावेगा। अध्याय 18 श्लोक 71

नोट : यदि आप को धर्मशास्त्र, कर्मकाण्ड, ज्योतिष अथवा विजयेश्वर पञ्चाङ्ग के विषय में कुछ पूछना हो तो आप विजयेश्वर पञ्चाङ्ग कार्यालय अजीत कालोनी, गोल गुजराल से सम्पर्क करें। दूरभाष : 555607

देहली वालों के लिये शुभ सूचना :-
यदि आप को धर्मशास्त्र, कर्मकाण्ड, ज्योतिष अथवा विजयेश्वर पञ्चाङ्ग के विषय में कुछ पूछना हो तो आप दूरभाष नं० : 5767456 पर सम्पर्क कर सकते हैं क्योंकि सम्पादक 15 नवम्बर से 30 मार्च तक देहली में होते हैं।

श्राद्ध संकल्प विधिः

पितृऋण चुकाने के निमित्त श्राद्ध अवश्य करें, यदि आप श्राद्ध करने में असमर्थ है तो संकल्प करें, ऐसी धर्मशास्त्र की आज्ञा है। श्राद्ध संकल्प के लिये पहले सामग्री एकत्रित करें, एक थाली में चावल थोड़ा सा नमक फल दक्षिणा आदि रखें, थोड़ा सा तिल धूप दीप फूल अर्ध पवित्र तिलक, केसर या चन्दन का तिलक जिस पितर का श्राद्ध हो उस का फोटो तिलक फूल की मालादि से सजा कर सामने रखें, यदि फोटो न हो तो भगवान् विष्णु का, अथवा भगवान् कृष्ण का फोटो रखें। पद्मासन में शुद्ध आसन पर पूर्व की ओर मुख करके बैठिये, संकल्प करने से पहले श्रीमद्भगवद्गीता का कम से कम एक अध्याय का पाठ करें, यदि ऐसा न हो सके, तो जन्त्री के पाठ प्रकरण से अष्टादशश्लोकी गीता का पाठ अवश्य करें, उस के पश्चात् दीप धूप करें जैसा कि "कर्मकाण्डदीपक" में दर्ज है, दीपो नमः धूपो नमः तक पढ़कर पढ़ें:-

ॐ तत्-सत्-ब्रह्म, अद्य-तावत्-तिथौ-अद्य (मास पक्षवार का नाम लेकर) जैसे वैशाख-मासस्य कृष्णपक्षस्य, (अथवा) शुक्लपक्षस्य तृतीस्यां तिथौ-भौम-वासरा-न्वितायां-विष्णु-प्रीत्यर्थम्-दीप-धूप संकल्पात् सिद्धिर्-अस्तु-दीपो नमः धूपोनमः।

बांयाँ यज्ञोपवीत रख कर तिल सहित जल से तर्पण करते हुये पढ़े:- **नमः पितृभ्यः:- प्रेतेभ्यः, नमो धर्माय विष्णवे नमो यमाय रुद्राय कान्तार पतये नमः।**

ॐ तत् सत्-ब्रह्म-अद्य-तावत्-तिथौ-अद्य (मास-पक्ष तिथि वार का नाम लेकर) पित्रे.... प्रपिताम-हाय। मात्रे पिता-मह्यै प्रपितामह्यै। माता महाय, प्रमाता-महाय, वृद्ध प्रमाता-महाय, प्रमातामह्यै वृद्ध-प्रमातामह्यै समस्तमाता-पित्भ्यो द्वादश-दैवतेभ्यः पितृभ्यः नित्यकर्म निमितं दीपः स्वधः, धूपः स्वधः, जिस पितर का श्राद्ध हो उसी का नाम गोत्रसहित लेकर संकल्प का पानी जो आपने हाथ में लिया होगा चावल आदि पर छिड़कते हुये पढ़े-ॐ तत्-सत्-ब्रह्म-अद्य-तावत्-तिथौ अद्य मास-पक्ष-तिथि-वार का नाम लेकर पढ़े :- सांवत्सरिके श्राद्धे (यदि काम्बर पछ (पितृपक्ष) का श्राद्ध हो) कर्न्याकगत आपरि-पाके श्राद्धे परलोके वैकुण्ठ पदवीप्राप्त्यर्थं आत्मनः पुण्य वृद्ध्यर्थं इदं-अन्नं दक्षिणा सहितं-फल-मूलवस्त्रादि-सहितं संकल्पयामि संकल्पयमि संकल्पयामि (दायाँ यज्ञोपवीत) रखकर फिर से तर्पण करते हुये पढ़े:-

नमो-ब्रह्मणे-नमो-अस्तु-अग्नये-नमः पृथिव्यै-नमः औषधीभ्यः नमो वाचस्पतये-नमो-विष्णवे-बृहते कणोमि। इति-एतासाम्-एव-देवतानां-सारिष्टिं-सायुज्यं सलोकतां सामीप्यम्-आप्नोति य एवं विद्वान्-स्वाध्यायम्-अधीते ॐ शान्तिः शान्ति· शान्तिः

जन्म दिन पूजा

पूजा आरम्भ करने से पहले यज्ञोपवीत धारण करें और थाल में नारीवण को रखकर नमस्कार करते हुये पढ़े।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशि-वर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्याये सर्व-विघ्नोपशान्तये।।
अभिप्रेतार्थ-सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैर्-अपि। सर्व-विघ्नच्छिदे तस्मै गणधिपतये नमः। 1 ।

हृदय औरं मुख को जल छिड़कते हुए पढें।

तीर्थे स्नेयं तीर्थ-मेव समानानां भवति। मा नः शंस्योर्-अरुरुषो धूर्तिः प्राणङ्.मर्त्यस्य रक्षा-णो बह्मणस्पते ।।

अनामिका उंगली में पवित्र धारण करके अपने आप को तिलक, अर्घ, फूल लगाते हुये पढें।

परमात्मने पुरुषोत्तमाय पंचभूतात्मकाय विश्वात्मने मंत्रनाथाय आत्मने नारायणाय आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः।।

रत्नीदीप धूप को तिलक, अर्घ, पुष्प अपर्ण करके सूर्य भगवान् को थाली में तिलक तथा अर्घ, पुष्प अर्पण करते हुये पढें:-

नमो धर्म-निधानाय नमः स्वकृतसाक्षिणे। नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः।।

खोसू से थाली में रखे हुये नारीवण के ऊपर अर्घ सहित जल की धारा डालते हुये पढें:-

यत्रास्ति-माता न पिता न बन्धु-र्भ्रातापि नो यत्र सुहृत्-ज्जनश्च न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रि-स्तत्रात्मदीपं शरणं प्रपद्ये। आत्मने नारायणाय-आधारशक्त्यै धूपदीपसङ्.-कल्पात् सिद्धिर्-अस्तु धूपो नमः दीपो नमः।।

जलसहित खोसू में थोड़ा सा तिलक और तीन पुष्प डालते हुये पढें:-

सं वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः। संसृष्टास्तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणो अस्तु वः, संयावः प्रियास्तन्वः, सं प्रिया, हृदयानि वः। आत्मा वो अस्तु, सं प्रियः सं प्रियस्तन्वो मम।

इसी जल की धारा को नारीवण पर डालते हुये पढें-

अश्विनोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव। मित्रा-वरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव। बृहस्पतेः प्राणः सं ते प्राणं ददातु तेन जीव, जन्मोत्सव-देताभ्यो जीवादानं परिकल्पयामि नमः।

चावल सहित दो दर्भ सीधे हाथ में लेकर तीन बार गायत्री मन्त्र पढें:-

ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्-वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि, धियो योनः प्रचोदयात् '3' जन्मोत्सव-देवतानां-अर्चाम्-अहं करिष्ये उों कुरुष्व।।

इसी मंत्र से हाथ में पकडें हुये दो दर्भ निमाल में डालकर फिर से दो दर्भ आसन के रूप में नारीवण

के सामने डालते हुये पढें:- सप्त-जन्मोत्सव देवतानां आसनं नमः। चावल सहित दो दर्भ हाथ में पकड कर केवल चावल को कन्धों से फैकते हुये पढें:- सप्त-जन्मोत्सवदेताभ्यः युष्मान्-पूजयामि। ॐ-पूजय।। दो दर्भ इसी तरह पकड़ते हुये पढें:- सहस्नशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। सभूमिं विश्वतो वृत्वा-त्यतिष्ठत्-दशांगुलम्। जन्मोत्सवदेवता आवाहयिष्यामि। ॐ-आवाहय।।

पहले पकडे हुए दो दर्भ निर्माल में ढालक कर तीन बार फूल नारीवण पर डालते हुए पढें:-

भगवन्! पुण्डरीकाक्ष! भक्तानु-ग्रहकारक-अस्मत् दयानु-रोधेन सन्निधानं कुरु प्रभो।।3।।

दोनों कन्धों के ऊपर चावल फैंक कर प्राणायाम करके खोसू में जल डालते हुये पढें:-

पाद्यार्थम्-उदकं नमः । शन्नो देवीरभिष्टय-आपो भवन्तु पीतये। शंयोर्-अभिस्नवन्तु नः।

लाय, केसर, सर्वौषधि, दर्भ, जल, सब चीजें खोसू में डालकर नारीवण पर जल छोडते हुए पढें।

अश्व-त्थामने, बलये, व्यासाय, हनुमते, कृपाचार्याय, मार्कण्डेयाय, परशुरामाय, सप्तचिरजीवेभ्यः पाद्यं नमः।।

पाद्य का बचा हुआ पानी निर्माल में डालकर फिर से खोसू में पानी डालते हुये पढें:-

शन्नो देवीर्-अभीष्टये-आपो भवन्तु पीतये। शंयोर्-अभिस्रवन्तु नः।

जल, दर्भ, घी, चावल, जौ, सर्वोपधि, दूध ये आठ चीजें खोसू में डालकर नारीवण पर डालते हुये पढें:-

अश्वत्थामन्, बले, व्यास, हनुमन्, कृपाचार्य, मार्काण्डेय, परशुराम, सप्त-चिर, जीव इदं वो ऽर्घ्यं नमः । शुद्ध जल डालते हुये पढें:- प्रजापति-जन्मोत्सवदेवताभ्यः आचमनीयं नमः। दूध वगैरह जल डालते हुये पढें:-

तद्विष्णोः परम पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततं तद्विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णो-र्यत्परमं पदम्। प्रजापति जन्मोत्सवदेवताभ्यः स्नानं नमः।।

किसी कटोरी में फूलों का आसन बनाते हुये पढें:-

आसनाय नमः गरुडासनाय नमः पद्मा-सनाय नमः शतदल-पद्मा-सनाय नमः, सहस्त्रदल-पद्मासनाय नमः। किमासनं ते गरुढासनाय, किं भूषणं कौस्तुभ-भूषणाय, लक्ष्मीकलत्राय, किम्-अस्ति, देयं-वागीश किं ते वचनीयम्-अस्ति।।

नारीवण को आसन पर बिठाते हुये पढें:- उत्तिष्ठ भगवन् विष्णो उत्तिष्ठ कमलापते! उत्तिष्ठ त्रिजगन्नाथ! त्रैलोकी मंगलं कुरु।।

नारीवण को सात तिलक लगाते हुये पढें:-

अश्वत्थाम्ने, बलये, व्यासाय, हनुमते, कृपाचार्याय मार्काण्डेयाय परशुरामाय सप्तचिर-जीवेभ्यः समालभनं गन्धो नमः।

इन्हीं सात नामों का उच्चारण करते हुये नारीवण पर अर्घ और पुष्प चढाते हुये पढें:-

अश्वत्थाम्ने, बलये (इत्यादि) नाम्ना अर्घो नमः पुष्पं नमः।। धूप रत्नीदीप, कपूर उठकर घुमायें। यह मंत्र पढें:-

तेजसो शुक्रमसि ज्योतिर्ऽसि धामासि, प्रियं देवानामंऽनादृष्टं देवयजनं देवताभ्यस्त्वा देवताभ्यो गृहणामि, यज्ञेभ्यस्त्वा यज्ञिभ्यो, गृहणामि, जन्मोत्सवदेवताभ्यः धूपं रत्नदीपं कर्पूरं च परिकल्पयामि नमः।

नमस्कार करते हुये पढें:-

जय नारायण, जय पुरुषोत्तम, जय वामन कंसारे। उद्धर मामृऽसुरेश-विनाशन्, पति-तोऽहं संसारे। घोरं हर मम नरकरिपो, केशव कल्मषभारम्। माम्-अनुकम्पय दीनम्-अनाथं कुरु भवसागरपारम्। भगवते वासुदेवाय लक्ष्मीसहिताय नारायणाय। सप्त-जन्मोत्सव-देवताभ्यः चामरं छत्रं परिकल्पयामि नमः।

फूल चढाते हुये पढें:-

ध्येयं सदा परिभवघ्नमृऽभीष्टदोहं तीर्थास्पदं शिव-विरिंच-नुतं शरण्यम्। भृत्यार्तिहं प्रणतपाल भवाब्धिपोतं वन्दे महापुरुष ते चरणार-बिन्दम्।।

नमस्कार करते हुये पढ़ें:-

उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा च अष्टांग-नमस्कारं करोमि नमः।

कटोरी में थौड़ा दूध, शहद, या क्षीर रख कर अर्पण करते हुये पढें:-

वासुदेवाय लक्ष्मीसहिताय नारायणाय प्रजापति-जन्मोत्सवदेवताभ्यः मात्रामधुपर्क ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः।

दक्षिणा डालते हुये पढें:- जन्मोत्सव-देवताभ्यः दक्षिणायै तिल-हिरण्य रजत निष्कर्ण ददानि।

फिर से दक्षिणा अर्पण करते हुये पढें:-

एता देवताः सदक्षिणान्नेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु।।

फूल चढाते हुये पढें:-

उों तद्विष्णोः परम पदं सदापश्यन्ति-सूरयः दिवीव चक्षुर्-आततम्। तद्विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम्।

अब नैवेद्य तहर या क्षीर थाली में लाकर एक पात्र में अलग चट्टू और पांच म्यचियाँ रखें, नैवेद्य के साथ ही मिसरी भी रखें। नैवेद्य की थाली को दोनों हाथों से पकड़कर सारा प्रोप्युन पढ़े।

आज्ञा मांगते हुये पढें:-

आज्ञ मे दीयतां नाथ नैवेद्यस्यास्य भक्षणे। शरीरयात्रा सिद्ध्यर्थं भगवन् क्षन्तुम्-अर्हसि।।

पुष्प चढ़ाते हुये पढे:-

आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा। भगवंस्त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणा-गतम्।

पवित्र निकालकर, हाथ में नारीवण वांधकर, चट्ठू कहीं बाहर रखकर, निर्माल नदी में डालकर नैवेद्य के साथ शकर दायें हथेली में रखकर मुहं में डालते हुये पढें:-

माकार्ईण्डेय नमस्तुभ्यं सप्तकल्पान्त जीवन, आयुर्-अरोग्यं सिद्ध्‌र्यथं प्रसीद भगवन्मुने। मार्कण्डेय महाभाग सप्तकल्पान्त-जीवन, चिरऽजीवी यथा त्वं तु मुनीनां प्रवरद्विज, कुरुष्व मुनिशार्दूल, तथा मां चिरजीविनम्।।

मानसिक शान्ति देने वाला मन्त्र

ॐ नमः शम्भवाय च मयो भवाय च
नमः शंकराय च मयस्कराय च
नमः शिवाय च शिवतराय च।

We offer our salutations to Thee — the Giver of Happiness. We offer our Salutations to Thee — the Auspiciousness. We offer our Salutations to Thee — the Bestower of Bliss and still greater Bliss

प्रेप्युन

एक थाली में नैवेद्य तथा दूसरी में चट्ट और पांच म्यचियां या टकड़े रख कर गणेश जी का ध्यान करके शुद्ध पानी अपने आप पर छिडकते हुये पढ़ें:-

तीर्थे स्नेयं तीर्थम्-एव, समानानां भवति, मानः शंसो अररुषो धूर्तिः प्राणड्-मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।

अपने आप को तिलक लगाते हुये पढ़ें:-

परमात्मने पुरुषोत्तमाय पंच-भूतात्मकाय विश्वात्मने मन्त्र नाथाय, आत्मने नारायणाय-आधार-शक्त्यै-समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः, पुष्पं नमः।

दीप को तिलक लगाते हुये तथा पुण्प चढाते हुये पढ़ें:-

स्वप्रकाशो महादीपः सर्वत-स्तिमि-रापहः प्रसीद मम गोविन्द दीपोयं परिकल्पितः।

धूप को तिलक लगाते हुये पढे:-

वनस्पति रसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्धवत्-तमः आधारः सर्वदेवानां धूपोयं परिकल्पितः।

सूर्य भगवान् का ध्यान करके पात्र में तिलक पुष्प डालते हुये पढ़ें:-

नमो धर्म-निधानाय, नमः स्वकृत-साक्षिणे, नमः प्रत्यक्ष-देवाय भास्कराय नमो नमः।

कवली से थाल में जल डालते हुये पढ़ें:-

यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुः- भ्रातापि नो यत्र सुहृत जनश्च, न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिः तत्रात्म-दीपं शरणं प्रपद्ये आत्मने नारायणाय-आधार-शक्तये, दीप-धूप-संकल्पात् सिद्धिर्-अस्तु, दीपो नमः धूपो नमः।

प्रेप्युन (नैवद्यमन्त्र)

(नैवेद्य को दोनों हाथों से पकड़ते हुये पढें)

अमृतेश-मुद्रया-अमृतीकृत्य अमृतम्-अस्तु अमृतायतां नैवेद्यम्। सावित्राणि सावित्रस्य देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो-र्बाहुभ्यां-पूष्णो हस्ताभ्याम्-आददे।। महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वार्देवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलश-देवताभ्यः ब्रह्मविष्णु महेश्वर-देवताभ्यः चतुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतु-पतये नारायणाय दुर्गायै त्रयम्बकाय वरूणाय यज्ञपुरुषाय अग्नि-ष्वात्तादिभ्यः पितृ...गणदेवताभ्भ्यः। भगवते वासुदेवाय सङ्.-कर्षणाय प्रद्युम्नाय अनिरुद्धाय सत्याय-पुरुषाय अच्युताय माधवाय गोविन्दाय-सहस्त्रनाम्ने विष्णवे लक्ष्मीसिहताय नारायणाय भवायदेवाय-शर्वाय-देवाय-रुद्राय-देवाय पशुपतये देवाय उग्राय-देवाय भीमायदेवाय महा-देवाय ईशानाय-देवाय ईश्वराय-देवाय उमासहिताय शिवाय पार्वती सहिताय परमेश्राय विनायकाय एकदन्ताय कृष्णपिंगलाय गजाननाय

लम्बोदराय भालचन्द्राय हेरम्बाय आखुरथाय विघ्नेशाय विघ्नभक्षाय वल्लभा-सहिताय श्रीमहागणेशाय। क्लीं कां कुमाराय षण्मुखाय मयूरवाहनाय सेनाधिपतये कुमाराय। भगवते ह्राँ हीं सः सूर्याय सप्ताश्वाय अनश्वाय एकाश्वाय नीलाश्वाय प्रत्यक्षदेवाय परमार्थ-साराय तेजोरूपाय प्रभासहिताय आदित्याय। भगवत्यै अमायै कामायै चार्वङ्. ग्यै टंकधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्री शारिका-भगवत्यै श्री शारदा-भगवत्यै श्री महाराज्ञीभगवत्यै श्री ज्वाला भगवत्यै व्रीडाभगवत्यै वैखरीभगवत्यै वितस्ताभगवत्यै गंगाभगवत्यै यमुनाभगवत्यै कालिकाभगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै महात्रिपुरसुन्दर्यै सहस्रननाम्न्यै देव्यै भवान्यै अभयंकरीदेव्यै क्षेमंकरीभगवत्यै सर्वशत्रुघातिण्यै इहराष्ट्राधिपतये इन्द्राय वज्रहस्ताय अग्नये शक्तिहस्ताय यमाय दण्डहस्ताय नैर्ऋतये खड्ग-हस्ताय वरुणाय पाशहस्ताय वायवे ध्वजहस्ताय कुवेराय-गदा-हस्ताय विष्णवे-चक्रहस्ताय. अनन्तदिग्भ्योऽष्टाभ्यः कुलनागदेवताभ्यः अग्न्या-दित्याभ्यां वरुण-चन्द्रमोभ्यां कुमार-भौमाभ्यां विष्णु-बुधाभ्यां इन्द्रा-बृहस्पतिभ्यां सरस्वती-शुक्राभ्यां, प्रजापति-शनैश्चराभ्यां गणपति-राहुभ्यां, रुद्रकेतुभ्यां ब्रह्मध्रुवाभ्यां, अनन्ता-गस्त्याभ्यां ब्रह्मणे कूर्माय ध्रुवाय अनन्ताय हरये लक्ष्म्यै कमलायै शिरव्यादिभ्यः

पंच-चत्वारिंशत्-वास्तोष्पति-याग-देवताभ्यः ब्राह्मादिभ्यो मातृभ्यः गौर्यादिभ्यो मातृभ्यः ललितादिभ्यो मातृभ्यः दुर्गा-क्षेत्र-गणेश्वर-देवताभ्यः राकादेवताभ्यः त्रिका-देवताभ्यः सिनीवाली-देवताभ्यः यामी-देवताभ्यः रौद्री-देवताभ्यः वारुणी-देवताभ्यः बार्हस्पत्य-देवताभ्यः ॐ भूर्देवताभ्यः ॐ भुवोदेवताभ्यः ॐ स्वर्देवताभ्यः ॐ भूर्भुवः-स्वर्देवताभ्यः अखण्ड-ब्रह्माण्ड-यागदेवताभ्यः धूर्भ्यः उपधूर्भ्यः महागायत्र्यै सावित्र्यै-सरस्वत्यै हेरकादिभ्यो वदुकादिभ्यः, उत्पन्नम्-अमृतं दिव्यं प्राक्-क्षीरो-दधि-मन्थनात्-अन्नम्-अमृतरूपेण नैवेद्यं प्रति-गृह्यताम्

(ईष्टदेवता का ध्यान करते हुये पढेः- उों तत्सत् - ब्रह्म - अद्य तावत् तिथौ अद्य -मासस्य-पक्षस्य-तिथौ- आत्मनो वाङ्.मनः कार्योपार्जित-पापनि-वारणार्थम, उों नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः। "चुटू" को स्पर्श करते हुये पढ़ेः- या काचित् - योगिनी- रौद्रा - सोम्या घोरतरा परा। खेचरी भूचरी रामा तुष्टा भवन्तु मे सदा। चुटू को अंगूठे से तिलक लगाकर अर्घफूल डालते हुये पढेः- आकाशमातृभ्योऽन्नं नमः, आकाशमातृभ्यः समालभनं गन्धो नमः, अर्घो नमः पुष्पं नमः। प्रेप्युन की थाली चुटू के साथ सात (7) म्यचियां अथवा सात छोटे प्रसाद के भाग रखे हुये होते हैं- पहली म्यची को स्पर्श करते हुये पढ़े- भगवते वासुदेवाय

अन्नं क्षीरं मोदकादीन् समर्पयामि नमः। (2) दूसरी को स्पर्श करते हुये पढ़े:- **भगवते भवाय देवाय अन्नं समर्पयामि नमः (3) भगवते विनायकाय अन्नंसमर्पयामि नमः (4) ह्राँ ह्रीं सूर्याय अन्नं समर्पयामि नमः (5) इष्टदेवी भगवत्यै अन्नं मोदकान्-मिष्ठानं-क्षीरं समर्पयामि नमः।**

अंतिम दो भागों या दो म्यचियों पर अर्घ पानी डालते हुये पढें- **यस्मिन्-निवसति क्षेत्रे क्षेत्रपालाः सकिंकराः। तस्मै नि-वेदयाम्यद्य बलिं पानीय संयुतम्, क्षां-क्षेत्राधिपतये अन्नं नमः रां राष्ट्राधिपतये अन्नं नमः-सर्वाभय-वरप्रदो मयि पुष्टिं पुष्टिपति-र्दधातु।** दोनों हाथ में फूल लेते हुये प्रणाम करते हुये पढ़ें- **आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा। भगवन्-त्वां-प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम्। उभाम्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा व्रचसा चोरसा मनसा च नमस्कारं करोमि नमः।**

तर्पणः- सीधा हाथ रखते हुये पढ़े- **नमो ब्रह्मणे, नमो अस्त्वग्नये, नमः पृथिव्यै, नमः औषिधिम्यः, नमो वाचे नमो वाचस्पतये, नमो विष्णवे, बृहते, कृणोमि, इत्येतासाम्-एव-देवतानां-सा-रि-ष्टिं-सायुज्यं सलोकतां सामीप्यम्-आप्नोति-य एवं विद्वान् - स्वाध्यायम्-अधीते। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।**

इन्द्राक्षी

अस्य श्री इंद्राक्षी स्तोत्रमन्त्रस्य, पुरंदर-ऋषिः, अनुष्टप्-छन्दः, इन्द्राक्षी देवता, ह्रीं बीजम्, श्रीं. शक्तिः, क्लीं कीलकम्। सकलकामना-सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

अथ-ध्यानम्।

इन्द्राक्षीं द्विभुजां देवीं पीत-वस्त्रधरां शुभाम् वामे हस्ते वज्रधरां दक्षिणे चाभय-प्रदाम्।1। सहस्त्र नेत्रां सूर्याभां नानालंकार-भूषिताम्, प्रसन्न वदनां नित्यम्-अप्सरो-गणसेविताम्।2। श्री-दुर्गा सौम्य-वदनां पाशांकुशधरां परां, त्रैलोक्य-मोहिनीं देवीं भवानीं प्रणमाम्यहम्।3। ॐ ह्रीं श्रीं इन्द्राक्षीं श्रीं प्रीं स्वाहा।

इन्द्र-उवाज-

इन्द्राक्षी नाम सा देवी देवतैः समुदाहृता, गौरी शाकंभरी देवी दुर्गा-नाम्नीति-विश्रुता।1।

कात्यायनी महादेवी चन्द्र-घण्टा-महातपः, गायत्री सा च सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी ।2। नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिंगला, अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्री-स्तपस्विनी ।3। मेघ-श्यामा सहस्त्राक्षी, विष्णुमाया जलोदरी, महोदरी मुक्त-केशी घोररूपा महाबला ।4। आनन्दा-भद्रजा नंदा रोगहंत्री शिवप्रिया, शिवदूती कराली च प्रत्यक्षा परमेश्वरी ।5। इन्द्राणी चन्द्ररूपा च इन्द्र-शक्ति-परायणा, महिषा-सुर-संहर्त्री चामुण्डा गर्भदेवता ।6। वाराही नारसिंही च भीमा भैरव नादिनी, श्रुतिः स्मृति-धृति-मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती ।7। आनंदा विजया पूर्णा मानस्तोकाऽ पराजिता, भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यंबिका शिवा ।8। शिवा भवानी रुद्राणी शंकरार्ध-शरीरिणी, एतै-र्नाम-पदै-र्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता ।9। आयुर्-आरोग्यम्-ऐश्वर्य सुख-संपत्तिकारकम्, क्षय-पस्मार-कुष्ठादि-ताप-ज्वर-निवारणम् ।10।

जातक मिलाप-प्रकरण

बल देखने की विधि :—लग्न और चन्द्रमा से वर वधू की जन्मकुण्डली के पहले चौथे, 7वें, 8वें, 12वें घर में जितने पापग्रह होंगे उतने बल मानिये, एक पापग्रह का एक बल माना जाता है। बृहस्पति और शुक्र एक घर में इकट्ठे हों तो उसका भी एक बल मानिये यदि लड़के के जन्म कुण्डली में शुक्र से चौथे, 8वें, घर में कोई पापग्रह हों तो उतने बल लड़के के और मान लीजिए, राक्षस जाति का भी एक बल मानिये।

नक्षत्र नाम —अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु तिष्या आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा अनुराधा ज्येष्ठ, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषक् पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद् रेवती।

षष्टाष्टक नवपंचक द्विर्द्वादशी

लड़के अथवा लड़की की राशि से गिनने पर आठवीं और छटी राशि षष्टाष्टक कहलाती है, ऐसे ही एक की राशि से दूसरे की राशि तक गिनने पर नवीं और पाँचवी राशि **नवपंचक** कहलाती है, दूसरी और बारवीं राशि **द्वि-द्वादशी** कहलाती है, जैसे लड़के या लड़की की राशि मेष और वृश्चिक, मिथुन और मकर हो तो आपस में **मित्र षष्टाष्टक** होगी—आप निम्नलिखित चक्र में देखिए :-

राशि कूट चक्र

मित्र षष्टाष्टक	मेष + वृश्चिक	मिथुन + मकर	सिंह + मीन	तुला + वृष	धनु + कर्क	कुम्भ + कन्या
शत्रु षष्टाष्टक	वृष + धनु	कर्क + कुम्भ,	कन्या + मेष	वृश्चिक + मिथुन	मकर + सिंह	मीन + तुला
मित्रनवपंचक	मेष + सिंह	मिथुन + तुला	सिंह + धनु	तुला + कुम्भ	धनु + मेष	कुम्भ + मिथुन
शत्रुनपंचक	वृष + कन्या	कर्क + वृश्चिक	कन्या + मकर	वृश्चिक + मीन	मकर + वृष	मीन + कर्क
मित्रद्विर्द्वादशी	मेष + मींन	मिथुन + वृष	सिंह + कर्क	तुला + कन्या	धनु + वृश्चिक	कुम्भ + मकर
शत्रुद्विर्द्वादशी	वृष + मेष	कर्क + मिथुन	कन्या + सिंह	वृश्चिक + तुला	मकर + धनु	मीन + कुम्भ

देखने की विधि :–मेप राशि की वृश्चिक राशि के साथ मित्र पप्टाप्टक है जो शुभ है इसी प्रकार वृप राशि का धनु राशि के साथ शत्रु पप्टाप्टक है जो मिलाप के लिए अशुभ है।

नोट :–मित्रपप्टाप्टक, मित्रनवपंचक, मित्रद्विर्द्वादशी निपेध नहीं–अपितु, शुभफलदायक है।

नाडी देखने का चित्र

आद्य नाड़ी	अश्वि	आर्द्रा	पुन	उफा	हस्त	ज्येष्ठा	मूला	शत	पूभा
मध्य नाडी	भर	मृग	तिष्या	पूफा	चित्रा	अनु	पूषा	धनि	उभा
अन्त्य नाडी	कृति	रोहि	अश्ले	मघा	स्वाति	विशा	उषा	श्रव	रेव

नाड़ी देखने की विधि :–जन्मपत्री मिलाने के लिए दोनों वधूवर का नक्षत्र अवश्य मालूम होना चाहिए यदि दोनों का नक्षत्र आद्य नाडी की पंक्ति में हो तो **आद्य नाड़ी दोष** होता है, ऐसे ही यदि दोनों का नक्षत्र मध्यनाड़ी की पंक्ति में हो तो **मध्यनाडी दोष** होता है, यदि दोनों वरवधू का नक्षत्र अन्त्य नाडी की पंक्ति में हो तो **अन्त्य नाडी दोष** होता है। मध्यनाडी दोष विशेष हानिकारक माना जाता है।

जाती देखने का चित्र

देव जाति :–	अनु	मृग	श्रवण	पुनर्व.	रेवती	स्वाति	हस्त तिष्या	अश्वि	
मनुष्य जाति	पूषा	पूफा.	पूभा.	उफा.	उषा	रोहि	भर	आद्रा	उभा
राक्षस जाति	मघा	अश्ले	धनि	कृति	ज्येष्ठा	मूला	शत	चित्रा	विशा

देखने की विधि :–अनुराधा नक्षत्र होने पर देवजाति, ऐसे ही पूर्व फाल्गुणी नक्षत्र के लिए मनुष्य जाति, मघा नक्षत्र की राक्षस जाति :–

देवजाति + राक्षस जाति = मध्यम
राक्षस जाति + देव जाति = मध्यम
राक्षस जाति + मनुष्य जाति = अशुभ

मनुष्यजाति + देव जाति = शुभ
देव जाति + मनुष्य जाति = शुभ
मनुष्य जाति + राक्षस जाति = अशुभ

दोनों लड़के तथा लड़की की एक ही जाति का होना शुभफल होता है, विशेपतया यदि लड़की की जाति राक्षस हो और लड़के की मनुष्य जाति, तो विशेप हानिकारक होती है।

जातक मिलाप सारिणी

लड़की	लड़का	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि	भर	कृति	कृति	रोहि	मृग	मृग	आर्द्रा	पुन	पुन	तिष्या	आश्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	हस्त	चित्रा
मेष	अश्वि	28	33	28	18	24	23	26	17	18	23	31	27	20	24	15	11	11	13
	भर	33	28	29	18	27	15	18	26	26	31	24	25	19	17	24	19	19	6
	कृति	27	28	28	18	10	17	20	20	20	25	27	23	16	19	20	15	15	19
वृष	कृति	19	19	19	28	19	27	17	17	17	21	23	19	19	22	22	20	21	23
	रोहि	24	24	11	20	28	36	27	23	22	26	27	13	11	25	27	26	26	19
	मृग	24	15	19	27	35	29	19	24	23	26	19	21	20	16	25	23	26	12
मिथुन	मृग	27	18	23	19	26	20	28	33	31	20	11	15	24	21	29	31	34	20
	आर्द्रा	19	27	22	19	25	26	34	28	25	12	21	13	22	28	21	25	25	27
	पुन	19	26	22	19	22	23	32	24	28	14	21	16	22	26	20	24	25	27
कर्क	पुन	22	29	25	21	24	25	18	10	13	28	34	29	17	21	15	17	18	20
	तिष्या	30	21	27	23	25	18	11	19	24	34	28	29	19	15	24	26	26	12
	आश्ले	25	23	22	19	12	21	13	12	15	29	29	28	15	16	18	21	20	26
सिंह	मघा	19	19	16	17	11	18	21	21	20	17	19	16	28	30	27	15	15	20
	पूफा	25	17	19	20	24	16	19	27	26	23	17	17	30	28	34	24	21	6
	उफा	19	27	22	23	27	26	29	22	22	17	26	20	27	34	28	18	17	15
कन्या	उफा	11	21	16	21	26	24	32	22	24	18	28	21	16	23	17	28	27	25
	हस्त	11	19	16	21	24	25	32	19	24	18	27	22	16	21	15	26	28	28
	चित्रा	13	5	19	23	19	11	19	26	25	20	12	26	22	7	14	25	27	28

जातक मिलाप सारिणी

लड़की	लड़का	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुंभ			मीन		
		चित्रा	स्वाति	विशा	विशा	अनु	ज्येष्ठा	मूला	पूषा	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव
मेष	अश्वि	23	27	22	19	25	15	13	25	23	25	26	21	21	15	16	15	24	26
	भर	15	28	21	19	18	20	20	18	26	28	26	10	10	20	24	23	17	26
	कृति	28	14	19	17	20	26	25	19	12	14	14	25	25	26	18	18	20	13
वृष	कृति	22	9	14	22	25	30	22	15	7	12	11	25	29	30	23	20	22	13
	रोहि	18	15	8	15	30	24	14	20	11	16	18	19	25	24	29	26	27	19
	मृग	11	25	17	24	22	25	15	11	17	22	26	12	18	26	28	25	18	27
मिथुन	मृग	13	27	20	13	13	14	23	19	25	20	24	10	12	21	23	24	17	26
	आर्द्रा	20	27	20	14	19	5	15	28	27	22	23	17	19	12	17	19	26	26
	पुन	20	27	21	15	21	6	14	27	27	22	23	17	19	13	16	18	27	26
कर्क	पुन	19	27	21	19	25	11	8	21	21	26	27	21	12	6	10	16	25	25
	तिष्या	11	25	21	19	17	21	18	13	21	26	27	13	4	13	18	26	18	26
	आश्ले	26	12	17	16	19	26	23	16	8	13	13	26	17	18	11	18	20	12
सिंह	मघा	24	11	16	25	25	32	24	19	9	4	5	18	24	25	18	18	19	12
	पूफा	10	25	18	24	23	25	20	17	24	19	19	6	11	19	24	24	17	25
	उफा	18	27	18	25	31	17	9	25	25	20	20	12	18	11	16	16	27	25
कन्या	उफा	17	26	17	18	26	12	14	30	30	24	24	24	17	10	15	17	28	26
	हस्त	20	27	19	20	26	14	15	27	29	23	24	20	19	11	14	16	26	26
	चित्रा	19	19	26	27	11	25	27	13	21	16	17	16	16	24	17	19	10	19

जातक मिलाप सारिणी

लड़की	लड़का	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि	भर	कृति	कृति	रोहि	मृग	मृग	आर्द्रा	पुन	पुन	तिष्या	आश्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	हस्त	चित्रा
तुला	चित्रा	22	14	28	23	19	11	12	20	19	19	11	25	25	11	18	18	20	20
	स्वाति	28	30	18	13	17	27	27	26	27	28	28	16	14	26	26	26	28	21
	विशा	21	22	20	15	9	17	19	20	20	21	21	17	17	19	18	18	19	26
वृश्चिक	विशा	17	17	15	20	14	22	11	13	13	18	18	15	25	23	22	17	18	26
	अनु	24	15	19	24	28	21	10	15	20	25	17	20	25	21	29	24	25	11
	ज्येष्ठा	10	18	23	29	23	30	12	2	4	10	20	25	31	24	16	11	11	24
धनु	मूला	12	19	25	20	13	13	21	14	12	8	18	23	24	18	20	13	13	26
	पूषा	26	19	18	13	19	11	19	27	27	23	15	17	19	17	25	29	27	12
	उषा	24	26	12	6	10	17	25	26	27	23	23	9	9	24	25	29	29	20
मकर	उषा	27	29	15	12	16	23	19	25	22	28	28	14	5	20	21	24	24	16
	श्रव	28	27	15	12	17	26	23	20	22	28	28	14	6	19	20	23	24	17
	धनि	20	11	26	24	19	11	8	16	15	21	13	27	19	5	11	16	17	15
कुंभ	धनि	20	11	25	30	26	18	11	18	17	12	4	18	25	11	19	18	19	17
	शत	15	21	27	31	25	27	20	12	12	7	13	19	26	20	12	11	11	25
	पूभा	18	25	20	24	30	30	24	17	17	12	20	12	19	25	17	16	16	18
मीन	पूभा	15	21	17	19	26	26	24	18	18	17	25	18	17	23	15	16	16	18
	उभा	24	16	19	21	26	18	17	25	27	26	19	20	18	15	26	27	26	9
	रेव	25	26	11	13	17	26	25	24	25	25	26	13	12	23	23	24	25	19

जातक मिलाप सारिणी

लड़की	लड़का	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुंभ			मीन		
		चित्रा	स्वाति	विशा	विशा	अनु	ज्येष्ठा	मूला	पूषा	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव
तुला	चित्रा	28	27	34	23	7	21	27	13	21	24	25	23	18	26	19	12	3	12
	स्वाति	28	28	20	10	20	19	23	27	19	23	23	28	21	22	25	19	19	11
	विशा	34	19	28	18	18	22	28	21	13	16	16	30	26	26	30	14	13	4
वृश्चिक	विशा	27	7	15	28	27	32	22	16	8	11	11	25	24	26	20	29	18	10
	अनु	7	21	16	28	28	31	16	14	22	25	26	12	11	20	25	24	18	26
	ज्येष्ठा	20	15	19	32	30	28	14	17	17	20	20	25	26	19	10	10	20	20
धनु	मूला	26	21	26	23	17	16	28	28	26	14	15	19	29	22	15	17	15	26
	पूषा	12	27	20	17	16	18	27	28	34	22	23	6	15	24	29	30	23	31
	उषा	20	19	12	9	24	18	25	35	28	18	15	14	23	24	29	30	31	23
मकर	उषा	23	22	15	12	17	27	15	24	17	28	27	26	16	17	22	30	31	23
	श्रव	24	22	15	12	27	21	14	23	15	26	28	27	17	18	21	29	30	24
	धनि	29	24	29	26	12	26	21	7	15	26	27	28	17	23	18	25	15	23
कुंभ	धनि	18	20	25	25	11	25	30	16	25	17	18	18	28	33	28	17	7	14
	शत	26	21	21	27	20	18	25	25	25	17	18	24	23	28	29	8	15	16
	पूभा	19	26	20	21	27	11	15	30	30	23	23	18	27	29	28	16	22	20
मीन	पूभा	11	19	13	19	25	10	14	29	29	29	23	25	16	7	15	28	33	31
	उभा	2	19	12	18	18	20	24	22	30	30	30	15	6	15	21	33	28	33
	रेव	12	10	4	11	26	21	26	29	21	24	22	23	14	16	18	30	33	28

वधू-वर मिलाप सारिणी देखने की विधि

जन्मपत्री मिलान के लिए वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गण, भकूट, नाडी यह आठ मानिये पर्चे होते हैं, यदि वर्ण आपस में (वधू वर का) मिले तो एक गुण मानिये 1 अंक मिलता है, जब वश्य का आपस में मिलान होगा, तोउस के दो अंक यानी 2 गुण मिलते हैं ऐसे ही क्रमशः तारा के मिलान में 3 गुण योनि के मिलान में 4 गुण होते हैं अर्थात् 8 पर्चों में क्रमशः 1+2+3+4+5+6+7+8 कुल मिलाकर 36 गुण होते हैं, वधूवर के मिलान में 36 में से 18गुण मिले तो विवाह शुभफलदायक होगा।

सारिणी देखने के लिये दोनों (वर-वधू) लडके, लडकी की जन्मराशि का ज्ञान होना आवश्यक है, मानिये लड़के की राशि है मेष और लड़की की राशि है मिथुन। मेष राशि वाले का नक्षत्र होगा अश्विनी, भरणी अथवा कृतिका और मिथुन राशि वाले का नक्षत्र होगा मृगशिर, आद्री पुनर्वसु, सारिणी में देखिये हर राशि के नीचे नक्षत्र लिखे हैं। उदाहरण के रूप में मानिये लड़के की राशि है मेष और नक्षत्र है भरणी, ऐसे ही लड़की की राशि है मिथुन मानिये नक्षत्र है मृगशिर – सारिणी में देखियेः– भरणी नक्षत्र की खड़ी पंक्ति और मृगशिर की पड़ी पंक्ति जहां आपस में मिलती है वहां सारिणी में 18 दर्ज हैं, यानी वधू-वर के मिलान में 18 गुण हैं, इसलिये यह मिलान शुभ है। दूसरा उदाहरण देखिये, लड़के की राशि है सिंह और नक्षत्र है मघा, लड़की की राशि है कन्या और नक्षत्र है "हस्त" सारिणी में देखिये "मघा" नक्षत्र की खड़ी पंक्ति और हस्त की पड़ी पंक्ति में केवल 16 गुण मिलते हैं अतः मिलाप शुभ नहीं होगा।

मंगल दोष विचार

1. शनि भौमोथवा कश्चित् पापोवा तादृशोभवेत् तेष्वेव भवनेषु भौम दोष विनाशकृत्।।

जिस जन्म कुण्डली में वह लड़की की हो या लड़के की 1, 4, 7, 8, 12 वें घर में यदि मंगल हो उसी के जवाब में, जन्मचक्र से अथवा राशि चक्र से कोई क्रूरग्रह (यह आवश्यक नहीं मंगल ही हो) सूर्य, भौम, शनि राहु, इन्हीं घरों में यानी 1, 4, 7,8,12 वाँ हो तो मंगल का दोष नहीं होता है।

2. "अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे, द्यूने मृगे कर्किचाष्टे भौम दोषो न विद्यते।।"

लड़के अथवा लड़की की कुण्डली में, लग्न में मेष राशि का मंगल हो, वृश्चिक का मंगल चौथा हो, मकर राशि में सातवाँ हो, कर्क का आठवाँ हो, धनु का बारवाँ हो तो भौम का यानी मंगल का दोष नहीं होता है।

3. सप्तमस्थो यदा भौमो गुरुणा च निरीक्षित: तदातु सर्वसौरण्यं स्यात् मंगलीदोष नाशकृत्।

यदि सातवाँ मंगल हो, उस पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो मंगल का दोष नहीं होता है।

4. भौम यदि वक्री, नीच, अस्त अथवा शत्रु के घर में हो तो मंगल का दोष नहीं होता है।

नाडी दोष अपवाद

1. लड़के अथवा लड़की का नक्षत्र यदि रेवती, रोहिणी, मृगशिर, तिष्या, कृतिका, उत्तराभाद्रपद, श्रवणी, आर्द्रा तथा ज्येष्ठा हो तो नाड़ी दोष नहीं होता है।

2. यदि लड़के लड़की में से एक की राशि कन्या और दूसरे की मिथुन, एक की धनु, दूसरे की मीन, एक की तुला, दूसरे की राशि वृष हो तो नाड़ी दोष नहीं होता है।
3. वर तथा कन्या की राशि एक हो परन्तु नक्षत्र अलग–अलग हो तो नाड़ी दोष नहीं होता है अथवा वर तथा कन्या का नक्षत्र एक हो और राशि अलग–अलग हो तो नाडी दोष नहीं होता हैं।
4. नाड़ी दोष होने पर यदि पाद भेद हो तो भी नाड़ी दोष नहीं होता है।
5. वर और वधू के राशि स्वामियों अथवा नवांश स्वामियों की यदि आपस में मित्रता हो – तो राक्षस जाति तथा षष्ठाष्टक आदि का दोष नहीं होता है।

यात्रा प्रकरण

यात्रा के लिए उत्तम नक्षत्र
अश्विनी, पुनर्वसु, अनूराधा, तिष्या, मृगशिर, रेवती हस्त धनिष्ठा।

यात्रा के लिए निषेध नक्षत्र
भरणी, कृतिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, चित्रा, स्वाति, विशाखा।

यात्रा के लिये मध्यम नक्षत्र
रोहिणी, उत्तराफाल्गुणी, उत्तराषाढ़ा, उत्तरभाद्रपदा, पूर्वाफा., पूर्वाषा., ज्येष्ठा, मूला, शतभिषक्।

यात्रा के लिये अशुभ योग
कालदण्डः, धौम्यः, ध्वांक्षः, उन्मूलम्, मुस्लम्, मुद्गरम्, काण्डः, क्षयः, शूलम्।

यात्रा के लिए अशुभ चन्द्रमा
अपनी राशि से चौथा, आठवाँ, बारवाँ।

यात्रा को जाना यदि आवश्यक हो तो
बृहस्पति, शुक्रवार, रविवार, को रात्रि में यात्रा को जाने

में कोई दोष न मानिये, ऐसे ही सोमवार, शनिवार और मंगलवार — इन तीन वारों का दोष दिन को न मानिये।

वार दोष निवारण के लिये

रविवार को पान खाकर यात्रा को जायें, सोमवार को दूध अथवा खीर, मंगलवार को आँवला अथवा कांजी, खट्टी पदार्थ, बुधवार को मीठा, बृहस्पति वार को दही, शुक्रवार को कच्चा दूध, शनिवार को उड़द अथवा तहर।

घातचन्द्र - घातवार

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	राशि
1	5	9	2	6	10	3	7	4	8	11	12	चन्द्र
रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	भौम	गुरु	शुक्र	वार

मेष राशि वालों के लिए पहला चन्द्रमा घात चन्द्रमा है, ऐसे ही रविवार भी घातवार है, घातचन्द्रमा केवल यात्रा के लिये निषेध है।

यात्रा के लिए उत्तम योगिनी तथा चन्द्रमा

दिशा	*वार*	*बायें योगिनी*	*पीछे योगिनी*	*सन्मुख चन्द्रमा*	*दायां चन्द्रमा*
पूर्व	रवि, भौम, बुध, गुरु, शुक्र	द्वितीया दशमी,	षष्ठी चतुर्द	मेष, सिंह, धनु	मकर, कन्या, वृष,
पश्चिम	सोम, बुध, गुरु, शनि	पंचमी, त्रायो,	प्रतिपदा, नवमी	मिथुन, तुला, कुंभ	कर्क, वृश्चि, मीन
दक्षिण	सोम, भौम, बुध, शुक्र	प्रतिपद् नवमी	द्वितीया, दशमी	मकर, कन्या, वृष,	मिथुन, तुला, कुम्भ
उत्तर	सोम, शुक्र, शनि, रवि,	षष्ठी, चतुर्द	पंचमी, त्रयोदशी	कर्क, वृश्चिक, मीन	मेष, सिंह, धनु

जन्म नक्षत्र के अनुसार राशि तथा नामाक्षर चक्र

राशि	मेष (ARIES)									वृष (TAURUS)									मिथुन (GEMINI)								
नक्षत्र	अश्विनी				भरणी				कृत्तिका				रोहिणी				मृगशिरा				आर्द्रा				पुनर्वसु		
चरण	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3
नामाक्षर	चु	चे	चो	ला	ली	लू	ले	लो	आ	ई	उ	ए	ओ	वा	वी	वू	वे	वो	का	की	कू	घ	ङ	छ	के	को	हा
चन्द्रस्पष्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	1	1	1	1	1	1	1	2	2	2	2	2	2	2	2	2	3
	3	6	10	13	16	20	23	26	0	3	6	10	13	16	20	23	26	0	3	6	10	13	16	20	23	26	0
	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0

राशि	कर्कट (CANCER)									सिंह (LEO)									कन्या (VIRGO)								
नक्षत्र	पुं	तिष्य				आश्लेषा				मघा				पूर्वा फाल्गुणी				उत्तरा फाल्गुणी				हस्त				चित्रा	
चरण	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2
नामाक्षर	ही	हू	हे	हो	डा	डी	डू	डे	डो	मा	मी	मू	मे	मो	टा	टी	टू	टे	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो
चन्द्रस्पष्ट	3	3	3	3	3	3	3	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	5	5	5	5	5	5	5	5	5	6
	3	6	10	13	16	20	23	26	0	3	6	10	13	16	20	23	26	0	3	6	10	13	16	20	23	26	0
	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0

जन्म नक्षत्र के अनुसार राशि तथा नामाक्षर चक्र

राशि	तुला (LIBRA)									वृश्चिक (SCORPO)									धनु (SAGITTARIUS)								
नक्षत्र	चित्रा		स्वाति				विशाखा				अनुराधा				ज्येष्ठा				मूला				पूर्वाषाढा				उ.
चरण	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1
नामाक्षर	र	री	रु	रे	रो	ता	ति	तु	ते	तो	न	नु	ने	नी	यो	या	यी	यु	ये	या	भा	भि	भु	फ	ढ	भ	भे
चन्द्रस्पष्ट	6	6	6	6	6	6	6	6	7	7	7	7	7	7	7	7	7	8	8	8	8	8	8	8	8	8	9
	3	6	10	13	16	20	23	26	0	3	6	10	13	16	20	23	26	0	3	6	10	13	16	20	23	26	0
	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0

राशि	मकर (CARRICORN)									कुम्भ (AQUARIUS)									मीन (PISCES)								
नक्षत्र	उत्तराषाढा			श्रवण				धनिष्ठा				शतभिषा				पूर्वाभाद्रपदा				उत्तराभाद्रपदा				रेवती			
चरण	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4
नामाक्षर	भो	जा	जी	खी	खू	खे	खो	गा	गी	गू	गे	गो	सा	सी	सू	से	सो	दा	दी	दू	थ	झ	ञ	दे	दो	च	ची
चन्द्रस्पष्ट	9	9	9	9	9	9	9	9	10	10	10	10	10	10	10	10	10	11	11	11	11	11	11	11	11	11	0
	3	6	10	13	16	20	23	26	0	3	6	10	13	16	20	23	26	0	3	6	10	13	16	20	23	26	0
	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0

आमदनी खर्च का चित्र

	मे	वृ	दि	क	सिं	कं	तु	वृं	ध	म	कुं	मी
आय	11	5	11	5	8	11	5	11	8	2	2	8
व्यय	14	8	5	2	14	5	8	14	5	8	8	5

नोट: आमदनी और खर्च के अंकों के जोड़ से एक कम करके आठ से भाग देने पर फल निम्नलिखित है।

एक बाकी बचे:- तो यह वर्ष सुख शान्ति के वातावरण में आदरमान से व्यतीत होगा, यदि आप नौकरी करते हैं तो अचानक तरक्की की सम्भावना है यदि आप नौकरी की तलाश में है तो प्रयत्न करने पर अवश्य सफलता होगी, यदि आप तिजारत करते हैं तो आपके कारोबार को विशाल बनाने के निमित यह वर्ष रिकार्ड होगा, कारोबार सम्बन्धित प्रत्येक काम में आपको लाभ रहेगा, विद्यार्थी वर्ग के लिये भी यह वर्ष अनुकूल है आप प्रयत्न कीजिये आशा से अधिक सफलता होगी।

दो बाकी बचे:- जिन तर्की की आशाओं को लेकर आप बहुत समय से प्रतीक्षा कर रहे है प्रायः सभी आशायें पूर्ण होंगी हर आरम्भ किये कार्य में सफलता निर्शिचत रूप से होगी, सफलता के साथ-साथ आदरमान की दृष्टि से भी यह वर्ष उत्तम रहेगा, आप परिश्रम कीजिये ग्रह आपके सहायक है यदि आप कपड़ें से सम्बन्धित व्यापार करते है तो लाभ की आशा न रखें, किरयाना, लोहा मशीनरी सम्बन्धित काम करने वाले व्यापारी लाभ में रहेंगे, यदि आपका काम फलों बागों से सम्बन्धित है तो दौड़, धूप अधिक

परन्तु अन्त में जाकर आपने खसारा में ही रहना होगा, नौकरी पेशा होने पर नौकरी सम्बन्धित कोई समस्या क्यों न हो जरा सी सावधानी से कदम उठाने पर ही समस्या का समाधान होगा, हर पहलू से उत्तम समय होने पर भी शरीर के विषय में सावधान रहना चाहिये, शरीर को स्वस्थ रखने के लिए उपाय के रूप में किसी भी मादक द्रव्य का सेवन न करें, रविवार को निश्चित रूप से वैष्णव रहें।

तीन बाकी बचे:- तो यह वर्ष संघर्ष का होगा, कोई भी कार्य उलझनों व रुकावटों का सामना किये बिना सफल नहीं होगी, घरेलू परेशानियां भी आपको घेरे रखेंगी केवल परिवार में सन्तान पक्ष से शान्ति रहेगी, घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा जिसमें अधिक से अधिक धन राशि का व्यय होगा शरीर के विषय में सावधान रहिए चोट आदि लगने का भी अन्देशा है, किसी रिश्तेदार मित्र अथवा किसी विश्वासपात्र से धोखा लगने का योग है, उपाय के रूप में हनुमान चालीसा अथवा बहुरूपगर्भ का पाठ नियम से करें यदि किसी दिन पाठ न कर सकोगे तो दूसरे दिन उस पाठ को करें, यदि आप विद्यार्थी है आपको इस वर्ष सावधान रहना चाहिये रात दिन परिश्रम करने पर ही सफलता की आशा रखें, वह सफलता भी इच्छानुसार नहीं होगी, यदि आप इस वर्ष सफलता चाहते हैं तो नियम से घर से किसी वृद्ध सदस्य अथवा माता-पिता के चरणों को प्रातः प्रणाम् करके नित्य उनसे आर्शीवाद प्राप्त करें।

चार बाकी बचे:- तो यह वर्ष संघर्ष तथा दौड़-धूप में ही गुजरेगा हर एक कार्य में कोई न कोई उलझन खड़ी होगी, यदि आप नौकरी पेशा है तो मर्जी से उलट तबदीली होगी, गृहस्थी होने पर घरेलू परेशानियों का सामना करना पड़ेगा परन्तु खर्च के नये-नये रास्ते निकल आयेंगे यदि आप व्यापारी हें, तो लेन-देन के विषय में सावधान रहें अचानक धोखा लगने का अन्देशा हैं, लेन-देन अथवा धन के सम्बन्ध में किसी

गैर का विश्वास न किजिए वाद में पछताना पड़ेगा, जायदाद सम्बन्धित कोई झगड़ा खड़ा होने का अन्देशा है, जायदाद सम्बन्धित किसी झगड़े का आरम्भ दिख पड़ते ही आपसी सुलह करने में दलचस्पी रखें, उपाय के रूप में नित्य प्रातः काल उठ कर किसी बुजुर्ग अथवा माता-पिता के चरणों का स्पर्श करके आर्शीवाद प्राप्त करें निश्चय रखिये वह आर्शीवाद रामबाण का काम करेगा।

पांच बाकी बचे:- तो वर्ष भर मानसिक अशान्ति बनी रहेगी, कोई भी कार्य बिना रुकावट के सफल नहीं होगा, वर्ष भर घरेलू परेशानियों से छुटकारा नहीं मिलेगा, धन की दशा भी डांवाडोल रहेगी, कभी धन आवश्यकता अनुसार मिलता रहेगा कभी तंगदस्ती से दुचार होगा, कभी अचानक लाभ की सम्भावना है, उस लाभ की आशा में अधिक विश्वास न रखें, उपाय के रूप में घर में कोई महोत्सव या मकान आदि बनाने का प्रोग्राम बनायें ऐसे शुभ कामों में लगे रहना आपके लिये शान्ति का कारण बनेगा, यदि यात्रा का प्रोग्राम बने अवश्य बनायें घर की अपेक्षा आप यात्रा में सुखी रहेंगे, विद्यार्थी वर्ग को चेतावनी है कि आप पढ़ाई में आलस्य न करें परिश्रम करने पर आप अच्छी पोजीशन में सफल होंगे।

छः बाकी बचे:- तो आपके घर में शान्ति की सूचना है, आपको किसी महापुरुष से संयोग होगा जो आपकी मानसिक शान्ति का कारण बनेगा, कोई भी कार्य आप हाथ में लेंगे, उसमें अवश्य सफलता होगी आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी, मान की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा, सामाजिक तथा धार्मिक कामों में दिलचस्पी बनी रहेंगी, नौकरी पेशा वालों के लिए यद्यपि यह वर्ष दौड़-धूप तथा संघर्ष का ही होगा परन्तु मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, व्यापारी वर्ग भी लाभ में रहेगा, विद्यार्थियों के लिये, यह वर्ष सफलता का

है, धन लाभ के साथ-साथ खर्च का योग भी वलवान है, प्रायः खर्च शुभ कामों में ही होगा घर में विवाह आदि महोत्सव रचाने का प्रोग्राम वनेगा।

सात बाकी बचे:- तो इस वर्ष आपका भाग्योदय होगा, आप केवल प्रोग्राम ही न बनायें अपितु हर प्रोग्राम को अमली रूप देने का प्रयत्न कीजिये, इस वर्ष ग्रह अनुकूल है आपके कठिन से कठिन काम को सफल बनाने में सहायक होंगे, यदि आप गृहस्थी हैं तो घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम अवश्य वनेगा, यदि आप मकान या जायदाद बनाने का विचार रखते हैं तो इस वर्ष इस शुभ अवसर को हाथ से न जाने दें यदि आप व्यापार करते हैं या नौकरी अथवा विद्यार्थी हैं तो आप का हर काम जरा सा ध्यान देने पर सफल होगा आपको यात्रा का प्रोग्राम बने जिसें संतोषजनक सफलता होगी, आपका स्वास्थ्य भी इस वर्ष ठीक रहेगा, धन लाभ के साथ-साथ खर्च का योग है।

बाकी कुछ न बचे:- तो वर्ष भर के लिये संघर्ष तथा दौड़धूप का सूचक है, गृहस्थी होने पर घरेलू परेशानियाँ आपका पीछा छोड़ेंगी नहीं, यदि आप नौकरी करते हैं तो दफ्तर में प्रायः मन अशान्त रहेगा, सम्बन्धित अफसरों से अनवन रहेगी, नौकरी सम्बन्धित यदि तरक्की की कोई आशा है, हर एक कार्य ज्यों का त्यों लटकता रहेगा, यदि आप व्यापार करते हैं परिश्रम बहुत करना होगा परन्तु पल्ले कुछ नहीं पड़ेगा, यदि आप विद्यार्थी है तो परिश्रम करने पर भी संतोषजनक सफलता नहीं होगी, यद्यपि यह वर्ष हर पहलू से ढीला ही रहेगा ऐसा होने पर भी धार्मिक प्रवृति, सामाजिक कामों में दिलचस्पी बनी रहेगी, उपाय के रूप में आप हर सोमवार को भगवान् शंकर पर जल चढाया करें।

बारह मासों का संक्षिप्त परिचय

व्रत-पर्व-त्यौहार पंचक अष्टमी इत्यादि

2058 के लिये

चैत्र शुक्ल पक्ष

थालस बुथ वुछुन	26 मार्च
नवरेह, नवरात्रारम्भ	26 मार्च
पंचक समाप्त 7.50 रात	26 मार्च
शुक्रास्त	27 मार्च
जंगत्रय	28 मार्च
कुमार षष्ठी	30 मार्च
दुर्गाष्टमी	1 अप्रैल
शुक्रोदय	1 अप्रैल
राम नवमी, उमा जयन्ती	2 अप्रैल
एकादशी	4 अप्रैल
पूर्णिमा	8 अप्रैल

वैशाख कृष्ण पक्ष

संकट चतुर्थी	11 अप्रैल
संक्रान्ति, वैशाखी ऋषिपीर श्राद्ध	13 अप्रैल
पंचक आरम्भ 6-8 प्रातः	18 अप्रैल
पंचक समाप्त 3-5 रात	22 अप्रैल
सोमामावसी	23 अप्रैल

वैशाख शुक्ल पक्ष

अक्षया तृतीया	26 अप्रैल
कुमार षष्ठी	28 अप्रैल
विजया सप्तमी	29 अप्रैल
अष्टमी	1 मई
नारद एकादशी	3 मई
गणेश चतुर्दशी	6 मई
पूर्णिमा	7 मई

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

संकट चतुर्थी	10 मई
संक्रान्ति	14 मई
पंचक आरम्भ 2-7 दिन	15 मई
पंचक समाप्त 11.39 दिन	20 मई

अमावसी	23 मई

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

कुमार षष्ठी	28 मई
ज्येष्ठाष्टमी	30 मई
निर्जला एकादशी	2 जून
बृहस्पति अस्त	2 जून
पूर्णिमा	6 जून

आषाढ कृष्ण पक्ष

संकट चतुर्थी	9 जून
पंचक आरम्भ 9.59 रात	11 जून
संक्रान्ति	15 जून
पंचक समाप्त 8.40 रात	16 जून
अमावसी	21 जून

आषाढ शुक्ल पक्ष

कुमार षष्ठी, बृहस्पति उदय	26 जून
हार सत्तम	27 जून
हार अठम	28 जून
हार नवम	29 जून
देवशयनी एकादशी	1 जुलाई
ज्वाला चतुर्दशी	4 जुलाई
गुरु पूर्णिमा	5 जुलाई

श्रावण कृष्ण पक्ष

संकट चतुर्थी	9 जुलाई
पंचक आरम्भ 5-11 प्रातः	9 जुलाई
पंचक समाप्त 5 बजे प्रातः	14 जुलाई
संक्रान्ति	16 जुलाई
अमावसी	20 जुलाई

श्रावण शुक्ल पक्ष

कुमार षष्ठी	25 जुलाई
अष्टमी	27 जुलाई
श्रावण द्वादशी	31 जुलाई
रक्षा बन्धन, अमर नाथ यात्रा	4 अगस्त

भाद्र कृष्ण पक्ष

पंचक आरम्भ 11.36 दिन	5 अगस्त
संकट चतुर्थी	7 अगस्त
चन्दन षष्ठी	10 अगस्त
पंचक समाप्त 11.57 दिन	10 अग.
जन्माष्टमी	12 अगस्त
संक्रान्ति	16 अगस्त
अमावसी	19 अगस्त

भाद्र शुक्ल पक्ष

वराह पंचमी, कुमार षष्ठी	23 अग.
गंगाष्टमी, शारदाष्टमी लल्लेश्वरी जयन्ती, उमा नगरी यज्ञ मुट्ठी जम्मू	26 अगस्त

नारायणी एकादशी	29 अगस्त
वितस्ता त्रयोदशी	31 अगस्त
पंचक आरम्भ 5.38 शां अनन्त चतुर्दशी	1 सित.
पूर्णिमा	2 सित.

आश्विन कृष्ण पक्ष

पितृ पक्षारम्भ	3 सित.
पंचक समाप्त 5.49 शां	6 सित.
साहिब सप्तमी	9 सित.
काश्मीरी पण्डितों का बलिदान दिवस	14 सित.
संक्रान्ति, हरुद	16 सित.
पित्रामावसी, सोमामावसी अधिक मास प्रवेश	17 सित.

अ. आश्विन शुक्ल पक्ष

कुमार षष्ठी	22 सित.
अष्टमी	24 सित.
पंचक आरम्भ 11.56 रात	28 सित.
पूर्णिमा	2 अक्टू.

अ. आश्विन कृष्ण पक्ष

पंचक समाप्त 11.38 रात	3 अक्टू.
संकट चतुर्थी	6 अक्टू.
अमावसी, अधिक मास निर्गम	16 अक्टू.

आश्विन शुक्ल पक्ष

संक्रान्ति, नवरात्रारम्भ	17 अक्टू.
कुमार षष्ठी	22 अक्टू.
दुर्गाष्टमी	24 अक्टू.
महानवमी, सरस्वती विसर्जन	25 अक्टू.
विजया दशमी	26 अक्टू.
पंचक आरम्भ 7.1 प्रातः	26 अक्टू.
पंचक समाप्त 6.30 प्रात	31 अक्टू.
पूर्णिमा	1 नव.

कार्तिक कृष्ण पक्ष

संकट चतुर्थी, करवा चौथ	4 नव.
रमा एकादशी	11 नव.
दीपावली	14 नव.
अमावसी	15 नव.

कार्तिक शुक्ल पक्ष

संक्रान्ति	16 नव.
कुमार षष्ठी	20 नव.

पंचक आरम्भ 3.2 दिन	22 नव.
अष्टमी	23 नव.
हरिबोधिनी एकादशी	26 नव.
पंचक समाप्त 2.50 दिन	27 नव.
पूर्णिमा	30 नव.

मार्ग कृष्ण पक्ष

संकट चतुर्थी	4 दिस.
महाकाल भैरवाष्टमी	8 दिस.
अमावसी	14 दिस.

मार्ग शुक्ल पक्ष

संक्रान्ति	15 दिस.
शुक्र अस्त	18 दिस.
पंचक आरम्भ 11.24 रात	19 दिस.
कुमार षष्ठी	20 दिस.
अष्टमी	23 दिस.
पंचक समाप्त 11.47 रात	24 दिस.
पूर्णिमा	30 दिस.

पौष कृष्ण पक्ष

मंजहर तहर	31 दिस.
संकट चतुर्थी	2 जन.
क्ष्यचरि मावसी	13 जन.

पौष शुक्ल पक्ष

शिशर संक्रान्ति	14 जन.
पंचक आरम्भ 7.17 प्रातः	16 जन.
कुमार षष्ठी, काश्मीरी पण्डितों का जन्म भूमि निष्कासन दिवस	19 जन.
पंचक समाप्त 8.9 दिन	21 जन.
अष्टमी	22 जन.
पुत्रदा एकादशी	25 जन.
पूर्णिमा	28 जन.

माघ कृष्ण पक्ष

संकट चतुर्थी	31 जन.
साहिब सप्तमी	3 फर.
शुक्र उदय	6 फर.
शिव चतुर्दशी	10 फर.
अमावसी, पंचक आरम्भ 2.9 दिन	12 फर.

माघ शुक्ल पक्ष

संक्रान्ति	13 फर.
गौरी तृतीया	15 फर.
त्रिपुरा चतुर्थी	16 फर.

वसन्त पंचमी, पंचक समाप्त 3.12 दिन	17 फर.
कुमार षष्ठी	18 फर.
सूर्य सप्तमी	19 फर.
बुधाष्टमी	20 फर.
भीमसेन एकादशी	23 फर.
माघ पूर्णिमा	27 फर.

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

हुरि अकदोह	28 फर.
संकट चतुर्थी	2 मार्च
होराष्टमी	6 मार्च
शिवरात्री, हेरथ	11 मार्च
पंचक आरम्भ 8.9 रात	11 मार्च
शिव चतुर्दशी	12 मार्च
थाल भरुन	13 मार्च
वटुक परमोजुन अमावसी संक्रान्ति सोन्थ	14 मार्च

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

पंचक समाप्त 9.15 रात	16 मार्च
कुमार षष्ठी	20 मार्च
तैलाष्टमी	22 मार्च
अमला एकादशी	25 मार्च
होली-पूर्णिमा	28 मार्च

चैत्र कृष्ण पक्ष

संकट चतुर्थी	31 मार्च
पंचक आरम्भ 2.9 रात	7 अप्रैल
चित्र चुदाह	11 अप्रैल
थाल भरुण विचार नाग यात्रा	12 अप्रैल

पितृ पक्ष में श्राद्ध कब 2058 के लिये

प्रतिपदा का श्राद्ध	3 सित.
द्वितीया का श्राद्ध	4 सित.
तृतीया का श्राद्ध	5 सित.
चतुर्थी का श्राद्ध	6 सित.
पंचमी का श्राद्ध	7 सित.
षष्ठी का श्राद्ध	8 सित.
सप्तमी का श्राद्ध	9 सित.
अष्टमी का श्राद्ध	10 सित.
नवमी का श्राद्ध	11 सित.
दशमी का श्राद्ध	12 सित.
एकादशी का श्राद्ध	13 सित.
द्वादशी का श्राद्ध	14 सित.
त्रयोदशी का श्राद्ध	15 सित.
चतुदर्शी का श्राद्ध	16 सित.
अमावसी का श्राद्ध	17 सित.

ग्रहण विवर्ण 2058 के लिये

इस वर्ष पृथ्वी पर तीन ग्रहण होंगे इन में से केवल एक ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण भारत में दिखाई देगा।

1. खग्रास सूर्य ग्रहण (21 जून 2001 को)। 2. ग्रस्तोदय खण्ड ग्रास चन्द्रग्रहण (5 जुलाई 2001 को)

3. कंकण सूर्य ग्रहण (14 दिसम्वर 2001 को)

भारत में दिखाई देने वाला ग्रहण:- ***ग्रस्तोदय खण्ड ग्रास चन्द्र ग्रहण***

(5 जुलाई 2001 को)

यह ग्रहण 5 जुलाई 2001 तदनुसार आषाढ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा गुरुवार को सायं 7 वज कर 6 मिनट पर आरम्भ होकर रात के 9 वजे 46 मिनट पर समाप्त होगा यह ग्रहण पूरे भारत में दिखाई देगा, इस ग्रहण का सूतक प्रातः 10 बजे 6 मिनट से आरम्भ होगा। यह ग्रहण धनु राशि वालों तथा पूर्वा षाढा नक्षत्र वालों के लिये हानि कारक होगा। ग्रहण आरम्भ होते ही अपने आप को पूजा पाठ, सत्संग इत्यादि में व्यस्त रखें तथा ग्रहण समाप्त होने पर स्नान इत्यादि करके यथा शक्ति दान आदि अवश्य करें।

नोट:- जम्मू में यह ग्रहण 7 वजे 38 मिनट पर दिखाई देगा क्योंकि जम्मू में चन्द्रोदय शाम 7 वजे 38 मिनट पर होगा।

निषेध समय 2058 के लिये

शुक्रास्त :- 27 मार्च से 1 अप्रैल तक

बृहस्पति अस्त :- 2 जून से 26 जून तक

स्यंघ :- 16 अगस्त से 15 सितम्बर तक

श्राद्ध :- 3 सितम्बर से 17 सितम्बर तक

अधिक मास (मल मास) 17 सितम्बर से 16 अक्टूबर तक

पौष :- 15 दिसम्बर से 13 जनवरी 2002 तक

शुक्रास्त:- 18 दिसम्बर से 6 फरवरी तक

चैत्र कृष्ण पक्ष :- 29 मार्च 2002 से 12 अप्रैल तक

गण्डान्त आरम्भ		गण्डान्त समाप्त	
26 मार्च	1 बजे 31 दिन	26 मार्च	2 बजे 9 रात
4 अप्रैल	9 बजे 40 प्रातः	4 अप्रैल	8 बजे 44 रात
12 अप्रैल	11 बजे 40 रात	13 अप्रैल	11 बजे 35 दिन
22 अप्रैल	8 बजे 48 रात	23 अप्रैल	9 बजे 15 दिन
1 मई	3 बजे 47 दिन	1 मई	3 बजे 5 रात
10 मई	8 बजे 39 प्रातः	10 मई	9 बजे 8 रात
20 मई	5 बजे 27 प्रातः	20 मई	6 बजे 4 शाम
28 मई	9 बजे 12 रात	29 मई	8 बजे 26 प्रातः
6 जून	4 बजे 53 दिन	7 जून	5 बजे 32 प्रातः
16 जून	2 बजे 17 दिन	16 जून	3 बजे 00 रात
24 जून	3 बजे 56 रात	25 जून	3 बजे 23 दिन
3 जुलाई	11 बजे 39 रात	4 जुलाई	12 बजे 29 दिन
13 जुलाई	10 बजे 32 रात	14 जुलाई	11 बजे 20 दिन
22 जुलाई	12 बजे 56 दिन	22 जुलाई	11 बजे 33 रात
31 जुलाई	5 बजे 23 प्रातः	31 जुलाई	6 बजे 13 शाम
10 अगस्त	5 बजे 27 प्रातः	10 अगस्त	6 बजे 40 शाम
18 अगस्त	11 बजे 31 रात	19 अगस्त	10 बजे 00 दिन
27 अगस्त	11 बजे 14 दिन	27 अगस्त	12 बजे 3 रात
6 सितम्बर	11 बजे 15 दिन	6 सितम्बर	12 बजे 25 रात
15 सितम्बर	10 बजे 5 दिन	15 सितम्बर	8 बजे 42 रात

23 सितम्बर	6 बजे 22 शाम	24 सितम्बर	6 बजे 58 प्रातः
3 अक्टूबर	5 बजे 6 शाम	4 अक्टूबर	6 बजे 7 प्रातः
12 अक्टूबर	6 बजे 52 शाम	13 अक्टूबर	5 बजे 54 प्रातः
20 अक्टूबर	3 बजे 5 रात	21 अक्टूबर	3 बजे 10 दिन
30 अक्टूबर	12 बजे 3 रात	31 अक्टूबर	12 बजे 54 दिन
8 नवम्बर	1 बजे 22 रात	9 नवम्बर	12 बजे 35 दिन
17 नवम्बर	12 बजे 55 दिन	17 नवम्बर	1 बजे 8 रात
27 नवम्बर	8 बजे 20 प्रातः	27 नवम्बर	9 बजे 24 रात
6 दिसम्बर	6 बजे 41 प्रातः	6 दिसम्बर	6 बजे 00 शाम
14 दिसम्बर	9 बजे 59 रात	15 दिसम्बर	10 बजे 12 दिन
24 दिसम्बर	5 बजे 12 शाम	25 दिसम्बर	6 बजे 18 प्रातः
2 जनवरी	1 बजे 33 दिन	2 जनवरी	12 बजे 30 रात
11 जनवरी	5 बजे 10 प्रातः	11 जनवरी	5 बजे 24 दिन
20 जनवरी	1 बजे 33 रात	21 जनवरी	3 बजे 3 दिन
29 जनवरी	11 बजे 5 रात	30 जनवरी	9 बजे 40 दिन
7 फरवरी	10 बजे 49 दिन	7 फरवरी	11 बजे 19 रात
17 फरवरी	8 बजे 29 प्रातः	17 फरवरी	9 बजे 59 रात
26 फरवरी	10 बजे 19 दिन	26 फरवरी	8 बजे 58 रात
6 मार्च	4 बजे 42 दिन	6 मार्च	5 बजे 4 रात
16 मार्च	2 बजे 32 दिन	16 मार्च	3 बजे 58 रात
25 मार्च	8 बजे 53 रात	26 मार्च	7 बजे 44 प्रातः
2 अप्रैल	12 बजे 11 रात	3 अप्रैल	12 बजे 26 दिन

ग्रह संचार 2058 के लिये

सूर्य

[illegible] अप्रैल मेष में
14 मई वृष में
14 जून मिथुन में
16 जुलाई कर्क में
16 अगस्त सिंह में
16 सितम्बर कन्या में
17 अक्टूबर तुला में
16 नव. वृश्चिक में
15 दिसम्बर धनु में
14 जनवरी मकर में
12 फरवरी कुम्भ में
14 मार्च मीन में

मंगल

10 अप्रैल धनु में
10 जून वृश्चिक में वक्री
26 अगस्त धनु में
18 अक्टू. मकर में
30 नव. कुम्भ में
10 जनवरी मीन में
21 फरवरी मेष में
04 अप्रैल वृष में

बुध

02 अप्रैल मीन में
18 अप्रैल मेष में
03 मई वृष में
22 मई मिथुन में
19 जून वृष में वक्री
06 जुलाई मिथुन में
27 जुलाई कर्क में
11 अगस्त सिंह में
28 अगस्त कन्या में

20 सित. तुला में
11 अक्टू. कन्या में वक्री
03 नव. तुला में
22 नव. वृश्चिक में
11 दिस. धनु में
30 दिस. मकर में
07 मार्च कुम्भ में
26 मार्च मीन में
10 अप्रैल मेष में

बृहस्पति

15 जून मिथुन में

शुक्र

30 मई मेष में
30 जून वृष में
27 जुलाई मिथुन में
22 अगस्त कर्क में
16 सित. सिंह में
10 अक्टू. कन्या में

छप गया

महिम्नापार (महिम्नस्तोत्र)

अनुवादक एवं व्याख्याकार
पं० प्रेमनाथ शास्त्री

[illegible]

ज्योतिषी आप्ताभ शर्मा का

35वां निर्वाण दिवस

4 नवम्बर 2001 को

ज्योतिषी आप्ताभ शर्मा का 35वां निर्वाण दिवस 4 नवम्बर 2001 तदनुसार कार्तिक कृष्ण पक्ष तृतीया रविवार को

विजयेश्वर पंचांग कार्यालय

अजीत कालोनी, जम्मू

में मनाया जायेगा।

कार्यक्रम

यज्ञारम्भः 3 नवम्बर, 9 बजे रात
पूर्णाहुतिः 4 नवम्बर 1 बजे दिन
प्रसादः 4 नवम्बर 1.30 बजे दिन
गुरु कीर्तन : 3 बजे दिन

पं० प्रेम नाथ शास्त्री का

दूसरा निर्वाण दिवस

5 अगस्त 2001 को

पं० प्रेम नाथ शास्त्री का

दूसरा निर्वाण दिवस 5 अगस्त 2001 तदनुसार भाद्र कृष्ण पक्ष प्रतिपदा रविवार को उन के निवास स्थान अजीत कॉलोनी, गोल गुजराल में मनाया जायेगा आप से सविनय अनुरोध है कि समय पर आकर प्रीति भोज में भाग लें।

कार्यक्रम

यज्ञारम्भः 4 अगस्त, 9 बजे रात
पूर्णाहुतिः 5 अगस्त 1 बजे दिन
प्रसादः 5 अगस्त, 1.30 बजे दिन

शेष 220 पृ० पर

काश्मीर के महात्माओं की जयन्तियां श्राद्ध अथवा यज्ञ

नोट :- नीचे लिखे गए श्राद्धों में 'दि' 'प्र' के आधार से एक दिन की तिथि आगे पीछे भी हो सकती है स्वयं ठीक कीजिए।

चण्डीग्राम महात्मा यज्ञ	चैत्र शुक्ल पक्ष सप्तमी	31 मार्च	भगवान् गोपीनाथ जयन्ती	आषाढ शुक्ल पक्ष द्वादशी	2 जुलाई
स्वामी भाई टोठ जी महाराज	चैत्र शुक्ल पक्ष दशमी	3 अप्रैल	स्वा. पुष्कर नाथ यज्ञ	आषाढ शुक्ल पक्ष द्वादशी	2 जुलाई
स्वामी कुमार जी जयन्ती	चैत्र शुक्ल पक्ष द्वादशी	5 अप्रैल	स्वामी विद्याधर जी यज्ञ	आषाढ शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	3 जुलाई
जानकीनाथ साहिब दर जयन्ती	वैशाख कृष्ण पक्ष सप्तमी	15 अप्रैल	स्वामी लाल जी यज्ञ	श्रावण कृष्ण पक्ष तृतीया	8 जुलाई
श्री महादेव काक भान जयन्ती	वैशाख कृष्ण पक्ष सप्तमी	15 अप्रैल	ग्रट बब दिवस	श्रावण कृष्ण पक्ष द्वादशी	18 जुलाई
श्री स्वामी लक्ष्मणं जी जयन्ती	वैशाख कृष्ण पक्ष द्वादशी	20 अप्रैल	जानकीनाथ साहिब दर यज्ञ	श्रावण शुक्ल पक्ष अष्टमी	27 जुलाई
श्री शकर साहिब यज्ञ	वैशाख शुक्ल पक्ष द्वितीया	25 अप्रैल	स्वामी गोविन्द कौल यज्ञ	श्रावण शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	3 अगस्त
योगीराज धर्मदत्त जी यज्ञ	वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीया	26 अप्रैल	स्वामी गण काक यज्ञ	श्रावण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	4 अगस्त
श्री काक जी यज्ञ	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष द्वितीया	9 मई	स्वामी परमानन्द जी यज्ञ	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्थी	22 अगस्त
भगवान् गोपी नाथ यज्ञ	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष द्वितीया	24 मई	स्वामी कृष्ण जु राजदान जयन्ती	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्थी	22 अगस्त
पण्डित शंकर राजदान यज्ञ	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष अष्टमी	30 मई	माता उमादेवी यज्ञ	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	26 अगस्त
श्री सिद्ध बब जयन्ती	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष नवमी	31 मई	ललीश्वरी जयन्ती	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	26 अगस्त
श्री मोहनलाल जी जयन्ती	आषाढ कृष्ण पक्ष तृतीया	9 जून	श्री शकर साहब यज्ञ	आश्विन कृष्ण पक्ष द्वितीया	4 सिप्त.
स्वामी स्वयमानन्द जयन्ती	आषाढ शुक्ल पक्ष षष्ठी	12 जून	स्वामी लक्ष्मण जी यज्ञ	आश्विन कृष्ण पक्ष चतुर्थी	7 सिप्त.
स्वामी आनन्द जी विलगाम	आषाढ शुक्ल पक्ष सप्तमी	13 जून	स्वामी हर काक जयन्ती	आश्विन कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	15 सिप्त.

13

स्वामी क्राल बब यज्ञ	आश्विन कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	16 सिप्त.
स्वामी हरिकृष्ण यज्ञ	आश्विन शुक्ल पक्ष द्वितीया	18 अक्टू.
श्री नन्दलाल साहिब यज्ञ	आश्विन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	30 अक्टू.
श्री सिद्ध बब यज्ञ	कार्तिक कृष्ण पक्ष द्वितीया	3 नवम्बर
ज्योतिषी आप्ताभ शर्मा यज्ञ	कार्तिक कृष्ण पक्ष तृतीया	4 नवम्बर
स्वा. विदलाल (गुशी) यज्ञ	कार्तिक कृष्ण पक्ष षष्ठी	7 नवम्बर
महादेव काक जयन्ती	कार्तिक कृष्ण पक्ष नवमी	9 नवम्बर
स्वामी महताब काक जी जयन्ती	कार्तिक शुक्ल पक्ष चतुर्थी	19 नवम्बर
स्वामी गोकुलनाथ जयन्ती	कार्तिक शुक्ल पक्ष सप्तमी	22 नवम्बर
श्री महादेव काक यज्ञ	कार्तिक शुक्ल पक्ष अष्टमी	23 नवम्बर
स्वामी आत्माराम यज्ञ	कार्तिक शुक्ल पक्ष एकादशी	26 नवम्बर
श्रीमती कमला जी काचरु जयन्ती	कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वादशी	27 नवम्बर
स्वामी पुष्करनाथ जयन्ती	कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वादशी	27 नवम्बर
चण्डीगाम महात्मा जयन्ती	कार्तिक शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	30 नवम्बर
स्वामी काशीनाथ यज्ञ-हुगामा	मार्ग कृष्ण पक्ष पंचमी	5 दिसम्बर
स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती यज्ञ	मार्ग कृष्ण पक्ष षष्ठी	6 दिसम्बर
स्वामी सर्वानन्द जी यज्ञ	मार्ग कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	12 दिसम्बर
शारिका जी जयन्ती यज्ञ	मार्ग शुक्ल पक्ष द्वितीया	16 दिसम्बर
स्वामी विद्याधर जी जयन्ती	मार्ग शुक्ल पक्ष तृतीया	17 दिसम्बर
स्वामी कृष्ण राजदान यज्ञ	मार्ग शुक्ल पक्ष अष्टमी	23 दिसम्बर
श्री नन्द लाल साहिब जयन्ती	पौष कृष्ण पक्ष दशमी	8 जनवरी
स्वामी राम जी जयन्ती	पौष कृष्ण पक्ष द्वादशी	10 जनवरी
श्री अशोकानन्द यज्ञ	पौष कृष्ण पक्ष अमावसी	13 जनवरी
स्वामी शिव राम यज्ञ	पौष शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	14 जनवरी
स्वामी बोन काक जयन्ती	पौष शुक्ल पक्ष दशमी	24 जनवरी
मथुरा देवी यज्ञ	पौष शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	27 जनवरी
श्री आप्ताभ राम यज्ञ	माघ कृष्ण पक्ष पंचमी	2 फरवरी
स्वामी राम जी यज्ञ	माघ कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	10 फरवरी
श्री नन्द लाल जी यज्ञ	माघ शुक्ल पक्ष तृतीया	15 फरवरी
शारिका जी यज्ञ	फाल्गुन कृष्ण पक्ष तृतीया	1 मार्च
श्री विदलाल जयन्ती-गुशी	फाल्गुन कृष्ण पक्ष चतुर्थी	2 मार्च
स्वामी महताब काक जी यज्ञ	फाल्गुन शुक्ल पक्ष द्वितीया	16 मार्च
श्री नन्दलाल जी जयन्ती	फाल्गुन शुक्ल पक्ष अष्टमी	22 मार्च
स्वामी गोविन्द कौल जयन्ती	फाल्गुन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	27 मार्च
श्री क्राल बब यज्ञ	फाल्गुन शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	28 मार्च
स्वा. हरकाक यज्ञ	चैत्र कृष्ण पक्ष सप्तमी	4 अप्रैल
श्री किशकाक वडीपोरा यज्ञ	चैत्र कृष्ण पक्ष नवमी	6 अप्रैल
ब्रह्मचार्य अर्जुनदेव यज्ञ	चैत्र कृष्ण पक्ष दशमी	7 अप्रैल
श्री गाशकाक यज्ञ	चैत्र कृष्ण पक्ष अमावसी	12 अप्रैल

मूल नक्षत्र देखने का चित्र 2058 के लिये

पक्ष	तारीख	तिथि	आरम्भ	तिथि	पहला पाद	तिथि	दूसरा पाद	तिथि	तीसरा पाद	तिथि	चौथा पाद	तारीख
वैशाख कृष्ण पक्ष	13 अप्रैल	षष्ठी	5.59 प्रातः	षष्ठी	12.09 दिन	षष्ठी	6.59 शां.	षष्ठी	1.09 रात	सप्त.	7.59 प्रातः	14 अप्रैल
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	10 मई	तृतीया	2.56 दिन	तृतीया	9.31 रात	तृती.	3.26 रात	चतु.	10.01 प्रातः	चतु.	4.37 दिन	11 मई
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	06 जून	पूर्णि	11.09 रात	पूर्णि	5.44 प्रातः	प्रति.	12.19 दिन	प्रति.	6.14 शाम	प्रति.	12.49 रात	07 जून
आषाढ शुक्ल पक्ष	04 जुलाई	चर्तु.	6.01 प्रातः	चर्तु.	12.39 दिन	चर्तु.	19.17 रात	चर्तु.	1.15 रात	पूर्णि.	7.55 प्रातः	05 जुलाई
श्रावण शुक्ल पक्ष	31 जुलाई	द्वाद.	11.49 प्रातः	द्वाद.	6.01 शाम	द्वाद.	12.53 रात	त्रयो.	7.05 प्रातः	त्रयो.	1.57 दिन	01 अगस्त
भाद्र शुक्ल पक्ष	27 अगस्त	नवमी	5.37 शाम	नवमी	12.28 रात	दश.	6.39 प्रातः	दश.	12.09 दिन	दश.	7.43 शाम	28 अगस्त
आश्वि.शुक्ल पक्ष	23 सितम्बर	सप्तमी	12.33 रात	सप्त.	6.07 प्रातः	अष्ट.	1.05 दिन	अष्ठ.	7.04 शाम	अष्ट.	2.18 रात	24 सितम्बर
अ.आश्वि.शुक्ल पक्ष	21 अक्टूबर	पंचमी	9.15 दिन	पंचमी	3.41 दिन	पंच.	10.07 रात	पंच.	4.33 रात	षष्ठी	10.22 प्रातः	22 अक्टूबर
कार्तिक शुक्ल पक्ष	17 नवम्बर	द्वितीया	6.54 शाम	द्वि.	1.04 रात	तृती.	7.14 प्रातः	तृती.	1.24 दिन	तृती.	7.37 शाम	18 नवम्बर
मार्ग कृष्ण पक्ष	14 दिसम्बर	अमा.	4.01 रात	अमा.	10.12 दिन	प्रति.	4.23 दिन	प्रति.	10.34 रात	प्रति.	4.44 रात	15 दिसम्बर
पौष कृष्ण पक्ष	11 जनवरी	त्रयो.	11.21 दिन	त्रयो.	5.47 शाम	त्रयो.	12.13 रात	त्रयो.	6.39 प्रातः	चर्तु.	12.25 दिन	12 जनवरी
माघ कृष्ण पक्ष	07 फरवरी	एका.	5.03 दिन	एका.	11.33 रात	एका.	6.03 प्रातः	द्वाद.	12.33 दिन	द्वाद.	6.26 शाम	8 फरवरी
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	06 मार्च	अष्ट.	10.48 रात	अष्ट.	5.16 प्रातः	नव.	10.04 प्रातः	नव.	5.32 शाम	नव.	12.02 रात	7 मार्च
चैत्र कृष्ण पक्ष	03 अप्रैल	पंष्ठी	6.18 प्रातः	पंष्ठी.	12.26 दिन	षष्ठी.	6.34 शां.	षष्ठी	12.42 रात	सप्त.	6.53 प्रातः	4 अप्रैल

आश्लेषा नक्षत्र देखने चित्र वि. 2058 के लिये

पक्ष	तारीख	तिथि	आरम्भ	तिथि	पहला पाद	तिथि	दूसरा पाद	तिथि	तीसरा पाद	तिथि	चौथा पाद	तारीख
चैत्र शुक्ल पक्ष	3 अप्रैल	दशमी	5.04 शाम	दशमी	10.55 रात	दश.	4.07 रात	एका.	9.58 प्रातः	एका.	3.11 दिन	4 अप्रैल
वैशाख शुक्ल पक्ष	30 अप्रैल	सप्त.	10.51 रात	सप्त.	4.09 रात	अष्ट.	10.07 प्रातः	अष्ट.	4.06 दिन	अष्ट.	9.25 रात	1 मई
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	28 मई	षष्ठी.	4.23 प्रातः	षष्ठी.	10.19 दिन	षष्ठी	3.35 दिन	षष्ठी.	9.31 रात	षष्ठी.	2.48 रात	28 मई
आषाढ शुक्ल पक्ष	24 जून	तृती.	11.35 दिन	तृती.	5.12 शाम	तृती.	10.09 रात	तृती.	3.46 रात	चतु.	9.23 प्रातः	25 जून
श्रावण शुक्ल पक्ष	21 जुलाई	प्रति.	9.01 रात	प्रति.	2.29 रात	द्विती.	7.57 प्रातः	द्विती.	1.25 दिन	द्विती.	6.13 शाम	22 जुलाई
भाद्र कृष्ण पक्ष	18 अगस्त	चतु.	7.44 प्रातः	चतु.	1.09 दिन	चतु.	6.34 शाम	चतु.	11.19 रात	चतु.	4.46 रात	18 अगस्त
आश्विन कृष्ण पक्ष	14 सितम्बर	द्वाद.	6.01 शाम	द्वाद.	11.32 रात	द्वाद.	5.03 रात	त्रयो.	10.34 प्रातः	त्रयो.	3.26 दिन	15 सितम्बर
अ. आशि. कृष्ण पक्ष	11 अक्टूबर	दशमी	2.16 रात	दश.	8.08 प्रातः	दश.	1.20 दिन	दश.	7.12 रात	दश.	12.25 रात	12 अक्टूबर
कार्तिक कृष्ण पक्ष	8 नवम्बर	अष्ट.	8.15 प्रातः	अष्ट.	2.16 दिन	अष्ट.	7.37 शाम	अष्ट.	1.38 रात	नवमी	6.59 प्रातः	9 नवम्बर
मार्ग कृष्ण पक्ष	5 दिसम्बर	पंच.	1.43 दिन	पंच.	7.02 रात	पंच.	1.01 रात	षष्ठी	6.02 प्रातः	षष्ठी	12.20 दिन	6 दिसम्बर
पौष कृष्ण पक्ष	1 जनवरी	द्विती.	9.04 रात	द्विती.	2.43 रात	तृती.	8.22 प्रातः	तृती.	1.21 दिन	तृती.	7.00 शाम	2 जनवरी
माघ कृष्ण पक्ष	29 जनवरी	प्रति.	7.05 प्रातः	प्रति.	12.35 दिन	प्रति.	6.05 शाम	प्रति.	11.35 रात	प्रति.	4.25 रात	29 जनवरी
माघ शुक्ल पक्ष	25 फरवरी	त्रयो.	6.18 शाम	त्रयो.	11.48 रात	चतु.	5.18 प्रातः	चतु.	10.08 प्रातः	चतु.	3.38 दिन	26 फरवरी
फाल्गुण शुक्ल पक्ष	24 मार्च	दशमी	4.29 रात	एका.	10.07 प्रात	एका.	3.05 दिन	एका.	8.43 रात	एका.	2.22 रात	25 मार्च

2058 ज्योतिष के दर्पण में

वर्ष का वाहन घोड़ा

धन का स्वामी सूर्य

वर्षा भगवती कापाली

फलों का स्वामी बृहस्पति

बसंत का वाहन मुर्गा

वर्ष का राजा चन्द्रमा

धान्य का स्वामी शनि

रस का स्वामी बुध

वर्ष का मन्त्री शुक्र

सम्वतसर का नाम जय

मेघ का स्वामी बृहस्पति

अजनास का स्वामी चन्द्रमा

धातुओं का स्वामी चन्द्रमा

रक्षा मन्त्री बृहस्पति

आर्द्रा नक्षत्र में सुर्य का प्रवेश 21 जून गुरुवार

वर्ष के दस पदाधिकारी

(फलित ज्योतिष की कसौटी पर)

वर्ष का राजा	:	चन्द्रमा होने से राजाओं का उदय, जनता को सुख, धन धान्य से पृथ्वी भरी होगी. चारों और मंगलोदय, समयानुकूल वर्षा, रसदार वनस्पतियों की पैदावार संतोषजनक होगी।
वर्ष का मन्त्री	:	शुक्र होने से धान्य सस्ता, नदी, नाले पानी से भरे रहेंगे, वर्षा की वेढंगी चाल से कहीं पर बाढ जैसी स्थिति से हानि का योग। खड़ी फसलों को हानि का योग।
धान्य के स्वामी	:	शनि होने से दुर्भिक्ष, कलह तथा विद्रोह का माहोल चारों और देखने में आयेगा, कई प्रदेश वर्षा न होने के कारण हाहाकर की चपेट में आयेंगे।
अजनास के स्वामी	:	चन्द्रमा होने से प्रजा सुखी रहे, पृथ्वी धन-धान्य से परिपूर्ण रहे, वर्षा की अधिकता, दूध की अधिकता, प्रजा में धार्मिक प्रवृति बढेगी।
मेघ का स्वामी	:	बृहस्पति होने से समय पर वर्षा, प्रजा हर प्रकार के सुख, भोग से युक्त, सामाजिक वातावरण विलासिता के कारण दूषित होने का डर।
रस का स्वामी	:	बुध होने से प्रजा घी, धान्यादि से युक्त, राजा लोग सुखी, वर्षा की अधिकता, प्रत्येक राष्ट्र अपनी सुरक्षा के साधन सुदृढ बनाने में लगेगा।
धातुओं के स्वामी	:	चन्द्रमा होने से सफेद रंग की वस्तुयें, मोती, चाँदी वस्त्रादि के भावों में वृद्धि होगी।
रक्षा मन्त्री	:	बृहस्पति होने से शासन वर्ग में नीति की सद्भावना जाग्रत होगी, हर ओर सुख का माहोल

होगा, उच्च जाति वर्ग को भी आत्म रक्षा के लिये शस्त्र धारण करना पडेगा।

फलों का स्वामी : बृहस्पति होने से 132 फल-फूलों की अधिकता ब्रह्मण वर्ग वेद विचार से सम्पन्न होंगे, लोगों में निर्भयता की भावना बढेगी।

धन का स्वामी : सूर्य होने से व्यापारी वर्ग लाभ में रहेगा, क्रय-विक्रय में लोग लाभ में रहेंगे।

सम्वत्सर का नाम : 'जय' होने से पूरे विश्व के राष्ट्राध्यक्ष अपनी प्रतिष्ठा, प्रभुत्व को ऊंचा करने में लगे रहेंगे, मुस्लिम देशों में अराजकता का माहोल रहेगा।

वर्ष का वाहन : घोड़ा होने से भूमिकम्प, राजाओं में विग्रह, अन्न का भाव महंगा, वर्षा से हानि।

अश्वारूढो वत्सरश्च भूमिकम्पो महाभयम्।, राजानो विग्रहं यान्ति वृष्टि नाशो मर्हघता।।

वर्ष कुण्डली

संसार

इस वर्ष दस अधिकारियों में से आठ अधिकार शुभ ग्रहों को तथा दो अधिकार अशुभ ग्रहों.को प्राप्त हुये हैं तथा पांच विभाग स्त्री कारक ग्रहों ने अपने अधिकार में रखे हैं, मन्त्री का पद भी स्त्री कारक ग्रह 'शुक्र' ने अपने पास रखा है, रक्षा का विभाग सत्वोगुणी ग्रह बृहस्पति को मिला है तथा धन और धान्य का पद क्रूर ग्रहों सूर्य तथा शनि को मिला है स्त्री कारक ग्रहों का वरचसु होने के कारण यह वर्ष स्त्री वर्ग के लिये हर प्रकार से शुभ फलदायक रहेगा, वर्ष चक्र तथा जगत् चक्र के शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति को वेधाष्टक वर्ग की कसौटी पर परखने से मालूम होता है कि संसार के सीमाओं पर असामान्य वातावरण होने पर भी किसी **विश्व व्यापी युद्ध** का कोई योग नहीं बनता है अपितु विश्व के प्रमुख शक्तिशाली देश पूरे विश्व में

जगत् कुण्डली

शान्ति स्थापित करने के लिये, बीमारी, भुखमरी इत्यादि को जड़ से दूर उखाडने के लिये अर्न्तराष्ट्रीय सम्मेलनों के आयोजन में लगे रहेंगे जिस से पूरे विश्व में शान्ति की आस बनी रहेगी, परन्तु ऐसा होने पर भी कई शक्तिशाली राष्ट्र अपनी परमाणु शक्ति को बढाने में लगे रहेंगे, विश्व के प्रमुख शक्तियों के बीच कुछ नये राजनीतिक व्यापारिक तथा सामाजिक समीकरण बनेगे। वर्ष के आरम्भ पर कुछ दिनों के लिये शुक्र का अस्त होने से कहीं सैनिक टकराव, सत्ता परिवर्तन, हिसंक घटनाये तथा कहीं सीमाओं पर युद्ध जैसा वातावरण देखने में मिलेगा, किसी व्यक्ति विशेष के निधन अथवा कहीं छत्रभंग का योग बनता है।

भारत जन्म कुण्डली

भारत

भारत की जन्म कुण्डली में पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवे, छठे तथा नवें भाव का स्वामी एक साथ तृतीय भाव में बैठे है तथा राहु और केतु के बीच में सभी ग्रहों का होना काल सर्प योग का द्योतक है तथा वर्ष लग्न में तृतीय भाव में मुन्था का होना भारत के लिये एक शुभ योग का सूचक है। इस शुभ योग के प्रभाव से भारत सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक तथा राजनीतिक क्षेत्र में सराहनीय कदम उठायेगा जो कि यहां की गरीब जनता के लिये बहुत ही लाभ प्रद रहेगा, विदेशी व्यापार तथा आर्थिक क्षेत्र में पूरे विश्व में अपनी साख को कायम रखेगा, भारत अपनी अस्मिता को अपने बल पर खडा रखने में समर्थ रहेगा, शासन वर्ग देश को आगे बढाने में कटिबद्ध रहेगा। अपनी आर्थिक नीति तथा विदेश नीति को सुदृढ़ बनाने के लिये शक्तिशाली राष्ट्रों के साथ नये प्रकार के सम्बन्ध जोड़ेगा, अपनी रक्षा नीति में बदलाव लाते हुये अपनी रक्षा पालसी को सुदृढ़ बनायेगा, भारत को विदेशीय व्यापार नीति में विशेष सफलता मिलेगी, विदेशों में भारतीय प्रजातन्त्र प्रणाली की व्यापक प्रशंसा होगी, विदेशीय पूंजी के साधनों में बहुत वृद्धि होगी, शासक वर्ग सामान्य एवं निम्न वर्ग के लोगों के उत्थान के लिये नई-नई योजनाओं को हाथ में लेगा, धान्य तथा धन के स्वामी शनि तथा सूर्य के होने से कई प्रदेशों में आतंकवाद, हिंसक घटनायें तथा तोड-फोड़ के दृश्य देखने में मिलेगे परन्तु शासक वर्ग इस प्रकार की घटनाओं को दबाने में सफल रहेगा।

काश्मीर काश्मीर जो कि भारत का मुकुट है के कारण ग्रहों का विशेष प्रभाव काश्मीर पर ही होता है, काश्मीर की राशि तुला है काश्मीरी पद्धति से वर्ष का राजा क्रूर ग्रह सूर्य होने से काश्मीर में आतंकवादियों का दवदवा वढता ही रहेगा ग्रह स्थिति को देखने से मालूम होता है कि आतंकवाद का प्रकोप अभी काश्मीर में चलता ही रहेगा इस के स्थाई हल का कोई योग अभी दिखता नहीं है। पाकिस्तान भी परोक्ष अथवा प्रत्यक्ष रूप में यहां की शान्ति को भंग करने में लगा रहेगा, शासन वर्ग आतंकवाद को दवाने में कृत संकल्प होते हुये भी इस के दवाने में असमर्थ ही रहेगा, सीमावर्ती इलाकों में घुसपैठियों के कारण अशान्ति का माहोल वनता रहेगा, आतंकवादियों के ताण्डव नृत्य के कारण आम जनता शासन वर्ग से क्षुब्ध होगी, सत्तारूढ पार्टी को गम्भीर चुनौतियों का सामना करना पडेगा, सत्तारूढ पार्टी केन्द्र सरकार के सहयोग से यहां की वेरोज़गारी तथा निर्धनता को दूर करने के लिये नई-नई योजनाओं को हाथ में लेगी यहां पर शान्ति स्थापना करने के लिये वहुत प्रकार के विशाल शान्ति सम्मेलनों का आयोजन किया जायेगा। ग्रहों की स्थिति को देखते हुये समयानुकूल वर्षा होने के कारण धान्य की उपज आशा से अधिक होगी तथा भाव भी किसानों के अनुरूप ही रहेंगे, फलों का व्यापार करने वाले व्यापारी लाभ में रहेंगे, फलों की उपज कम रहेगी फलों का ज्यादा हिस्सा वीमारी के कारण खराव होगा।

जरा सावधान रहे विस्थापन में तथा विस्थापन के पश्चात् हमने वहुत कुछ खोया वहुत कुछ पाया, **खोया क्या? पाया क्या?** इस की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है हमने विस्थापन में अरवों रुपये की सम्पत्ति इत्यादि छोडी परन्तु उस को हम छोड़ना नहीं कहेगे उस को हम त्यागना कहेंगे, त्याग की वहुत महिमा है आप विश्वास रखें इस समय जिस स्थिति पर हम हैं वह उसी त्याग का फल है हमें अभी इस से भी अच्छी स्थिति पर पहुँचना है, हमने संसार के उच्च शिखर पर पहुँचना है परन्तु यह तभी सम्भव होगा जव हम अपनी सभ्यता, संस्कृति की रक्षा

करेगें लेकिन हम अपनी सभ्यता, संस्कृति तथा परम्परा से दूर होने लगे हैं क्योंकि हमारे पवित्र खून का रिश्ता पवित्र खून से ही होना चाहिए जैसे आप्रेशन के समय यदि किसी को खून की जरूरत पडती है तो पहले उसके खून का टयस्ट किया जाता है कि किसं 'ग्रुप' का खून है और उसी ग्रुप का खून उस आप्रेशन वाले को भरा जाता है आप यह जानते ही है कि हम सारस्वत ब्राह्मण है और हमारे रगों में उन तपस्वियों, ऋषियों तथा मुनियों का खून भरा है जिन्होंने हजारों वर्षों तक वनों, गुफाओं में पत्ते खाकर उस परपिता परमात्मा की आराधना की है और उनके आर्शीवाद से ही हम अभी तक चल रहे है। वेद में कहा है:- **"प्रजा तन्तुं मां व्यत्रच्छत्सीः"** अर्थात् आगे होने वाली सन्तति का ख्याल रखो, हमारे पवित्र खून का रिश्ता पवित्र खून से ही होना चाहिए क्योंकि किसी वंश या खानदान के गिरने का साधन होता है वर्ण संकरों का जन्म लेना लिखा भी है **"संकरो नरकायैव"**।

प्रत्येक मनुष्य भविष्य के विषय में जानना चाहता है कि भविष्य में क्या होने वाला है परन्तु वह उस सर्वशक्तिमान प्रभु के विना कोई नहीं जानता, तो भी परम्परा से चली आई प्रथा के अनुसार भविष्यवाणी की कुछ लाइनें लिख रहा हूँ यदि इसमें कुछ सही होगा तो उस का श्रेय उन पूर्वजों को जाता है जो कुछ भी गलत होगा उस में मेरा ही दोष है! -- *ओंकार नाथ शास्त्री*

नोटः *यदि मृतक का दसवां, ग्यारहवां, बारहवां दिन किया हो, यदि किसी कारणवश वर्षभर मासवार, तेल इत्यादि कर न सकोगे तो कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह सब वर्षभर की क्रिया हम ग्यारहवें दिन पर ही करते हैं, वार्षिक श्राद्ध (वहरवर) अवश्य करें, मासवार के दिन व्रत ज़रूर रखे तथा यथा शक्ति दान दें।* (धर्मशास्त्र)

चैत्र शुक्लपक्ष

सप्तर्षि सं॰ 5077 विक्रमी सं॰ 2058 शक सं॰ 1923 ईस्वी 2001

26 मार्च की ग्रह स्थितिः- मीन में सूर्य, शुक्र। मिथुन में राहु। वृश्चिक में भौम। कुम्भ में बुध। धनु में केतु। वृष में बृहस्पति, शनि।

दिन	मान	चैत्र	मार्च	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	वसन्त ऋतु-उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
30	25	13	26	सोम	रेव. प्र	7	50	प्रति. दि	7	47	नवरात्रारम्भ, नवरेह, 1-31 दिन से 2-9 रात तक गण्डान्त, (A)	6/32	6/40
	30	14	27	भौम	अश्वि.प्र	8	45	द्विती.दि	8	17	अमृतम्। (A) 7-50 रात मेष में चन्द्र और (E) [शुक्रास्त 27 मार्च]	31	41
	37	15	28	बुध	भर. प्र	9	18	तृती.दि	8	23	3-23 रात वृष में चन्द्र, जंगत्रय काण्डः।	30	42
	37	16	29	गुरु	कृति. प्र	9	30	चतु. दि	8	7	अलापकः। (E) पंचक समाप्त, मातंगः। [शुक्रोदय 1 अप्रैल] [दुर्गाष्टमी 1 अप्रैल]	28	43
	45	17	30	शुक्र	रोहि. प्र	9	21	पंच. दि	7	30	कुमार षष्ठी, मैत्रम्।	26	44
	50	18	31	शनि	मृग. प्र	8	50	षष्ठी दि	6	30	9-7 दिन मिथुन में चन्द्र (सप्त. प्र 5-9) त्र्यहः वज्रम्।	25	45
	55	19	अप्रै.	रवि	आर्द्रा. प्र	7	56	अष्ट. प्र	3	24	दुर्गाष्टमी 12-30 दिन शुक्रोदय ध्वांक्षः।	23	45
31	0	20	2	सोम	पुन. दि	6	41	नव. प्र	1	18	12-59 दिन कर्क में चन्द्र रामनवमी, उमा जयन्ती, (B)	22	46
	5	21	3	भौम	तिष्या.दि	5	4शां	दश. प्र	10	52	प्रवर्धः (B) शिवाभगवती जय॰, अकिनगाम यात्रा (D)	21	47
	7	22	4	बुध	आश्ले.दि	3	11	एका. प्र	8	9	3-11 दिन सिंह में चन्द्र 9-40 दिन से 8-44 रात तक (C)	20	47
	15	23	5	गुरु	मघा दि	1	6	द्वाद. दि	5	16	गजः। (D) 2-30 रात मीन में बुध, धौम्यः।	18	48
	20	24	6	शुक्र	पूफा. दि	10	56	त्रयो. दि	2	20	4-26 दिन कन्या मे चन्द्र, सिद्धः। [रामनवमी 2 अप्रैल]	17	49
	25	25	7	शनि	उफा. दि	8	49	चतुं. दि	11	29	उन्मूलम्। (C) गण्डान्त, क्षयः	16	50
	27	26	8	रवि	हस्त दि	6	56	पूर्णि.दि	8	52	6-12 शां तुला में चन्द्र मानसम्।	15	50

मध्याह्न : प्रति. से सप्त. तक पहले दिन, अष्टमी से त्रयो. तक अपने दिन, चतुर्द., पूर्णि. का पहले दिन।
श्राद्ध : प्रति. से सप्त. तक पहले दिन, अष्टमी से द्वा. तक अपने दिन, त्रयो. से पूर्णि. तक पहले दिन।

वैशाख कृष्णपक्ष

सप्तर्षि सं॰ 5077 विक्रमी सं॰ 2058 शक सं॰ 1923 ईस्वी. 2001

9 अप्रैल की ग्रह स्थितिः- मीन में सूर्य, बुध, शुक्र। मिथुन में राहु।
वृश्चिक में भौम। धनु में केतु। वृष में बृहस्पति, शनि।

दिन	मान	चैत्र	अप्रैल	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	वसन्त ऋतु-उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	गुव उदय	गुव अस्त
31	35	27	9	सोम	स्वात. प्र	4	29	प्रति. दि	6	39	त्र्यहः, (द्वि. प्र 5-00) छत्रम्।	6/13	6/51
	37	28	10	भौम	विशा. प्र	4	13	तृती. प्र	4	2	10·19 रात वृश्चिक में चन्द्र, धनु में भौम श्रीवत्सः।	12	51
	42	29	11	बुध	अनु. प्र	4	42	चतु. प्र	3	51	संकट चतुर्थी, सौम्यः। (F) 8.48 रात से गण्डान्त प्रवर्धः।	11	52
	47	30	12	गुरु	ज्ये. प्र	5	59	पंच. प्र	4	28	मासान्त, 11-40 रात से गण्डान्त, कालदण्डः।	10	53
	55	वैशा.	13	शुक्र	मूल.	दिन	रात	षष्ठी.प्र	5	51	11-43 रात मेष में सूर्य मुहू 30, किनारी संक्रान्ति व्रत, (A)	8	54
32	0	2	14	शनि	मूल. दि	7	59	सप्त.	दिन	रात	दिन अधिक, मुसलम्। (B) मेष में बुध मैत्रम्।	6	55
	5	3	15	रवि	पूषा. दि	10	34	सप्त.दि	7	51	5-19 दिन मकर में चन्द्र शूलम्।	4	55
	10	4	16	सोम	उषा. दि	1	32	अष्ट.दि	10	16	मृत्युः। (A) 11-35 दिन तक गण्डान्त वैशाखी (E)	3	56
	15	5	17	भौम	श्रव. दि	4	37	नव. दि	12	51	अलापकः। (E) 5.59 प्रातः धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ स्थिरः	2	57
	20	6	18	बुध	धनि प्र	7	35	दश. दि	3	20	6-8 प्रातः कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, (B)	0	58
	26	7	19	गुरु	शत. प्र	10	13	एका. दि	5	29	वज्रम्। (C) निशात, काश्मीर, महेन्द्र नगर, जम्मू, (D)	0	59
	30	8	20	शुक्र	पूभा. प्र	12	23	द्वाद. प्र	7	11	5-50 शां मीन में चन्द्र, स्वा लक्ष्मण जी जयन्ती (C)	5/59	59
	35	9	21	शनि	उभा. प्र	2	00	त्रयो. प्र	8	19	धौम्यः शनिमास। (D) देहली नयोडा ध्वांक्षः।	58	7/0
	37	10	22	रवि	रेव. प्र	3	5	चर्तु. प्र	8	53	3-5 रात मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, (F)	57	0
	42	11	23	सोम	अश्वि प्र	3	39	अमा. प्र	8	56	सोमामावसी 9.15 दिन तक गण्डान्त क्षयः।	56	1

मध्याह्न : प्रति. द्वि. का पहले दिन, तृती. से सप्त. तक अपने दिन, अष्टमी का पहले दिन, नवमी से अमा. तक अपने दिन।
श्राद्ध : प्रति. द्वि. का पहले दिन, तृती. से सप्त. तक अपने दिन, अष्ट से एका. तक पहले दिन. द्वाद. से, अमा. तक अपने दिन।

वैशाख शुक्लपक्ष

सप्तर्षि सं॰ 5077 विक्रमी सं॰ 2058 शक सं॰ 1923 ईस्वी. 2001

24 अप्रैल की ग्रह स्थितिः- मेष में सूर्य, बुध। वृष में गुरु शनि। धनु में भौम, केतु। मीन में शुक्र। मिथुन में राहु।

दिन	मान	वैशा	अप्रैल	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	वसन्त ऋतु-उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
32	47	12	24	भौम	भर. प्र	3	47	प्रति. प्र	8	30	गजः।	55	2
	52	13	25	बुध	कृति. प्र	3	33	द्वि. प्र	7	40	9-45 दिन वृष में चन्द्र सिद्धः।	54	3
33	0	14	26	गुरु	रोहि. प्र	3	2	तृती. दि	6	अगां	अक्षया तृतीया परशुराम जयन्ती उन्मूलम्।	52	4
	5	15	27	शुक्र	मृग. प्र	2	15	चतु. दि	5	6	2-39 रात मिथुन में चन्द्र मानसम्।	52	6
	7	16	28	शनि	आर्द्र. प्र	1	17	पंच. दि	3	28	कुमार षष्ठी, मुद्गरम्।	51	6
	12	17	29	रवि	पुन. प्र	12	9	षष्ठी दि	1	39	6-20 शां कर्क में चन्द्र विजया सप्तमी (A)	50	7
	15	18	30	सोम	तिष्य. प्र	10	51	सप्त. दि	11	40	प्राजापत्यः। (A) 1 बजे 39 दिन से ध्वजः।	49	7
	20	19	मई	भौम	आश्ले. प्र	9	25	अष्ट. दि	9	33	9-25 रात सिंह में चन्द्र, 3-47 दिन से 3-5 रात तक (B)	47	7
	25	20	2	बुध	मघा. प्र	7	55	नव. दि	7	19	त्र्यहः (दश प्र 5-1) चरः। (B) गण्डान्त, आनन्दः।	46	8
	30	21	3	गुरु	पूफा. दि	6	22	एका. प्र	2	43	12 बजे रात कन्या में चन्द्र नारद एकादशी (C)	45	9
	33	22	4	शुक्र	उफा. दि	4	53	द्वाद. प्र	12	29	शूलम्। (C) डुमटवल यात्रा वृष में बुध मुसलम्।	45	10
	35	23	5	शनि	हस्त. दि	3	32	त्रयो. प्र	10	27	2-58 रात तुला में चन्द्र मृत्युः।	44	10
	37	24	6	रवि	चित्र. दि	2	26	चर्तु. प्र	8	42	गणेश चतुर्दशी गणपतयार यात्रा, काम्यः।	43	10
	42	25	7	सोम	स्वा. दि	1	44	पूर्णि. प्र	7	23	छत्रम्।	42	11

मध्याह्न : प्रति. से षष्ठी तक अपने दिन, सप्त. से दश. तक पहले दिन, एका. से पूर्णि. तक अपने दिन।
श्राद्ध : प्रति. से तृती तक अपने दिन, चतु. से दश. तक पहले दिन, एका, से पूर्णि तक अपने दिन।

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

सप्तर्षि सं० 5077 विक्रमी सं० 2058 शक सं० 1923 ईस्वी. 2001

8 मई की ग्रह स्थितिः- मेष में सूर्य। वृष में बुध, बृहस्पति, शनि। मिथुन में राहु। धनु में भौम, केतु। मीन में शुक्र।

दिन	मान	वैशा	मई	वार	नक्षत्र	बजे	मि०	तिथि	बजे	मि०	वसन्त ऋतु-उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	गुरु उदय	गुरु अस्त
33	47	26	8	भौम	विशा. दि	1	31	प्रति. दि	6	35	7-33 प्रातः वृश्चिक में चन्द्रमा श्रीवत्सः।	5/41	7/12
	52	27	9	बुध	अनु. दि	1	54	द्विती.दि	6	24	श्री काक जी यज्ञ हांगल गुण्ड नगरोटा, सौम्यः।	40	13
	57	28	10	गुरु	ज्ये. दि	2	56	तृती.दि	6	53	2-56 दिन धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, (A)	39	14
34	2	29	11	शुक्र	मूला. दि	4	37	चतु. प्र	8	2	स्थिरः। (A) 8-39 दिन से 9-8रात तक गण्डान्त (D)	38	15
	7	30	12	शनि	पूषा. दि	6	54	पंच. प्र	9	47	1-36 रात मकर में चन्द्र मातंगः।	37	16
	9	31	13	रवि	उषा. प्र	9	38	षष्ठी. प्र	12	00	मासान्त अमृतम्। (D) संकट चतुर्थी, कालदण्डः।	37	16
	12	ज्ये.	14	सोम	श्रव. प्र	12	37	सप्त. प्र	2	26	8-36 रात वृष में सूर्य मुर्हूत 30 किनारी संक्रान्ति व्रत सिद्धः।	36	17
	17	2	15	भौम	धनि. प्र	3	37	अष्ट. प्र	4	53	2-7 दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, उन्मूलम्।	35	18
	20	3	16	बुध	शत.	दिन	रात	नव.	दिन	रात	दिन अधिक, मानसम्।	35	18
	22	4	17	गुरु	शत. दि	6	23	नव. दि	7	5	2-11 रात मीन में चन्द्र वज्रम्।	34	19
	27	5	18	शुक्र	पूभा. दि	8	44	दश. दि	8	50	ध्वांक्षः।	33	20
	32	6	19	शनि	उभा. दि	10	31	एका.दि	10	00	रथा एकादशी, धौम्यः।	32	21
	32	7	20	रवि	रेव. दि	11	39	द्वाद. दि	10	30	11-39 दिन मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, (B)	32	21
	37	8	21	सोम	अश्वि.दि	12	9	त्रयो.दि	10	20	क्षयः। (B) 5-27 प्रातः से 6-4 शां तक गण्डान्त प्रवर्धः।	31	22
	40	9	22	भौम	भर. दि	12	3	चर्तुद.दि	9	34	5-53 शां वृष में चन्द्र 6-38 दिन मिथुन में बुध, गजः।	31	23
	45	10	23	बुध	कृति. दि	11	27	अमा. दि	8	16	नन्दकीश्वर यात्रा (सुम्बल, सीर जागीर, सोपोर) (C)	30	24

मध्याह्न : प्रति. से नव. तक अपने दिन, दश. से अमा. तक पहले दिन। (C) गोलगुजराल जम्मू।

श्राद्ध : प्रति का अपने दिन, द्वि से तृती. तक पहले दिन, चतु. से नव तक अपने दिन, दश. से अमा. तक पहले दिन।

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

सप्तर्षि सं॰ 5077 विक्रमी सं॰ 2058 शक सं॰ 1923 ईस्वी. 2001

24 मई की ग्रह स्थितिः- वृष में सूर्य, बृहस्पति, शनि। मिथुन में बुध, राहु। धनु में भौम, केतु। मीन में शुक्र।

दिन	मान	ज्ये.	मई	वार	नक्षत्र	वजे	मि॰	तिथि	वजे	मि॰	वसन्त ऋतु-उत्तरायण (ग्रह संचार वजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
34	48	11	24	गुरु	रोहि. दि	10	26	प्रति. दि	6	33	त्र्यहः (द्वि प्र 4-31) 9-40 रात मिथुन में चन्द्र उन्मूलम्।	5/30	7/25
	51	12	25	शुक्र	मृग. दि	9	27	तृती प्र	2	15	मानसम्।	29	25
	54	13	26	शनि	आर्द्र. दि	7	37	चतु. प्र	11	53	12-25 रात कर्क में चन्द्र मुद्गरम्।	29	26
	57	14	27	रवि	पुन. दि	6	00	पंच. प्र	9	58	ध्वजः। (A) कुमार षष्ठी, सौम्यः।	28	26
35	0	15	28	सोम	आश्ले. प्र	2	48	षष्ठी. दि	7	4शां	2-49 रात सिंह में चन्द्र 9-12 रात से गण्डान्त, (A)	28	28
	0	16	29	भौम	मघा. प्र	1	19	सप्त दि	4	46	8-26 दिन तक गण्डान्त, कालदण्डः।	27	27
	0	17	30	बुध	पुफा. प्र	12	00	अष्ट. दि	2	35	ज्येष्ठाष्टमी (क्षीर भवानी यात्रा तुलमुल काश्मीर, (B)	27	27
	2	18	31	गुरु	उफा. प्र	10	52	नव. दि	12	35	5-42 प्रातः कन्या में चन्द्र मातंगः।	27	28
	5	19	जून	शुक्र	हस्त. प्र	9	58	दश. दि	10	49	अमृतम्। (B) भवानी नगर जानीपोरा जम्मू 1-52 रात (E)	26	28
	7	20	2	शनि	चित्र. प्र	9	23	एका. दि	9	19	9-40 दिन तुला में चन्द्र निर्जला एकादशी, काण्डः।	26	29
	12	21	3	रवि	स्वा. प्र	9	9	द्वाद. दि	8	8	अलापकः। (D) 4-53 दिन से गण्डान्त ध्वांक्षः।	25	30
	15	22	4	सोम	विशा. प्र	9	20	त्रयो. दि	7	21	3-19 दिन वृश्चिक में चन्द्र मैत्रम्।	25	31
	15	23	5	भौम	अनु. प्र	9	59	चर्तु. दि	7	00	वज्रम्। (C) कबीर जय॰, वट सावित्री (D)	25	31
	17	24	6	बुध	ज्ये. प्र	11	9	पूर्णि. दि	7	9	11-9 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ रूपभवानी जय॰, (C)	25	32

गुर्वस्त 2 जून

मध्याह्न : प्रति. द्वि. पहले दिन, तृती से नव. तक अपने दिन, दश. से पूर्णि. तक पहले दिन।
श्राद्ध : प्रति. द्वि. पहले दिन, तृती से षष्ठी अपने दिन, सप्त. से पूर्णि तक पहले दिन। (E) मेष में शुक्र स्थिरः।

आषाढ कृष्ण पक्ष

सप्तर्षि 5077 विक्रमी सं० 2058 शक सं० 1923 ईस्वी. 2001

7 जून की ग्रह स्थिति:- वृष में सूर्य, वृहस्पति, शनि। मिथुन में बुध, राहु। धनु में भौम, केतु। मेष में शुक्र।

दिन	मान	ज्यंष्ठ	जून	वार	नक्षत्र	बजे मि०	तिथि	बजे मि०	वसन्त ऋतु-उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
35	17	25	7	गुरु	मूला. प्र	12 49	प्रति. दि	7 50	5-32 प्रातः तक गण्डान्त, धौम्यः।	5/25	7/32
	20	26	8	शुक्र	पूषा. प्र	3 00	द्विती. दि	9 2	प्रवर्धः। (B) से 3 बजे रात तक गण्डान्त, प्राजापात्यः	25	33
	22	27	9	शनि	उषा	दिन रात	तृती. दि	10 44	9-38 दिन मकर में चन्द्र संकट चतुर्थी क्षयः।	24	33
	25	28	10	रवि	उषा. दि	5 35	चतु. दि	12 50	वृश्चिक में वक्री भौम, अमृतम्।	24	34
	25	29	11	सोम	श्रव. दि	8 28	पंच. दि	3 12	9-59 रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, सिद्धः।	24	34
	27	30	12	भौम	धनि. दि	11 29	षष्ठी. दि	5 39	उन्मूलम्। (A) सुर्य मुहूर्त 30 किनारी-मुद्गरम्	24	35
	27	31	13	बुध	शत. दि	2 24	सप्त. प्र	7 57	मासान्त, मानसम्।	24	35
	30	आष.	14	गुरु	पूभा. दि	5 2	अष्ट. प्र	9 53	10-24 दिन मीन में चन्द्र, 3-9 रात मिथुन में (A)	24	36
	30	2	15	शुक्र	उभा. दि	7 10	नव. प्र	11 18	संक्रान्ति व्रत, 1-33 रात मिथुन में वृहस्पति ध्वजः।	24	36
	30	3	16	शनि	रेव. प्र	8 40	दश. प्र	12 2	8-40 रात मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 2-17 दिन (B)	24	36
	30	4	17	रवि	अश्वि.प्र	9 28	एका. प्र	12 2	योगिनी एकादशी, आनन्दः।	24	36
	30	5	18	सोम	भर. प्र	9 32	द्वाद. प्र	11 19	3-26 रात वृष में चन्द्र, चरः।	24	36
	30	6	19	भौम	कृति. प्र	8 56	त्रयो. प्र	9 55	वृष में बुध वक्री, मुसलम्।	25	37
	30	7	20	बुध	रोहि. प्र	7 45	चतुर्द. प्र	7 56	शूलम्, बुध मास। (C) दक्षिणायन मानसम्।	25	37
	33	8	21	गुरु	मृग. दि	6 5	अमा. दि	5 28	6-57 प्रातः मिथुन में चन्द्र 3-9 रात आर्द्रा में सूर्य (C)	25	38

मध्याह्न : प्रति. से तृती. तक पहले दिन. चतु. से अमा. तक अपने दिन।
श्राद्ध : प्रति. से षष्ठी तक पहले दिन, सप्त. से अमा. तक अपने दिन।

आषाढ शुक्लपक्ष

सप्तर्षि सं॰ 5077 विक्रमी सं॰ 2058 शक सं॰ 1923 ईस्वी. 2001

22 जून की ग्रह स्थितिः- मिथुन में सूर्य, बृहस्पति, राहु। वृश्चिक में भौम। धनु में केतु, मेष में शुक्र। वृष में बुध, शनि।

दिन	मान	आषा.	जून	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	वसन्त ऋतु-उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
35	33	9	22	शुक्र	आर्द्र. दि	4	4	प्रति. दि	2	40	काम्यः। (A) 3-23 दिन तक गण्डान्त, त्र्यहः, सौम्यः।	5/25	7/38
	33	10	23	शनि	पुन. दि	1	52	द्वि. दि	11	39	8-26 दिन कर्क में चन्द्र, छत्रम्।	25	38
	33	11	24	रवि	तिष्या. दि	11	35	तृती. दि	8	34	3-56 रात से गण्डान्त, श्रीवत्सः।	26	38
	33	12	25	सोम	आश्ले. दि	9	23	चतु. दि	5	31	(पं प्र 2-39) 9-23 दिन सिंह में चन्द्र, (A)	26	38
	33	13	26	भौम	मघा. दि	7	22	षष्ठ. प्र	12	3	कुमार षष्ठी, कालदण्डः।	26	39
	33	14	27	बुध	पूफा. दि	5	39	सप्त. प्र	9	48	11-18 दिन कन्या में चन्द्र हार सतम, प्रवर्धः	26	39
	30	15	28	गुरु	हस्त. प्र	3	23	अष्ट. प्र	7	58	हार आठम, क्षयः।	27	39
	30	16	29	शुक्र	चित्र. प्र	2	58	नव. दि	6	37	3-10 दिन तुला में चन्द्र, हार नवम, शारिका जयन्ती, गजः।	27	39
	30	17	30	शनि	स्वा. प्र	3	00	दश. दि	5	44	वृष में शुक्र, सिद्धः। (C) खिवयात्रा काश्मीर-ध्वाक्षः।	27	39
	30	18	जुला.	रवि	विशा. प्र	3	31	एका. दि	5	22	9-24 रात वृश्चिक में चन्द्र, देवशयनी एकादशी-उन्मूलम्।	27	39
	27	19	2	सोम	अनु. प्र	4	32	द्वाद. दि	5	37	मानसम्। (B) तक गण्डान्त, ज्वाला चतुर्दशी (C)	28	39
	27	20	3	भौम	ज्ये.	दिन	रात	त्रयो. दि	6	3	11-39 रात से गण्डान्त-मुद्गरम्।	28	39
	25	21	4	बुध	ज्ये. दि	6	1	चतु. दि	7	6	6-1 प्रातः धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 12-29 दिन(B)	29	38
	22	22	5	गुरु	मूला. दि	7	55	पूर्णि. प्र	8	34	गुरु पूर्णिमा-व्यास पूजा, चन्द्रग्रहण धौम्यः।	29	38

गुरोदय 26 जून

14

मध्याह्न : प्रति. का अपने दिन, द्विती. से पंच. तक पहले दिन, षष्ठी से पूर्णि. तक अपने दिन। श्राद्ध : प्रति. से पंच पहले दिन, षष्ठी से नवमी तक अपने दिन, दश से चतुर्द. तक पहले दिन, पूर्णिमा का अपने दिन।

श्रावण कृष्णपक्ष

सप्तर्षि सं॰ 5077 विक्रमी सं॰ 2058 शक सं॰ 1923 ईस्वी. 2001

6 जुलाई की ग्रह स्थितिः- मिथुन में सूर्य, बुध, बृहस्पति, राहु। वृश्चिक में भौम। वृष में शुक्र, शनि। धनु में केतु।

दिन	मान	आपा.	जुलाई	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	वसन्त ऋतु-उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
35	17	23	6	शुक्र	पुषा. दि	10	12	प्रति. प्र	10	44	4-52 दिन मकर में चन्द्र, मिथुन में बुध, प्रवर्धः।	5/30	7/39
	17	24	7	शनि	उषा. दि	12	49	द्विती. प्र	12	33	क्षयः। (A) संकट चतुर्थी, शूलम्।	30	37
	15	25	8	रवि	श्रव दि	3	41	तृती. प्र	2	55	मुसलम्।	31	37
	15	26	9	सोम	धनि. दि	6	41	चतु. प्र	5	22	5-11 प्रातः कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, (A)	31	37
	12	27	10	भौम	शत. प्र	9	41	पंच.	दिन	रात	दिन अधिक, मृत्युः।	32	37
	12	28	11	बुध	पूभा. प्र	12	31	पंच. दि	7	44	5-49 शां मीन में चन्द्र, पांजथ यात्रा, काम्यः।	32	37
	10	29	12	गुरु	उभा. प्र	3	00	षष्ठी. दि	9	53	छत्रम्।	33	36
	5	30	13	शुक्र	रेव. प्र	5	00	सप्त. दि	11	36	10-32 रात से गण्डान्त, शीतला सप्तमी, श्रीवत्सः।	34	35
	2	31	14	शनि	अश्वि.	दिन	रात	अष्ट. दि	12	45	5 बजे प्रातः मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, (B)	35	35
	0	32	15	रवि	अश्वि. दि	6	20	नव. दि	1	12	मासान्त, आनन्दः। (B) 11-20 दिन तक गण्डान्त, सौम्यः।	36	35
34	57	श्राव.	16	सोम	भर. दि	6	56	दश. दि	12	53	12-54 दिन वृष में चन्द्र 1-58 दिन कर्क में सूर्य (C)	36	34
	55	2	17	भौम	कृति. दि	6	47	एका. दि	11	49	कमला एकादशी, मुसलम्। (C) मुहूर्त 30 समुद्रीय संक्रान्ति, चरः।	37	34
	52	3	18	बुध	रोहि. दि	5	53	द्वाद. दि	10	00	5-6 दिन मिथुन में चन्द्र शूलम्।	37	34
	52	4	19	गुरु	आर्द्रा. प्र	2	14	त्रयो. दि	7	33	त्र्यहः (चतुर्द. प्र 4-35) काण्डः।	38	33
	47	5	20	शुक्र	पुन. प्र	11	45	अमा. प्र	1	15	6-22 शां कर्क में चन्द्र, शुक्रमास अलापकः।	38	33

मध्याह्न : प्रति. से पंच. तक अपने दिन, षष्ठी सप्त. का पहले दिन, अष्ट से दश. अपने दिन, एका. से चतुर्द. पहले दिन, अमा. अपने दिन। **श्राद्ध :** प्रति से पंच. अपने दिन, षष्ठी से चतु, तक पहले दिन, अमा. का अपने दिन।

श्रावण शुक्लपक्ष

सप्तर्षि सं॰ 5077 विक्रमी सं॰ 2058 शक सं॰ 1923 ईस्वी. 2001

21 जुलाई की ग्रह स्थितिः- कर्क में सूर्य। वृश्चिक में भौम। मिथुन में बुध, बृहस्पति, राहु। वृष में शुक्र, शनि। धनु में केतु।

दिन	मान	श्राव.	जुला.	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	वसन्त ऋतु-उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
34	47	6	21	शनि	तिष्य. प्र	9	1	प्रति. प्र	9	40	मैत्रम्। (A) 6-13 शां सिंह में चन्द्र, वज्रम्।	5/38	7/35
	42	7	22	रवि	आश्ले.दि	6	13	द्विती. दि	6	3	12-56 दिन से 11 बजे 33 रात तक गण्डान्त, (A)	39	32
	42	8	23	सोम	मघा. दि	3	31	तृती.दि	2	31	ध्वाक्षः।	39	32
	37	9	24	भौम	पूफा. दि	1	5	चतु. दि	11	14	6-37 शां कन्या में चन्द्र, धौम्यः।	40	31
	32	10	25	बुध	उफा. दि	11	4	पंच. दि	8	21	कुमार षष्ठी, नाग पंचमी प्रवर्धः।	41	30
	27	11	26	गुरु	हस्त. दि	9	35	षष्ठी.दि	6	00	9-15 रात तुला में चन्द्र, त्र्यहः, (सप्त. प्र 4-16) क्षयः।	42	29
	27	12	27	शुक्र	चित्र. दि	8	44	अष्ठ. प्र	3	11	4-5 दिन, कर्क में बुध 10-29 दिन मिथुन में शुक्र, गजः।	42	29
	27	13	28	शनि	स्वा. दि	8	33	नवः प्र	2	48	2-47 रात वृश्चिक में चन्द्र, सिद्धः।	43	29
	25	14	29	रवि	विशा. दि	9	2	दश. प्र	3	4	उन्मूलम्। (D) श्रावण बाह, मुद्गरम्।	44	28
	20	15	30	सोम	अनु. दि	10	9	एका. प्र	3	56	मानसम्। (B) धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, (D)	45	27
	15	16	31	भौम	ज्ये. दि	11	49	द्वाद. प्र	5	18	5-23 प्रातः से 6-13 शां तक गण्डान्त, 11-49 दिन (B)	45	27
	10	17	अग.	बुध	मूला. दि	1	57	त्रयो.	दिन	रात	दिन अधिक, ध्वजः।	46	26
	2	18	2	गुरु	पूषा. दि	4	26	त्रयो. दि	7	4	11-8 रात मकर में चन्द्र, प्राजापत्यः।	47	24
	0	19	3	शुक्र	उषा. दि	7	11	चर्तु. दि	9	18	आनन्दः। (C) बिजबिहारा काश्मीर, स्थिरः।	48	24
33	57	20	4	शनि	श्रव. प्र	10	6	पूर्णि. दि	11	26	रक्षा बन्धन-अमरनाथ यात्रा-थजीवार यात्रा (C)	48	23

मध्याह्न : प्रति. से तृती. अपने दिन, चतु. से सप्त. पहले दिन, अष्ट. से त्रयो. अपने दिन, चर्तु., पूर्णि पहले विन।
श्राद्धः प्रति. द्वि. अपने दिन, तृती. से सप्त. पहले दिन, अष्ट. से त्रयो. अपने दिन चर्तु, पूर्णि., पहले दिन।

भाद्र कृष्णपक्ष

सप्तर्षि सं० 5077 विक्रमी सं० 2058 शक सं० 1923 ईस्वी. 2001

5 अगस्त की ग्रह स्थितिः-कर्क में सूर्य, बुध। वृश्चिक में भौम। धनु में केतु। मिथुन में बृहस्पति, शुक्र राहु। वृष में शनि।

दिन	मान	श्राव	अग.	वार	नक्षत्र	बजे	मि०	तिथि	बजे	मि०	वर्षा ऋतु-दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
33	52	21	5	रवि	धनि. प्र	1	6	प्रति. दि	1	50	11-36 दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, (A)	5/49	7/22
	47	22	6	सोम	शत. प्र	4	6	द्विती.दि	4	17	अमृतम्। (E) 5-27 प्रातः से 6-40 शां तक गण्डान्त, श्रीवत्सः।	50	21
	42	23	7	भौम	पूभा	दिन	रात	तृती.दि	6	40	12-17 रात मीन में चन्द्र, संकट चतुर्थी, काण्डः।	51	20
	39	24	8	बुध	पूभा. दि	6	59	चतु. प्र	8	52	काम्यः। (A) पं० *प्रेमनाथ शास्त्री यज्ञ* गोलगुजराल जम्मू, मातंगः।	51	19
	37	25	9	गुरु	उभा. दि	9	38	पंच. प्र	10	47	छत्रम्। (B) चन्दन षष्ठी (10.23 चन्द्रोदय) (E)	52	19
	34	26	10	शुक्र	रेव. दि	11	57	षष्ठी. प्र	12	15	11-57 दिन मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, (B)	52	18
	30	27	11	शनि	अश्वि.दि	1	47	सप्त. प्र	1	10	6-26 प्रातः सिंह में बुध, सौम्यः।	53	17
	22	28	12	रवि	भर दि	3	00	अष्ट. प्र	1	25	9-8 रात वृष में चन्द्र-जन्माष्टमी, कालदण्डः।	54	15
	22	29	13	सोम	कृति. दि	3	32	नव. प्र	12	56	स्थिरः। (C) मुहूर्त्त 45 पहाडी संक्रान्ति, गोवत्सा पूजा, काण्डः।	54	15
	17	30	14	भौम	रोहि. दि	3	18	दश. प्र	11	41	2-55 रात मिथुन में चन्द्र मातंगः।	55	14
	12	31	15	बुध	मृग. दि	2	20	एका. प्र	9	42	मासान्त-अमृतम्। (D) कुशामावसी, सूर्यमास, मुद्गरम्।	56	13
	10	भाद्र	16	गुरु	आर्द्र. दि	12	41	द्वाद. दि	7	3	4-33 रात कर्क में चन्द्र, 10-28 रात सिंह में सूर्य (C)	56	12
	4	2	17	शुक्र	पुन. दि	10	26	त्रयो. दि	3	51	कलियुग जन्म, अलापकः।	57	10
	57	3	18	शनि	तिष्य. दि	7	44	चर्तु. दि	12	15	4-45 रात सिंह में चन्द्र, 11-31 रात से गण्डान्त, मैत्रम्।	58	9
32	52	4	19	रवि	मघा. प्र	1	42	अमा. दि	8	25	त्र्यहः, (प्रति प्र 4-32) 10 बजे दिन तक गण्डान्त, (D)	59	8

मध्याह्न : प्रति. से चर्तु. तक अपने दिन, अमा. का पहले दिन।
श्राद्ध : प्रति से तृती. तक पहले दिन, चतु. से द्वाद तक अपने दिन, त्रयो० से अमा. तक पहले दिन।

भाद्र शुक्लपक्ष

सप्तर्षि सं॰ 5077 विक्रमी सं॰ 2058 शक सं॰ 1923 ईस्वी. 2001

20 अगस्त की ग्रह स्थितिः- सिंह में सूर्य, बुध। वृश्चिक में भौम। धनु में केतु। मिथुन में गुरु, शुक्र, राहु। वृष में शनि।

दिन	मान	भाद्र.	अग.	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	वर्षा ऋतु-दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
32	50	5	20	सोम	पूफा प्र	10	44	द्विती. प्र	12	46	4-3 रात कन्या में चन्द्र, ध्वजः।	5/59	7/7
	47	6	21	भौम	उफा प्र	8	3	तृती. प्र	9	18	प्राजापत्यः। (A) उमानगरी यज्ञ, मुट्ठी जम्मू, धनु में भौम मृत्युः।	6/0	7
	45	7	22	बुध	हस्त दि	5	51	चतु. दि	6	19	4-32 रात तुला में चन्द्र 6-25 प्रातः कर्क में शुक्र आनन्दः।	0	6
	40	8	23	गुरु	चित्र दि	4	16	पंच. दि	3	57	वराह पंचमी-कुमारषष्ठी, चरः।	1	5
	37	9	24	शुक्र	स्वा. दि	3	25	षष्ठी. दि	2	20	मुसलम्। (E) 12-3 रात तक गण्डान्त, काम्यः।	1	4
	32	10	25	शनि	विशा दि	3	22	सप्त. दि	1	31	9-22 दिन वृश्चिक में चन्द्र शूलम्।	2	3
	25	11	26	रवि	अनु दि	4	7	अष्ट. दि	1	11	गंगाष्टमी, शारदाष्टमी, लल्लेश्वरी जयन्ती, (A)	3	1
	22	12	27	सोम	ज्ये. दि	5	37	नव. दि	2	17	5-37 शां धनु में चन्द्र, और मूल आरम्भ, (B)	4	1
	17	13	28	भौम	मूला प्र	7	43	दश. दि	3	42	कन्या में बुध, छत्रम्। (B) 11-14 दिन से (E)	4	6/59
	12	14	29	बुध	पूषा प्र	10	16	एका. दि	5	37	4-58 रात मकर में चन्द्र, नारायणी एकादशी, (C)	5	58
	5	15	30	गुरु	उषा प्र	1	7	द्वाद. प्र	7	52	सौम्यः। (C) गौतम नाग यात्रा, श्रीवत्सः।	6	56
31	57	16	31	शुक्र	श्रव प्र	4	6	त्रयो. प्र	10	18	वितस्ता त्र्योदशी-वेरीनाग यात्रा-धौम्यः।	7	54
	52	17	सप्त.	शनि	धनि	दिन	रात	चर्तु. प्र	2	47	5-38 शां कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, (D)	7	53
	47	18	2	रवि	धनि दि	7	8	पूर्णि. प्र	3	13	मातंगः। (D) अनन्त चतुर्दशी-अनन्तनाग यात्रा, प्रवर्धः	8	51

मध्याह्न : प्रति. का पहले दिन, द्विती. से पूर्णि. तक अपने दिन। **श्राद्ध** : प्रति. का पहले दिन, द्विती. से चतु. अपने दिन, पंच. से एका. तक पहले दिन, द्वाद. से पूर्णि. अपने दिन।

आश्विन कृष्णपक्ष

सप्तर्षि सं॰ 5077 विक्रमी सं॰ 2058 शक सं॰ 1923 ईस्वी. 2001

3 सितम्बर की ग्रह स्थितिः- सिंह में सूर्य। कन्या में बुध। धनु में भौम, केतु। वृष में शनि। मिथुन में गुरु, राहु। कर्क में शुक्र।

दिन	मान	भाद्र.	सित.	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	वर्षा ऋतु-दक्षिणान (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
31	42	19	3	सोम	शत दि	10	5	प्रति. प्र	5	31	पितृपक्षारम्भ-अमृतम्। (E) सिंह में शुक्र मुद्गरम्।	6/9	6/50
	35	20	4	भौम	पूभा. दि	12	53	द्वि.	दिन	रात	6-12 प्रातः मीन में चन्द्र, दिन अधिक, काण्डः।	10	48
	32	21	5	बुध	उभा दि	3	29	द्वि. दि	7	37	अलापकः। (C) तक गण्डान्त, मासान्त, मानसम्।	10	47
	27	22	6	गुरु	रेव. दि	5	49	तृती.दि	9	29	5-49 शां मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 11-15 दिन (A)	11	46
	22	23	7	शुक्र	अश्वि.प्र	7	48	चतु. दि	10	59	वज्रम्। (A) से 12-25 रात तक गण्डान्त, संकट चतुर्थी मैत्रम्।	11	44
	17	24	8	शनि	भरण.प्र	9	22	पंच. दि	12	6	3-40 रात वृष में चन्द्र, ध्वांक्षः।	12	43
	15	25	9	रवि	कृति. प्र	10	24	षष्ठी. दि	12	42	साहिब सप्तमी, धौम्यः। (D) पित्रामावसी, ध्वजः।	12	42
	10	26	10	सोम	रोहि. प्र	10	50	सप्त.दि	12	43	पं॰ प्रेम नाथ शास्त्री जयन्ती प्रवर्धः।	13	41
	5	27	11	भौम	मृग. प्र	10	37	अष्ट.दि	12	5	10-45 दिन मिथुन में चन्द्र, महालक्ष्मी अष्टमी क्षयः।	14	40
30	57	28	12	बुध	आर्द्र. प्र	9	42	नव. दि	10	46	गजः। (B) सन्यासियों का श्राद्ध, सिद्धः।	15	38
	52	29	13	गुरु	पुन. प्र	8	9	दश. दि	8	46	2-31 दिन कर्क में चन्द्र त्र्यहः (एका. प्र 6-9) (B)	15	36
	47	30	14	शुक्र	तिष्य.दि	6	1	द्वाद. प्र	3	1	काश्मीरी पण्डितों का बलिदान दिवस उन्मूलम्।	16	35
	40	31	15	शनि	आश्ले.दि	3	26	त्र्यो. प्र	11	30	3-25 दिन सिंह में चन्द्र, 10-5 दिन से 8-42 रात (C)	16	33
	37	आश्वि.	16	रवि	मघा. दि	12	33	चतुर्द.प्र	7	45	10-12 रात कन्या में सूर्य मुहूर्त 30 समुद्रीय संक्रान्ति, हरुद, (E)	17	32
	32	2	17	सोम	पुफा. दि	9	34	अमा.दि	3	57	2-51 दिन कन्या में चन्द्र, 3-57 दिन अधिक मास प्रवेश (D)	18	31

मध्याह्न : प्रति, द्वि. का अपने दिन, तृती. चतु. का पहले दिन, पंच. से अष्ट. तक अपने दिन, नव. से एका. तक पहले दिन, द्वाद. से अमा. तक अपने दिन, श्राद्ध : प्रति, द्वि. का अपने दिन, तृती. से एका. तक पहले दिन, द्वा. से अमा. तक अपने दिन।

अ. आश्विन शुक्लपक्ष

सप्तर्षि सं॰ 5077 विक्रमी सं॰ 2058 शक सं॰ 1923 ईस्वी. 2001

18 सितम्बर की ग्रह स्थितिः-कन्या में सूर्य। तुला में बुध। धनु में भौम, केतु। वृष में शनि। मिथुन में बृहस्पति, राहु। सिंह में शुक्र।

दिन	मान	आश्वि.	सित.	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	वर्षा ऋतु-दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
30	27	3	18	भौम	उफा. दि	6	39	प्रति. दि	12	18	भौम मास, प्राजापत्यः।	6/19	6/30
	25	4	19	बुध	चित्र. प्र	1	51	द्विती. दि	8	59	त्र्यहः (तृती. प्र 6-10) 2-57 दिन तुला में चन्द्र कालदण्डः।	19	29
	17	5	20	गुरु	स्वात. प्र	12	20	चतु. प्र	4	1	तुला में बुध स्थिरः।	20	27
	15	6	21	शुक्र	विशा. प्र	11	34	पंच. प्र	2	39	5-48 शां वृश्चिक में चन्द्र मातंगः।	20	26
	7	7	22	शनि	अनु. प्र	11	39	षष्ठी.प्र	2	9	कुमार षष्ठी अमृतम्। (A) 6-22 शां से गण्डान्त, काण्डः।	21	24
	5	8	23	रवि	ज्ये. प्र	12	33	सप्त. प्र	2	32	12-33 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, (A)	21	23
	0	9	24	सोम	मूला. प्र	2	18	अष्ट. प्र	3	41	6-58 प्रातः तक गण्डान्त, अलापकः।	22	22
29	55	10	25	भौम	पूषा. प्र	4	38	नव. प्र	5	29	मैत्रम्।	23	21
	47	11	26	बुध	उषा.	दिन	रात	दश.	दिन	रात	11-19 दिन मकर में चन्द्र, दिन अधिक, वज्रम्।	24	19
	40	12	27	गुरु	उषा. दि	7	24	दश. दि	7	45	सौम्यः।	25	17
	35	13	28	शुक्र	श्रव. दि	10	24	एका.दि	10	14	11-56 रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, धौम्यः।	26	16
	32	14	29	शनि	धनि. दि	1	26	द्वाद. दि	12	46	प्रवर्धः।	26	15
	27	15	30	रवि	शत. दि	4	21	त्रयो.दि	3	11	क्षयः।	27	13
	22	16	अक्.	सोम	पूभा. दि	7	4	चर्तु. दि	5	24	12-24 दिन मीन में चन्द्र, गजः।	27	12
	17	17	2	भौम	उभा. दि	9	30	पूर्णि. प्र	7	19	सिद्धः।	28	11

मध्याह्न : प्रति. का अपने दिन, द्वि., तृती. का पहले दिन, चतु. से दश. अपने दिन, एका. का पहले दिन, द्वाद. से पूर्णि. तक अपने दिन। **श्राद्धः** प्रति. से तृती. पहले दिन, चतु. से दश. अपने दिन, एका. से चर्तु. तक पहले दिन, पूर्णि का अपने दिन।

अ. आश्विन कृष्णपक्ष

सप्तर्षि सं० 5077 विक्रमी सं० 2058 शक सं० 1923 ईस्वी. 2001

3 अक्टूबर की ग्रह स्थितिः- कन्या में सूर्य। तुला में बुध। धनु में भौम, केतु। वृष में शनि। मिथुन में गुरु, राहु। सिंह में शुक्र।

दिन	मान	आश्वि.	अक्टू.	वार	नक्षत्र	बजे	मि०	तिथि	बजे	मि०	वर्षा ऋतु-दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
29	14	18	3	बुध	रेव. प्र	11	38	प्रति. प्र	8	55	11-38 रात मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 5-6 शां (A)	6/28	6/10
	7	19	4	गुरु	आश्वि.प्र	1	26	द्विती.प्र	10	10	6-7 प्रातः तक गण्डान्त, मानसम्। (A) से गण्डान्त, उन्मूलम्।	29	8
	2	20	5	शुक्र	भर प्र	2	53	तृती. प्र	11	5	मुद्गरम्।	30	7
28	57	21	6	शनि	कृति. प्र	3	57	चतु. प्र	11	36	9-15 दिन वृष में चन्द्र, संकट चतुर्थी, ध्वजः।	31	6
	55	22	7	रवि	रोहि. प्र	4	37	पंच. प्र	11	42	प्राजापत्यः।	31	5
	47	23	8	सोम	मृग. प्र	4	48	षष्ठी. प्र	11	20	4-43 दिन मिथुन में चन्द्र, आनन्दः।	32	3
	40	24	9	भौम	आर्द्र. प्र	4	29	सप्त. प्र	10	28	चरः। (B) 4-53 रात अधिकमास समाप्त, सौम्यः।	33	1
	35	25	10	बुध	पुन. प्र	3	38	अष्ट. प्र	9	3	9-50 रात कर्क में चन्द्र, कन्या में शुक्र, मुसलम्।	34	0
	32	26	11	गुरु	तिष्य.प्र	2	16	नव. प्र	7	7	कन्या में वक्री बुध। शूलम्।	34	5/59
	27	27	12	शुक्र	आश्ले.प्र	12	25	दश. दि	4	41	12-25 रात सिंह में चन्द्र, 6-52 शां से गण्डान्त, मृत्युः।	35	58
	25	28	13	शनि	मघा. प्र	10	12	एका.दि	1	50	5-54 प्रातः तक गण्डान्त, काम्यः।	35	57
	20	29	14	रवि	पूफा. प्र	7	44	द्वाद. दि	10	41	1-5 रात कन्या में चन्द्र छत्रम्।	36	56
	15	30	15	सोम	उफा. दि	5	10	त्रयो.दि	7	22	त्र्यहः (चतुर्द प्र 4-3), श्रीवत्सः।	37	54
	10	31	16	भौम	हस्त. दि	2	41	अमा. प्र	4	53	1-33 रात तुला में चन्द्र, मासान्त, (B)	38	53

मध्याह्न : प्रति. से एका. तक अपने दिन, द्वाद. से चतुर्द. तक पहले दिन, अमा. का अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से दश. तक अपने दिन, एका. से चतुर्द तक पहले दिन, अमा. का अपने दिन।

आश्विन शुक्लपक्ष

सप्तर्षि सं॰ 5077 विक्रमी सं॰ 2058 शक सं॰ 1923 ईस्वी. 2001

17 अक्टूबर की ग्रह स्थितिः- तुला में सूर्य। धनु में केतु। मिथुन में गुरु, राहु। वृष में शनि। कन्या में बुध, शुक्र। मकर में भौम।

दिन	मान	कत.	अक्द.	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	वर्षा ऋतु-दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	गुरु उदय	गुरु अस्त
28	7	1	17	बुध	चित्र. दि	12	26	प्रति. प्र	10	4	10-8 दिन तुला में सूर्य मुहूर्त, दरियाई संक्रान्ति (A)	6/39	5/53
27	57	2	18	गुरु	स्वा. दि	10	38	द्विती. प्र	7	46	3-42 रात वृश्चिक में चन्द्र, 10-50 रात मकर में भौम, मुसलम्।	40	53
	52	3	19	शुक्र	विशा. दि	9	25	तृती. प्र	6	7	मातंगः। (A) नवरात्रारम्भ बुधमास कालदण्डः।	40	50
	52	4	20	शनि	अनु. दि	8	56	चतु. दि	5	15	3-5 रात से गण्डान्त, अमृतम्।	41	48
	47	5	21	रवि	ज्ये. दि	9	15	पंच. दि	5	12	9-15 दिन धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 3-10 दिन तक (B)	42	47
	42	6	22	सोम	मूला. दि	10	22	षष्ठी. प्र	5	59	कुमार षष्ठी, अलापकः।	43	46
	37	7	23	भौम	पूषा. दि	12	14	सप्त. प्र	7	30	6-52 शां मकर में चन्द्र मैत्रम्।	44	45
	32	8	24	बुध	उषा. दि	2	41	अष्ट. प्र	9	34	दुर्गाष्टमी, वज्रम्। (B) गण्डान्त यज्ञ दुर्गा मन्दिर नगरोटा, जम्मू, काण्डः।	45	44
	27	9	25	गुरु	श्रव. दि	5	32	नव. प्र	12	00	महानवमी, सरस्वती विर्सजन ध्वजः। (C) विजयादशमी, प्राजापत्यः।	46	42
	20	10	26	शुक्र	घनि. प्र	8	32	दश. प्र	2	33	7-1 दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, (C)	47	41
	17	11	27	शनि	शत. प्र	11	29	एका. प्र	4	59	आनन्दः।	48	40
	12	12	28	रवि	पूभा. प्र	2	12	द्वाद.	रात	दिन	7-32 शां मीन में चन्द्र, दिन अधिक, चरः।	48	39
	7	13	29	सोम	उभा. प्र	4	34	द्वाद. दि	7	9	मुसलम्।	49	38
	2	14	30	भौम	रेव. प्र	6	30	त्र्यो. दि	8	56	12-3 रात से गण्डान्त, शूलम्।	50	38
	0	15	31	बुध	अश्वि.	दिन	रात	चर्तु. दि	10	17	6-30 प्रातः मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 12-54 दिन (D)	50	38
26	57	16	नव.	गुरु	अश्वि. दि	8	3	पूर्णि. दि	11	11	मानसम्। (D) तक गण्डान्त, मृत्युः।	51	36

मध्याह्न : प्रति. द्वाद. तक अपने दिन, त्रयो. से पूर्णि. तक पहले दिन।

श्राद्ध : प्रति से चतु. तक अपने दिन, पंच. का पहले दिन, षष्ठी से द्वाद. तक अपने, त्रयो से पूर्णि. तक पहले दिन।

कार्तिक कृष्णपक्ष

सप्तर्षि सं॰ 5077 विक्रमी सं॰ 2058 शक सं॰ 1923 ईस्वी. 2001-2000

2 नवम्बर की ग्रह स्थितिः- तुला में सूर्य। धनु में केतु। मकर में भौम। वृष में शनि। मिथुन में गुरु, राहु। कन्या में बुध, शुक्र।

दिन	मान	रुत.	नव.	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	शरद ऋतु - दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
26	49	17	2	शुक्र	भर. दि	9	9	प्रति. दि	11	39	3-19 दिन वृष में चन्द्र मुद्गरम्।	6/52	5/35
	42	18	3	शनि	कृति. दि	9	51	द्विती. दि	11	43	12-10 रात तुला में बुध और 9-30 रात तुला में शुक्र, ध्वजः।	53	34
	37	19	4	रवि	रोहि. दि	10	12	तृती. दि	11	25	10-13 रात मिथुन में चन्द्र, संकट चतुर्थी, करवा चौथ (A)	54	33
	32	20	5	सोम	मृग. दि	10	12	चतु. दि	10	46	आनन्दः। (A) प्राजापत्यः।	55	32
	27	21	6	भौम	आर्द्र. दि	9	53	पंच. दि	9	46	3-25 रात कर्क में चन्द्र, छत्रः।	56	31
	22	22	7	बुध	पुन. दि	9	13	षष्ठी. दि	8	27	त्र्यहः (सप्त. प्र 6-48) मुसलम्।	57	30
	20	23	8	गुरु	तिष्य. दि	8	15	अष्ट. प्र	4	50	1-22 रात से गण्डान्त, शूलम्।	57	29
	17	24	9	शुक्र	आश्ले. दि	6	59	नव. प्र	2	37	6-59 प्रातः सिंह में चन्द्र, 12-35 दिन तक गण्डान्त, मृत्युः।	58	29
	12	25	10	शनि	पूफा. प्र	3	41	दश. प्र	12	10	अलापकः।	59	28
	10	26	11	रवि	उफा. प्र	1	49	एका. प्र	9	35	9-13 दिन कन्या में चन्द्र मैत्रम्।	7/0	28
	5	27	12	सोम	हस्त. प्र	11	56	द्वाद. प्र	6	58	वज्रम्। (B) गोवर्धन पूजा, स्वा॰ रामतीर्थ जय॰ तथा (C)	1	27
	2	28	13	भौम	चित्र. प्र	10	9	त्रयो. दि	4	26	11-3 दिन तुला में चन्द्र ध्वांक्षः।	2	27
25	57	29	14	बुध	स्वा. प्र	8	38	चर्तु. दि	2	8	दीपावली, धौम्यः। (C) निर्वाण दिवस, प्रवर्धः।	3	26
	52	30	15	गुरु	विशा. प्र	7	30	अमा. दि	12	10	1-49 दिन वृश्चिक में चन्द्र, मासान्त, अन्नकूट, (B)	4	25

दीपावली
14 नवम्बर

मध्याह्न : प्रति. से सप्त. तक पहले दिन, अष्टमी से अमा. तक अपने दिन।
श्राद्धः प्रति. से सप्त. तक पहले दिन, अष्ट, से त्रयो. तक अपने दिन, चर्तु. अमा. पहले दिन।

कार्तिक शुक्लपक्ष

सप्तर्षि सं॰ 5077 विक्रमी सं॰ 2058 शक सं॰ 1923 ईस्वी. 2001

16 नवम्बर की ग्रह स्थितिः- वृश्चिक में सूर्य। धनु में केतु। मकर में भौम। मिथुन में गुरु, राहु। तुला में बुध, शुक्र।, वृष में शनि।

दिन	मान	मग.	नव.	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	शरद ऋतु-दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
25	47	1	16	शुक्र	अनु. प्र	6	54	प्रति. दि	10	42	9-57 दिन वृश्चिक में सुर्य, मुहूर्त 30, समुद्री, संक्रांति (F)	7/5	5/24
	47	2	17	शनि	ज्ये. प्र	6	54	द्विती.दि	9	50	6-54 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, (A)	5	24
	42	3	18	रवि	मूल. प्र	7	37	तृती.दि	9	39	सिद्धः। (A) 12-55 दिन से 1-8 रात तक गण्डान्त, गजः।	6	23
	40	4	19	सोम	पूषा. प्र	9	1	चतु. दि	10	12	3-30 रात मकर में चन्द्र, उन्मूलम्।	7	23
	35	5	20	भौम	उषा. प्र	11	3	पंच. दि	11	27	कुमार षष्ठी, मानसम्। (B) नाथ जयन्ती, मुंशी चक जम्मू (C)	8	22
	30	6	21	बुध	श्रव. प्र	1	36	षष्ठी. दि	1	19	छत्रम्। (C) 4-40 रात वृश्चिक में बुध, श्रीवत्सः।	9	22
	27	7	22	गुरु	घनि. प्र	4	28	सप्त.दि	3	36	3-2 दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, स्वा॰ गोकुल (B)	10	21
	25	8	23	शुक्र	शत.	दिन	रात	अष्ट. प्र	6	7	सौम्यः। (F) शुक्रमास और शुक्र वर्ष क्षयः।	11	21
	20	9	24	शनि	शत. दि	7	27	नव. प्र	8	26	3-35 रात मीन में चन्द्र, आनन्दः।	12	20
	17	10	25	रवि	पूभा. दि	10	17	दश. प्र	10	51	चरः। (D) 8-21 दिन से 9-24 रात तक गण्डान्त (G)	13	20
	15	11	26	सोम	उभा. दि	12	47	एका. प्र	12	40	हरिबोधिनी एकादशी, शिवस्वाप मुसलम्।	14	20
	12	12	27	भौम	रेव. दि	2	50	द्वाद. प्र	1	57	2-50 दिन मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, (D)	15	20
	7	13	28	बुध	अश्वि. दि	4	19	त्रयो. प्र	2	39	मृत्युः। (G) वृश्चिक में शुक्र, शूलम्।	16	19
	5	14	29	गुरु	भर. दि	5	13	चर्तु. प्र	2	43	11-20 रात वृष में चन्द्र काम्यः। (E) मिश्रीवाला जम्मू, छत्रम्।	17	19
	2	15	30	शुक्र	कृति. प्र	5	35	पूर्णि. प्र	2	17	8-40 दिन कुम्भ में भौम, वार्षिक यज्ञ मन मन्दिर आश्रम (E)	18	19

मध्याह्न : प्रति. से पंच. तक पहले दिन, षष्ठी से पूर्णि. तक अपने दिन।
श्राद्ध : प्रति से सप्त. तक पहले दिन, अष्ठ से पूर्णि. तक अपने दिन।

मार्ग कृष्णपक्ष

सप्तर्षि सं० 5077 विक्रमी सं० 2058 शक सं० 1923 ईस्वी. 2001

1 दिसम्बर की ग्रह स्थितिः- वृश्चिक में सूर्य, बुध शुक्र। धनु में केतु। कुम्भ में भौम। वृष में शनि। मिथुन में गुरु, राहु।

दिन	मान	मग.	विस.	वार	नक्षत्र	बजे	मि०	तिथि	बजे	मि०	हेमन्त ऋतु-दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
25	0	16	1	शनि	रोहि. प्र	5	29	प्रति. प्र	1	15	श्रीवत्सः।	7/19	5/19
	0	17	2	रवि	मृग. दि	4	57	द्विती. प्र	12	7	5-16 प्रातः मिथनु में चन्द्र, सौम्यः।	19	19
24	57	18	3	सोम	आर्द्र दि	4	6	तृती. प्र	10	30	कालदण्डः।	20	19
	55	19	4	भौम	पुन. दि	3	00	चतु. प्र	8	40	9-17 दिन कर्क में चन्द्र, संकट चतुर्थी, स्थिरः।	21	19
	52	20	5	बुध	तिष्य.दि	1	43	पंच. प्र	6	40	मातंगः। (A) तक गण्डान्त, अमृतम्।	22	19
	52	21	6	गुरु	आश्ले.दि	12	20	षष्ठी.दि	4	35	12-20 दिन सिंह में चन्द्र, 6-41 प्रातः से 6 वजे शां (A)	22	19
	50	22	7	शुक्र	मघा. दि	10	53	सप्त.दि	2	26	काण्डः।	23	19
	47	23	8	शनि	पूफा. दि	9	26	अष्ट.दि	12	18	3-5 दिन कन्या में चन्द्र, महाकाल भैरवाष्टमी, अलापकः।	24	19
	45	24	9	रवि	उफा. दि	8	2	नव. दि	10	13	मैत्रम्।	25	19
	47	25	10	सोम	चित्र. प्र	5	36	दश. दि	8	15	6-10 शां तुला में चन्द्र, त्र्यहः (एका. प्र 6-27) मुद्गरम्।	25	20
	45	26	11	भौम	स्वाति.प्र	4	41	द्वाद. प्र	4	52	धनु में बुध ध्वजः।	26	20
	50	27	12	बुध	विशा. प्र	4	4	त्रयो. प्र	3	37	10-14 रात वृश्चिक में चन्द्र प्राजापत्यः।	27	21
	42	28	13	गुरु	अनु. प्र	3	49	चर्तु. प्र	2	43	आनन्दः। (B) 9-59 रात से गण्डान्त, मासान्त, चरः।	28	21
	40	29	14	शुक्र	ज्ये. प्र	4	1	अमा. प्र	2	47	4-1 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, (B)	29	21

मध्याह्न : प्रति. से अष्ट. तक अपने दिन, नव. से एका. तक पहले दिन, द्वाद. से अमा. तक अपने दिन। **श्राद्ध :** प्रति से षष्ठी तक अपने दिन, सप्त. से एका. तक पहले दिन, द्वाद. से अमा. तक अपने दिन।

मार्ग शुक्लपक्ष

सप्तर्षि सं॰ 5077 विक्रमी सं॰ 2058 शक सं॰ 1923 ईस्वी. 2001

15 दिसम्बर की ग्रह स्थितिः- धनु में सूर्य, बुध, केतु। कुम्भ में भौम। वृष में शनि। मिथनु में गुरु, राहु। वृश्चिक में शुक्र।

दिन	मान	पोष	दिस.	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	हेमन्त ऋतु-दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
24	40	1	15	शनि	मूला. प्र	4	44	प्रति. प्र	2	23	10-12 दिन तक गण्डान्त, 12-36 दिन धनु में सुर्य, (A)	7/29	5/21
	40	2	16	रवि	पूषा. प्र	5	59	द्विती.प्र	3	1	शूलम्, सूर्यमास। (A) मुहूर्त 30, किनारी, संक्रान्ति व्रत, मुसलम्।	29	21
	37	3	17	सोम	उषा.	दिन	रात	तृती. प्र	4	15	12-26 दिन मकर में चन्द्र, मृत्युः।	30	22
	35	4	18	भौम	उषा. दि	7	47	चतु. प्र	6	00	शुक्रास्त मानसम्। (B) दिन अधिक, छत्रम्।	31	22
	35	5	19	बुध	श्रव. दि	10	4	पंच.	रात	दिन	11-24 रात कुम्भ में चन्द्र, और पंचक आरम्भ, (B)	32	23
	37	6	20	गुरु	धनि. दि	12	45	पंच. दि	8	11	कुमार षष्ठी, श्रीवत्सः।	32	22
	35	7	21	शुक्र	शत. दि	3	41	षष्ठी.दि	10	40	3-34 दिन धनु में शुक्र, उत्तरायण, सौम्यः।	33	23
	35	8	22	शनि	पूभा. प्र	6	38	सप्त.दि	1	12	11-54 दिन मीन में चन्द्र, कालदण्डः।	33	23
	35	9	23	रवि	उभा. प्र	9	24	अष्ट.दि	3	36	स्थिरः। (C) 5-11 शां से गण्डान्त, मातंगः।	34	23
	35	10	24	सोम	रेव. प्र	11	47	नव. प्र	5	38	11-47 रात मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, (C)	34	24
	35	11	25	भौम	अश्वि. प्र	1	36	दश. प्र	7	6	6-18 प्रातः तक गण्डान्त, अमृतम्।	35	24
	37	12	26	बुध	भर. प्र	2	45	एका. प्र	7	54	काण्डः।	35	25
	37	13	27	गुरु	कृति. प्र	3	11	द्वाद. प्र	7	58	8-53 दिन वृष में चन्द्र, अलापकः।	35	26
	40	14	28	शुक्र	रोहि. प्र	2	57	त्रयो. प्र	7	20	मैत्रम्।	35	26
	40	15	29	शनि	मृग. प्र	2	6	चर्तु. प्र	6	2	2-32 दिन मिथुन में चन्द्र, दत्तात्रेय जयन्ती, वज्रम्।	36	27
	42	16	30	रवि	आर्द्र. प्र	12	43	पूर्णि. दि	4	10	12-39 रात मकर में बुध, ध्वांक्षः।	36	27

शुक्रास्त
18 दिसम्बर

मध्याह्न : प्रति. से पंच तक अपने दिन, षष्ठी का पहले दिन, सप्त. से पूर्णि. तक अपने दिन। **श्राद्ध** : प्रति से पंच. तक अपने दिन, षष्ठी, सप्त. अष्ट. का पहले दिन, नवमी से पूर्णि. तक अपने दिन।

पौष कृष्णपक्ष

सप्तर्षि सं॰ 5077 विक्रमी सं॰ 2058 शक सं॰ 1923 ईस्वी. 2001-2002

31 दिसम्बर की ग्रह स्थितिः- धनु में सूर्य, बुध, शुक्र, केतु। कुम्भ में भौम। वृष में शनि। मिथुन में गुरु, राहु।

दिन	मान	पौष	दिस.	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	हेमन्त ऋतु - उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
24	42	17	31	सोम	पुन. प्र	11	00	प्रति. दि	1	43	5-28 शां कर्क में चन्द्र, मुंजहर तहर, मातृका पूजा, धौम्यः।	7/36	5/29
	42	18	जन.	भौम	तिष्य. प्र	9	4	द्विती. दि	11	19	2002 ईस्वी, प्रवर्धः।	37	30
	42	19	2	बुध	आश्ले.प्र	7	00	तृती.दि	8	34	त्र्यहः (चतु. प्र 5-47) 1-32 दिन से 12-30 रात तक गण्डान्त, (A)	37	30
	45	20	3	गुरु	मघा. दि	4	58	पंच. प्र	3	6	गजः। (A) संकट चतुर्थी, 7 बजे शां सिंह में चन्द्र, क्षयः।	37	31
	47	21	4	शुक्र	पूफा. दि	3	5	षष्ठी.प्र	12	36	7-41 शां कन्या में चन्द्र, सिद्धः।	37	32
	47	22	5	शनि	उफा. दि	1	26	सप्त. प्र	10	24	उन्मूलम्।	38	33
	47	23	6	रवि	हस्त. दि	12	6	अष्ट. प्र	8	32	1-52 दिन तुला में चन्द्र, महाकाली जयन्ती, मानसम्।	38	33
	50	24	7	सोम	चित्र. दि	11	8	नव. प्र	7	3	मुद्गरम्।	38	34
	52	25	8	भौम	स्वाति. दि	10	35	दश. प्र	5	59	4-26 रात वृश्चिक में चन्द्र, आनन्देश्वर भैरव जयन्ती, ध्वजः।	38	35
	55	26	9	बुध	विशा.दि	10	25	एका.दि	5	20	प्राजापत्यः। (B) धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, चरः।	38	36
	55	27	10	गुरु	अनु. दि	10	41	द्वाद. दि	5	7	3-29 दिन मीन में भौम, आनन्दः।	38	36
	57	28	11	शुक्र	ज्ये. दि	11	21	त्रयो.दि	5	19	5-10 प्रातः से 5-24 शां तक गण्डान्त, 11-21 दिन (B)	38	37
25	0	29	12	शनि	मूला. दि	12	25	चर्तु. प्र	5	56	मुसलम्।	38	38
	2	30	13	रवि	पूषा. दि	1	53	अमा. प्र	6	39	8-22 रात मकर में चन्द्र, मासान्त, क्ष्यचरिमावसी, शूलम्।	38	39

मध्याह्न : प्रति. का अपने दिन, द्विती. से चतु. तक पहले दिन, पंच से अमा. तक अपने दिन। श्राद्धः प्रति. से चतु. तक पहले दिन, पंच से एका. तक अपने दिन, द्वाद. त्रयो. पहले दिन, चर्तु, अमा. अपने दिन।

पौष शुक्लपक्ष

सप्तर्षि सं॰ 5077 विक्रमी सं॰ 2058 शक सं॰ 1923 ईस्वी. 2002

14 जनवरी की ग्रह स्थितिः- मकर में सूर्य, बुध, शुक्र। मीन में भौम। वृष में शनि। मिथुन में गुरु, राहु। धनु में केतु।

दिन	मान	माघ	जन.	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	हेमन्त ऋतु-उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
25	5	1	14	सोम	उषा. दि	3	46	प्रति. प्र	8	26	11-22 दिन मकर में सूर्य, मुहूर्त 45 पहाडी, (A)	7/38	5/40
	7	2	15	भौम	श्रव. प्र	6	1	द्विती. प्र	10	17	काम्यः, भौममास। (A) शिशर संक्रान्ति, मकर में शुक्र, मृत्युः।	38	41
	9	3	16	बुध	धनि प्र	8	36	तृती. प्र	12	28	7-17 प्रातः कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, मैत्रम्।	38	42
	12	4	17	गुरु	शत. प्र	11	24	चतु. प्र	2	55	वज्रम्। (B) 3-3 दिन तक गण्डान्त, मातंगः।	38	43
	15	5	18	शुक्र	पूभा. प्र	2	26	पंच. प्र	5	30	7-42 शां मीन में चन्द्र ध्वांक्षः।	38	44
	20	6	19	शनि	उभा. प्र	4	24	षष्ठी. प्र	दिन	रात	दिनअधिक, कुमार षष्ठी, धौम्यः → काश्मीरी पण्डितों का	37	45
	22	7	20	रवि	रेव.	दिन	रात	षष्ठी.दि	8	2	1-33 रात से गण्डान्त, प्रवर्धः। जन्म भूमि निष्कासन दिवस	37	46
	27	8	21	सोम	रेव. दि	8	9	सप्त.दि	10	18	8-9 दिन मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, (B)	36	47
	30	9	22	भौम	अश्वि.दि	10	28	अष्ट.दि	12	6	अमृतम्।	36	48
	35	10	23	बुध	भर. दि	12	10	नव. दि	1	16	6-25 शां वृष में चन्द्र, काण्डः।	35	49
	37	11	24	गुरु	कृति.दि	1	9	दश. दि	1	40	अलापकः।	35	50
	42	12	25	शुक्र	रोहि.दि	1	20	एका.दि	1	14	1-10 रात मिथुन में चन्द्र, पुत्रदा एकादशी मैत्रम्।	34	51
	47	13	26	शनि	मृग. दि	12	44	द्वाद. दि	12	00	वज्रम्।	33	52
	50	14	27	रवि	आर्द्र. दि	11	6	त्रयो.दि	10	1	त्र्यहः (चर्तु. प्र 7-25) 3-59 रात कर्क में चन्द्र, ध्वांक्षः।	33	53
	52	15	28	सोम	पुन दि	9	28	पूर्णि. प्र	4	1	धौम्यः।	33	54

मध्याह्न : प्रति. से षष्ठी तक अपने दिन, सप्त. का पहले दिन, अष्ट. से द्वाद. तक अपने दिन, त्रयो. चतुर्द. का पहले दिन, पूर्णि. का अपने दिन। श्राद्ध : प्रति से षष्ठी. तक अपने दिन, सप्त. से चतुर्द. तक पहले दिन, पूर्णिमा का अपने दिन।

माघ कृष्णपक्ष

सप्तर्षि सं० 5077 विक्रमी सं० 2058 शक सं० 1923 ईस्वी. 2002

29 जनवरी की ग्रह स्थितिः- मकर में सूर्य, बुध, शुक्र। मीन में भौम। वृष में शनि। मिथुन में गुरु, राहु। धनु में केतु।

दिन	मान	माघ	जन.	वार	नक्षत्र	बजे	मि०	तिथि	बजे	मि०	हेमन्त ऋतु-उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
25	57	16	29	भौम	आश्ले.प्र	4	25	प्रति. प्र	12	58	4-25 रात सिंह में चन्द्र, 11-5 रात से गण्डान्त, प्रवर्धः।	7/32	5/55
26	0	17	30	बुध	मघा. प्र	1	37	द्विती.प्र	9	27	9-40 दिन तक गण्डान्त, चरः।	32	56
	5	18	31	गुरु	पूफा. प्र	10	58	तृती. प्र	6	1	4-22 रात कन्या में चन्द्र, संकट चतुर्थी, मुसलम्।	31	57
	5	19	फर.	शुक्र	उफा. प्र	8	33	चतु. दि	2	46	शूलम्। (D) कुम्भ में शुक्र कालदण्डः।	31	57
	12	20	2	शनि	हस्त. प्र	6	32	पंच. दि	11	54	मृत्युः। (A) तुला में चन्द्र, साहिब सप्तमी काम्यः।	29	58
	20	21	3	रवि	चित्रा.दि	5	1	षष्ठी. दि	9	31	5-43 प्रातः (A)	29	59
	22	22	4	सोम	स्वात. दि	4	7	सप्त.दि	7	43	त्र्यहः (अष्ट. प्र 6-33), छत्रम्।	28	6/0
	27	23	5	भौम	विशा.दि	3	59	नव. प्र	6	1	9-27 दिन वृश्चिक में चन्द्र, श्रीवत्सः।	28	1
	32	24	6	बुध	अनु. दि	4	9	दश. प्र	6	5	शुक्रोदय सौम्यः। (B) 11-19 रात तक गण्डान्त, (D)	27	2
	37	25	7	गुरु	ज्ये. दि	5	3	एका. प्र	6	43	5-3 दिन धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ 10-49 दिन से (B)	26	3
	42	26	8	शुक्र	मूला. प्र	6	26	द्वाद.	दिन	रात	दिन अधिक, स्थिरः।	25	4
	42	27	9	शनि	पूषा. प्र	8	15	द्वाद. दि	7	48	2-46 रात मकर में चन्द्र, मातंगः।	24	5
	47	28	10	रवि	उषा. प्र	10	23	त्रयो.दि	9	18	शिवचतुर्दशी, अमृतम्। (E) समुद्री उन्मूलम्।	23	6
	50	29	11	सोम	श्रव. प्र	12	29	चर्तु. दि	11	6	मासान्त, सिद्धः। (C) 12-23 रात कुम्भ में सूर्य मुहूर्त 30(E)	23	7
	55	फा०	12	भौम	धनि. प्र	3	29	अमा.दि	1	11	2-9 दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, (C)	23	7

शुक्रोदय 6 फरवरी

मध्याह्न : प्रति. से चतु. तक अपने दिन, पंच. सं अष्ट. तक पहले दिन, नव. से द्वाद, तक अपने दिन, त्रयो., चतुर्द. पहले दिन, अमावसी का अपने दिन। श्राद्ध : प्रति सं चतु. तक अपने दिन, पंच से अष्ट. पहले दिन, नव. से द्वाद तक अपने दिन, त्रयो से अमा. तक पहले दिन।

माघ शुक्लपक्ष

सप्तर्षि सं॰ 5077 विक्रमी सं॰ 2058 शक सं॰ 1923 ईस्वी. 2002

13 फरवरी की ग्रह स्थिति:- कुम्भ में सूर्य, शुक्र। मीन में भौम। वृष में शनि। मिथुन में गुरु, राहु। मकर में बुध। धनु में केतु।

दिन	मान	फा.	फर.	वार	नक्षत्र	वजे	मि॰	तिथि	वजे	मि॰	हेमन्त ऋतु-दक्षिणायन (ग्रह संचार वजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
26	57	2	13	बुध	शत. प्र	6	19	प्रति. दि	3	29	संक्रान्ति, मानसम्।	7/21	6/8
27	2	3	14	गुरु	पूभा.	दिन	रात	द्विती.दि	5	57	2-33 रात मीन में चन्द्र, बृहस्पति मास, मुद्गरम्।।	20	9
	7	4	15	शुक्र	पूभा. दि	9	17	तृती. प्र	8	30	गौरी-तृतीया, ध्वांक्षः।	19	10
	12	5	16	शनि	उभा. दि	12	17	चतु. प्र	11	2	त्रिपुरा चतुर्थी, 3-00 दिन वृष में राहु, धौम्यः।	18	11
	17	6	17	रवि	रेव. दि	3	12	पंच. प्र	1	25	3-12 दिन मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, (A)	17	12
	22	7	18	सोम	अश्वि.दि	5	51	षष्ठी. प्र	3	28	कुमार षष्ठी-क्षयः। (C) वसन्त पंचमी, प्रवर्धः।	16	13
	27	8	19	भौम	भर. प्र	8	5	सप्त. प्र	5	00	2-33 रात वृष में चन्द्र, सूर्य सप्त., मार्तण्ड तीर्थ यात्रा, गज़ः।	15	14
	32	9	20	बुध	कृति. प्र	9	44	अष्ट. प्र	5	52	बुधाष्टमी सिद्धः। (A) 8-29 दिन से 9-59 शां तक गण्डान्त (C)	14	15
	35	10	21	गुरु	रोहि. प्र	10	39	नव. प्र	5	56	मेष में भौम उन्मूलम्।	13	15
	40	11	22	शुक्र	मृग. प्र	10	45	दश. प्र	4	9	10-44 दिन मिथुन में चन्द्र, मानसम्।	12	16
	45	12	23	शनि	आर्द्रा. प्र	10	1	एका. प्र	3	32	भीमसीन एकादशी, मुद्गरम्।	11	17
	52	13	24	रवि	पुन. प्र	8	30	द्वाद. प्र	1	8	2-52 दिन कर्क में चन्द्र, ध्वजः।	9	18
	57	14	25	सोम	तिष्य.दि	6	18	त्रयो. प्र	10	6	प्राजापत्यः। (B) 8-58 रात तक गण्डान्त, आनन्दः।	8	19
28	2	15	26	भौम	आश्ले.दि	3	38	चर्तु. प्र	6	35	3-38 दिन सिंह में चन्द्र, 10-20 दिन से (B)	7	20
	7	16	27	बुध	मघा. दि	12	36	पूर्णि. दि	2	46	काव पूर्णिमा, माघ पूर्णिमा, चरः।	6	21

मध्याह्न : प्रतिपदि से पूर्णिमा तक अपने दिन। श्राद्ध : प्रति, द्वि. का पहले दिन, तृती. से पूर्णि तक अपने दिन।

15

फाल्गुन कृष्णपक्ष

सप्तर्षि सं॰ 5077 विक्रमी सं॰ 2058 शक सं॰ 1923 ईस्वी. 2002

28 फरवरी की ग्रह स्थितिः-कुम्भ में सूर्य, शुक्र। मेष में भौम। वृष में शनि, राहु। मिथुन में गुरु। वृश्चिक में केतु। मकर में वुध

दिन	मान	फा.	फर.	वार	नक्षत्र	वजे	मि॰	तिथि	वजे	मि॰	शरद ऋतु - दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
28	15	17	28	गुरु	पूफा. दि	9	28	प्रति. दि	10	51	त्र्यहः (द्विती. प्र. 7-1) 2-43 दिन कन्या में चन्द्र, (A)	7/4	6/22
	15	18	मार्च	शुक्र	हस्त. प्र	3	36	तृती. प्र	3	28	अमृतम्। (A) हुरिअकदोह, मुसलम्।	3	21
	22	19	2	शनि	चित्र. प्र	1	15	चर्तु. प्र	12	22	2-27 दिन तुला में चन्द्र, संकट चतुर्थी, काण्डः।	2	23
	25	20	3	रवि	स्वा. प्र	11	32	पंच. प्र	9	53	8-53 दिन मीन में शुक्र, अलापकः।	1	23
	30	21	4	सोम	विशा. प्र	10	31	षष्ठी. प्र	8	6	4-49 दिन वृश्चिक में चन्द्र, मंत्रम्।	0	24
	35	22	5	भौम	अनु. प्र	10	17	सप्त. प्र	7	7	वज्रम्। (B) से 5-4 रात तक गण्डान्त होराष्टमी, (D)	6/59	25
	40	23	6	वुध	ज्ये. प्र	10	48	अष्ट. प्र	6	54	10-48 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 4-42 दिन (B)	58	26
	45	24	7	गुरु	मूला. प्र	12	2	नव. प्र	7	26	3-58 रात कुम्भ में वुध, धौम्यः।	57	27
	45	25	8	शुक्र	पूषा. प्र	1	51	दश. प्र	8	37	प्रवर्धः। (D) चक्रेश्वर यात्रा, ध्वांक्षः।	57	27
	50	26	9	शनि	उषा. प्र	4	4	एका. प्र	10	17	8-25 दिन मकर में चन्द्र, क्षयः।	56	28
	57	27	10	रवि	श्रव. प्र	6	44	द्वाद. प्र	12	20	मुसलम्।	52	29
29	2	28	11	सोम	धनि.	दिन	रात	त्रयो. प्र	2	37	शिवरात्रि 8-9 रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, शूलम्।	51	30
	7	29	12	भौम	धनि. दि	9	33	चर्तु. प्र	5	3	शिवचतुर्दशी, उन्मूलम्।	50	31
	12	30	13	वुध	शत. दि	12	28	अमा.	दिन	रात	मासान्त, दिन अधिक, थाल भरूण, मानसम्।	49	31
	15	चैत्र	14	गुरु	पूभा दि	3	26	अमा. दि	7	33	8-40 दिन मीन में चन्द्र, 9-17 रात मीन में सूर्य (C)	48	32

हेरथ 11 मार्च

मध्याह्न : प्रति. द्वि. पहले दिन, तृती. से अमा. तक अपने दिन। श्राद्धः प्रति., द्वि. पहले दिन तृती. से अमा. तक अपने दिन।

(C) मुहूर्त 45 दरयाई, संक्रान्ति सोन्थ, ड्रून्यमावसी वटुक परमोजुन, मुद्ररम्।

फाल्गुन शुक्लपक्ष

सप्तर्षि सं॰ 5077 विक्रमी सं॰ 2058 शक सं॰ 1923 ईस्वी. 2002

15 मार्च की ग्रह स्थिति:- मीन में सूर्य, शुक्र। मेष में भौम। वृष में शनि, राहु। मिथुन में गुरु। वृश्चिक में केतु। कुम्भ में बुध।

दिन	मान	चैत्र	मार्च	वार	नक्षत्र	वजे	मि॰	तिथि	वजे	मि॰	शरद ऋतु-दक्षिणायन (ग्रह संचार वजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
29	20	2	15	शुक्र	उभा. दि	6	23	प्रति. दि	10	2	ध्वजः।	6/48	6/33
	27	3	16	शनि	रेव. प्र	9	15	द्विती.दि	12	27	9-15 रात मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 2-32 दिन (A)	45	34
	32	4	17	रवि	अश्वि.प्र	11	56	तृती.दि	2	43	आनन्दः। (A) से 3-58 रात तक गण्डान्त (E)	43	35
	37	5	18	सोम	भर. प्र	2	21	चतु. दि	4	44	चरः। (E) श्री राम कृष्ण परहंस जयन्ती, शनिमास प्राजापत्यः।	42	35
	42	6	19	भौम	कृति. प्र	4	21	पंच. दि	6	23	8-53 दिन वृष में चन्द्र, मुसलम्।	40	36
	50	7	20	बुध	रोहि. प्र	5	49	षष्ठी. प्र	7	31	कुमार षष्ठी, शूलम्।	39	37
	55	8	21	गुरु	मृग.	दिन	रात	सप्त. प्र	8	00	6-14 शां मिथनु में चन्द्र, मृत्युः।	39	39
	0	9	22	शुक्र	मृग. दि	6	39	अष्ठ.प्र	7	45	तैलाष्टमी, मानसम्। (B) अमला एकादशी, सौम्यः।	37	39
30	2	10	23	शनि	आर्द्र. दि	6	40	नव. प्र	6	43	12-8 रात कर्क में चन्द्र, मुद्गरम्।	36	39
	10	11	24	रवि	तिष्य. प्र	4	29	दश. दि	4	54	श्रीवत्सः। (C) 12-40 दिन मीन में बुध, कालदण्डः।	34	38
	15	12	25	सोम	आश्ले.प्र	2	23	एका.दि	2	23	2-23 रात सिंह में चन्द्र, 8-53 रात से गण्डान्त, (B)	32	40
	20	13	26	भौम	मधा. प्र	11	44	द्वाद. दि	11	15	7-44 प्रातः तक गण्डान्त, (C)	31	42
	25	14	27	बुध	पूफा. प्र	8	46	त्रयो.दि	7	41	त्र्यहः (चतुर्द प्र 3-50) 1-59 रात कन्या में चन्द्र (D)	30	43
	30	15	28	गुरु	उफा. दि	5	38	पूर्णि. प्र	11	55	होली, मातंगः। (D) 12-36 दिन मेष में शुक्र। स्थिरः।	28	43

मध्याह्न : प्रति. का पहले दिन, द्वि. से एका, तक अपने दिन, द्वाद. से चर्तुद. पहले दिन, पूर्णि. का अपने दिन। **श्राद्ध** : प्रति से पंच. तक पहले दिन, षष्ठी से दश. तक अपने दिन, एका. से चतुर्द. तक पहले दिन, पूर्णि. का अपने दिन।

चैत्र कृष्णपक्ष

सप्तर्षि सं॰ 5077 विक्रमी सं॰ 2058 शक सं॰ 1923 ईस्वी. 2002

29 मार्च की ग्रह स्थिति:- मीन में सूर्य, बुध। मेष में भौम, शुक्र। वृष में राहु, शनि। मिथुन में गुरु। वृश्चिक में केतु।

दिन	मान	चैत्र	मार्च	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	शरद ऋतु-दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
30	41	16	29	शुक्र	हस्त. दि	2	34	प्रति. प्र	8	6	1-9 रात तुला में चन्द्र, अमृतम्।	6/28	6/45
	45	17	30	शनि	चित्र. दि	11	44	द्विती.दि	4	35	काण्डः।	26	45
	51	18	31	रवि	स्वात.दि	9	21	तृती.दि	1	33	2-1 रात वृश्चिक में चन्द्र संकट चतुर्थी, अलापकः।	25	45
	56	19	अप्रै.	सोम	विशा.दि	7	34	चतु. दि	11	8	मैत्रम्।	23	45
31	0	20	2	भौम	अनु. दि	6	32	पंच. दि	9	29	12-11 रात से गण्डान्त, वज्रम्।	22	46
	4	21	3	बुध	ज्येष्ठ दि	6	28	षष्ठी.दि	8	40	6-28 प्रातः धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, (A)	21	47
	9	22	4	गुरु	मूला. दि	6	52	सप्त.दि	8	41	12-27 रात वृष में भौम, धौम्यः।	20	47
	15	23	5	शुक्र	पूषा. दि	8	14	अष्ट.दि	9	29	2-45 दिन मकर में चन्द्र, प्रवर्धः।	18	49
	20	24	6	शनि	उषा. दि	10	15	नव. दि	10	56	क्षयः। (A) 12-26 दिन तक गण्डान्त, ध्वजः।	17	50
	25	25	7	रवि	श्रव. दि	12	45	दश. दि	12	55	2-9 रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, मुसलम्।	15	50
	27	26	8	सोम	धनि. दि	3	34	एका.दि	3	13	शूलम्।	13	51
	35	27	9	भौम	शत. दि	6	33	द्वाद. दि	5	42	मृत्युः। (B) विचार नाग यात्रा, श्रीवत्सः	12	51
	37	28	10	बुध	पूभा. प्र	9	33	त्रयो. प्र	8	12	2-18 दिन मीन में चन्द्र, 5-29 शां मेष में बुध, काम्यः।	11	51
	42	29	11	गुरु	उभा. प्र	12	28	चर्तु. प्र	10	36	चित्र चुहाद, छत्रम्।	10	52
	47	30	12	शुक्र	रेव. प्र	3	13	अमा. प्र	12	51	श्री भट्ट दिवस, 'थाल भरुण' 8-32 रात से गण्डान्त (B)	8	53

थाल भरुणं
12 अप्रैल

मध्याह्न : प्रति. से तृती. तक अपने दिन, चतु. से नव. तक पहले दिन, दश. से अमा. तक अपने दिन।
श्राद्ध : प्रति द्वि. का अपने दिन तृती. से द्वाद. तक पहले दिन, त्रयो. से अमा. तक अपने दिन।

यज्ञोपवीत मुहूर्त

सप्त० सं० 5077 वि० सं० 2058

ईस्वी 2001-2002

वैशाख कृष्ण पक्ष

9 अप्रैल प्रतिपदि सोमवार
6.25 प्रातः से
7.56 प्रातः तक (1)

वैशाख शुक्ल पक्ष

26 अप्रैल तृतीया गुरुवार
10 वजे 58 दिन से
1 वजे 22 दिन तक (4)

29 अप्रैल षष्ठी रविवार
10 वजे 46 दिन से
1 वजे 10 दिन तक (4)

4 मई द्वादशी शुक्रवार
10 वजे 26 दिन से
12 वजे 50 दिन तक (4)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

10 मई तृतीया गुरुवार
10 वजे 3 दिन से
12 वजे 27 दिन तक (4)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

24 मई प्रतिपदि गुरुदार
9 वजे 8 दिन से
11 वजे 31 दिन तक (4)
1 वजे 53 दिन से
4 वजे 14 दिन तक (6)

27 मई पंचमी रविवार
1 वजे 41 दिन से
4 वजे 2 दिन तक (6)

1 जून दशमी शुक्रवार
8 वजे 36 दिन से
11 वजे दिन तक (4)

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

2 जुलाई द्वादशी सोमवार
8 वजे 58 दिन से
11 वजे 20 दिन तक (5)
11 वजे 20 दिन से
1 वजे 40 दिन तक (6)

श्रावण कृष्ण पक्ष

8 जुलाई तृतीया रविवार
8 वजे 34 दिन से
10 वजे 56 दिन तक (5)

आश्विन शुक्ल पक्ष

19 अक्टूबर तृतीया शुक्रवार
11 वजे 16 दिन से
1 वजे 18 दिन तक (9)

21 अक्टूबर पंचमी रविवार
8 वजे 47 दिन से
9 वजे 15 दिन तक (8)

26 अक्टूबर दशमी शुक्रवार
8 वजे 27 दिन से
10 वजे 48 दिन तक (8)
10 वजे 48 दिन से
12 वजे 51 दिन तक (9)

29 अक्टूबर द्वादशी सोमवार
8 वजे 16 दिन से
10 वजे 36 दिन तक (8)
10 वजे 36 दिन से
12 वजे 39 दिन तक (9)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

21 नवम्बर षष्ठी बुधवार
9 वजे 6 दिन से
11 वजे 8 दिन तक (9)
2 वजे 12 दिन से
3 वजे 32 दिन तक (12)

5 नवम्बर दशमी रविवार
10 वजे 17 दिन से

10 वजे 53 दिन तक (9)
26 नवम्बर एकादशी सोमवार
8 वजे 46 दिन से
10 वजे 49 दिन तक (9)
28 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार
8 वजे 38 दिन से
10 वजे 41 दिन तक (9)

माघ शुक्ल पक्ष

15 फरवरी तृतीया शुक्रवार
9 वजे 54 दिन से
11 वजे 25 दिन तक (1)
18 फरवरी षष्ठी सोमवार
7 वजे 16 प्रातः से
8 वजे 22 दिन तक (11)
24 फरवरी द्वादशी रविवार
7 वजे 59 प्रातः से
9 वजे 18 दिन तक (12)
25 फरवरी त्रयोदशी सोमवार
7 वजे 55 प्रातः से
9 वजे 14 दिन तक (12)
12 वजे 39 दिन से
12 वजे 54 दिन तक (3)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

28 फरवरी प्रतिपदि गुरुवार
12 वजे 27 दिन से
2 वजे 43 दिन तक (3)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

15 मार्च प्रतिपदि शुक्रवार
11 वजे 28 दिन से
1 वजे 44 दिन तक (3)
17 मार्च तृतीया रविवार
11 वजे 20 दिन से
1 वजे 36 दिन तक (3)
24 मार्च दशमी रविवार
10 वजे 53 दिन से
1 वजे 8 दिन तक (3)

विवाह मुहूर्त
(2001-2002 के लिये)

वैशाख कृष्ण पक्ष

15 अप्रैल सप्तमी रविवार
11 वजे 41 दिन से
2 वजे 5 दिन तक (4)
2 वजे 5 दिन से
4 वजे 27 दिन तक (5)
3 वजे 13 रात से
4 वजे 38 रात तक (11)
16 अप्रैल अष्टमी सोमवार
11 वजे 37 दिन से
2 वजे 1 दिन तक (4)
2 वजे 1 दिन से
4 वजे 23 दिन तक (5)
3 वजे 9 रात से
4 वजे 34 रात तक (11)
18 अप्रैल दशमी वुधवार
11 वजे 29 दिन से
1 वजे 53 दिन तक (4)
1 वजे 53 दिन से
4 वजे 15 दिन तक (5)
20 अप्रैल द्वादशी शुक्रवार
1 वजे 14 रात से
2 वजे 53 रात तक (10)
2 वजे 53 रात से
4 वजे 18 रात तक (11)
21 अप्रैल त्रयोदशी शनिवार
11 वजे 18 दिन से
1 वजे 41 दिन तक (4)
1 वजे 41 दिन से
4 वजे 4 दिन तक (5)

1 वजे 10 रात से
2 वजे 49 रात तक (10)
2 वजे 49 रात से
4 वजे 14 रात तक (11)

22 अप्रैल चतुर्दशी रविवार
11 वजे 14 दिन से
1 वजे 37 दिन तक (4)
1 वजे 37 दिन से
3 वजे 59 दिन तक (5)
1 वजे 6 रात से
2 वजे 45 रात तक (10)
2 वजे 45 रात से
3 वजे 5 रात तक (11)

वैशाख शुक्ल पक्ष

26 अप्रैल तृतीया गुरुवार
10 वजे 58 दिन से
1 वजे 22 दिन तक (4)
1 वजे 22 दिन से
3 वजे 43 दिन तक (5)
12 वजे 50 रात से
2 वजे 29 रात तक (10)
2 वजे 29 रात से
3 वजे 54 रात तक (11)

27 अप्रैल चर्तुथी शुक्रवार
10 वजे 54 दिन से
1 वजे 18 दिन तक (4)
1 वजे 18 दिन से
3 वजे 39 दिन तक (5)
12 वजे 46 रात से
2 वजे 25 रात तक (10)
2 वजे 25 रात से
3 वजे 51 रात तक (11)

2 मई नवमी बुधवार
10 वजे 34 दिन से
12 वजे 58 दिन तक (4)

3 मई एकादशी गुरुवार
12 वजे 23 रात से
2 वजे 2 रात तक (10)
2 वजे 2 रात से
3 वजे 27 रात तक (11)
3 वजे 27 रात से
4 वजे 46 रात तक (12)

4 मई द्वादशी शुक्रवार
12 वजे 19 रात से
1 वजे 58 रात तक (10)
1 वजे 58 रात से
3 वजे 23 रात तक (11)
3 वजे 23 रात से
4 वजे 42 रात तक (12)

5 मई त्रयोदशी शनिवार
10 वजे 23 दिन से
12 वजे 46 दिन तक (4)
12 वजे 46 दिन से
3 वजे 8 दिन तक (5)
12 वजे 15 रात से
1 वजे 54 रात तक (10)
1 वजे 54 रात से
3 वजे 19 रात तक (11)
3 वजे 19 रात से
4 वजे 39 रात तक (12)

6 मई चतुर्दशी रविवार
10 वजे 19 दिन से
12 वजे 42 दिन तक (4)
12 वजे 42 दिन से
3 वजे 4 दिन तक (5)
12 वजे 11 रात से
1 वजे 50 रात तक (10)
1 वजे 50 रात से
3 वजे 15 रात तक (11)

7 मई पूर्णिमा सोमवार
10 वजे 15 दिन से
12 वजे 38 दिन तक (4)
12 वजे 38 दिन से
1 वजे 44 दिन तक (5)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

10 मई तृतीया गुरुवार

12 बजे 27 दिन से
2 बजे 48 दिन तक (5)
11 बजे 55 रात से
1 बजे 34 रात तक (10)
1 बजे 34 रात से
2 बजे 59 रात तक (11)

11 मई चतुर्थी शुक्रवार
9 बजे 59 दिन से
12 बजे 23 दिन तक (4)
12 बजे 23 दिन से
2 बजे 44 दिन तक (5)

12 मई पंचमी शनिवार
11 बजे 47 रात से
1 बजे 26 रात तक (10)
1 बजे 26 रात से
2 बजे 52 रात तक (11)

18 मई दशमी शुक्रवार
9 बजे 31 दिन से
11 बजे 55 दिन तक (4)
11 बजे 55 दिन से
2 बजे 17 दिन तक (5)
11 बजे 24 रात से
1 बजे 3 रात तक (10)
1 बजे 3 रात से
2 बजे 28 रात तक (11)

19 मई एकादशी शनिवार
9 बजे 27 दिन से
11 बजे 51 दिन तक (4)
11 बजे 51 दिन से
2 बजे 13 दिन तक (5)
2 बजे 13 दिन से
4 बजे 33 दिन तक (6)
11 बजे 20 रात से
12 बजे 59 रात तक (10)
12 बजे 59 रात से
2 बजे 24 रात तक (11)

20 मई द्वादश्यां रविवार
9 बजे 24 दिन से
11 बजे 47 दिन तक (4)
11 बजे 47 दिन से
2 बजे 9 दिन तक (5)
2 बजे 9 दिन से
4 बजे 29 दिन तक (6)
11 बजे 16 रात से
12 बजे 55 रात तक (10)
12 बजे 55 रात से
2 बजे 20 रात तक (11)

21 मई त्रयोदशी सोमवार
9 बजे 20 दिन से
11 बजे 43 दिन तक (4)
11 बजे 43 दिन से
12 बजे 9 दिन तक (5)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

24 मई प्रतिपदि गुरुवार
9 बजे 8 दिन से
11 बजे 31 दिन तक (4)
11 बजे 31 दिन से
1 बजे 53 दिन तक (5)
1 बजे 53 दिन से
4 बजे 14 दिन त (6)
11 बजे रात से
12 बजे 39 रात तक (10)
12 बजे 39 रात से
2 बजे 4 रात तक (11)
2 बजे 4 रात से
3 बजे 24 रात तक (12)

25 मई तृतीया शुक्रवार
9 बजे दिन से
9 बजे 27 दिन तक (4)

31 मई नवमी गुरुवार
12 बजे 30 दिन से
1 बजे 26 दिन तक (5)
10 बजे 33 रात से
12 बजे 12 रात तक (10)

12 वजे 12 रात से
1 वजे 37 रात तक (11)
1 वजे 37 रात से
2 वजे 56 रात तक (12)

1 जून दशमी शुक्रवार
8 वजे 36 दिन से
11 वजे दिन तक (4)
11 वजे दिन से
1 वजे 22 दिन तक (5)

श्रावण कृष्ण पक्ष

18 जुलाई द्वादशी बुधवार
7 वजे 55 प्रातः से
10 वजे 17 दिन तक (5)
10 वजे 17 दिन से
12 वजे 37 दिन तक (6)
12 वजे 37 दिन से
3 वजे 1 दिन तक (7)
9 वजे 3 रात से
10 वजे 28 रात तक (11)

10 वजे 28 रात से
11 वजे 47 रात तक (12)
11 वजे 47 रात से
1 वजे 19 रात तक (1)

श्रावण शुक्ल पक्ष

25 जुलाई पंचमी बुधवार
7 वजे 28 प्रातः से
9 वजे 49 दिन तक (5)
12 वजे 10 दिन से
2 वजे 33 दिन तक (7)
8 वजे 35 रात से
10 वजे रात तक (11)
10 वजे रात से
11 वजे 20 रात तक (12)
11 वजे 20 रात से
12 वजे 51 रात तक (1)

26 जुलाई षष्ठी गुरुवार
7 वजे 24 प्रातः से
9 वजे 45 दिन तक (5)

12 वजे 16 दिन से
2 वजे 29 दिन तक (7)
8 वजे 31 रात से
9 वजे 57 रात तक (11)
9 वजे 57 रात से
11 वजे 16 रात तक (12)
11 वजे 16 रात से
12 वजे 47 रात तक (1)

27 जुलाई अष्टमी शुक्रवार
7 वजे 20 प्रातः से
9 वजे 41 दिन तक (5)
9 वजे 41 दिन से
12 वजे 2 दिन तक (6)
8 वजे 27 रात से
9 वजे 53 रात तक (11)
9 वजे 53 रात से
11 वजे 12 रात तक (12)
11 वजे 12 रात से

12 वजे 43 रात तक (1)

28 जुलाई नवमी शनिवार
7 वजे 16 प्रातः से
8 वजे 33 दिन तक (5)

29 जुलाई दशमी रविवार
9 वजे 2 दिन से
9 वजे 34 दिन तक (5)
9 वजे 34 दिन से
11 वजे 54 दिन तक (6)
11 वजे 54 दिन से
2 वजे 17 दिन तक (7)
8 वजे 20 रात से
9 वजे 45 रात तक (11)
9 वजे 45 रात से
11 वजे 4 रात तक (12)
11 वजे 4 रात से
12 वजे 36 रात तक (1)

30 जुलाई एकादशी सोमवार
7 वजे 8 प्रातः से
9 वजे 30 दिन तक (5)

9 वजे 30 दिन से
10 वजे 9 दिन तक (6)

1 अगस्त त्रयोदशी बुधवार
7 वजे प्रातः से
9 वजे 22 दिन तक (5)
9 वजे 22 दिन से
11 वजे 42 दिन तक (6)
11 वजे 42 दिन से
1 वजे 57 दिन तक (11)

2 अगस्त त्रयोदशी गुरुवार
8 वजे 4 रात से
9 वजे 29 रात तक (11)
9 वजे 29 रात से
10 वजे 48 रात तक (12)
10 वजे 48 रात से
12 वजे 20 रात तक (1)

3 अगस्त चतुर्दशी शुक्रवार
6 वजे 52 प्रातः से
9 वजे 14 दिन तक (5)
9 वजे 14 दिन से
11 वजे 34 दिन तक (6)
11 वजे 34 दिन से
1 वजे 58 दिन तक (7)
8 वजे रात से
9 वजे 15 रात तक (11)
9 वजे 15 रात से
10 वजे 45 रात तक (12)
10 वजे 45 रात से
12 वजे 16 रात तक (1)

4 अगस्त पूर्णिमा शनिवार
6 वजे 48 प्रातः से
9 वजे 10 दिन तक (5)
9 वजे 10 दिन से
11 वजे 30 दिन तक (6)
11 वजे 30 दिन से
1 वजे 54 दिन तक (7)
7 वजे 56 रात से
9 वजे 21 रात तक (11)
9 वजे 21 रात से
10 वजे 6 रात तक (12)

भाद्र कृष्ण पक्ष

8 अगस्त चतुर्थी बुधवार
6 वजे 59 प्रातः से
8 वजे 54 दिन तक (5)
8 वजे 54 दिन से
11 वजे 15 दिन तक (6)
11 वजे 15 दिन से
1 वजे 38 दिन तक (7)
7 वजे 40 रात से
9 वजे 5 रात तक (11)
10 वजे 25 रात से
11 वजे 56 रात तक (1)

9 अगस्त पंचमी गुरुवार
6 वजे 29 प्रातः से
8 वजे 50 दिन तक (5)
8 वजे 50 दिन से
11 वजे 11 दिन तक (6)
11 वजे 11 दिन से
1 वजे 34 दिन तक (7)
7 वजे 36 शां से
9 वजे 1 रात तक (11)
10 वजे 21 रात से
11 वजे 52 रात तक (1)

10 अगस्त षष्ठी शुक्रवार
6 वजे 25 प्रातः से
8 वजे 46 दिन तक (5)
8 वजे 46 दिन से
11 वजे 7 दिन तक (6)
11 वजे 7 दिन से
1 वजे 30 दिन तक (7)
7 वजे 32 शां से
8 वजे 58 रात तक (11)
8 वजे 58 रात से
10 वजे 17 रात तक (12)
10 वजे 17 रात से
11 वजे 48 रात तक (1)

11 अगस्त सप्तमी शनिवार
6 वजे 21 प्रातः से

8 वजे 42 दिन तक (5)
8 बजे 42 दिन से
11 वजे 3 दिन तक (6)
11 वजे 3 दिन से
1 वजे 26 दिन तक (7)

आश्विन शुक्ल पक्ष

20 अक्टूबर चतुर्थी शनिवार
6 वजे 41 प्रातः से
8 वजे 51 दिन तक (7)
21 अक्टूबर पंचमी रविवार
2 वजे 29 दिन से
4 वजे 14 दिन तक (11)
1 वजे 38 रात से
3 वजे 59 रात तक (5)
22 अक्टूबर षष्टी सोमवार
6 बजे 43 प्रातः से
8 वजे 43 दिन तक (7)
24 अक्टूबर अष्टमी बुधवार
2 वजे 37 दिन से
4 वजे 3 दिन तक (11)
1 वजे 26 रात से
3 वजे 47 रात तक (5)
25 अक्टूबर नवमी गुरुवार
2 वजे 33 दिन से
3 वजे 59 दिन तक (11)
1 वजे 22 रात से
3 वजे 43 रात तक (5)
26 अक्टूबर दशमी शुक्रवार
3 वजे 55 दिन से
5 वजे 14 दिन तक (12)
29 अक्टूबर द्वादशी सोमवार
2 वजे 18 दिन से
4 वजे 43 दिन तक (11)
1 वजे 6 रात से
3 वजे 28 रात तक (5)
31 अक्टूबर चतुर्दशी बुधवार
2 वजे 10 दिन से
3 वजे 35 दिन तक (11)
12 वजे 58 रात से
3 वजे 20 रात तक (5)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

10 नवम्बर दशमी शनिवार
2 वजे 41 रात से
5 वजे 1 रात तक (6)
11 नवम्बर एकादशी रविवार
1 वजे 27 दिन से
2 वजे 52 दिन तक (11)
12 वजे 15 रात से
2 वजे 37 रात तक (5)
12 नवम्बर द्वादशी सोमवार
1 वजे 23 दिन से
2 वजे 48 दिन तक (11)
2 वजे 48 दिन से
4 वजे 7 दिन तक (12)
12 वजे 11 रात से
2 वजे 33 रात तक (5)
14 नवम्बर चतुर्दशी बुधवार
1 वजे 15 दिन से
2 वजे 40 दिन तक (11)
12 वजे 3 रात से
2 वजे 25 रात तक (5)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

17 नवम्बर द्वितीया शनिवार
11 वजे 51 रात से
2 वजे 13 रात तक (5)
18 नवम्बर तृतीया रविवार
12 वजे 59 दिन से
2 वजे 24 दिन तक (11)
21 नवम्बर षष्टी बुधवार
12 वजे 47 दिन से
2 वजे 12 दिन तक (11)
11 वजे 36 रात से
1 वजे 36 रात तक (5)

25 नवम्वर दशमी रविवार
12 वजे 31 दिन से
1 वजे 57 दिन तक (11)
11 वजे 20 रात से
1 बजे 42 रात तक (5)
1 वजे 42 रात से
4 वजे 2 रात तक (6)
26 नवम्वर एकादशी सोमवार
12 वजे 28 दिन से
1 वजे 53 दिन तक (11)
11 वजे 16 रात से
1 वजे 38 रात तक (5)
1 वजे 38 रात से
3 वजे 58 रात तक (6)
28 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार
12 वजे 20 दिन से
1 वजे 45 दिन तक (11)
1 वजे 43 दिन से
3 वजे 4 दिन तक (12)

मार्ग कृष्ण पक्ष

6 दिसम्बर षष्टी गुरुवार
1 वजे 13 दिन से
2 वजे 33 दिन तक (12)
8 वजे 13 रात से
10 वजे 37 रात तक (4)
12 वजे 58 रात से
3 बजे 19 रात तक (6)
7 दिसम्बर सप्तमी शुक्रवार
10 वजे 5 दिन से
10 वजे 53 दिन तक (10)
8 दिसम्बर अष्टमी शनिवार
10 वजे 1 दिन से
11 बजे 40 दिन तक (10)
1 वजे 6 दिन से
2 वजे 25 दिन तक (12)
8 वजे 5 रात से
10 वजे 29 रात तक (4)
9 दिसम्बर नवमी रविवार
9 वजे 58 दिन से
11 वजे 36 दिन तक (10)
1 वजे 2 दिन से
2 वजे 21 दिन तक (12)
8 वजे 1 रात से
10 वजे 25 रात तक (4)
10 दिसम्बर दशमी सोमवार
9 वजे 54 दिन से
11 वजे 32 दिन तक (10)
12 वजे 58 दिन से
2 वजे 17 दिन तक (12)
13 दिसम्बर चतुर्दशी गुरुवार
12 वजे 46 दिन से
2 वजे 5 दिन तक (12)
7 वजे 45 शां से
10 वजे 9 रात तक (4)
12 वजे 31 रात से
2 वजे 51 रात तक (6)

माघ शुक्ल पक्ष

15 फरवरी तृतीया शुक्रवार
9 वजे 54 दिन से
11 वजे 25 दिन तक (1)
3 वजे 34 दिन से
5 वजे 57 दिन तक (4)
10 वजे 40 रात से
1 वजे 3 रात तक (7)
16 फरवरी चतुर्थी शनिवार
9 वजे 50 दिन से
11 वजे 21 दिन तक (1)
17 फरवरी पंचमी रविवार
10 वजे 32 रात से
12 वजे 55 रात तक (7)
18 फरवरी षष्ठी सोमवार
3 वजे 22 दिन से
5 बजे 46 दिन तक (4)
27 फरवरी पूर्णिमा बुधवार
7 बजे 47 प्रातः से

9 वजे 6 दिन तक (21)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

28 फरवरी प्रतिपदि गुरुवार
7 वजे 43 प्रातः से
9 वजे 2 दिन तक (12)
12 वजे 27 दिन से
2 वजे 43 दिन तक (3)
2 वजे 33 रात से
4 वजे 35 रात तक (9)

2 मार्च चतुर्थी शनिवार
7 वजे 35 प्रातः से
8 वजे 55 दिन तक (12)
12 वजे 19 दिन से
2 वजे 35 दिन तक (3)
7 वजे 20 शां से
9 वजे 41 शां तक (6)

4 मार्च षष्ठी सोमवार
2 वजे 17 रात से
4 वजे 19 रात तक (9)

6 मार्च अष्टमी बुधवार
7 वजे 4 शां से
9 वजे 25 रात तक (6)

7 मार्च नवमी गुरुवार
7 वजे 15 प्रातः से
8 वजे 35 दिन तक (12)
12 वजे दिन से
2 वजे 15 दिन तक (3)

10 मार्च द्वादशी रविवार
7 वजे 4 प्रातः से
8 वजे 23 दिन तक (12)
11 वजे 48 दिन से
2 वजे 3 दिन तक (3)
6 वजे 49 शां से
9 वजे 9 रात तक (6)
1 वजे 53 रात से
3 वजे 56 रात तक (9)

11 मार्च त्रयोदशी सोमवार
7 वजे प्रातः से
8 वजे 19 दिन तक (12)
11 वजे 44 दिन से
1 वजे 59 दिन तक (3)
6 वजे 45 रात से
9 वजे 5 रात तक (6)
1 वजे 49 रात से
3 वजे 52 रात तक (9)

शंकु प्रतिष्ठा मुहूर्त

(बुनियाद मकान)

वैशाख शुक्ल पक्ष

26 अप्रैल तृतीया गुरुवार
8 वजे 43 दिन से
10 वजे 58 दिन तक (3)

27 अप्रैल चतुर्थी शुक्रवार
5 वजे 6 शां से
6 वजे शां तक (6)

30 अप्रैल सप्तमी सोमवार
8 वजे 21 दिन से
10 वजे 42 दिन तक (3)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

9 मई द्वितीया बुधवार
7 वजे 51 प्रातः से
10 वजे 7 दिन तक (3)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

24 मई प्रतिपदि गुरुवार
6 वजे 52 प्रातः से
9 वजे 8 दिन तक (3)
1 वजे 53 दिन से
4 वजे 14 दिन तक (6)

25 मई तृतीया शुक्रवार
1 वजे 49 दिन से
4 वजे 10 दिन तक (6)

श्रावण शुक्ल पक्ष

25 जुलाई पंचमी बुधवार

4 वजे 54 दिन से
6 वजे 56 दिन तक (9)
26 जुलाई षष्ठी गुरुवार
4 वजे 50 दिन से
6 वजे 52 दिन तक (9)

भाद्र कृष्ण पक्ष

6 अगस्त द्वितीया सोमवार
9 वजे 2 दिन से
11 वजे 23 दिन तक (6)
4 वजे 7 दिन से
6 वजे 9 दिन तक (9)
9 अगस्त पंचमी गुरुवार
8 वजे 50 दिन से
11 वजे 11 दिन तक (6)
3 वजे 55 दिन से
5 वजे 57 दिन तक (9)
10 अगस्त षष्ठी शुक्रवार
8 वजे 46 दिन से
11 वजे 7 दिन तक (6)

4 वजे 7 दिन से
6 वजे 9 दिन तक (9)

भाद्र शुक्ल पक्ष

23 अगस्त पंचमी गुरुवार
7 वजे 55 प्रातः से
10 वजे 16 दिन तक (6)
3 वजे दिन से
5 वजे 2 दिन तक (9)
24 अगस्त षष्ठी शुक्रवार
7 वजे 51 प्रातः से
10 वजे 12 दिन तक (6)

आश्विन शुक्ल पक्ष

19 अक्टूबर तृतीया शुक्रवार
3 वजे 1 दिन से
4 वजे 26 दिन तक (11)
4 वजे 26 दिन से
5 वजे 42 दिन तक (12)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

3 नवम्बर द्वितीया शनिवार
10 वजे 17 दिन से
12 वजे 19 दिन तक (9)
1 वजे 58 दिन से
3 वजे 23 दिन तक (11)
3 वजे 23 दिन से
4 वजे 43 दिन तक (12)
7 नवम्बर षष्ठी बुधवार
10 वजे 1 दिन से
12 वजे 1 दिन तक (9)
1 वजे 42 दिन से
3 वजे 7 दिन तक (11)
3 वजे 7 दिन से
4 वजे 27 दिन तक (12)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

21 नवम्बर षष्ठी बुधवार
9 वजे 6 दिन से
11 वजे 8 दिन तक (9)

12 वजे 47 दिन से
2 वजे 12 दिन तक (11)
2 वजे 12 दिन से
3 वजे 32 दिन तक (12)

मार्ग कृष्ण पक्ष

5 दिसम्बर पंचमी बुधवार
8 वजे 11 दिन से
10 वजे 13 दिन तक (9)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

1 मार्च तृतीया शुक्रवार
7 वजे 39 प्रातः से
8 वजे 59 दिन तक (12)
11 मार्च त्रयोदश्यां सोमवार
7 वजे प्रातः से
8 वजे 19 दिन तक (12)

गीता पढ़िये

प्रवेश मुहूर्त

(नये मकान में दाखिल होने के मुहूर्त)

वैशाख शुक्ल पक्ष

26 अप्रैल तृतीया गुरुवार
1 वजे 22 दिन से
3 वजे 43 दिन तक (5)

4 मई द्वादशी शुक्रवार
12 वजे 50 दिन से
3 वजे 12 दिन तक (5)

5 मई त्रयोदशी शनिवार
12 वजे 46 दिन से
3 वजे 8 दिन तक (5)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

9 मई द्वितीया बुधवार
12 वजे 30 दिन से
1 वजे 31 दिन तक (5)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

24 मई प्रतिपदि गुरुवार
11 वजे 31 दिन से
1 वजे 53 दिन तक (5)

31 मई नवम्यां गुरुवार
12 वजे 35 दिन से
1 वजे 26 दिन तक (5)

1 जून दशम्यां शुक्रवार
11 वजे दिन से
1 वजे 22 दिन तक (5)

2 जून एकादशी शनिवार
10 वजे 56 दिन से
1 वजे 18 दिन तक (5)

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

30 जून दशमी शनिवार
11 वजे 20 दिन से
1 वजे 40 दिन तक (6)

आश्विन शुक्ल पक्ष

19 अक्टूबर तृतीया शुक्रवार
11 वजे 16 दिन से
1 वजे 18 दिन तक (9)

26 अक्टूबर दशमी शुक्रवार
10 वजे 48 दिन से
12 वजे 51 दिन तक (9)

29 अक्टूबर द्वादशी सोमवार
10 वजे 36 दिन से
12 वजे 39 दिन तक (9)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

22 नवम्बर सप्तमी गुरुवार
1 वजे 2 दिन से
3 वजे 4 दिन तक (9)

26 नवम्बर एकादशी सोमवार
12 वजे 46 दिन से
2 वजे 49 दिन तक (9)

माघ शुक्ल पक्ष

25 फरवरी त्रयोदश्यां सोमवार
7 वजे 55 दिन से
9 वजे 14 दिन तक (12)

चूडा कर्म मुहूर्त

(ज़रकासय)

वैशाख कृष्ण पक्ष

9 अप्रैल प्रतिपदि सोमवार
12 वजे 5 दिन से
2 वजे 29 दिन तक (4)

वैशाख शुक्ल पक्ष

26 अप्रैल तृतीया गुरुवार
10 वजे 58 दिन से
1 वजे 22 दिन तक (4)

4 मई द्वादशी शुक्रवार
10 वजे 26 दिन से
12 वजे 50 दिन तक (4)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

10 मई तृतीया गुरुवार

10 बजे 3 दिन से

12 बजे 27 दिन तक (4)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

24 मई प्रतिपदि गुरुवार

9 बजे 8 दिन से

11 बजे 31 दिन तक (4)

11 बजे 31 दिन से

1 बजे 53 दिन तक (5)

25 मई तृतीया शुक्रवार

9 बजे 4 दिन से

11 बजे 28 दिन तक (4)

11 बजे 28 दिन से

1 बजे 49 दिन तक (5)

31 मई नवमी गुरुवार

12 बजे 35 दिन से

1 बजे 26 दिन तक (5)

1 जून दशमी शुक्रवार

8 बजे 36 दिन से

11 बजे दिन तक (4)

11 बजे दिन से

1 बजे 22 दिन तक (5)

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

2 जुलाई द्वादशी सोमवार

8 बजे 58 दिन से

11 बजे 20 दिन तक (5)

11 बजे 20 दिन से

1 बजे 40 दिन तक (6)

आश्विन शुक्ल पक्ष

19 अक्टूबर तृतीया शुक्रवार

11 बजे 16 दिन से

1 बजे 18 दिन तक (9)

2 बजे 57 दिन से

4 बजे 22 दिन तक (11)

26 अक्टूबर दशमी शुक्रवार

8 बजे 27 दिन से

10 बजे 48 दिन तक (8)

10 बजे 48 दिन से

12 बजे 51 दिन तक (9)

29 अक्टूबर द्वादशी सोमवार

8 बजे 16 दिन से

10 बजे 36 दिन तक (8)

12 बजे 19 दिन से

2 बजे 19 दिन तक (10)

2 बजे 19 दिन से

3 बजे 43 दिन तक (11)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

21 नवम्बर षष्ठी बुधवार

1 बजे 19 दिन से

2 बजे 12 दिन तक (11)

26 नवम्बर एकादशी सोमवार

8 बजे 46 दिन से

10 बजे 49 दिन तक (9)

12 बजे 28 दिन से

1 बजे 53 दिन तक (11)

28 नवम्बर त्रयोदश्यां बुधवार

8 बजे 38 दिन से

10 बजे 41 दिन तक (9)

12 बजे 20 दिन से

1 बजे 45 दिन तक (11)

माघ शुक्ल पक्ष

15 फरवरी तृतीया शुक्रवार

9 बजे 54 दिन से

11 बजे 25 दिन तक (1)

25 फरवरी त्रयोदशी सोमवार

7 बजे 55 प्रातः से

9 बजे 14 दिन तक (12)

12 बजे 39 दिन से

2 बजे 54 दिन तक (3)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

28 फरवरी प्रतिपदि गुरुवार

12 बजे 27 दिन से

2 बजे 43 दिन तक (3)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

15 मार्च प्रतिपदि शुक्रवार
11 वजे 28 दिन से
1 वजे 40 दिन तक (3)
1 वजे 40 दिन से
4 वजे 3 दिन तक (4)

साथ रटुन

विवाह, यज्ञोपवीत आदि शुभ मुहूर्तों के लिये वस्त्र, मसाला, अग्रिवत्र, लिवुन, मंज लागन्य मस मुचरुन इत्यादि)

चैत्र शुक्ल पक्ष

6 अप्रैल त्रयोदशी शुक्रवार
2 वजे 20 दिन तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

9 अप्रैल प्रतिपदा सोमवार
15 अप्रैल सप्तमी रविवार
23 अप्रैल अमावसी सोमवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

26 अप्रैल तृतीया गुरुवार
29 अप्रैल षष्ठी रविवार
30 अप्रैल सप्तमी सोमवार
6 मई चतुर्दशी रविवार
8 वजे 42 शां से
7 मई पूर्णिगा सोमवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

9 मई द्वितीया बुधवार
10 मई तृतीया गुरुवार
21 मई त्रयोदशी सोमवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

24 मई प्रतिपदि गुरुवार
25 मई तृतीया शुक्रवार
27 मई पंचमी रविवार
1 जून दशमी शुक्रवार

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

1 जुलाई एकादशी रविवार
2 जुलाई द्वादशी सोमवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

8 जुलाई तृतीया रविवार
18 जुलाई द्वादशी बुधवार
20 जुलाई अमावसी शुक्रवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

25 जुलाई पंचमी बुधवार
11 वजे 4 दिन से
26 जुलाई षष्ठी गुरुवार
27 जुलाई अष्टमी शुक्रवार
29 जुलाई दशमी रविवार
30 जुलाई एकादशी सोमवार
3 अगस्त चतुर्दशी शुक्रवार
9 वजे 18 दिन से

भाद्र कृष्ण पक्ष

5 अगस्त प्रतिपदि रविवार
10 अगस्त षष्ठी शुक्रवार
11 वजे 57 दिन से

आश्विन शुक्ल पक्ष

18 अक्टूबर द्वितीया गुरुवार
19 अक्टूबर तृतीया शुक्रवार
21 अक्टूबर पंचमी रविवार
24 अक्टूबर अष्टमी बुधवार
2 वजे 41 दिन से
31 अक्टूबर चतुर्दशी बुधवार
10 वजे 17 दिन से
1 नवम्बर पूर्णिमा गुरुवार
8 वजे 3 दिन से

कार्तिक कृष्ण पक्ष

4 नवम्बर तृतीया रविवार
5 नवम्बर चतुर्थी सोमवार
10 वजे 46 दिन से

7 नवम्बर षष्ठी बुधवार
8 नवम्बर अष्टमी गुरुवार
8 वजे 15 दिन तक
12 नवम्बर द्वादशी सोमवार
14 नवम्बर चतुर्दशी बुधवार
2 वजे 8 दिन से

कार्तिक शुक्ल पक्ष

21 नवम्बर षष्ठी बुधवार
28 नवम्बर त्रयोर्दशी बुधवार
4 वजे 19 दिन तक
30 नवम्बर पूर्णिमा शुक्रवार
5 वजे 35 शां से

मार्ग कृष्ण पक्ष

2 दिसम्बर द्वितीया रविवार
3 दिसम्बर तृतीया सोमवार
5 दिसम्बर पंचमी बुधवार
1 वजे 43 दिन तक
9 दिसम्बर नवमी रविवार
10 वजे 13 दिन से
10 दिसम्बर दशमी सोमवार
12 दिसम्बर त्रयोदशी बुधवार

माघ शुक्ल पक्ष

18 फरवरी षष्ठी सोमवार
5 वजे 51 शां तक
22 फरवरी दशमी शुक्रवार
24 फरवरी द्वादशी रविवार
25 फरवरी त्रयोदशी सोमवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

1 मार्च तृतीया शुक्रवार
3 मार्च पंचमी रविवार
4 मार्च षष्ठी सोमवार
6 मार्च अष्टमी बुधवार
10 मार्च द्वादशी रविवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

17 मार्च तृतीया रविवार
2 वजे 43 दिन तक
20 मार्च षष्ठी बुधवार
21 मार्च सप्तमी गुरुवार
24 मार्च दशमी रविवार
28 मार्च पूर्णिमा गुरुवार
5 वजे 38 शां से

जातकर्म मुहूर्त

(काह नेथर)

चैत्र शुक्ल पक्ष

6 अप्रैल त्रयोदशी शुक्रवार
2 वजे 20 दिन तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

9 अप्रैल प्रतिपदि सोमवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

26 अप्रैल तृतीया गुरुवार
29 अप्रैल षष्ठी रविवार
30 अप्रैल सप्तमी सोमवार
4 मई द्वादशी शुक्रवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

9 मई द्वितीया बुधवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

24 मई प्रतिपदि गुरुवार
25 मई तृतीया शुक्रवार
27 मई पंचमी रविवार
31 मई नवमी गुरुवार
12 वजे 35 दिन से
1 जून दशमी शुक्रवार

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

2 जुलाई द्वादशी सोमवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

8 जुलाई तृतीया रविवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

25 जुलाई पंचमी बुधवार
26 जुलाई षष्ठी गुरुवार
29 जुलाई दशमी रविवार

30 जुलाई एकादशी सोमवार
10 वजे 9 दिन तक

भाद्र कृष्ण पक्ष

6 अगस्त द्वितीया सोमवार
9 अगस्त पंचमी गुरुवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

18 अक्टूबर द्वितीया गुरुवार
19 अक्टूबर तृतीया शुक्रवार
9 वजे 25 दिन से
26 अक्टूबर दशमी शुक्रवार
29 अक्टूबर द्वादशी सोमवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

4 नवम्बर तृतीया रविवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

21 नवम्बर षष्ठी बुधवार
22 नवम्बर सप्तमी गुरुवार
25 नवम्बर दशमी रविवार
10 वजे 17 दिन तक
26 नवम्बर एकादशी सोमवार
28 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

2 दिसम्बर द्वितीया रविवार
5 दिसम्बर पंचमी बुधवार

माघ शुक्ल पक्ष

15 फरवरी तृतीया शुक्रवार
9 वजे 17 दिन से
17 फरवरी पंचमी रविवार
18 फरवरी षष्ठी सोमवार
22 फरवरी दशमी शुक्रवार
24 फरवरी द्वादशी रविवार
25 फरवरी त्रयोदशी सोमवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

28 फरवरी प्रतिपदि गुरुवार
10 वजे 51 दिन से
1 मार्च तृतीया शुक्रवार
3 मार्च पंचमी रविवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

15 मार्च प्रतिपदि शुक्रवार
10 वजे 2 दिन से
17 मार्च तृतीया रविवार
2 वजे 43 दिन तक
20 मार्च षष्ठी बुधवार
21 मार्च सप्तमी गुरुवार
24 मार्च दशमी रविवार

वाग्दान मुहूर्त

(गण्डुन)

चैत्र शुक्ल पक्ष

26 मार्च प्रतिपदि सोमवार
4 अप्रैल एकादशी बुधवार
3 वजे 11 दिन से
5 अप्रैल द्वादशी गुरुवार
6 अप्रैल त्रयोदशी शुक्रवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

9 अप्रैल प्रतिपदि सोमवार
18 अप्रैल दशमी बुधवार
20 अप्रैल द्वादशी शुक्रवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

25 अप्रैल द्वितीया बुधवार
26 अप्रैल तृतीया गुरुवार
2 मई नवमी बुधवार
3 मई एकादशी गुरुवार
4 मई द्वादशी शुक्रवार
7 मई पूर्णिमा सोमवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

9 मई द्वितीया बुधवार
17 मई नवमी गुरुवार
18 मई दशमी शुक्रवार
20 मई द्वादशी रविवार
23 मई अमावसी बुधवार
8 वजे 16 दिन से

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

24 मई प्रतिपदि गुरुवार
25 मई तृतीया शुक्रवार
9 वजे 7 दिन तक
31 मई नवमी गुरुवार
12 वजे 35 दिन से
1 जून दशमी शुक्रवार

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

2 जुलाई द्वादशी सोमवार
4 जुलाई चतुर्दशी बुधवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

6 जुलाई प्रतिपदि शुक्रवार
8 जुलाई तृतीया रविवार
11 जुलाई पंचमी बुधवार
12 जुलाई षष्ठी गुरुवार
13 जुलाई सप्तमी शुक्रवार
11 वजे 36 दिन तक
18 जुलाई द्वादशी बुधवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

23 जुलाई तृतीय सोमवार
25 जुलाई पंचमी बुधवार
26 जुलाई षष्ठी गुरुवार
9 वजे 35 दिन तक
29 जुलाई दशमी रविवार
9 वजे 2 दिन से
30 जुलाई एकादशी सोमवार
10 वजे 9 दिन तक
1 अगस्त त्रयोदश्यां बुधवार
3 अगस्त चतुर्दशी शुक्रवार
9 वजे 18 दिन से

भाद्र कृष्ण पक्ष

5 अगस्त प्रतिपदि रविवार
9 अगस्त पंचमी गुरुवार
10 अगस्त षष्ठी शुक्रवार
11 वजे 57 दिन तक

आश्विन शुक्ल पक्ष

18 अक्टूबर द्वितीया गुरुवार
19 अक्टूबर तृतीया शुक्रवार
9 वजे 25 दिन से
21 अक्टूबर पंचमी रविवार
9 वजे 15 दिन से
22 अक्टूबर षष्ठी सोमवार
26 अक्टूबर दशमी शुक्रवार
29 अक्टूबर द्वादशी सोमवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

2 नवम्बर प्रतिपदि शुक्रवार
9 वजे 9 दिन से
4 नवम्बर तृतीया रविवार
11 वजे 25 दिन तक
11 नवम्बर एकादशी रविवार
12 नवम्बर द्वादशी सोमवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

18 नवम्बर तृतीया रविवार
9 वजे 39 दिन तक
19 नवम्बर चतुर्थी सोमवार
10 वजे 12 दिन तक
21 नवम्बर षष्ठी बुधवार
22 नवम्बर सप्तमी गुरुवार
25 नवम्बर दशमी रविवार
26 नवम्बर एकादशी सोमवार
30 नवम्बर पूर्णिमा शुक्रवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

2 दिसम्बर द्वितीया रविवार
6 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार
12 वजे 20 दिन से
7 दिसम्बर सप्तमी शुक्रवार
9 दिसम्बर नवमी रविवार
10 वजे 13 दिन से

माघ कृष्ण पक्ष

10 फरवरी त्रयोदशी रविवार
9 वजे 18 दिन तक

माघ शुक्ल पक्ष

14 फरवरी द्वितीया गुरुवार

15 फरवरी तृतीया शुक्रवार
17 फरवरी पंचमी रविवार
22 फरवरी दशमी शुक्रवार
27 फरवरी पूर्णिमा बुधवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

28 फरवरी प्रतिपदि गुरुवार
1 मार्च तृतीया शुक्रवार
3 मार्च पंचमी रविवार
8 मार्च दशमी शुक्रवार
10 मार्च द्वादशी रविवार
11 मार्च त्रयोदशी सोमवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

15 मार्च प्रतिपदि शुक्रवार
20 मार्च षष्ठी बुधवार
21 मार्च सप्तमी गुरुवार
28 मार्च पूर्णिमा गुरुवार

विद्यारम्भ मुहूर्त

(पढ़ाई आरम्भ करना या स्कूल में दाखिल करना)

चैत्र शुक्ल पक्ष

5 अप्रैल द्वादशी गुरुवार
1 वजे 6 दिन से

वैशाख शुक्ल पक्ष

27 अप्रैल चतुर्थी शुक्रवार
5 वजे 6 शां से
29 अप्रैल षष्ठी रविवार
3 मई एकादशी गुरुवार
4 मई द्वादशी शुक्रवार
4 वजे 53 दिन से

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

10 मई तृतीया गुरुवार
2 वजे 56 दिन से

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

24 मई प्रतिपदि गुरुवार
10 वजे 26 दिन से
25 मई तृतीया शुक्रवार
27 मई पंचमी रविवार
1 जून दशमी शुक्रवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

8 जुलाई तृतीया रविवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

18 अक्टूबर द्वितीया गुरुवार
10 वजे 38 दिन से
19 अक्टूबर तृतीया शुक्रवार
9 वजे 25 दिन से
21 अक्टूबर पंचमी रविवार
9 वजे 15 दिन से
26 अक्टूबर दशमी शुक्रवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

18 नवम्बर तृतीया रविवार
9 वजे 39 दिन तक
25 नवम्बर दशमी रविवार
10 वजे 17 दिन तक

मार्ग कृष्ण पक्ष

2 दिसम्बर द्वितीया रविवार

माघ शुक्ल पक्ष

14 फरवरी द्वितीया गुरुवार
15 फरवरी तृतीया शुक्रवार
9 वजे 17 दिन तक
17 फरवरी पंचमी रविवार
3 वजे 12 दिन से
22 फरवरी दशमी शुक्रवार
24 फरवरी द्वादशी रविवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

1 मार्च तृतीया शुक्रवार
3 मार्च पंचमी रविवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

17 मार्च तृतीया रविवार

24 मार्च दशमी रविवार

लड़की को दूध देने का मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

3 अप्रैल दशमी भौमवार

8 अप्रैल पूर्णिमा रविवार

6 वजे 56 प्रातः तक

वैशाख शुक्ल पक्ष

29 अप्रैल षष्ठी रविवार

1 वजे 39 दिन से

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

8 मई प्रतिपदि भौमवार

1 वजे 31 दिन से

10 मई तृतीया गुरुवार

2 वजे 56 दिन से

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

24 मई प्रतिपदि गुरुवार

10 वजे 26 दिन से

27 मई पंचमी रविवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

8 जुलाई तृतीया रविवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

26 जुलाई षष्ठी गुरुवार

29 जुलाई दशमी रविवार

9 वजे 2 दिन से

31 जुलाई द्वादशी भौमवार

11 वजे 49 दिन से

आश्विन शुक्ल पक्ष

21 अक्टूवर पंचमी रविवार

9 वजे 15 दिन से

कार्तिक शुक्ल पक्ष

18 नवम्बर तृतीया रविवार

9 वजे 39 दिन तक

मार्ग कृष्ण पक्ष

2 दिसम्बर द्वितीया रविवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

21 मार्च सप्तमी गुरुवार

24 मार्च दशमी रविवार

28 मार्च पूर्णिमा गुरुवार

5 वजे 38 शां से

दिवचक्षीर मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

26 मार्च प्रतिपदि सोमवार

8 अप्रैल पूर्णिमा रविवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

9 अप्रैल प्रतिपदि सोमवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

4 मई द्वादशी सोमवार

4 वजे 53 दिन से

7 मई पूर्णिमा सोमवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

9 मई द्वितीया बुधवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

1 जून दशमी शुक्रवार

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

1 जुलाई एकादशी रविवार

2 जुलाई द्वादशी सोमवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

8 जुलाई तृतीया रविवार

3 वजे 41 दिन से

श्रावण शुक्ल पक्ष

25 जुलाई पंचमी बुधवार

11 वजे 4 दिन से

26 जुलाई षष्ठी गुरुवार
27 जुलाई अष्टमी शुक्रवार
29 जुलाई दशमी रविवार
30 जुलाई एकादशी सोमवार

भाद्र कृष्ण पक्ष

5 अगस्त प्रतिपदि रविवार
9 अगस्त पंचमी गुरुवार
9 वजे 38 दिन से

आश्विन शुक्ल पक्ष

18 अक्टूबर द्वितीया गुरुवार
19 अक्टूबर तृतीया शुक्रवार
24 अक्टूबर अष्टमी बुधवार
25 अक्टूबर नवमी गुरुवार
26 अक्टूबर दशमी शुक्रवार
1 नवम्बर पूर्णिमा गुरुवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

22 नवम्बर सप्तमी गुरुवार
26 नवम्बर एकादशी सोमवार
12 वजे 47 दिन से
28 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार

माघ शुक्ल पक्ष

17 फरवरी पंचमी रविवार
18 फरवरी षष्ठी सोमवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

1 मार्च तृतीया शुक्रवार
3 मार्च पंचमी रविवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

17 मार्च तृतीया रविवार
28 मार्च पूर्णिमा गुरुवार
5 वजे 38 दिन से

लेन्टर, छत इत्यादि डालने का मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

6 अप्रैल त्रयोदशी शुक्रवार
10 वजे 56 दिन से

वैशाख कृष्ण पक्ष

15 अप्रैल सप्तमी रविवार
16 अप्रैल अष्टमी सोमवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

29 अप्रैल षष्ठी रविवार
30 अप्रैल सप्तमी सोमवार
4 मई द्वादशी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

25 मई तृतीया शुक्रवार
9 वजे 7 दिन से
27 मई पंचमी रविवार
31 मई नवमी गुरुवार
12 वजे 35 दिन से

श्रावण कृष्ण पक्ष

8 जुलाई तृतीया रविवार
19 जुलाई त्रयोदशी गुरुवार
7 वजे 33 प्रातः तक

श्रावण शुक्ल पक्ष

25 जुलाई पंचमी बुधवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

24 अक्टूबर अष्टमी बुधवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

5 नवम्बर चर्तुथी सोमवार
10 वजे 46 दिन से
7 नवम्बर षष्ठी बुधवार
8 नवम्बर अष्टमी गुरुवार
11 नवम्बर एकादशी रविवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

21 नवम्बर षष्ठी बुधवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

2 दिसम्बर द्वितीया रविवार
4 वजे 57 दिन से
3 दिसम्बर तृतीया सोमवार
5 दिसम्बर पंचमी बुधवार

माघ कृष्ण पक्ष

10 फरवरी त्रयोदशी रविवार
9 वजे 18 दिन तक

माघ शुक्ल पक्ष
24 फरवरी द्वादशी रविवार
25 फरवरी त्रयोदशी सोमवार
4 वजे 53 दिन से
फाल्गुन कृष्ण पक्ष
28 फरवरी प्रतिपदि गुरुवार
10 वजे 53 दिन से
10 मार्च द्वादशी रविवार
फाल्गुन शुक्ल पक्ष
22 मार्च अष्टमी शुक्रवार
24 मार्च दशमी रविवार

नये मकान में चुल्हा, गैस इत्यादि जलाने का मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष
5 अप्रैल द्वादशी गुरुवार
3 वजे 11 दिन से
6 अप्रैल त्रयोदशी शुक्रवार
10 वजे 56 दिन तक
वैशाख कृष्ण पक्ष
9 अप्रैल प्रतिपदि सोमवार
वैशाख शुक्ल पक्ष
27 अप्रैल चर्तुथी शुक्रवार
5 वजे 6 शां से
30 अप्रैल सप्तमी सोमवार
3 मई एकादशी गुरुवार
4 मई द्वादशी शुक्रवार
4 वजे 53 दिन से
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
9 मई द्वितीया बुधवार
10 मई तृतीया गुरुवार
21 मई त्रयोदशी सोमवार
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
24 मई प्रतिपदि गुरुवार
25 मई तृतीया शुक्रवारे
1 जून दशमी शुक्रवार
आषाढ़ शुक्ल पक्ष
2 जुलाई द्वादशी सोमवार
श्रावण कृष्ण पक्ष
18 जुलाई द्वादशी बुधवार
श्रावण शुक्ल पक्ष
25 जुलाई पंचमी बुधवार
11 वजे 4 दिन से
26 जुलाई षष्ठी गुरुवार
9 वजे 35 दिन तक
30 जुलाई एकादशी सोमवार
भाद्र कृष्ण पक्ष
10 अगस्त षष्ठी शुक्रवार
11 वजे 57 दिन से
आश्विन शुक्ल पक्ष
18 अक्टूबर द्वितीया गुरुवार
19 अक्टूबर तृतीया शुक्रवार
कार्तिक कृष्ण पक्ष
7 नवम्बर षष्ठी बुधवार
12 नवम्बर द्वादशी सोमवार
कार्तिक शुक्ल पक्ष
21 नवम्बर षष्ठी बुधवार
28 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार
मार्ग कृष्ण पक्ष
3 दिसम्बर तृतीया सोमवार
4 वजे 6 दिन से
5 दिसम्बर पंचमी बुधवार
7 दिसम्बर सप्तमी शुक्रवार
10 वजे 53 दिन से
12 दिसम्बर त्रयोदशी बुधवार
माघ शुक्ल पक्ष
18 फरवरी षष्ठी सोमवार
22 फरवरी दशमी शुक्रवार
25 फरवरी त्रयोदशी सोमवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

1 मार्च तृतीया शुक्रवार

4 मार्च षष्ठी सोमवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

21 मार्च सप्तमी गुरुवार

27 मार्च त्रयोदशी बुधवार

7 वजे 41 प्रातः तक

दीपदान मुहूर्त

आश्विन शुक्ल पक्ष

19 अक्टूबर तृतीया शुक्रवार

9 वजे 25 दिन से

22 अक्टूबर षष्ठी सोमवार

31 अक्टूबर चतुर्दशी बुधवार

10 वजे 17 दिन से

1 नवम्बर पूर्णिमा गुरुवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

5 नवम्बर चतुर्थी सोमवार

10 वजे 46 दिन से

कार्तिक शुक्ल पक्ष

19 नवम्बर चतुर्थी सोमवार

10 वजे 12 दिन से

21 नवम्बर षष्ठी बुधवार

28 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार

30 नवम्बर पूर्णिमा शुक्रवार

माघ शुक्ल पक्ष

18 फरवरी षष्ठी सोमवार

22 फरवरी दशमी शुक्रवार

25 फरवरी त्रयोदशी सोमवार

27 फरवरी पूर्णिमा बुधवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

1 मार्च तृतीया शुक्रवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

18 मार्च चतुर्थी सोमवार

4 वजे 44 दिन से

20 मार्च षष्ठी बुधवार

22 मार्च अष्टमी शुक्रवार

25 मार्च एकादशी सोमवार

27 मार्च त्रयोदशी बुधवार

पन्न मुहूर्त

भाद्र शुक्ल पक्ष

22 अगस्त चतुर्थी बुधवार

23 अगस्त पंचमी गुरुवार

24 अगस्त षष्ठी शुक्रवार

25 अगस्त सप्तमी शनिवार

26 अगस्त अष्टमी रविवार

1 सितम्बर चतुर्दशी शनिवार

2 सितम्बर पूर्णिमा रविवार

7 वजे 8 प्रातः तक

शिशर मुहूर्त

मार्ग कृष्ण पक्ष

3 दिसम्बर तृतीया सोमवार

5 दिसम्बर पंचमी बुधवार

1 वजे 43 दिन तक

9 दिसम्बर नवमी रविवार

10 वजे 13 दिन से

10 दिसम्बर दशमी सोमवार

12 दिसम्बर त्रयोदशी बुधवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

17 दिसम्बर तृतीया सोमवार

वस्त्रधारण मुहूर्त

दोनों स्त्री पुरुषों के लिये

चैत्र शुक्ल पक्ष

8 अप्रैल पूर्णिमा रविवार

वैशाख कृष्ण पक्ष
18 अप्रैल दशमी बुधवार
वैशाख शुक्ल पक्ष
4 मई द्वादशी शुक्रवार
4 वजे 53 दिन से
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
9 मई द्वितीया बुधवार
20 मई द्वादशी रविवार
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
1 जून दशमी शुक्रवार
3 जून द्वादशी रविवार
आषाढ कृष्ण पक्ष
17 जून एकादशी रविवार
आषाढ़ शुक्ल पक्ष
28 जून अष्टमी गुरुवार
1 जुलाई एकादशी रविवार
श्रावण कृष्ण पक्ष
8 जुलाई तृतीया रविवार
3 वजे 41 दिन से
13 जुलाई सप्तमी शुक्रवार
श्रावण शुक्ल पक्ष
25 जुलाई पंचमी बुधवार
11 वजे 4 दिन से
26 जुलाई षष्ठी गुरुवार
27 जुलाई अष्टमी शुक्रवार
29 जुलाई दशमी रविवार
भाद्र कृष्ण पक्ष
5 अगस्त प्रतिपदि रविवार
10 अगस्त षष्ठी शुक्रवार
भाद्र शुक्ल पक्ष
23 अगस्त पंचमी गुरुवार
24 अगस्त षष्ठी शुक्रवार
26 अगस्त अष्टमी रविवार
2 सितम्बर पूर्णिमा रविवार
7 वजे 8 प्रातः तक
आश्विन कृष्ण पक्ष
6 सितम्बर तृतीया गुरुवार
7 सितम्बर चतुर्थी शुक्रवार
10 वजे 59 दिन से
अ. आश्विन शुक्ल पक्ष
19 सितम्बर द्वितीया बुधवार
21 सितम्बर पंचमी शुक्रवार
26 सितम्बर दशमी बुधवार
28 सितम्बर एकादशी शुक्रवार
10 वजे 24 दिन से
अ. आश्विन कृष्ण पक्ष
3 अक्टूबर प्रतिपदि बुधवार
4 अक्टूबर द्वितीया गुरुवार
आश्विन शुक्ल पक्ष
18 अक्टूबर द्वितीया गुरुवार
19 अक्टूबर तृतीया शुक्रवार
26 अक्टूबर दशमी शुक्रवार
31 अक्टूबर चतुर्दशी बुधवार
10 वजे 17 दिन से
1 नवम्बर पूर्णिमा गुरुवार
8 वजे 3 दिन तक
कार्तिक शुक्ल पक्ष
22 नवम्बर सप्तमी गुरुवार
28 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार
मार्ग कृष्ण पक्ष
12 दिसम्बर त्रयोदशी बुधवार
मार्ग शुक्ल पक्ष
20 दिसम्बर पंचमी गुरुवार
पौष कृष्ण पक्ष
6 जनवरी अष्टमी रविवार
9 जनवरी एकादशी बुधवार
10 जनवरी द्वादशी गुरुवार
पौष शुक्ल पक्ष
16 जनवरी तृतीया बुधवार

20 जनवरी षष्ठी रविवार

माघ कृष्ण पक्ष

3 फरवरी षष्ठी रविवार

6 फरवरी दशमी बुधवार

माघ शुक्ल पक्ष

17 फरवरी पंचमी रविवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

1 मार्च तृतीया शुक्रवार

3 मार्च पंचमी रविवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

17 मार्च तृतीया रविवार

2 वजे 43 दिन तक

चैत्र कृष्ण पक्ष

29 मार्च प्रतिपदि शुक्रवार

31 मार्च तृतीया रविवार

7 अप्रैल दशमी रविवार

12 वजे 45 दिन से

वस्त्रधारण मुहूर्त

केवल पुरुषों के लिये

चैत्र शुक्ल पक्ष

30 मार्च पंचमी शुक्रवार

6 अप्रैल त्रयोदशी शुक्रवार

2 वजे 20 दिन से

वैशाख कृष्ण पक्ष

15 अप्रैल सप्तमी रविवार

10 वजे 24 दिन से

वैशाख शुक्ल पक्ष

26 अप्रैल तृतीया गुरुवार

29 अप्रैल षष्ठी रविवार

3 मई एकादशी गुरुवार

6 वजे 22 शां से

4 मई द्वादशी शुक्रवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई दशमी शुक्रवार

8 वजे 44 दिन से

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

24 मई प्रतिपदि गुरुवार

10 वजे 26 दिन तक

27 मई पंचमी रविवार

31 मई नवमी गुरुवार

12 वजे 35 दिन से

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

22 जून प्रतिपदि शुक्रवार

4 वजे 34 दिन से

24 जून तृतीया रविवार

8 वजे 34 दिन तक

27 जून सप्तमी बुधवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

6 जुलाई प्रतिपदि शुक्रवार

10 वजे 12 दिन से

12 जुलाई षष्ठी गुरुवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

25 जुलाई पंचमी बुधवार

26 जुलाई षष्ठी गुरुवार

भाद्र कृष्ण पक्ष

9 अगस्त पंचमी गुरुवार

17 अगस्त त्रयोदशी शुक्रवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

30 अगस्त द्वादशी गुरुवार

आश्विन कृष्ण पक्ष

5 सितम्बर द्वितीया बुधवार

13 सितम्बर दशमी गुरुवार

14 सितम्बर द्वादशी शुक्रवार

अ. आश्विन शुक्ल पक्ष

26 सितम्बर दशमी बुधवार

27 सितम्बर दशमी गुरुवार

7 वजे 24 प्रातः तक

अ. आश्विन कृष्ण पक्ष

7 अक्टूबर पंचमी रविवार

10 अक्टूबर अष्टमी बुधवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

24 अक्टूबर अष्टमी बुधवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

4 नवम्बर तृतीया रविवार

7 नवम्बर षष्ठी बुधवार

8 नवम्बर अष्टमी गुरुवार

11 नवम्बर एकादशी रविवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

25 नवम्बर दशमी रविवार

10 वजे 17 दिन से

मार्ग कृष्ण पक्ष

5 दिसम्बर पंचमी बुधवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

23 दिसम्बर अष्टमी रविवार

28 दिसम्बर त्रयोदशी शुक्रवार

पौष कृष्ण पक्ष

4 जनवरी षष्ठी शुक्रवार

3 वजे 5 दिन से

पौष शुक्ल पक्ष

24 जनवरी दशमी गुरुवार

1 वजे 9 दिन से

25 जनवरी एकादशी शुक्रवार

माघ कृष्ण पक्ष

10 फरवरी त्रयोदशी रविवार

माघ शुक्ल पक्ष

15 फरवरी तृतीया शुक्रवार

9 वजे 17 दिन से

24 फरवरी द्वादशी रविवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

28 फरवरी प्रतिपदि गुरुवार

9 वजे 28 दिन से

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

15 मार्च प्रतिपदि शुक्रवार

20 मार्च षष्ठी बुधवार

24 मार्च दशमी रविवार

28 मार्च पूर्णिमा गुरुवार

चैत्र कृष्ण पक्ष

5 अप्रैल अष्टमी शुक्रवार

9 वजे 29 दिन से

मकान या भूमि खरीदने का मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

3 अप्रैल दशमी भौमवार

5 वजे 4 शां से

4 अप्रैल एकादशी बुधवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

27 अप्रैल चतुर्थी शुक्रवार

5 वजे 6 शां से

3 मई एकादशी गुरुवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

9 मई द्वितीया बुधवार

1 वजे 54 दिन से

18 मई दशमी शुक्रवार

8 वजे 44 दिन तक

श्रावण कृष्ण पक्ष

11 जुलाई पंचमी बुधवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

18 अक्टूबर द्वितीया गुरुवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

7 नवम्बर षष्ठी बुधवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

6 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार

12 वजे 20 दिन से

माघ शुक्ल पक्ष

14 फरवरी द्वितीया गुरुवार

22 फरवरी दशमी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

8 मार्च दशमी शुक्रवार

नयी दुकान खोलने का मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

6 अप्रैल त्रयोदशी शुक्रवार
10 वजे 56 दिन से

वैशाख शुक्ल पक्ष

26 अप्रैल तृतीया गुरुवार

27 अप्रैल चतुर्थी शुक्रवार
5 वजे 6 शां से

30 अप्रैल सप्तमी सोमवार

4 मई द्वादशी शुक्रवार

5 मई त्रयोदशी शनिवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

25 मई तृतीया शुक्रवार

27 मई पंचमी रविवार

1 जून दशमी शुक्रवार

2 जून एकादशी शनिवार

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

29 जून नवमी शुक्रवार

2 जुलाई द्वादशी सोमवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

25 जुलाई पंचमी बुधवार

29 जुलाई दशमी रविवार
9 वजे 2 दिन से

30 जुलाई एकादशी सोमवार
10 वजे 9 दिन तक

1 अगस्त त्रयोदशी बुधवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

19 अक्टूबर तृतीया शुक्रवार
9 वजे 25 दिन से

20 अक्टूबर चतुर्थी शनिवार
5 वजे 15 दिन से

21 अक्टूबर पंचमी रविवार
9 वजे 15 दिन से

22 अक्टूबर षष्ठी सोमवार
10 वजे 22 दिन तक

कार्तिक शुक्ल पक्ष

18 नवम्बर तृतीया रविवार
9 वजे 39 दिन तक

28 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार
4 वजे 19 दिन तक

माघ शुक्ल पक्ष

17 फरवरी पंचमी रविवार
3 वजे 12 दिन से

18 फरवरी षष्ठी सोमवार

22 फरवरी दशमी शुक्रवार

25 फरवरी त्रयोदशी सोमवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

17 मार्च तृतीया रविवार
2 वजे 43 दिन तक

20 मार्च षष्ठी बुधवार

21 मार्च सप्तमी गुरुवार

24 मार्च दशमी रविवार

वाहन-स्कूटर-कार आदि खरीदने का मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

5 अप्रैल द्वादशी गुरुवार
1 वजे 6 दिन से

6 अप्रैल त्रयोदशी शुक्रवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

27 अप्रैल चतुर्थी शुक्रवार
5 वजे 6 दिन से
30 अप्रैल सप्तमी सोमवार
3 मई एकादशी गुरुवार
4 मई द्वादशी शुक्रवार
7 मई पूर्णिमा सोमवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

25 मई तृतीया शुक्रवार
9 वजे 7 दिन तक
31 मई नवमी गुरुवार
12 वजे 35 दिन से
1 जून दशमी शुक्रवार

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

29 जून नवमी शुक्रवार
6 वजे 37 शां से
2 जुलाई द्वादशी सोमवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

25 जुलाई पंचमी बुधवार
30 जुलाई एकादशी सोमवार
10 वजे 9 दिन तक

आश्विन शुक्ल पक्ष

18 अक्टूबर द्वितीया गुरुवार
19 अक्टूबर तृतीया शुक्रवार
9 वजे 25 दिन से
22 अक्टूबर षष्ठी सोमवार
10 वजे 22 दिन से
29 अक्टूबर द्वादशी सोमवार
31 अक्टूबर चतुर्दशी बुधवार
10 वजे 17 दिन से

कार्तिक शुक्ल पक्ष

19 नवम्वर चतुर्थी सोमवार
10 वजे 12 दिन से
28 नवम्वर त्रयोदशी बुधवार

माघ शुक्ल पक्ष

18 फरवरी षष्ठी सोमवार
22 फरवरी दशमी शुक्रवार
25 फरवरी त्रयोदशी सोमवार
27 फरवरी पूर्णिमा बुधवार
12 वजे 36 दिन से

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

21 मार्च सप्तमी गुरुवार
27 मार्च त्रयोदशी बुधवार
7 वजे 41 प्रातः तक
28 मार्च पूर्णिमा गुरुवार

यात्रा मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

26 मार्च पश्चिमोत्तर
27 मार्च पूर्व-दक्षिण
30 मार्च पश्चिम विना
2 अप्रैल पूर्व विना
3 अप्रैल पूर्व-दक्षिण
5 वजे 4 दिन तक
5 अप्रैल पूर्व-पश्चिम
1 वजे 6 दिन से
6 अप्रैल पश्चिम विना
7 अप्रैल पूर्व विना
8 अप्रैल पूर्वोत्तर
6 वजे 56 प्रातः तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

11 अप्रैल उत्तर विना
15 अप्रैल पूर्वोत्तर
16 अप्रैल पूर्व विना
17 अप्रैल पूर्व-दक्षिण
4 वजे 37 दिन तक
18 अप्रैल पूर्व-पश्चिम
19 अप्रैल पूर्व-पश्चिम
20 अप्रैल पूर्वोत्तर

21 अप्रैल पूर्व विना
22 अप्रैल पूर्वोत्तर
23 अप्रैल पूर्व विना

वैशाख शुक्ल पक्ष

26 अप्रैल पूर्व पश्चिम
27 अप्रैल पश्चिम विना
29 अप्रैल पूर्वोत्तर
30 अप्रैल पूर्व विना
3 मई पूर्व पश्चिम
4 मई पश्चिम विना
5 मई पूर्व विना

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

9 मई उत्तर विना
10 मई पूर्व पश्चिम
11 मई पश्चिम विना
12 मई पूर्व विना
15 मई पूर्व दक्षिण
2 वजे 7 दिन तक
16 मई पूर्व पश्चिम
17 मई पूर्व पश्चिम
18 मई पूर्वोत्तर
19 मई पश्चिमोत्तर
20 मई पूर्वोत्तर
21 मई पूर्व विना
23 मई उत्तर विना
11 वजे 27 दिन से

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

24 मई पूर्व पश्चिम
25 मई पश्चिम विना
9 वजे 7 दिन तक
26 मई पूर्व विना
7 वजे 37 दिन से
27 मई पूर्वोत्तर
30 मई उत्तर विना
31 मई पूर्व पश्चिम
1 जून पश्चिम विना
5 जून पूर्व दक्षिण
6 जून उत्तर विना

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

7 जून पूर्व पश्चिम
8 जून पश्चिम विना
9 जून पूर्व विना
10 जून पूर्वोत्तर
11 जून पूर्व विना
12 जून पूर्व यात्रा
16 जून पश्चिमोत्तर
17 जून उत्तर विना
20 जून उत्तर विना
21 जून पूर्व पश्चिम

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

22 जून पश्चिम विना
4 वजे 4 दिन से
23 जून पूर्व विना
24 जून पूर्वोत्तर
26 जून पूर्व दक्षिण
7 वजे 22 दिन से
27 जून उत्तर विना
28 जून पूर्व पश्चिम
2 जुलाई पूर्व विना
3 जुलाई पूर्व दक्षिण
4 जुलाई उत्तर विना

श्रावण कृष्ण पक्ष

6 जुलाई पश्चिम विना
7 जुलाई पूर्व विना
8 जुलाई पूर्वोत्तर
9 जुलाई पश्चिमोत्तर
10 जुलाई पूर्व यात्रा
11 जुलाई पूर्व पश्चिम
12 जुलाई पूर्व पश्चिम
13 जुलाई पूर्वोत्तर
14 जुलाई पूर्व विना

17 जुलाई पूर्व दक्षिण
18 जुलाई उत्तर विना
20 जुलाई पश्चिम विना

श्रावण शुक्ल पक्ष

21 जुलाई पूर्व विना
23 जुलाई पूर्व विना
3 वजे 31 दिन से
24 जुलाई पूर्व दक्षिण
25 जुलाई उत्तर विना
26 जुलाई पूर्व पश्चिम
29 जुलाई पूर्वोत्तर
9 वजे 2 दिन से
30 जुलाई पूर्व विना
31 जुलाई पूर्व दक्षिण
1 अगस्त उत्तर विना
2 अगस्त पूर्व पश्चिम
3 अगस्त पश्चिम विना
4 अगस्त पूर्व विना

भाद्र कृष्ण पक्ष

5 अगस्त पूर्वोत्तर
6 अगस्त पश्चिमोत्तर
7 अगस्त पूर्व यात्रा
8 अगस्त उत्तर विना
9 अगस्त पूर्व पश्चिम
10 अगस्त पूर्वोत्तर
11 अगस्त पूर्व विना
1 वजे 47 दिन तक
13 अगस्त पूर्व विना
3 वजे 32 दिन से
14 अगस्त पूर्व दक्षिण
17 अगस्त पूर्व विना
18 अगस्त पूर्व विना
7 वजे 44 प्रातः तक

भाद्र शुक्ल पक्ष

20 अगस्त पूर्व विना
21 अगस्त पूर्व दक्षिण
22 अगस्त उत्तर विना
25 अगस्त पूर्व विना
3 वजे 22 दिन से
26 अगस्त पूर्वोत्तर
27 अगस्त पूर्व विना
28 अगस्त पूर्व दक्षिण
29 अगस्त उत्तर विना
30 अगस्त पूर्व पश्चिम
31 अगस्त पश्चिम विना
1 सितम्बर पश्चिमोत्तर
2 सितम्बर पूर्वोत्तर

आश्विन कृष्ण पक्ष

3 सितम्बर पश्चिमोत्तर
5 सितम्बर पूर्व पश्चिम
6 सितम्बर पूर्व पश्चिम
7 सितम्बर पश्चिम विना
10 सितम्बर पूर्व विना
11 सितम्बर पूर्व दक्षिण
13 सितम्बर पूर्व पश्चिम
14 सितम्बर पश्चिम विना
17 सितम्बर पूर्व विना

अ. आश्विन शुक्ल पक्ष

18 सितम्बर पूर्व दक्षिण
22 सितम्बर पूर्व विना
23 सितम्बर पूर्वोत्तर
24 सितम्बर पूर्व विना
25 सितम्बर पूर्व दक्षिण
26 सितम्बर उत्तर विना
27 सितम्बर पूर्व पश्चिम
28 सितम्बर पश्चिम विना
29 सितम्बर पश्चिमोत्तर
30 सितम्बर पूर्वोत्तर
1 अक्टूबर पश्चिमोत्तर
2 अक्टूबर पूर्व यात्रा

अ. आश्विन कृष्ण पक्ष

3 अक्टूबर पूर्व पश्चिम
4 अक्टूबर पूर्व पश्चिम
7 अक्टूबर पूर्वोत्तर
8 अक्टूबर पूर्व विना
10 अक्टूबर उत्तर विना
11 अक्टूबर पूर्व पश्चिम
14 अक्टूबर पूर्वोत्तर
15 अक्टूबर पूर्व विना

आश्विन शुक्ल पक्ष

19 अक्टूबर पश्चिम विना
9 बजे 25 दिन से
20 अक्टूबर पूर्व विना
21 अक्टूबर पूर्वोत्तर
22 अक्टूबर पूर्व विना
23 अक्टूबर पूर्व दक्षिण
24 अक्टूबर उत्तर विना
25 अक्टूबर पूर्व पश्चिम
26 अक्टूबर पूर्वोत्तर
27 अक्टूबर पश्चिमोत्तर
29 अक्टूबर पश्चिमोत्तर
30 अक्टूबर पूर्व यात्रा
31 अक्टूबर उत्तर विना
1 नवम्बर पूर्व पश्चिम
8 बजे 36 दिन तक

कार्तिक कृष्ण पक्ष

3 नवम्बर पूर्व विना
9 बजे 51 दिन से
4 नवम्बर पूर्वोत्तर
5 नवम्बर पूर्व विना
10 बजे 12 दिन तक
6 नवम्बर पूर्व दक्षिण
9 बजे 53 दिन से
7 नवम्बर उत्तर विना
8 नवम्बर पूर्व पश्चिम
8 बजे 15 दिन तक
10 नवम्बर पूर्व विना
11 नवम्बर पूर्वोत्तर
12 नवम्बर पूर्व विना

कार्तिक शुक्ल पक्ष

17 नवम्बर पूर्व विना
18 नवम्बर पूर्वोत्तर
19 नवम्बर पूर्व विना
20 नवम्बर पूर्व दक्षिण
21 नवम्बर उत्तर विना
22 नवम्बर पूर्व पश्चिम
23 नवम्बर पूर्वोत्तर
24 नवम्बर पश्चिमोत्तर
25 नवम्बर पूर्वोत्तर
26 नवम्बर पश्चिमोत्तर
27 नवम्बर पूर्व यात्रा
28 नवम्बर उत्तर विना
4 बजे 19 दिन तक
30 नवम्बर पश्चिम विना
5 बजे 35 शां से

मार्ग कृष्ण पक्ष

1 दिसम्बर पूर्व विना
2 दिसम्बर पूर्वोत्तर
4 बजे 57 दिन तक
3 दिसम्बर पूर्व विना
4 बजे 6 दिन से
4 दिसम्बर पूर्व दक्षिण
5 दिसम्बर उत्तर विना
1 बजे 43 दिन तक
7 दिसम्बर पश्चिम विना
10 बजे 53 दिन से
8 दिसम्बर पूर्व विना
9 दिसम्बर पूर्वोत्तर
13 दिसम्बर पूर्व पश्चिम

मार्ग शुक्ल पक्ष

16 दिसम्बर पूर्वोत्तर
17 दिसम्बर पूर्व विना
18 दिसम्बर पूर्व दक्षिण

19 दिसम्बर उत्तर विना

20 दिसम्बर पूर्व पश्चिम

21 दिसम्बर पूर्वोत्तर

22 दिसम्बर पश्चिमोत्तर

23 दिसम्बर पूर्वोत्तर

24 दिसम्बर पश्चिमोत्तर

25 दिसम्बर पूर्व दक्षिण

28 दिसम्बर पश्चिम विना

29 दिसम्बर पूर्व विना

पौष कृष्ण पक्ष

31 दिसम्बर पूर्व विना

1 जनवरी पूर्व दक्षिण

3 जनवरी पूर्व पश्चिम

4 जनवरी पश्चिम विना

5 जनवरी पूर्व विना

6 जनवरी पूर्वोत्तर

12 वजे 6 दिन तक

9 जनवरी उत्तर विना

10 वजे 25 दिन से

10 जनवरी पूर्व पश्चिम

11 जनवरी पश्चिम विना

12 जनवरी पूर्व विना

पौष शुक्ल पक्ष

15 जनवरी पूर्व दक्षिण

16 जनवरी पूर्व पश्चिम

17 जनवरी पूर्व पश्चिम

18 जनवरी पूर्वोत्तर

19 जनवरी पश्चिमोत्तर

20 जनवरी पूर्वोत्तर

21 जनवरी पश्चिमोत्तर

22 जनवरी पूर्व दक्षिण

10 वजे 28 दिन तक

24 जनवरी पूर्व पश्चिम

1 वजे 9 दिन से

25 जनवरी पश्चिम विना

26 जनवरी पूर्व विना

12 वजे 44 दिन तक

28 जनवरी पूर्व विना

माघ कृष्ण पक्ष

31 जनवरी पूर्व पश्चिम

1 फरवरी पश्चिम विना

2 फरवरी पूर्व विना

5 फरवरी पूर्व दक्षिण

3 वजे 59 दिन से

6 फरवरी उत्तर विना

7 फरवरी पूर्व पश्चिम

8 फरवरी पश्चिम विना

9 फरवरी पूर्व विना

10 फरवरी पूर्वोत्तर

माघ शुक्ल पक्ष

14 फरवरी पूर्व पश्चिम

15 फरवरी पश्चिम विना

16 फरवरी पश्चिमोत्तर

17 फरवरी पूर्वोत्तर

18 फरवरी पूर्व विना

21 फरवरी पूर्व पश्चिम

22 फरवरी पश्चिम विना

24 फरवरी पूर्वोत्तर

25 फरवरी पूर्व विना

27 फरवरी उत्तर विना

12 वजे 36 दिन से

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

28 फरवरी पूर्व पश्चिम

1 मार्च पश्चिम विना

5 मार्च पूर्व दक्षिण

6 मार्च उत्तर विना

7 मार्च पूर्व पश्चिम

8 मार्च पश्चिम विना

9 मार्च पूर्व विना

10 मार्च पूर्वोत्तर

11 मार्च पश्चिमोत्तर

12 मार्च पूर्व यात्रा

फाल्गुन शुक्ल पक्ष
15 मार्च पूर्वोत्तर
16 मार्च पश्चिमोत्तर
17 मार्च पूर्वोत्तर
20 मार्च उत्तर विना
21 मार्च पूर्व पश्चिम
22 मार्च पश्चिम विना
6 बजे 39 दिन तक
23 मार्च पूर्व विना
24 मार्च पूर्वोत्तर
27 मार्च उत्तर विना
28 मार्च पूर्व पश्चिम
चैत्र कृष्ण पक्ष
29 मार्च पश्चिम विना
1 अप्रैल पूर्व विना
7 बजे 34 दिन से
2 अप्रैल पूर्व दक्षिण
3 अप्रैल उत्तर विना
4 अप्रैल पूर्व पश्चिम
5 अप्रैल पश्चिम विना
6 अप्रैल पूर्व विना
7 अप्रैल पूर्वोत्तर
8 अप्रैल पश्चिमोत्तर
9 अप्रैल पूर्व यात्रा
10 अप्रैल पूर्व पश्चिम
11 अप्रैल पूर्व पश्चिम
12 अप्रैल पूर्वोत्तर

सर्वार्थ सिद्धि योग

(अफसर से मिलना, चार्ज लेना-देना, फार्म भरना, दरख्वास्त भेजना, फार्म भरना, छोटी मोटी यात्रा को जाना इत्यादि)

चैत्र शुक्ल पक्ष
27 मार्च द्वितीया भौमवार
2 अप्रैल नवमी सोमवार
6 बजे 41 शां से
3 अप्रैल दशमी भौमवार
5 बजे 5 दिन से
4 अप्रैल एकादशी बुधवार
3 बजे 11 दिन तक
6 अप्रैल त्रयोदशी शुक्रवार
10 बजे 56 दिन तक
8 अप्रैल पूर्णिमा रविवार
6 बजे 56 प्रातः तक
वैशाख कृष्ण पक्ष
11 अप्रैल चतुर्थी बुधवार
15 अप्रैल सप्तमी रविवार
10 बजे 34 दिन से
16 अप्रैल अष्टमी सोमवार
1 बजे 32 दिन से
वैशाख शुक्ल पक्ष
25 अप्रैल द्वितीया बुधवार
30 अप्रैल सप्तमी सोमवार
1 मई अष्टमी भौमवार
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
9 मई द्वितीया बुधवार
1 बजे 54 दिन से
20 मई द्वादशी रविवार
11 बजे 39 दिन से
22 मई चतुर्दशी भौमवार
12 बजे 3 दिन से
23 मई अमावसी बुधवार
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
27 मई पंचमी रविवार
आषाढ कृष्ण पक्ष
10 जून चतुर्थी रविवार
5 बजे 35 दिन तक
11 जून पंचमी सोमवार
17 जून एकादशी रविवार
19 जून त्रयोदशी भौमवार

20 जून चतुर्दशी बुधवार

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

22 जून प्रतिपदि शुक्रवार

4 वजे 4 दिन से

24 जून तृतीया रविवार

30 जून दशमी शनिवार

2 जुलाई द्वादशी सोमवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

7 जुलाई द्वितीया शनिवार

12 वजे 49 दिन से

13 जुलाई सप्तमी शुक्रवार

17 जुलाई एकादशी भौमवार

20 जुलाई अमावसी शुक्रवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

25 जुलाई पंचमी बुधवार

11 वजे 4 दिन से

28 जुलाई नवमी शनिवार

8 वजे 33 दिन तक

30 जुलाई एकादशी सोमवार

10 वजे 9 दिन तक

3 अगस्त चतुर्दशी शुक्रवार

7 वजे 11 शां से

4 अगस्त पूर्णिमा शनिवार

भाद्र कृष्ण पक्ष

9 अगस्त पंचमी गुरुवार

9 वजे 38 दिन से

10 अगस्त षष्ठी शुक्रवार

13 अगस्त नवमी सोमवार

3 वजे 32 दिन से

17 अगस्त त्रयोदशी शुक्रवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

22 अगस्त चतुर्थी बुधवार

5 वजे 51 दिन तक

31 अगस्त त्रयोदशी शुक्रवार

आश्विन कृष्ण पक्ष

6 सितम्बर तृतीया गुरुवार

7 सितम्बर चतुर्थी शुक्रवार

10 सितम्बर सप्तमी सोमवार

13 सितम्बर दशमी गुरुवार

अ. आश्विन शुक्ल पक्ष

28 सितम्बर एकादशी शुक्रवार

2 अक्टूबर पूर्णिमा भौमवार

अ. आश्विन कृष्ण पक्ष

4 अक्टूबर द्वितीया गुरुवार

8 अक्टूबर षष्ठी सोमवार

11 अक्टूबर नवमी गुरुवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

21 अक्टूबर पंचमी रविवार

9 वजे 15 दिन से

1 नवम्बर पूर्णिमा गुरुवार

8 वजे 3 प्रातः तक

कार्तिक कृष्ण पक्ष

3 नवम्बर द्वितीया शनिवार

9 वजे 51 दिन से

5 नवम्बर चतुर्थी सोमवार

10 वजे 12 दिन तक

8 नवम्बर अष्टमी गुरुवार

8 वजे 15 दिन तक

11 नवम्बर एकादशी रविवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

18 नवम्बर तृतीया रविवार

25 नवम्बर दशमी रविवार

10 वजे 17 दिन से

27 नवम्बर द्वादशी भौमवार

2 वजे 50 दिन से

मार्ग कृष्ण पक्ष

1 दिसम्बर प्रतिपदि शनिवार

5 दिसम्बर पंचमी बुधवार

1 वजे 43 दिन से

7 दिसम्बर सप्तमी शुक्रवार

10 वजे 53 दिन से

9 दिसम्बर नवमी रविवार
8 बजे 2 दिन से
13 दिसम्बर चतुर्दशी गुरुवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

23 दिसम्बर अष्टमी रविवार
25 दिसम्बर दशमी भौमवार

पौष कृष्ण पक्ष

2 जनवरी तृतीया बुधवार
4 जनवरी षष्ठी शुक्रवार
3 बजे 5 दिन तक
6 जनवरी अष्टमी रविवार
12 बजे 6 दिन तक
9 जनवरी एकादशी बुधवार
10 बजे 25 दिन से
10 जनवरी द्वादशी गुरुवार
10 बजे 41 दिन तक

पौष शुक्ल पक्ष

22 जनवरी अष्टमी भौमवार
10 बजे 24 दिन तक
23 जनवरी नवमी बुधवार
12 बजे 10 दिन से
28 जनवरी पूर्णिमा सोमवार
9 बजे 28 दिन से

माघ कृष्ण पक्ष

29 जनवरी प्रतिपदि भौमवार
6 फरवरी दशमी बुधवार
4 बजे 9 दिन तक
10 फरवरी त्रयोदशी रविवार

माघ शुक्ल पक्ष

17 फरवरी पंचमी रविवार
3 बजे 12 दिन से
20 फरवरी अष्टमी बुधवार
25 फरवरी त्रयोदशी सोमवार
6 बजे 18 शाम से

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

15 मार्च प्रतिपदि शुक्रवार
6 बजे 23 शां से
17 मार्च तृतीया रविवार
19 मार्च पंचमी भौमवार
20 मार्च षष्ठी बुधवार
24 मार्च दशमी रविवार

चैत्र कृष्ण पक्ष

30 मार्च द्वितीया शनिवार
11 बजे 44 दिन से
1 अप्रैल चतुर्थी सोमवार
6 अप्रैल नवमी शनिवार
10 बजे 15 दिन से
12 अप्रैल अमावसी शुक्रवार

राशि के अनुसार यज्ञोपवीत, विवाह, शंकु प्रतिष्ठा तथा प्रवेश मुहूर्त

यज्ञोपवीत मुहूर्त राशि के अनुसार

मेष सिंह धनु

वैशाख कृष्ण पक्ष

9 अप्रैल प्रतिपदि सोम. (सू.)

वैशाख शुक्ल पक्ष

26 अप्रैल तृतीया गुरुवार
29 अप्रैल षष्ठी रविवार
4 मई द्वादशी शुक्रवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

10 मई तृतीया गुरूवार (च.)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

24 मई प्रतिपदि गुरुवार
25 मई तृतीया शुक्रवार
27 मई पंचमी रविवार (च.)
1 जून दशमी शुक्रवार

आषाढ शुक्ल पक्ष
2 जुलाई द्वादशी सोम. (च.)
श्रावण कृष्ण पक्ष
8 जुलाई तृतीया रविवार
आश्विन शुक्ल पक्ष
19 अक्दूबर तृतीया शुक्र. (च.)
21 अक्दूबर पंचमी रवि. (च.)
26 अक्दूबर दशमी शुक्रवार
29 अक्दूबर द्वादशी सोमवार
कार्तिक शुक्ल पक्ष
21 नवम्बर षष्ठी बुध. (सू.)
28 नवम्बर त्रयोदशी बुध. (सू.)
माघ शुक्ल पक्ष
15 फरवरी तृतीया शुक्र. (चं)
18 फरवरी षष्ठी सोमवार
24 फरवरी द्वादशी रविवार
25 फरवरी त्रयोदशी सोम. (चं)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष
28 फरवरी प्रतिपदि गुरुवार
फाल्गुन शुक्ल पक्ष
17 मार्च तृतीया रवि. (सू.)

वृष **कन्या** **मकर**

वैशाख कृष्ण पक्ष
9 अप्रैल प्रतिपदि सोमवार
वैशाख शुक्ल पक्ष
26 अप्रैल तृतीया गुरु. (सू.)
29 अप्रैल षष्ठी रवि. (सू.)
4 मई द्वादशी शुक्र. (सू.)
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
10 मई तृतीया गुरु. (सू.)
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
24 मई प्रतिपदि गुरुवार
25 मई तृतीया शुक्रवार

27 मई पंचमी रविवार
1 जून दशमी शुक्रवार
आषाढ शुक्ल पक्ष
2 जुलाई तृतीया रविवार
आश्विन शुक्ल पक्ष
19 अक्दूबर तृतीया शुक्रवार
21 अक्दूबर पंचमी रविवार
26 अक्दूबर दशमी शुक्रवार
29 अक्दूबर द्वादशी सोमवार
कार्तिक शुक्ल पक्ष
21 नवम्बर षष्ठी बुधवार
25 नवम्बर दशमी रविवार
28 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार
माघ शुक्ल पक्ष
15 फरवरी तृतीया शुक्रवार
18 फरवरी षष्ठी सोमवार
24 फरवरी द्वादशी रविवार

25 फरवरी त्रयोदशी सोमवार
फाल्गुन कृष्ण पक्ष
28 फरवरी प्रतिपदि गुरु. (चं)
फाल्गुन शुक्ल पक्ष
15 मार्च प्रतिपदि शुक्रवार
17 मार्च तृतीया रविवार (च)
24 मार्च दशमी रविवार (च.)

मिथुन **तुला** **कुम्भ**

वैशाख कृष्ण पक्ष
9 अप्रैल प्रतिपदि सोम. (गु.)
वैशाख शुक्ल पक्ष
29 अप्रैल षष्ठी रवि. (गु.)
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
10 मई तृतीया गुरु (गु.)
आषाढ शुक्ल पक्ष
2 जुलाई द्वादशी सोमवार

श्रावण कृष्ण पक्ष
8 जुलाई तृतीया रवि. (चं)
आश्विन शुक्ल पक्ष
19 अक्टूबर तृतीया शुक्रवार
21 अक्टूबर पंचमी रविवार
26 अक्टूबर दशमी शुक्रवार
29 अक्टूबर द्वादशी सोमवार
कार्तिक शुक्ल पक्ष
21 नवम्बर षष्ठी बुध. (चं)
25 नवम्बर दशमी रविवार
26 नवम्बर एकादशी सोमवार
28 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार
माघ शुक्ल पक्ष
15 फरवरी तृतीया शुक्रवार
18 फरवरी षष्ठी सोमवार
24 फरवरी द्वादशी रविवार
25 फरवरी त्रयोदशी सोमवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष
28 फरवरी प्रतिपदि गुरुवार
फाल्गुन शुक्ल पक्ष
15 मार्च प्रतिपदि शुक्रवार
17 मार्च तृतीया रविवार
24 मार्च दशमी रविवार

कर्कट वृश्चिक मीन

वैशाख कृष्ण पक्ष
9 अप्रैल प्रतिपदि सोम. (गु.)
वैशाख शुक्ल पक्ष
26 अप्रैल तृतीया गुरुवार
29 अप्रैल षष्ठी रविवार
4 मई द्वादशी शुक्रवार
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
10 मई तृतीया गुरुवार
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
24 मई प्रतिपदि गुरुवार
25 मई तृतीया शुक्रवार (चं)

27 मई पंचमी रविवार
1 जून दशमी शुक्रवार
कार्तिक शुक्ल पक्ष
21 नवम्बर षष्ठी बुध. (गु.)
25 नवम्बर दशमी रवि. (गु.)
26 नवम्बर एका. सोम. (गु.)
28 नवम्बर त्रयो. बुध. (गु.)
फाल्गुन शुक्ल पक्ष
15 मार्च प्रतिपदि शुक्र. (गु.)
17 मार्च तृतीया रवि. (गु.)
24 मार्च दशमी रवि. (गु.)

विवाह मुहूर्त राशि के अनुसार

मेष सिंह धनु

वैशाख कृष्ण पक्ष
15 अप्रैल सप्तमी रविवार
16 अप्रैल अष्टमी सोमवार
18 अप्रैल दशमी बुधवार
20 अप्रैल द्वादशी शुक्र. (चं)
21 अप्रैल त्रयो. शनि. (चं)
22 अप्रैल चतुर्दशी रवि. (चं)
वैशाख शुक्ल पक्ष
26 अप्रैल तृतीया गुरुवार
27 अप्रैल चतुर्थी शुक्रवार
2 मई नवमी बुधवार
3 मई एकादशी गुरुवार
4 मई द्वादशी शुक्रवार
5 मई त्रयोदशी शनिवार
6 मई चतुर्दशी रविवार
7 मई पूर्णिमा सोमवार
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
10 मई तृतीया गुरूवार
11 मई चतुर्थी शुक्रवार
12 मई पंचमी शनिवार

18 मई दशमी शुक्रवार (चं)
19 मई एकादशी शनि. (चं)
20 मई द्वादशी रविवार
21 मई त्रयोदशी सोमवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

24 मई प्रतिपदि गुरुवार
25 मई तृतीया शुक्रवार
31 मई नवमी गुरुवार
1 जून दशमी शुक्रवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

18 जुलाई द्वादशी बुधवार (सू)

श्रावण शुक्ल पक्ष

25 जुलाई पंचमी बुधवार (सू)
26 जुलाई षष्ठी गुरुवार (सू)
27 जुलाई अष्टमी शुक्र. (सू)
28 जुलाई नवमी शनि. (सू)
1 अगस्त द्वादशी बुध. (सू)
2 अगस्त त्रयोदशी गुरु. (सू)
3 अगस्त चतुर्दशी शुक्र. (सू)
4 अगस्त पूर्णिमा शनि. (सू)

भाद्र कृष्ण पक्ष

10 अगस्त षष्ठी शुक्रवार (सू)
11 अगस्त सप्तमी शनि. (सू)

आश्विन शुक्ल पक्ष

20 अक्टूबर चतुर्थी शनि. (च.)
21 अक्टूबर पंचमी रविवार
22 अक्टूबर षष्ठी सोमवार
24 अक्टूबर अष्टमी बुधवार
25 अक्टूबर नवमी गुरुवार
26 अक्टूबर दशमी शुक्रवार
29 अक्टूबर द्वादशी सोम. (चं)
31 अक्टूबर चतुर्दशी बुधवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

10 नवम्बर दशमी शनिवार
11 नवम्बर एकादशी रविवार
12 नवम्बर द्वादशी सोमवार
14 नवम्बर चतुर्दशी बुधवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

17 नवम्बर द्वितीया शनि. (सू)
18 नवम्बर तृतीया रवि. (सू)
21 नवम्बर षष्ठी बुध. (सू.)
28 नवम्बर त्रयोदशी बुध. (सू.)

मार्ग कृष्ण पक्ष

6 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार (सू)
7 दिसम्बर सप्तमी शुक्र. (सू)
8 दिसम्बर अष्टमी शनि. (सू)
9 दिसम्बर नवमी रवि. (सू)

माघ कृष्ण पक्ष

10 फरवरी त्रयोदशी रविवार

माघ शुक्ल पक्ष

15 फरवरी तृतीया शुक्र. (चं)
16 फरवरी चतुर्थी शनि. (चं)
17 फरवरी पंचमी रविवार
18 फरवरी षष्ठी सोमवार
27 फरवरी पूर्णिमा बुधवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

28 फरवरी प्रतिपदि गुरुवार
2 मार्च चतुर्थी शनिवार
4 मार्च षष्ठी सोमवार (चं)
6 मार्च अष्टमी बुधवार
7 मार्च नवमी गुरुवार
10 मार्च द्वादशी रविवार
11 मार्च त्रयोदशी सोमवार

वृष **कन्या** **मकर**

वैशाख कृष्ण पक्ष

15 अप्रैल सप्तमी रवि (सू)
16 अप्रैल अष्टमी सोम. (सू)
18 अप्रैल दशमी बुध. (सू)
20 अप्रैल द्वादशी शुक्र. (सू)
21 अप्रैल त्रयो. शनि. (सू)
22 अप्रैल चतुर्दशी रवि. (सू)

वैशाख शुक्ल पक्ष

26 अप्रैल तृतीया गुरु. (सू)
27 अप्रैल चतुर्थी शुक्र. (सू)
3 मई एकादशी गुरु. (सू)
4 मई द्वादशी शुक्रवार (सू)
5 मई त्रयोदशी शनि. (सू)
6 मई चतुर्दशी रविवार (सू)
7 मई पूर्णिमा सोमवार (सू)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई दशमी शुक्रवार
19 मई एकादशी शनि.
20 मई द्वादशी रविवार (चं)
21 मई त्रयोदशी सोमवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

24 मई प्रतिपदि गुरुवार
25 मई तृतीया शुक्रवार
31 मई नवमी गुरुवार
1 जून दशमी शुक्रवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

18 जुलाई द्वादशी बुधवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

25 जुलाई पंचमी बुधवार
26 जुलाई षष्ठी गुरुवार
27 जुलाई अष्टमी शुक्रवार
28 जुलाई नवमी शनिवार
29 जुलाई दशमी रविवार
30 जुलाई एकादशी सोमवार
1 अगस्त द्वादशी बुधवार (चं)
2 अगस्त त्रयोदशी गुरु. (चं)
3 अगस्त चतुदर्शी शुक्रवार
4 अगस्त पूर्णिमा शनिवार

भाद्र कृष्ण पक्ष

8 अगस्त चतुर्थी बुधवार
9 अगस्त पंचमी गुरुवार
10 अगस्त षष्ठी शुक्रवार (चं)
11 अगस्त सप्तमी शनि. (चं)

आश्विन शुक्ल पक्ष

20 अक्टूबर चतुर्थी शनिवार
21 अक्टूबर पंचमी रविवार(चं)
22 अक्टूबर षष्ठी सोमवार (चं)
24 अक्टूबर अष्टमी बुधवार
25 अक्टूबर नवमी गुरुवार
26 अक्टूबर दशमी शुक्रवार
29 अक्टूबर द्वादशी सोमवार
31 अक्टूबर चतुर्दशी बुध. (चं)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

10 नवम्बर दशमी शनि. (चं)
11 नवम्बर एकादशी रविवार
12 नवम्बर द्वादशी सोमवार
14 नवम्बर चतुर्दशी बुधवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

17 नवम्बर द्वितीया शनि. (चं)
18 नवम्बर तृतीया रवि. (चं)
21 नवम्बर षष्ठी बुधवार
25 नवम्बर दशमी रविवार
26 नवम्बर एकादशी सोमवार
28 नवम्बर त्रयोदशी बुध. (चं)

मार्ग कृष्ण पक्ष

6 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार (चं)
7 दिसम्बर सप्तमी गुरु. (चं)
8 दिसम्बर अष्टमी शनिवार
9 दिसम्बर नवमी रविवार
10 दिसम्बर दशमी सोमवार
13 दिसम्बर चतुर्दशी गुरुवार

माघ कृष्ण पक्ष

10 फरवरी त्रयोदशी रविवार

माघ शुक्ल पक्ष

15 फरवरी तृतीया शुक्रवार
16 फरवरी चतुर्थी शनिवार
17 फरवरी पंचमी रविवार
18 फरवरी षष्ठी सोमवार
27 फरवरी पूर्णिमा बुधवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

28 फरवरी प्रतिपदि गुरुवार
2 मार्च चतुर्थी शनिवार
4 मार्च षष्ठी सोमवार
6 मार्च अष्टमी बुधवार (चं)
7 मार्च नवमी गुरुवार
10 मार्च द्वादशी रविवार
11 मार्च त्रयोदशी सोमवार

मिथुन **तुला** **कुम्भ**

वैशाख कृष्ण पक्ष

15 अप्रैल सप्तमी रविवार (गु)
18 अप्रैल दशमी बुधवार (गु)
20 अप्रैल द्वादशी शुक्र. (गु)
21 अप्रैल त्रयो. शनि. (गु)
22 अप्रैल चतुर्दशी रवि. (गु)

वैशाख शुक्ल पक्ष

2 मई नवमी बुधवार (गु)
6 मई चतुर्दशी रविवार (गु)
7 मई पूर्णिमा सोमवार (गु)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

10 मई तृतीया गुरुवार (गु)
11 मई चतुर्थी शुक्रवार (गु)
12 मई पंचमी शनिवार (गु)
20 मई द्वादशी रविवार (गु)
21 मई त्रयोदशी सोमवार (गु)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

25 मई तृतीया शुक्रवार (गु)

श्रावण कृष्ण पक्ष

18 जुलाई द्वादशी बुधवार (चं)

श्रावण शुक्ल पक्ष

25 जुलाई पंचमी बुधवार (चं)
26 जुलाई षष्ठी गुरुवार (चं)
27 जुलाई अष्टमी शुक्रवार
28 जुलाई नवमी शनिवार
29 जुलाई दशमी रविवार
30 जुलाई एकादशी सोमवार
1 अगस्त त्रयोदशी बुधवार
2 अगस्त त्रयोदशी गुरुवार
3 अगस्त चतुदर्शी शुक्र. (चं)
4 अगस्त पूर्णिमा शनि. (चं)

भाद्र कृष्ण पक्ष

8 अगस्त चतुर्थी बुधवार
9 अगस्त पंचमी गुरुवार
10 अगस्त षष्ठी शुक्रवार
11 अगस्त सप्तमी शनिवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

20 अक्टूबर चतुर्थी शनिवार
21 अक्टूबर पंचमी रविवार
22 अक्टूबर षष्ठी सोमवार
24 अक्टूबर अष्टमी बुध. (चं)
25 अक्टूबर नवमी गुरु. (चं)
26 अक्टूबर दशमी शुक्रवार
29 अक्टूबर द्वादशी सोमवार
31 अक्टूबर चतुर्दशी बुधवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

10 नवम्बर दशमी शनिवार
11 नवम्बर एकादशी रवि.(चं)
12 नवम्बर द्वादशी सोम. (चं)
14 नवम्बर चतुर्दशी बुधवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

17 नवम्बर द्वितीया शनिवार
18 नवम्बर तृतीया रविवार
21 नवम्बर षष्ठी बुध. (चं)
25 नवम्बर दशमी रविवार
26 नवम्बर एकादशी सोमवार
28 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

6 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार
7 दिसम्बर सप्तमी शुक्रवार
8 दिसम्बर अष्टमी शनि. (च)

9 दिसम्बर नवमी रवि. (च)
10 दिसम्बर दशमी सोमवार

माघ शुक्ल पक्ष

15 फरवरी तृतीया शुक्रवार
16 फरवरी चतुर्थी शनिवार
17 फरवरी पंचमी रविवार
18 फरवरी षष्ठी सोमवार
27 फरवरी पूर्णिमा बुधवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

28 फरवरी प्रतिपदि गुरु. (चं)
2 मार्च चतुर्थी शनि. (चं)
4 मार्च षष्ठी सोमवार
6 मार्च अष्टमी बुधवार
7 मार्च नवमी गुरुवार
10 मार्च द्वादशी रविवार (चं)
11 मार्च त्रयोदशी सोम. (चं)

कर्क **वृश्चिक** **मीन**

वैशाख कृष्ण पक्ष

15 अप्रैल सप्तमी रविवार
16 अप्रैल अष्टमी सोमवार
18 अप्रैल दशमी बुधवार
20 अप्रैल द्वादशी शुक्रवार
21 अप्रैल त्रयोदशी शनिवार
22 अप्रैल चतुर्दशी रविवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

26 अप्रैल तृतीया गुरुवार
27 अप्रैल चतुर्थी शुक्रवार
2 मई नवमी बुधवार
3 मई एकादशी गुरुवार
4 मई द्वादशी शुक्रवार
5 मई त्रयोदशी शनिवार
6 मई चतुर्दशी रविवार
7 मई पूर्णिमा सोमवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

10 मई तृतीया गुरुवार
11 मई चतुर्थी शुक्रवार
12 मई पंचमी शनिवार
18 मई दशमी शुक्रवार
19 मई एकादशी शनिवार
20 मई द्वादशी रविवार
21 मई त्रयोदशी सोमवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

24 मई प्रतिपदि गुरुवार
25 मई तृतीया शुक्रवार (चं)
31 मई नवमी गुरुवार
1 जून दशमी शुक्रवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

18 जुलाई द्वादशी बुधवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

25 जुलाई पंचमी बुधवार (गु)
26 जुलाई षष्ठी गुरुवार (गु)
29 जुलाई दशमी रविवार (गु)
30 जुलाई एकादशी सोम. (गु)
1 अगस्त त्रयोदशी बुध. (गु)
2 अगस्त त्रयोदशी गुरु. (गु)
3 अगस्त चतुदर्शी शुक्र. (गु)
4 अगस्त पूर्णिमा शनि. (गु)

भाद्र कृष्ण पक्ष

8 अगस्त चतुर्थी बुधवार (गु)
9 अगस्त पंचमी गुरुवार (गु)
10 अगस्त षष्ठी शुक्रवार (गु)
11 अगस्त सप्तमी शनि. (गु)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

17 नवम्बर द्वितीया शनि. (गु)
18 नवम्बर तृतीया रवि. (गु)
21 नवम्बर षष्ठी बुध. (गु)
25 नवम्बर दशमी रवि. (गु)
26 नवम्बर एकादशी सोम. (गु)

28 नवम्बर त्रयोदशी बुध. (गु)

मार्ग कृष्ण पक्ष

6 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार (गु)

7 दिसम्बर सप्तमी शुक्र. (गु)

8 दिसम्बर अष्टमी शनि. (गु)

9 दिसम्बर नवमी रवि. (गु)

10 दिसम्बर दशमी सोम. (गु)

13 दिसम्बर चतुर्दशी गुरु. (गु)

माघ कृष्ण पक्ष

10 फरवरी त्रयोदशी रविवार

शंकु प्रतिष्ठा मुहूर्त (बुनियाद मकान) राशि के अनुसार

मेष सिंह धनु

वैशाख शुक्ल पक्ष

26 अप्रैल तृतीया गुरुवार

27 अप्रैल चतुर्थी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

24 मई प्रतिपदि गुरुवार

25 मई तृतीया शुक्रवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

25 जुलाई पंचमी बुधवार

26 जुलाई षष्ठी गुरुवार

भाद्र कृष्ण पक्ष

6 अगस्त द्वितीया सोमवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

23 अगस्त पंचमी गुरुवार

24 अगस्त षष्ठी शुक्रवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

3 नवम्बर द्वितीया शनिवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

21 नवम्बर षष्ठी बुधवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

1 मार्च तृतीया शुक्रवार

11 मार्च त्रयोदशी सोमवार

वृष कन्या मकर

वैशाख शुक्ल पक्ष

26 अप्रैल तृतीया गुरुवार

27 अप्रैल चतुर्थी शुक्रवार

30 अप्रैल सप्तमी सोमवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

9 मई द्वितीया बुधवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

24 मई प्रतिपदि गुरुवार

25 मई तृतीया शुक्रवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

25 जुलाई पंचमी बुधवार

26 जुलाई षष्ठी गुरुवार

भाद्र कृष्ण पक्ष

6 अगस्त द्वितीया सोमवार

9 अगस्त पंचमी गुरुवार

10 अगस्त षष्ठी शुक्रवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

23 अगस्त पंचमी गुरुवार

24 अगस्त षष्ठी शुक्रवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

19 अक्टूबर तृतीया शुक्रवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

3 नवम्बर द्वितीया शनिवार

7 नवम्बर षष्ठी बुधवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

21 नवम्बर षष्ठी बुधवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

5 दिसम्बर पंचमी बुधवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

1 मार्च तृतीया शुक्रवार

11 मार्च त्रयोदशी सोमवार

मिथुन तुला कुम्भ

वैशाख शुक्ल पक्ष

27 अप्रैल चतुर्थी शुक्रवार

30 अप्रैल सप्तमी सोमवार
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
9 मई द्वितीया बुधवार
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
25 मई तृतीया शुक्रवार
भाद्र कृष्ण पक्ष
6 अगस्त द्वितीया सोमवार
9 अगस्त पंचमी गुरुवार
10 अगस्त षष्ठी शुक्रवार
भाद्र शुक्ल पक्ष
23 अगस्त पंचमी गुरुवार
24 अगस्त षष्ठी शुक्रवार
आश्विन शुक्ल पक्ष
19 अक्टूबर तृतीया शुक्रवार
कार्तिक कृष्ण पक्ष
7 नवम्बर षष्ठी बुधवार
मार्ग कृष्ण पक्ष
5 दिसम्बर पंचमी बुधवार

कर्कट **वृश्चिक** **मीन**

वैशाख शुक्ल पक्ष
26 अप्रैल तृतीया गुरुवार
30 अप्रैल सप्तमी सोमवार
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
9 मई द्वितीया बुधवार
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
24 मई प्रतिपदि गुरुवार
श्रावण शुक्ल पक्ष
25 जुलाई पंचमी बुधवार
26 जुलाई षष्ठी गुरुवार
भाद्र कृष्ण पक्ष
9 अगस्त पंचमी गुरुवार
10 अगस्त षष्ठी शुक्रवार
आश्विन शुक्ल पक्ष
19 अक्टूबर तृतीया शुक्रवार
कार्तिक कृष्ण पक्ष
3 नवम्बर द्वितीया शनिवार
7 नवम्बर षष्ठी बुधवार
कार्तिक शुक्ल पक्ष
21 नवम्बर षष्ठी बुधवार
मार्ग कृष्ण पक्ष
5 दिसम्बर पंचमी बुधवार
फाल्गुन कृष्ण पक्ष
1 मार्च तृतीया शुक्रवार

प्रवेश मुहूर्त
(नये मकान में दाखिल होने के मुहूर्त) राशि के अनुसार

मेष **सिंह** **धनु**

वैशाख शुक्ल पक्ष
26 अप्रैल तृतीया गुरुवार
4 मई द्वादशी शुक्रवार
5 मई त्रयोदशी शनिवार
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
24 मई प्रतिपदि गुरुवार
31 मई नवमी गुरुवार
1 जून दशमी शुक्रवार
आषाढ शुक्ल पक्ष
30 जून दशमी शनिवार
आश्विन शुक्ल पक्ष
26 अक्टूबर दशमी शुक्रवार
कार्तिक शुक्ल पक्ष
22 नवम्बर सप्तमी गुरुवार

वृष **कन्या** **मकर**

वैशाख शुक्ल पक्ष
26 अप्रैल तृतीया गुरुवार
4 मई द्वादशी शुक्रवार
5 मई त्रयोदशी शनिवार
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
9 मई द्वितीया बुधवार
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
24 मई प्रतिपदि गुरुवार

31 मई नवमी गुरुवार
1 जून दशमी शुक्रवार
2 जून एकादशी शनिवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

30 जून दशमी शनिवार
2 जुलाई द्वादशी सोमवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

19 अक्टूबर तृतीया शुक्रवार
26 अक्टूबर दशमी शुक्रवार
29 अक्टूबर द्वादशी सोमवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

22 नवम्बर सप्तमी गुरुवार
26 नवम्बर एकादशी सोमवार

माघ शुक्ल पक्ष

25 फरवरी त्रयोदशी सोमवार

मिथुन **तुला** **कुम्भ**

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

9 मई द्वितीया बुधवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

30 जून दशमी शनिवार
2 जुलाई द्वादशी सोमवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

19 अक्टूबर तृतीया शुक्रवार
26 अक्टूबर दशमी शुक्रवार
29 अक्टूबर द्वादशी सोमवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

26 नवम्बर एकादशी सोमवार

माघ शुक्ल पक्ष

25 फरवरी त्रयोदशी सोमवार

कर्कट **वृश्चिक** **मीन**

वैशाख शुक्ल पक्ष

26 अप्रैल तृतीया गुरुवार
4 मई द्वादशी शुक्रवार
5 मई त्रयोदशी शनिवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

9 मई द्वितीया बुधवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

24 मई प्रतिपदि गुरुवार
31 मई नवमी गुरुवार
1 जून दशमी शुक्रवार
2 जून एकादशी शनिवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

2 जुलाई द्वादशी सोमवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

19 अक्टूबर तृतीया शुक्रवार
29 अक्टूबर द्वादशी सोमवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

22 नवम्बर सप्तमी गुरुवार
26 नवम्बर एकादशी सोमवार

माघ शुक्ल पक्ष

25 फरवरी त्रयोदशी सोमवार

पृ. १९२ का शेष

03 नव. तुला में
27 नव. वृश्चिक में
21 दिस. धनु में
14 जनवरी मकर में
07 फरवरी कुम्भ में
03 मार्च मीन में
27 मार्च मेष में

शनि

वृष राशि में

राहु

16 फर. 2002 वृष में

केतु

16 फर. 2002 वृश्चिक में

मेष राशि का वर्ष फल

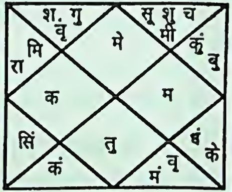

वर्ष के आरम्भ पर ग्रहों की स्थिति पर विचार करने से विदित होता है कि यह वर्ष मेष राशि वालों के लिये यद्यपि कोई शुभ समाचार लेकर नहीं आया है, परन्तु किसी अनिष्ट का द्योतक भी नहीं है गोचर शास्त्रों के अनुसार बारहवां सूर्य, चन्द्रमा तथा शुक्र होने से दूर देश का भ्रमण, अधिक व्यय, कार्य एवं पद हानि, आंखों में दर्द, धन लाभ तथा मानसिक चिन्ता, दूसरा बृहस्पति तथा शनि के होने से धन का आगमन कुटुम्ब को सुख की प्राप्ति, विवाह अथवा पुत्र जन्म का योग, शत्रुओं के साथ सन्धि का योग, कैश सर्टिफिकेट में वृद्धि, बिना कारण झगड़ा स्वजनों से बैर, धन हानि, स्त्री को कष्ट आठवां मंगल होने से परदेश गमन, कार्य की हानि, भाईयों में अनबन, शारीरिक कष्ट इत्यादि ऊपर लिखित गोचर शास्त्रों के अनुसार ग्रहों के फल तथा स्थिति को वेधाष्टक वर्ग की कसोटी पर परखने से विदित होता है कि यह वर्ष मेष राशि वालों के लिये सामूहिक रूप से लाभदायक ही रहेगा, आठवां मंगल आप के शरीर को अवश्य प्रभावित करेगा यदि आप शरीर से पहले से ही अस्वस्थ है तो आप को शरीर के विषय में हर समय सावधान रहना पडेगा, चीर-फाड़ का योग भी बन सकता है आप नौकरी करते हैं या कारोबार आप की आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक ही रहेगी यदि आप नौकरी की तलाश में है तो थोड़ा सा परिश्रम करने पर आप को नौकरी मिल सकती है यदि कारोबार करने की सोच रहे हैं तो समय ज़ाया मत कीजिये कारोबार में भी आप को सफलता मिलेगी। विद्यार्थियों के लिये यद्यपि यह वर्ष संघर्ष का ही रहेगा परन्तु सफलता में किसी प्रकार की रुकावट का कोई योग नहीं है शरीर को स्वस्थ रखने के लिये आप हर मंगलवार को तरह वना कर पक्षियों को डाले।

मेष राशि का मासिक फल

अप्रैलः- मास के आरम्भ पर चार ग्रहों का शुभ होना तथा तीन ग्रहों का वेध में होना शुभफल का सूचक है आप जो भी काम करते हैं आपका काम अच्छी प्रकार से चलता

रहेगा आप की आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा, गृहस्थी होने पर घर में किसी नवजात शिशु के आगमन का योग, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

मई:- मास के आरम्भ पर केवल तीन ग्रहों का शुभ होना तथा शेष ग्रहों का अशुभ होना संघर्ष का ही सूचक है इस कारण यह महीना संघर्ष का होते हुये भी अन्ततः लाभदायक ही रहेगा यदि आप को गृहस्थ में किसी प्रकार की कोई चिन्ता है उस चिन्ता का समाधान निकलने का योग, विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से लाभदायक महीना।

जून:- तीन ग्रहों का शुभ होना तथा सूर्य और शनि का वेध में होना शुभ फल की ओर इशारा है इस शुभ योग के प्रभाव से बहुत देर से लटकी हुई समस्याओं का हल इस महीने में निकलेगा, आप की आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक रहेगी परन्तु आप शरीर के विषय में सावधान रहें क्योंकि मंगल 10 जून को वक्री होकर आप के आठवें भाव में आ रहा है।

जुलाई:- मास के आरम्भ पर शुभाशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होने से यह महीना हर प्रकार से शुभ फलदायक तथा लाभदायक रहेगा यदि आप को डिपार्टमेन्टल प्रमोशन है तो वह अवश्य मिलेगी अथवा उस प्रकार के कागजात हरकत में आयेंगे विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

अगस्त:- इस मास की ग्रह स्थिति आप को चैन का सांस लेने नहीं देगी विना किसी कारण के परेशानी का योग, आठवां मंगल आप के शरीर को भी प्रभावित कर सकता है घरेलू समस्यायें आप के लिये परेशानी का कारण बनेगी विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का महीना।

सितम्बर:- मास के आरम्भ पर तीन शुभ ग्रह तथा दो ग्रहों का वेध में होना गोचर शास्त्र के अनुसार शुभ फल का ही सूचक है आप जो भी काम करते हैं उस में सफलता का योग, घर पर सगे सम्बन्धियों का आना जाना जोरो पर रहेगा खर्च की अधिकता, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

अक्तूबर:- ग्रहों की स्थिति सन्तोषजनक न होने के कारण यह महीना ढांवा ढोल स्थिति में ही गुजरेगा आप की आर्थिक स्थिति भी प्रभावित होगी, खर्च का योग अधिक, घर

पर कोई महोत्सव मनाने का प्रोग्राम बनेगा जिस में सगे सम्बन्धि अवश्य सम्मिलित होंगे।

नवम्बर:- फलित ज्योतिष में बृहस्पति तथा शनि को प्रमुख स्थान मिला है इस माह के आरम्भ पर इन दोनों ग्रहों की स्थिति भी कुछ ढांवा ढोल ही है इस कारण यह महीना संघर्ष के माहौल में ही गुजरेगा यदि आप नौकरी करते हैं तो अफसर लोगों के साथ अनवन जो कि आप के प्रमोशन में रुकावट का कारण बन सकता है।

दिसम्बर:- इस माह के आरम्भ पर केन्द्र का खाली होना फलित शास्त्र में एक प्रकार का मनहूस योग माना जाता है इस कारण यह महीना संघर्ष के माहोल में ही गुजरेगा आप जो भी काम करते हैं उस में बिना कारण के रुकावटें आने का योग, विद्यार्थियों के लिये अशान्ति का महीना।

जनवरी:- नये वर्ष का पहला महीना मेष राशि वालों के लिये शुभ सन्देश लेकर आया है, शरीर सुख, धन प्राप्ति तथा सामाजिक क्षेत्र में आदर व मान का योग गृहस्थी होने पर स्त्री सुख का योग, सन्तान पक्ष से कोई शुभ सन्देश मिलने का योग। विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का महीना।

फरवरी:- मास के आरम्भ पर बारहवां मंगल आप के शरीर को प्रभावित करेगा, फजूल धन खर्च का योग परन्तु आमदनी आशा से अधिक होगी, कारोबारी होने पर कारोबार में अचानक वृद्धि का योग, विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से लाभदायक महीना।

मार्च:- ग्रहों की स्थिति को देखने से प्रतीत होता है कि यह महीना आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टि से लाभप्रद ही रहेगा, धन तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति, सभी कार्यों में सफलता गृहस्थी न होने पर विवाह का योग, व्यापार में वृद्धि, विद्यार्थियों के लिये लाभदायक महीना।

वृष राशि का वर्ष फल

वर्ष के आरम्भ पर चार ग्रहों का शुभ स्थिति में होना तथा दो ग्रहों बृहस्पति तथा शनि का वेध में होना वृष राशि वालों के लिये हर प्रकार से लाभदायक सिद्ध होगा क्योंकि वेध में गया हुआ अशुभ ग्रह भी शुभफल को देता है इस शुभ योग के प्रभाव

से कारोवारी वर्ग ज्यादा प्रभावित होगा, क्योंकि उसका कारोवार दिनों दिन वढ़ता जायेगा, यदि आप नौकरी करते हैं तो वहुत देर से रुकी हुई प्रमोशन आप को अवश्य मिलेगी अफसर लोगों के साथ मिलने जुलने का मौका मिलेगा जो आप के लिये लाभदायक रहेगा यदि आप को किसी विभागीय परीक्षा में सम्मिलित होना है तो अवश्य ऐसा प्रोग्राम वनाये सफलता आप को अवश्य मिलेगी, यदि आप ठेकेदारी का काम करते हैं तो यह वर्ष आप के लिये हर प्रकार से लाभदायक रहेगा परन्तु लाभ आपको तभी होगा जव आप अपने कार्य को ईमानदारी से निभाओंगे, नहीं तो नुकसान का मुंह देखना पडेगा, यदि आप किसी सियासी अथवा सामाजिक संस्था से सम्वन्ध रखते हैं तो यह वर्ष आप के लिये सामाजिक क्षेत्र में आदर मान व प्रतिष्ठा देने वाला है, ग्यारहवें भाव में तीन ग्रहों का एक साथ होना आर्थिक स्थिति की दृढ़ता को दिखाता है प्रत्येक कार्य में आशा से अधिक लाभ, यदि आप को मकान, जमीन, जायदाद सम्वन्धित कोई समस्या है तो इस प्रकार की समस्या का समाधान इस वर्ष अवश्य होगा यदि आप वाहन इत्यादि के विषय में सोचते हैं तो आप इस प्रोग्राम को इस वर्ष अमली रूप दीजिये, विद्यार्थी वर्ग के लिये हर प्रकार से सफलता देने वाला वर्ष।

वृष राशि का मासिक फल

अप्रैलः- मास के आरम्भ पर शुभ ग्रहों का पलडा भारी होना शुभफल की ओर इशारा है इस कारण यह महीना हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुजरेगा आप जो भी काम करते हैं आप का काम विना किसी रुकावट के चलता रहेगा। विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

मईः- मास के आरम्भ पर वृहस्पति तथा शनि की स्थिति दृढ होने के कारण सुख और शान्ति का योग है आप की आर्थिक स्थिति में भी विशेष सुधार होगा घर पर कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम वनेगा जिस में सभी मित्र व सम्वन्धी सम्मिलित होंगे, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

जूनः- शुभाशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होने से शरीर सुख का उत्तम योग, आमदनी तथा खर्च एक जैसा होने पर भी यह महीना शान्ति के माहोल में गुजरेगा, गृहस्थी होने पर

गृहस्थ सुख का योग, नौकरी पेशा होने पर अफसर लोगों के साथ मिलने जुलने का मौका मिलेगा, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

जुलाई:- मास के आरम्भ पर तीन शुभ ग्रहों तथा तीन ग्रहों का वेध में होना शुभ फल का ही द्योतक है यदि आप कारोबार करते है तो आप का काम अच्छी प्रकार से चलेगा, लोगों के पास फंसा हुआ पैसा वापस आने का योग, विद्या प्राप्ति के लिये हर प्रकार से सफलता दायक महीना।

अगस्त:- इस मास के आरम्भ पर ग्रहों की ढांवा ढोल स्थिति को देखने से मालूम होता है कि यह महीना परेशानी के माहोल में ही गुजरेगा, वने वनाये काम विगडने का योग, परन्तु वृहस्पति की स्थिति अच्छी होने के कारण किसी प्रकार के हानि का कोई योग नहीं है।

सितम्बर:- मास के आरम्भ पर दूसरा वृहस्पति तथा शुक्र होने से धन की प्राप्ति, शरीर स्वस्थ, सन्तान प्राप्ति का योग, शत्रुओं का नाश, परिवार में सुख और समृद्धि, परोपकार तथा दानादि की ओर प्रवृति कैश सार्टिफिकेट्स में वृद्धि, विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से सफलता देने वाला महीना।

अक्टूबर:- शनि पहले भाव में वैठकर आप के तीसरे, सातवें तथा दसवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है शनि की दृष्टि को फलित शास्त्र में मनहूस माना जाता है इस कारण आप को भाईयों के साथ अनवन होने का योग, नौकरी पेशा होने पर दफ्तर की ओर से परेशानी।

नवम्बर:- मास के आरम्भ पर शुभाशुभ ग्रहों का पलड़ा एक जैसा होने के कारण यह महीना सामान्य रूप से गुजरेगा आप जिस काम से सम्बन्धित है वह काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा आमदनी की दृष्टि से भी यह महीना मध्यम ही है परन्तु खर्च का योग अधिक।

दिसम्बर:- ग्रहों की स्थिति को देखने से मालूम होता है कि यह महीना सर्वसाधारण रूप से गुजरेगा आप जो भी काम करते हैं आप का काम मध्यम गति से ही चलता रहेगा खर्च के वड़े-वड़े प्रोग्राम बनते रहेंगे कभी-कभी तंगदस्ती का मुंह भी देखना पड़ेगा।

जनवरी:- आठवां सूर्य, शुक्र तथा केतु आप के शरीर को प्रभावित करेगा अतः आप शरीर के विषय में सावधान रहें

आप का शरीर बनता विगड़ता रहेगा आप की आर्थिक स्थिति भी प्रभावित होगी, गृहस्थ का माहोल भी आप के अनुकूल नहीं रहेगा जो कि आप के लिये परेशानी का कारण बनेगा।

फरवरीः- मास के आरम्भ पर ग्रहों में कुछ सुधार हुआ है जिस के कारण आप के शरीर में कुछ सुधार हो सकता हे आप की आमदनी में भी कुछ सुधार होगा यदि आप नौकरी करते हैं तो दफ्तर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा, विद्यार्थियों के लिये सफलता का योग।

मार्च :- पहला राहु तथा बारहवां भौम आप के शरीर को आवश्य प्रभावित करेगा भौम जो कि फलित शास्त्र में खून का स्वामी माना जाता है के कारण चोट का भय, तथा मानसिक चंचलता का योग, आप की आमदनी तथा खर्च का योग एक जैसा रहेगा।

मिथुन राशि का वर्ष फल

वर्ष के आरम्भ पर बारहवां शनि, दसवां सूर्य, चन्द्रमा तथा छठः भौम होने से धन प्राप्ति, शरीर सुख राज्याधिकारियों से मित्रता, प्रत्येक कार्य में सफलता पदोन्नति का अवसर, कार्य की सिद्धि, सभी कार्यो का सफलतापूर्वक सिद्ध होना, स्वस्थ शरीर, राज्य की ओर से धन तथा सम्मान की प्राप्ति, नौकरी में पदोन्नति का योग, शत्रुओं पर विजय इत्यादि बारहवां बृहस्पति दसवां शुक्र नवां बुध अशुभ स्थिति में होने से सब कार्यों में विध्न बाधायें, यात्रा में असुविधा तथा हानि, सम्बन्धियों तथा मित्रों के साथ अनबन, धन का फजूल खर्च, किसी विश्वास पात्र से दोखा शरीर अस्वस्थ, झूठा इल्जाम लगने की सम्भावना, राज्याधिकारियों की ओर से परेशानी इत्यादि, गोचर शास्त्रों के अनुसार ऊपर लिखित फल को देखते हुये विधित होता है यह वर्ष मिथुन राशि वालों के लिये दौड़ धूप का होते हुये भी हर प्रकार से लाभदायक रहेगा कारोबारी वर्ग के लिये हर प्रकार से लाभदायक रहेगा यद्यपि लाभ आशा के अनुरूप नहीं मिलेगा परन्तु किसी प्रकार की हानि का कोई योग नहीं है, यदि आप नौकरी करते है तो दफ्तर का माहोल आप के अनुकूल

नहीं रहेगा अपने अफसर लोगों के साथ कटुता का माहोल रहेगा जो कि आप के लिये परेशानी का कारण बनेगा, फजूल खर्च का योग भी प्रबल है विद्यार्थी वर्ग के लिये हर प्रकार से लाभदायक तथा सफलता देने वाला वर्ष रहेगा, यदि आप उच्च विद्या के लिये विदेश जाने का प्रोग्राम बनाते है तो उस को अमली रूप दीजिये सफलता अवश्य होगी, क्रूर ग्रहों के क्रूर प्रभाव के कम करने के लिये नित्य **'गायत्री चालीसा'** का पाठ करें।

मिथुन राशि का मासिक फल

अप्रैल:- मास के आरम्भ पर ग्रहों की स्थिति को देखते हुये विदित होता है कि यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुजरेगा आप की आर्थिक स्थिति में किसी प्रकार की वृद्धि न होने पर भी खर्च के मार्ग खुलते रहेंगे जिस के कारण कुछ परेशानी का योग बनता है।

मई:- चार ग्रहों का शुभ होना तथा दो ग्रहों का वेध में होना शुभ फल की ओर इशारा है यदि आप कारोबार करते हैं या शियर सम्बन्धित कुछ काम करते हैं तो आप को आशा से अधिक लाभ होगा, परन्तु फजूल खर्च का योग भी बनता है, सातवां भौम तथा बारहवां वृहस्पति आप के शरीर को अवश्य प्रभावित करेगा।

जून:- यह महीना विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से लाभदायक तथा सफलतादायक रहेगा यदि आप किसी इन्टरव्यू इत्यादि में सम्मिलित होना चाहते हैं, अथवा उच्च विद्या का कोई प्रोग्राम बनाते हैं तो समय जाया मत कीजिये सफलता आप को अवश्य मिलेगी, यदि आप विवाहित है तो गृहस्थ की ओर से परेशानी का योग।

जुलाई:- मास के आरम्भ पर ग्रहों की ढांवा ढोल स्थिति के अनुसार यह महीना अशान्ति के माहोल में ही गुजरेगा, बने बनाये काम विगडने का योग जो कि आप के लिये अशान्ति का कारण बनेगा, स्त्री पक्ष की ओर से चिन्ता का योग आप नित्य **'गायत्री चालीसा'** का पाठ किया करें।

अगस्त:- मास के आरम्भ से ही ग्रहों में कुछ सुधार होने के कारण आप की आमदनी सन्तोषजनक रहेगी, नौकरी पेशा होने पर राज्याधिकारियों से आदर व मान का योग,

कारोवारी होने पर हर प्रकार से लाभ का योग, शत्रु पक्ष आप पर हावी होने का प्रयत्न करेगा, जिससे कुछ परेशानी वनी रहेगी।

सितम्बरः- शुभ व अशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होने से आप का काम यथावत चलता रहेगा, आप की आमदनी भी सन्तोषजनक रहेगी, देर से लटकी हुई किसी समस्या का समाधान इस महीने में अवश्य होगा आप अपने शरीर की ओर ध्यान दे आप का शरीर बनता बिगडता रहेगा।

अक्टूबरः- मिथनु राशि वालों को जुलाई माह से ही वृहस्पति लग्न में बैठा है गोचर के अनुसार पहले भाव का गुरु अच्छा नहीं माना जाता है इस कारण जव तक वृहस्पति राशि नहीं बदलेगा मिथुन राशि वालों को विना कारण चिन्तायें घेरी रखेगी। विद्यार्थियों के लिये भी संघर्ष का महीना।

नवम्बरः- मास के आरम्भ पर आप के आठवें भाव में भौम का आना ठीक नही है अचानक वने बनाये कामों में रुकावट का योग, अपने सगे सम्बन्धियों के साथ अनवन का योग, शत्रुओं से भय, यदि आप 'शियर' इत्यादि के साथ कुछ सम्बन्ध रखते हैं तो हानि के लिये तैयार रहें। आठवां भौम आप के शरीर को भी प्रभावित कर सकता है।

दिसम्बरः- इस वर्ष का आखरी महीना गत मास की अपेक्षा ठीक ही रहेगा, शरीर भी स्वस्थ ही रहेगा, आप की आमदनी भी आशानुरूप रहेगी परन्तु खर्च का प्रवल योग है, सन्तान पक्ष की ओर से कोई विशेष समाचार सुनने में आयेगा जिस की प्रतीक्षा आप वहुत समय से कर रहे है विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम महीना।

जनवरीः- नये वर्ष का पहला महीना यद्यपि कोई विशेष सन्देश लेकर नहीं आया परन्तु किसी अनिष्ट का सूचक भी नहीं है आप जो भी काम करते हैं आप का काम यथावत चलता रहेगा हो सकता है आप की आमदनी में कुछ वृद्धि हो, गृहस्थी होने पर स्त्री पक्ष की ओर से चिन्ता। विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से लाभदायक महीना।

फरवरीः- ग्रहों की चाल को देखने से मालूम होता है कि यह महीना हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुजरेगा, यात्रा का योग भी बनता है जिस की आप बहुत दिनों से प्रतीक्षा

कर रहे थे यदि ऐसा नहीं हुआ तो भी यात्रा पर जाने का प्रोग्राम तय होगा, घर पर सम्वन्धियों का आना जोरों पर रहेगा।

मार्च :- शुभ और अशुभ ग्रहों का पलड़ा एक जैसा होने से यह महीना संघर्ष का होते हुये भी शान्ति से ही गुजरेगा, आप की आमदनी में कुछ रुकावटें आने पर भी आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा शत्रुपक्ष आप पर हावी होगा।

कर्क राशि का वर्ष फल

वर्ष के आरम्भ पर केवल तीन ग्रह आठवां बुध, नवां शुक्र तथा ग्यारहवां वृहस्पति शुभ स्थिति में है, शनि देव तथा राहु वेध में होने से शुभ फल के सूचक हैं इसके अतिरिक्त शनि महाराज आप के लग्न, पाचवें भाव तथा आठवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है शनि की दृष्टि को फलित शास्त्र में मनहूस माना गया है ऊपर लिखित ग्रहों की स्थिति को वेधाषृक वर्ग की कसौटी पर परखने से मालूम होता है कि कर्क राशि वालों का यह वर्ष हर प्रकार से लाभदायक तथा शान्तिदायक रहेगा, फलित शास्त्र के अनुसार यदि वृहस्पति तथा शनि की स्थिति अच्छी हो तो मनुष्य कहीं से कहीं पहुंच सकता है आप की आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति में विशेष परिवर्तन आयेगा यदि आप सियासत के साथ सम्बन्ध रखते है अथवा किसी और समाज सेवा संगठन के साथ सम्बन्ध रखते हैं तो आप को सामाजिक क्षेत्र में विशेष सफलता तथा लाभ होगा, यदि आप लेखक अथवा शायरी से सम्बन्ध रखते है तो यह वर्ष आप के लिये आर्थिक दृष्टि से लाभदायक रहेगा, यदि आप कारोवार करते हैं तो आप पूरी सावधानी से अपने काम में जुट जाये ऐसा न हो कि आप को हानि का मुंह देखना पडे, यदि आप नौकरी करते हैं तो अपने अफसर लोगों के साथ मिलने-जुलने का अवसर मिलेगा जो कि आप के भविष्य के लिये लाभदायक रहेगा, आप की आर्थिक स्थिति भी सन्तोषजनक रहेगी, परन्तु इस वात को भूलिए मत शनि आप के लग्न, सन्तान तथा आठवें भाव को देख रहा है सन्तान पक्ष की ओर से मानसिक अशन्ति का योग विद्यार्थियों के लिये यह वर्ष हर प्रकार से सफलता देने वाला वर्ष रहेगा। शनि के क्रूर प्रभाव

को कम करने के लिये आप नित्य 'हनुमान चालीसा' का पाठ करें।

कर्क राशि का मासिक फल

अप्रैलः- मास के आरम्भ पर शनि आप के छठे तथा पांचवें भाव को देख रहा है जो कि अस्वस्थ शरीर का सूचक है अतः आप शरीर के विषय में सावधान रहें, सन्तान पक्ष की ओर से मानसिक चिन्ता का योग, ग्यारहवां बृहस्पति होने से आप की आमदनी सन्तोषजनक रहेगी, विद्यार्थियों के लिये परेशानी का महीना।

मईः- छः ग्रहों का शुभ होना शुभ फल की ओर इशारा है इस शुभ योग के प्रभाव से आप की आर्थिक स्थिति में विशेष वृद्धि होगी, बहुत देर से टिके हुये कार्य सम्भलने लगेंगे यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो आप धीरज रखें नौकरी अवश्य मिलेगी, कारोबारी वर्ग के लिये हर प्रकार से लाभदायक महीना।

जूनः- इस मास के शुभाशुभ ग्रहों- पर विचार करने से मालूम होता है कि यह मास हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आप की आमदनी में इज़ाफा न होने पर भी आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा यदि आप विवाहित है तो स्त्री के शरीर की ओर से कोई परेशानी, विद्या प्राप्ति के लिये हर प्रकार से सफलता देने वाला महीना।

जुलाईः- मास के आरम्भ पर सूर्य तथा बृहस्पति बारहवें भाव में आते हैं जो कि शरीर सुख के लिये मध्यम अतः आप शरीर के विषय में सावधान रहें, फजूल खर्च का योग भी प्रवल है यदि आप कारोबार करते है। तो आप अपने काम को सावधानी से चलाये, नुकसान का योग भी बनता है विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का महीना।

अगस्तः- मास के आरम्भ पर छः ग्रह ग्याहरवें, बारहवें तथा लग्न में बैठे है जो कि फलित शास्त्र के अनुसार शुभफल की ओर इशारा है इस कारण आप जो भी काम करते हैं आप अपने काम में जुट जायें सफलता आप को अवश्य मिलेगी आप की आमदनी भी सन्तोषजनक रहेगी, गृहस्थी होने पर गृहस्थ में किसी प्रकार का प्रोग्राम बनेगा

जिस में सभी सम्बन्धी सम्मिलित होंगे।

सितम्बरः- शुभ ग्रहों का पलड़ा भारी होना शुभ फल की ओर इशारा है यदि आप नौकरी करते है तो दफ्तर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा यदि आप को डिपार्टमेन्टल कोई प्रमोशन रुकी है थोड़ा सा परिश्रम करने से वह आप को मिलेगी, अथवा इस प्रकार के कागज़ात हरकत में आयेंगे।

अक्टूबरः- मास के ग्रहों की स्थिति को देखने से विदित होता है कि यदि आप को घर में किसी प्रकार की कोई चिन्ता है वह चिन्ता इस मास में अवश्य दूर होगी, यदि आप सन्तान पक्ष से कुछ चिन्तित है वह चिन्ता भी दूर होगी, आप की आमदनी भी खर्च के अनुसार सन्तोषजनक रहेगी।

नवम्बरः- शुभाशुभ ग्रहों का पलड़ा एक जैसा होना शुभ फल की ओर इशारा है इस शुभ योग के प्रभाव से अभिष्ट की सिद्धि, सभी कार्यों का सफलतापूर्वक सिद्ध होना, स्वस्थ शरीर, राज्य की ओर से धन तथा सम्मान की प्राप्ति, नौकरी पेशा होने पर पदोन्नति का योग, सातवां मंगल आप के गृहस्थ जीवन को प्रभावित कर सकता है।

दिसम्बरः- इस मास के आरम्भ पर केन्द्र में कोई भी ग्रह नहीं है आठवें भाव में मंगल का होना भी शुभ नहीं है जो आप के शरीर को प्रभावित कर सकता है इस कारण यह महीना संघर्ष के माहोल में ही गुजरेगा आप जो भी कार्य करते हैं आप का कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा परन्तु सफलता तथा लाभ आशा के अनुरूप मिलना असम्भव है।

जनवरीः- नये वर्ष का पहला महीना आप के लिये कोई विशेष शुभ समाचार लेकर नहीं आया है यह महीना भी संघर्ष के माहोल में ही गुजरेगा, आप की आमदनी भी प्रभावित होगी, विद्यार्थियों के लिये परेशानी का महीना, यदि आप नौकरी करते हैं तो दफ्तर का माहोल आप के उलट ही रहेगा।

फरवरीः- मास के आरम्भ पर ग्रहों में थोडा परिवर्तन आने के कारण यह महीना संघर्ष का होते हुये भी सामूहिक रूप से सफलता तथा लाभदायक ही रहेगा, आप की आमदनी में वृद्धि का योग, यदि आप नौकरी करते हैं तो दफ्तर का माहोल आप के हित में रहेगा।

मार्च :- शुभाशुभ ग्रहों का एक जैसा होना शुभ फल की ओर इशारा है आप जो भी काम करते हैं आप का काम अच्छी प्रकार चलता रहेगा, घरेलू वातावरण आप के अनुकूल रहेगा, विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से सफलता देने वाला महीना।

सिंह राशि का वर्ष फल

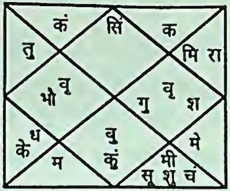

गोचर फलित के अनुसार आठवां सूर्य तथा चन्द्रमा होने से शत्रुओं के साथ अनबन शरीर अस्वस्थ, अपच आदि रोगों का भय, हर किसी के साथ झगड़ा, विवाद, मानसिक चिन्ता इत्यादि चौथा भौम होने से शत्रुओं की वृद्धि, स्वजनों का विरोध, धन की कमी, जमीन-जायदाद की समस्यायें उत्पन्न होने का योग, घरेलू जीवन के सुख में कमी, मन में क्रूर्ता की वृद्धि जागृत होती है, सातवां बृहस्पति होने से शरीर निस्तेज, स्त्री आदि से विवाद, मित्रों तथा सम्बन्धियों से अनवन, चिन्ताओं की अधिकता दसवां बृहस्पति तथा शनि होने से मान हानि की सम्भावना, अन्न तथा धन की हानि, नौकरी अथवा कारोबार में परिवर्तन, धन का फजूल खर्च इत्यादि फल गोचर शास्त्रों के अनुसार लिखा है वर्ष के आरम्भ पर केवल एक ग्रह का शुभ होना किसी विशेष शुभफल का सूचक नहीं है परन्तु वर्ष के आरम्भ पर ही तीन ग्रहों सूर्य, चन्द्रमा तथा शनि का वेध में होना शुभ फल का सूचक है अर्थात् चार ग्रहों का शुभ होना वेधाष्टक वर्ग दृष्टि इत्यादि के नजरिये से भी शुभ ही है यद्यपि यह वर्ष कोई विशेष समाचार लेकर नहीं आया परन्तु किसी विशेष हानि का सूचक भी नहीं है यह वर्ष सिंह राशि वालों के लिये संघर्षमय ही रहेगा कोई भी कार्य बिना किसी अडचन के सिद्ध होगा नहीं जो कि आप की चिन्ता का विशेष कारण बनेगा, खर्च का योग आमदनी से अधिक है, विद्यार्थियों के लिये यह वर्ष विशेष सफलता देने वाला नहीं है यदि आप सफलता चाहते हैं तो घर पर किसी वृद्ध पुरुष अथवा माता-पिता से आर्शीवाद लें तभी कुछ सफलता की आशा रखें। इस वर्ष के क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये नित्य **'गायत्री चालीसा'** पढ़ें।

सिंह राशि का मासिक फल

अप्रैल:- मास के आरम्भ पर शुभ ग्रहों का पलड़ा भारी होना संघर्ष का इशारा है आप का बना बनाया काम बिगड़ सकता है, यदि आप कारोबार करते हैं तो कारोबार में रुकावट का योग, आमदनी भी सन्तोषजनक नहीं रहेगी, घर के किसी सदस्य के शरीर की चिन्ता रहेगी विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का महीना।

मई:- ग्रहों की स्थिति को वेधाष्टक वर्ग की कसौटी पर परखने से विदित होता है कि यह मास ढांवा ढोल स्थिति में ही गुजरेगा, गृहस्थी होने पर स्त्री पक्ष की ओर से अशान्ति का योग, नौकरी पेशा होने पर अफसर लोगों के साथ अनबन, यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो वह मसला लटकता ही रहेगा।

जून:- मास के प्रारम्भ पर ग्रहों में कुछ सुधार आने के कारण यह मास कुछ शान्त वातावरण में ही गुज़रेगा, आप की आमदनी में कुछ सुधार होगा नौकरी पेशा होने पर दफ्तर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा, कहीं यात्रा का योग बनता है जिस की प्रतीक्षा आप बहुत दिनों से कर रहे थे।

जुलाई:- शुभाशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होने के कारण यह महीना शान्ति के माहोल में ही गुजरेगा आप जो भी कार्य करते हैं आप का काम बिना किसी रुकावट के चलता रहेगा, शरीर भी स्वस्थ रहेगा यदि आप को किसी जायदाद सम्बन्धित कोई मसला है उसके हल होने की सम्भावना।

अगस्त:- चौथा भौम तथा बारहवां सूर्य आप के शरीर को अवश्य प्रभावित करेगा इस कारण आप शरीर के विषय में सावधान रहें, शरीर का ठीक न होना आप को काम में भी रुकावट ला सकता है। ग्यारहवां बृहस्पति, शुक्र तथा राहु आप की आमदनी में विशेष वृद्धि करेगा कहीं आशा से अधिक लाभ का योग।

सितम्बर:- मास के आरम्भ पर ग्रहों की स्थिति के देखने से मालूम होता है कि यह मास हर प्रकार से शान्तिप्रद तथा लाभप्रद रहेगा आमदनी के साथ साथ खर्च के प्रोग्राम बनते रहेंगे, पांचवां मंगल आप को सन्तान पक्ष से कुछ चिन्ता

रखेगा, उस चिन्ता से बचने का एक ही उपाय है कि आप **हनुमान चालीसा** का पाठ अवश्य करें।

अक्टूबर:- पहला शुक्र, ग्यारहवों बृहस्पति, राहु, दसवां शनि सातवां चन्द्रमा आप के लिये शुभफल देने वाले हैं यह महीना हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुजरेगा, घर पर कोई शुभ महोत्सव मनाने का प्रोग्राम में बनेगा जिस की आप बहुत दिनों से प्रतीक्षा में थे, विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से सफलता का महीना।

नवम्बर:- मास के आरम्भ पर अशुभ ग्रहों का पलड़ा भारी है परन्तु गोचर चक्र में बृहस्पति तथा शनि की स्थिति अच्छी होने के कारण अशुभ ग्रहों का पलडा भारी होने से आप पर कोई कुप्रभाव नहीं हो सकता है आप का कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा, कारोबारी होने पर आशा से अधिक लाभ का योग।

दिसम्बर:- शुभाशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होने से आप का काम सुचारू रूप से चलता रहेगा आप नौकरी करते है या कारोबार आप के काम में वृद्धि ही होगी, गृहस्थी होने पर सन्तान पक्ष की ओर से कोई शुभ समाचार मिलने का योग, यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो थोड़ा परिश्रम करने से ही आप का यह मसला हल होगा।

जनवरी:- नये वर्ष का पहला महीना आप के लिये कोई विशेष शुभ समाचार लेकर नहीं आया है परन्तु किसी अनिष्ट का सूचक भी नहीं है आप जो भी कार्य करते है नौकरी या कारोबार आप का काम चलता रहेगा परन्तु आमदनी खर्च के अनुरूप न होने के कारण अशान्ति का योग, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

फरवरी:- मास के आरम्भ पर चार ग्रहों का शुभ होना तथा शेष ग्रहों का अशुभ होना संघर्ष का सूचक है परन्तु संघर्ष का होते हुये भी अन्ततः लाभदायक ही रहेगा, यदि आप नौकरी करते हैं तो दफ्तर का माहोल आप के अनुकूल न रहते हुये भी अफसर लोगों के साथ अच्छी प्रकार बनती रहेगी।

मार्च:- ग्रहों की स्थिति को वेधाषृक वर्ग तथा दृष्टि पर परखने से मालूम होता है कि यह मास हर प्रकार से तथा

हर दृष्टि से ढांवा-ढोल स्थिति में ही गुजरेगा आप जो भी कार्य करते हैं बिना रुकावट के हल नहीं होगा गृहस्थी होने पर स्त्री पक्ष की ओर से चिन्ता, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

कन्या राशि का वर्ष फल

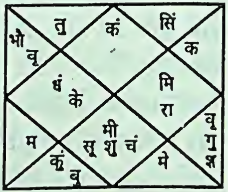

वर्ष के आरम्भ पर छः ग्रहों का शुभ होना तथा तीन अशुभ ग्रहों में से एक ग्रह का वेध में होना हर प्रकार से सुख और सम्पति का सूचक है, गोचर चक्र में तीसरा भौम, सातवां चन्द्र, छठः बुध, नवां बृहस्पति होने से धन लाभ छोटी तथा लाभदायक यात्रा, व्यापार में लाभ, स्वस्थ शरीर, वाहन की प्राप्ति, धातुओं से धन लाभ, राज्यकर्मचारियों की ओर से लाभ, धन में वृद्धि, तर्क शक्ति में बढ़ोत्तरी, धन, अन्न तथा उत्तम वस्त्रों की प्राप्ति, अच्छे तथा मनोरंजक पुस्तकें पढने की ओर प्रवृति, शत्रुओं पर विजय, शारिरिक तथा मानसिक सुख का योग, लेख तथा वाद्य कला में ख्याति क्रा योग, पुत्र जन्म का योग, राज्य में मान तथा पदोन्नति का योग, हर कार्य में सफलता, धर्म के कार्यों में रुचि इत्यादि फल गोचर शास्त्र के अनुसार है। गोचर चक्र के ग्रहों पर विचार करने से विदित होता है कि यह वर्ष कन्या राशि वालों के लिये हर प्रकार से लाभदायक रहेगा आप जो भी कार्य करते हैं आप ईमानदारी से उस में जुट जाये आप को आशा से अधिक लाभ होगा यदि आप किसी सियासी पार्टी से सम्बन्धित हैं अथवा लेखक हैं या कवि आप अपने कार्य में हर प्रकार से सफल रहोगे परन्तु सफलता आप को तभी मिलेगी जब आप ईमानदारी से जनता की सेवा में जुट जाओगे, विद्यार्थी वर्ग के लिये यह वर्ष हर प्रकार से सफलता देने वाला है यदि आप उच्च विद्या के लिये कहीं विदेश जाने का कोई प्रोग्राम बनाते हैं तो उस को अमली रूप दीजिये, यदि आप को घर पर सन्तान पक्ष से कोई समस्या है चाहें वह विद्या सम्बन्धित है नौकरी सम्वन्धित है अथवा विवाह सम्बन्धित इस प्रकार की कोई भी समस्या इस वर्ष में हल होगी।

कन्या राशि का मासिक फल

अप्रैल:- इस मास के ग्रहों की स्थिति के अनुसार यह

महीना हर प्रकार से लाभदायक ही रहेगा, रुके हुये कामों का हल होना आरम्भ हो जायेगा, घर में एक प्रकार से शान्ति का दौर आरम्भ होगा, आप की आमदनी भी सन्तोषजनक रहेगी, विद्या प्राप्ति के लिये भी उत्तम महीना।

मईः- मास के आरम्भ पर ही बुध आठवें भाव में गया है जिसके प्रभाव से धन लाभ, पुत्र सुख, हर कार्य में सफलता तथा प्रसन्नता, आप की आर्थिक तथा मानसिक स्थिति अच्छी रहेगी, घर पर कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा, विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से सफलता देने वाला मास।

जूनः- मास के आरम्भ पर शुभ ग्रहों का पलडा भारी होने के कारण यह महीना अच्छी प्रकार से गुजरेगा आपका प्रत्येक कार्य बिना किंसी रुकावट के चलता रहेगा परन्तु चौथा भौम तथा नवां सूर्य होने के कारण शत्रु पक्ष आप कर हावी होने की कोशिश करेगा, जमीन जायदाद की समस्यायें उत्पन्न होने का योग।

जुलाईः- जुलाई मास से वृहस्पति का दसवें भाव में आना कन्या राशि वालों के लिये शुभ फल का संकेत नही है शेष ग्रहों की स्थिति अच्छी होने पर भी प्रत्येक कार्य में संघर्ष करना पडेगा तभी सफलता मिल सकती है, आदर व मान में कमी का योग, विद्यार्थियों के लिये भी संघर्ष का महीना।

अगस्तः- मास के आरम्भ पर शुभाशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होना संघर्ष का ही सूचक है परन्तु दो ग्रहों का वेध ा में होना शुभ फल के ही सूचक है क्योंकि वेध में गया हुआ अशुभ ग्रह शुभ फल को देता है जिस कारण यह महीना हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुजरेगा आप की आमदनी भी आशानुरूप होगी।

सितम्बरः- मास के आरम्भ पर अशुभ ग्रहों ने चारों और अपने जाल को फैलाया है जिस के कारण यह मास ढांवा ढोल स्थिति में ही गुजरेगा आप के बने बनाये काम बिगड जायेगे जो कि आप के लिये परेशानी का कारण बनेगा, अशुभ ग्रह आप के आमदनी को भी प्रभावित करेंगे, अशुभ ग्रहों के क्रूर प्रभाव को शान्त करने के लिये आप गायत्री मन्त्र का उच्चारण प्रातः 111 बार करें।

अक्टूबरः- इस मास के आरम्भ पर ग्रहों में कोई खास परिवर्तन न होने के कारण यह महीना भी गत माह की तरह

संघर्ष के माहोल में ही गुजरेगा आमदनी में थोड़ा सा परिवर्तन आने पर भी खर्च का प्रवल योग है, कोई जमीन जायदाद सम्बन्धित समस्या होगी तो वह हल होने का योग, विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का महीना।

नवम्बरः- इस मास के ग्रहों को वेधाषृक वर्ग तथा दृष्टि की कसौटी पर परखने से मालूम होता है कि यह मास सर्वसाधारण स्थिति में ही गुजरेगा आमदनी भी खर्च के अनुसार ही रहेगी, घर पर अतिथियों का आना जाना जोरों पर रहेगा, नौकरी पेशा होने पर विभागीय प्रमोशन का योग।

दिसम्बरः- शुभाशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होने से यह मास हर प्रकार से सुख, शान्ति के माहोल में गुजरेगा आप जो भी कार्य करते हैं आप का काम विना किसी रुकावट के चलता रहेगा आप की आमदनी में आशा से अधिक वृद्धि होगी, कारोबारी होने पर कारोबार में चार चान्द लगने का योग, विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का महीना।

जनवरीः- नये वर्ष का पहला मास आप के लिये अभीष्ट की सिद्धि, सभी कार्यों में सफलतापूर्वक सिद्धि, स्वस्थ शरीर, राज्य की ओर से धन तथा सम्मान की प्राप्ति, नौकरी में पदोन्नति तथा गृहस्थ सुख ले कर आया है कारोवारी होने पर यदि आप अपने काम को वढाना चाहते हैं। तो इस मास की ग्रह चाल से लाभ उठाये।

फरवरीः- इस मास के ग्रहों पर विचारे करने से विदित होता है कि यह मास गत मास की अपेक्षा कुछ नरम ही रहेगा परन्तु आमदनी पर कोई विशेष असर नहीं पडेगा सातवां भौम आप के शरीर पर प्रभाव डाल सकता है अतः आप शरीर के विषय में सावधान रहें, शरीर को स्वस्थ रखने के लिये आप रोज़ **गायत्री चालीसा** का पाठ करें।

मार्चः- मास के आरम्भ पर आठवां भौम आप के शरीर को वनता विगाड़ता रहेगा यह आप के हर कार्य में रुकावट ला सकता है यह मास संघर्ष के माहोल में ही गुजरेगा, यदि आप विवाहित है और शरीर से ठीक है तो स्त्री की शारीरिक चिन्ता आप को घेरे रहेगी, विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का महीना।

तुला राशि का वर्ष फल

वर्ष के आरम्भ पर केवल दो ग्रह सूर्य तथा चन्द्रमा शुभ स्थिति में है शेष सभी अशुभ स्थिति में होने से यह वर्ष तुला राशि वालों के लिये संघर्ष का ही सूचक है गोचर चक्र में केन्द्र का खाली होना फलित शास्त्र में एक प्रकार का मनहूस योग माना जाता है अतः इस मनहूस योग से आप के बने बनाये कार्य में विध्न अथवा रुकावट का योग, पांचवां बुध होने से मानसिक पीड़ा, योजनायें बनाने पर समय का दुरूपयोग, सन्तान पक्ष तथा स्त्री पक्ष से चिन्ता, आर्थिक क्षेत्र में परेशानी, आठवां वृहस्पति तथा शनि होने से चोट आदि का भय, कठोर वचन बोलने की प्रवृति, नौकरी पेशा होने पर नौकरी छोड़ने की नौबत, धन की हानि, कार्यों में असफलता, समाज में अपमानित होने का भय, दुष्ट व्यक्तियों की मित्रता के कारण कई प्रकार की परेशानियां इत्यादि गोचर शास्त्रों में दरज है। गोचर चक्र के ग्रहों को वेधाषृक वर्ग दृष्टि इत्यादि सूत्रों द्वारा परखने से विदित होता है कि अशुभ ग्रहों का पलडा भारी होने पर भी तुला राशि वालों के लिये यह वर्ष अन्ततः लाभदायक ही रहेगा कारोवारी होने पर यद्यपि आशानुसार लाभ होगा नहीं परन्तु किसी प्रकार से हानि का योग भी नहीं है, नौकरी पेशा वालों के लिये यह वर्ष अग्नि परीक्षा का वर्ष है खासतौर से वर्ष के पूर्वार्ध में अपने अफसर लोगों से वनती विगड़ती रहेगी जो कि आप के लिये परेशानी का कारण वनेगा आप अपने कार्य में ईमानदारी से जुट जाओ नहीं तो आप पर झूठा आरोप लगने का योग वनता है जो कि आप के भविष्य के लिये हानि कारक सिद्ध होगा, यदि आप विद्यार्थी हैं तो आप के लिये जून तक का समय संघर्ष का ही रहेगा, सफलता आशा के अनुरूप नहीं होगी, जुलाई मास से वृहस्पति आप के नवें भाव में आता है जो आप के लिये हर प्रकार से सफलता दायक है।

तुला राशि का मासिक फल

अप्रैल:- इस मास के आरम्भ पर केन्द्र का खाली होना संघर्ष की ओर इशारा है आप का कोई भी कार्य विना किसी रुकावट के हल होगा नहीं विशेषतौर से आप की आर्थिक

स्थिति प्रभावित होगी यदि आप कारोबार करते हैं तो नुकसान का योग अथवा पैसा बाहर फंस जाने का योग बनता है।

मई:- मास के आरम्भ पर मंगल का तीसरे भाव में आने से धन लाभ, राज्यकर्मचारियों की ओर से लाभ, तर्क शक्ति में बढ़ोत्तरी यदि आप की जन्म कुण्डली में बृहस्पति की स्थिति ठीक है तो यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहौल में गुजरेगा यदि नहीं तो संघर्ष के लिये तैयार रहें तभी किसी कार्य में लाभ की आशा रखें।

जून:- यह महीना गत मास की अपेक्षा कुछ ठीक ही है परन्तु जिस की आप इच्छा करते हैं उस में अभी प्रतीक्षा की जरूरत है आप की आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति संतोषजनक न होने से मानसिक चिन्ता, विवाहित होने पर स्त्री के शरीर की चिन्ता अथवा घर के किसी वृद्ध पुरुष के शरीर की चिन्ता।

जुलाई:- मास के प्रारम्भ पर ही ग्रहों में विशेष सुधार होने के कारण यह महीना शान्ति से गुजरेगा लाभ की दृष्टि से भी यह महीना उत्तम रहेगा यदि आप नौकरी करते हैं तो अफसर लोगों के साथ मिलने जुलने का अवसर मिलेगा जो कि भविष्य में लाभदायक रहेगा। विद्या प्राप्ति के लिये यह महीना उत्तम है क्योंकि बृहस्पति नवें भाव में आया है।

अगस्त:- शुभाशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होने के कारण यह महीना संघर्ष का होते हुये भी हर प्रकार से लाभदायक ही रहेगा, नवां बृहस्पति तथा शुक्र आप को प्रत्येक कार्य में सफलता देने वाला है घर पर कोई मांगलिक कार्य करने का प्रोग्राम बनेगा जिस की प्रतीक्षा आप बहुत समय से कर रहे है।

सितम्बर:- ग्रहों की स्थिति कुछ डांवा डोल होने के कारण यह महीना संघर्ष में ही गुजरेगा आप जो भी कार्य करते हैं उस में अचानक रुकावट का योग जो कि आप की परेशानी का कारण बनेगा, गृहस्थी होने पर घर के किसी वृद्ध पुरुष अथवा स्त्री के शरीर की चिन्ता।

अक्टूबर:- मास के आरम्भ पर ग्यारहवां शुक्र, नवां बृहस्पति तीसरा भौम शुभफल देने के सूचक है इस के प्रभाव से यह महीना हर प्रकार से शान्ति के माहौल में गुजरेगा आप जो भी काम करते हैं आप का काम अच्छी प्रकार से

चलता रहेगा, धार्मिक कार्यों की ओर प्रवृति बढेगी, कई महात्माओं से मिलने का योग, सामाजिक कार्यों की ओर प्रवृति।

नवम्बरः- मास के आरम्भ पर पहला सूर्य तथा चौथा भौम और आठवां शनि आप के शरीर को अवश्य प्रभावित करेगा अतः आप शरीर के विषय में सावधान रहें, नवां बृहस्पति होने से किसी प्रकार के भय का कोई योग नहीं है, विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से सफलता का महीना।

दिसम्बरः- मास के आरम्भ पर केन्द्र का खाली होना शुभफल का सूचक नहीं है जिस कारण यह महीना सर्व साधारण रूप से ही गुजरेगा आप का कोई भी कार्य विना रुकावट के सिद्ध होगा नहीं, अशुभ ग्रहों को शान्त करने के लिये आप नित्य 'गायत्री' मन्त्र का उच्चारण करते रहें।

जनवरीः- नये वर्ष का पहला मास शुभ फल की ओर इशारा करता है ग्रहों की स्थिति को देखते हुये यह मास हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहौल में गुजरेगा आप की आमदनी में आशा से अधिक वृद्धि होगी, कारोवारी होने पर आप के काम में बढ़ावा मिलेगा, सन्तान पक्ष की ओर से कोई शुभ सन्देश।

फरवरीः- शुभ ग्रहों का पलड़ा भारी होना सुख और लाभका सूचक है आप कारोबार करते हैं या नौकरी आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा और लाभ भी मिलेगा यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो इस महीने में इस प्रकार के कागज़ात हरकत में आयेंगे अथवा नौकरी मिलने का भी अवसर है।

मार्चः- सातवां भौम, आठवां शनि और राहु आप के शरीर को प्रभावित कर सकते है अतः आप शरीर के विषय में सावधान रहें, यह आप के कार्य में भी रुकावट ला सकता है गृहस्थी होने पर स्त्री पक्ष अथवा घर के किसी वृद्ध पुरुष के शरीर सम्बन्धित चिन्ता का योग।

वृश्चिक राशि का वर्ष फल

वर्ष के आरम्भ पर केवल दो ग्रह चौथा बुध तथा पांचवां शुक्र शुभ स्थिति में हैं शेष सभी ग्रह अशुभ

स्थिति में होने से शारीरिक तथा मानसिक शक्ति में कमी, धन हानि, राज्याधिकारियों से वादविवाद, यात्रा में कष्ट, दुर्घटना का योग अथवा रक्त विकार या बवासीर का योग, आर्थिक स्थिति में कई प्रकार की अड़चने तथा धन की गति में रुकावट का योग, घर से दूर रहने का योग, स्त्री के रोगी रहने का भय, नौकरी पेशा वाले को नौकरी छूट जाने की नौबत आ सकती है। चौथा बुध तथा पांचवां शुक्र होने से धन प्राप्ति, मातृ सुख जमीन जायदाद में वृद्धि, अच्छे विद्वानों तथा भद्र पुरुषों तथा उच्च पदस्थ लोगों के साथ मित्रता, घरेलू जीवन का सुख, अन्न तथा धन की प्राप्ति, यश की वृद्धि, विभागीय परीक्षाओं में सफलता इत्यादि गोचर शास्त्रों में लिखा है ऊपरलिखित ग्रहों की स्थिति को देखते हुये विदित होता है कि यह वर्ष वृश्चिक राशि वालों के लिये अग्नि परीक्षा का वर्ष होगा आप जो भी कार्य करते हैं नौकरी अथवा कारोबार दोनों में उतार चढाव देखने में आयेगा आप की आर्थिक स्थिति भी बेढंगी रहेगी कभी धन की अधिकता तो कभी धन की कमी तो कभी उधार लेने की नौबत भी आ सकती है विद्यार्थियों के लिये भी यह वर्ष विशेष सफलता देने वाला नहीं है यदि आप क्रूर ग्रहों के क्रूर फल से बचना चाहते है तो आप नित्य नियम से भगवान् शंकर पर दूध वाला जल चढायें तथा "ॐ **नमः शिवाय**" मन्त्र का उच्चारण करते रहें तभी कुछ सुधार होने की सम्भावना है।

वृश्चिक राशि का मासिक फल

अप्रैलः- मास के आरम्भ पर ग्रहों की स्थिति को देखने से विदित होता है कि यह मास संघर्ष का ही रहेगा कोई भी कार्य विना रुकावट के हल नहीं होगी यदि आप सन्तान पक्ष से चिन्तित है तो यह मसला इस वर्ष भी लटकात ही रहेगा।

मईः- ग्रहों की स्थिति में सुधार होने के कारण यह महीना शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा आप जो भी काम करते हैं आप का काम विना किसी रुकावट के चलता रहेगा, आमदनी में भी थोड़ा सा बदलाव देखने में आयेगा।

जूनः- 10 जून को भौम वक्री होकर लग्न में आ रहा है जो कि आप के शरीर को अवश्य प्रभावित करेगा वह आप के स्वभाव पर भी प्रभाव डाल सकता है स्वभाव में

चिड़चिडाहट व्याप्त रहेगी, जो आप के पूरे माहोल को प्रभावित कर सकता है। विद्या प्राप्ति के लिये भी संघर्ष का ही महीना।

जुलाई:- मास के प्रारम्भ पर केवल शनि देव शुभ स्थिति में हैं शेष सभी ग्रह अशुभ स्थिति में हैं इन के प्रभाव से यह महीना तंगदस्ती में ही गुजारना पडेगा यदि आप कारोबार करते हैं तो आप का काम धीमी गति से चलेगा, लोगों के पास पैसा फंसने का योग, विद्यार्थियों के लिये परेशानी का ही महीना।

अगस्त:- केवल आठवां शुक्र का शुभ स्थिति में होना शुभफल की ओर इशारा नहीं है यह महीना दौड़ धूप के माहोल में ही गुजरेगा बने बनाये काम बिगड़ने का योग, यदि आप नौकरी करते है तो आप पर झूठा आरोप लगने का योग बनता है, कारोबारी होने पर हानि का योग।

सितम्बर:- मास के आरम्भ पर कुछ ग्रहों में सुधार होने से यह महीना शान्ति का सांस लेने देगा। आप अपने कार्य में मन लगा कर जुट जाये आप को सफलता तथा लाभ अवश्य मिलेगा यदि आप को सन्तान पक्ष की ओर से कोई परेशानी है तो उस का समाधान भी इस महीने में ज़रूर होगा।

अक्टूबर:- ग्रहों की अस्त व्यस्त स्थिति के फलस्वरूप यह महीना दौड़-धूप का होते हुये भी अन्ततः लाभदायक ही रहेगा यद्यपि आमदनी में विशेष वृद्धि होगी भी नहीं परन्तु किसी से मांगने की नौबत भी नहीं आयेगी, विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का महीना।

नवम्बर:- मास के आरम्भ पर चार ग्रहों का शुभ होना तथा दो ग्रहों का वेध में होना शुभफल की ओर इशारा है बहुत देर से रुके हुये कार्यों का हल निकल आयेगा आप की आमदनी में भी आशा से अधिक वृद्धि होगी कारोवारी होने पर कारोबार में बढावा मिलेगा, विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का ही महीना।

दिसम्बर:- ग्रहों की स्थिति को देखने से मालूम होता है यह महीना दौड़ धूप में ही गुज़रेगा, केवल एक ग्रह शुक्र का शुभ होना संघर्ष का ही सूचक है, गृहस्थी होने पर स्त्री पक्ष

की ओर से चिन्ता का योग, नौकरी पेशा होने पर दफ्तर का माहोल आप के अनुकूल नहीं रहेगा कारोबारी होने पर नुकसान का योग।

जनवरीः- मास के आरम्भ पर बृहस्पति तथा शनि की स्थिति ठीक न होने से अशुभफल की ओर इशारा है फलित शास्त्र के अनुसार इन दोनों ग्रहों की स्थिति अच्छी होनी चाहिये, तब ही मुनष्य कुछ कर सकता है इस नये वर्ष का पहला मास विशेष लाभदायक नहीं रहेगा विद्या प्राप्ति के लिये भी मध्यम ही है।

फरवरीः- मास के आरम्भ पर तीसरा सूर्य तथा शुक्र होने से रोगों से मुक्ति, अच्छे पुरुषों एवं अपने अफसर लोगों के साथ मिलना-जुलना, सगे-सम्बन्धियों से धन लाभ प्रत्येक कार्य में सफलता, शत्रुओं पर विजय, धन प्राप्ति, मान सम्मान में वृद्धि, धार्मिक कार्यों में रुचि, विद्यार्थियों के लिये दौड़ धूप का महीना।

मार्च :- ग्रहों की स्थिति तथा ग्रहों को वेधाष्टक वर्ग की कसौटी पर परखने से विदित होता है कि यह महीना दौड़ धूप के माहोल में ही गुजारना होगा, आप का प्रत्येक कार्य बनता बिगड़ता रहेगा आप की आमदनी भी डांवा डोल ही रहेगी नौकरी पेशा होने पर अपने अफसर लोगों के साथ अनबन का योग, विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का महीना।

धनु राशि का वर्ष फल

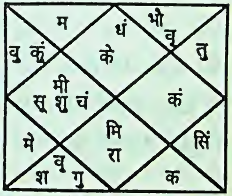

वर्ष के आरम्भ पर केवल चौथा शुक्र शुभ स्थिति में है शेष सभी ग्रह अशुभ स्थिति में हैं इन में से चार ग्रह सूर्य, चन्द्रमा, बृहस्पति तथा बुध वेध में होने से शुभ फल के सूचक है क्योंकि वेध में गया हुआ ग्रह शुभफल का सूचक होता है तो इस मिले जुले योग के प्रभाव से धनु राशि वालों के लिये यह वर्ष दौड़-धूप का ही वर्ष होगा यदि जन्म चक्र में बृहस्पति तथा शनि की स्थिति अच्छी है तो धनु राशि वालों के लिये यह वर्ष हर प्रकार से सुख और शान्ति से गुज़रेगा यदि जन्म चक्र में स्थिति कमज़ोर होगी तो यह वर्ष दौड़-धूप संघर्ष तथा चिन्ताओं से युक्त रहेगा, किसी भी कार्य में रुचि नहीं रहेगी, कोई भी काम बिना रुकावट के हल नहीं होगा, यदि आप नौकरी करते हैं तो स्थान परिवर्तन का योग

जो कि आप के लिये समस्यायें खडा करेगा यदि आप कारोबार करते है तो अचानक हानि का योग अथवा लोगों के पास पैसा फंस जाने का योग जो कि आप के कारोबार में झटका ला सकता हैं अतः आप इस विषय में सावधान रहें यदि आप सियासत अथवा किसी सामाजिक गठबन्धन के साथ सम्बन्ध रखते हैं तो आप पर झूठा आरोप लगने का योग। जिस से आप की सामाजिक स्थिति धूमिल हो सकती है ग्रहों के कुप्रभाव को कम करने के लिये आप नित्य **'गायत्री चालीसा'** का पाठ किया करें। विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का ही महीना।

धनु राशि का मासिक फल

अप्रैलः- मास के आरम्भ पर बारहवां मंगल होने से धन का फजूल खर्च, घर से बाहर रहने का योग, अपने सगे सम्बन्धियों के साथ अनबन तथा विशेषतौर से यह आप के शरीर को भी प्रभावित कर सकता है शेष ग्रहों की स्थिति ठीक होने के कारण किसी प्रकार की हानि का कोई योग नहीं हैं।

मईः- शुभाशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होने के कारण यह महीना सर्व साधारण रूप से गुजरेगा आप की आमदनी भी सन्तोषजनक ही रहेगी आप जो भी काम करते है आप का काम चलता रहेगा, विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का महीना।

जूनः- पहले भाव का मंगल शरीर सुख का सूचक नहीं है मंगल जिस को ज्योतिष शास्त्र में खून का स्वामी माना गया है के कारण रक्त विकार अथवा चोट का भय, आप की आर्थिक स्थिति ठीक ही रहेगी परन्तु खर्च के बड़े-बड़े प्रोग्राम बनते रहेंगे, विद्या प्राप्ति के लिये दौड़-धूप का ही महीना।

जुलाईः- छठा शुक्र, बुध तथा ग्यारहवां चन्द्रमा होने से धन, अन्न की प्राप्ति, अच्छे तथा मनोंरजक पुस्तक पढ़ने की ओर प्रवृति शत्रुओं पर विजय, शारीरिक तथा मानसिक सुख का योग, यदि आप को लिखने की प्रवृति है तो उसमें वृद्धि होगी।

अगस्तः- ग्रहों की चाल को देखने से विदित होता है कि यह महीना हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुजरेगा,

आमदनी में इजाफा न होने पर भी आप सन्तुष्ट रहेंगे, आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा गृहस्थी होने पर स्त्री प्रक्ष की ओर से कुछ लाभ मिलने का योग अथवा पुत्र जन्म का योग।

सितम्बरः- मास के आरम्भ पर दसवां बुध पदोन्नति का सूचक है यदि आप को दफ्तर में किसी प्रकार की प्रमोशन रुकी हुई है तो उस के मिलने का प्रबल योग है, कारोबारी होने पर कारोबार में वृद्धि तथा मानसिक सुख की प्राप्ति, घर पर कोई धार्मिक उत्सव मनाने का प्रोग्राम बनेगा।

अक्टूबरः- मास के ग्रहों को वेधाष्टक वर्ग तथा दृष्टि पर परखने से विदित होता है कि यह महीना संघर्ष का होते हुये भी अन्ततः लाभदायक ही रहेगा यदि आप को सन्तान पक्ष की ओर से कोई चिन्ता है तो वह इस मास में दूर होगी अथवा दूर हो जाने के आसार देखने में आयेंगे।

नवम्बरः- शुभाशुभ ग्रहों को देखने से मालूम होता हे कि यह महीना गत मास की तरह दौड़-धूप का ही रहेगा जितना परिश्रम आप करोगे उतना फल मिलने की आशा आप न रखें यदि आप नौकरी करते है तो अपने अफसर लोगों के साथ अनवन का योग।

दिसम्बरः- बारहवां शुक्र, तीसरा भौम तथा छठा शनि तथा चन्द्रमा का होना शुभ फल की ओर इशारा है इस शुभ योग के प्रभाव से धन अन्न की प्राप्ति, यदि आप कपड़े से सम्बन्धित काम करते हैं तो आप हानि के लिये तैयार रहें, नौकरी पेशा वालों के लिये हर प्रकार से लाभदायक महीना।

जनवरीः- नये वर्ष का पहला मास यद्यपि कोई शुभ समाचार लेकर नहीं आया है परन्तु किसी प्रकार के अनिष्ट का सूचक भी नहीं है इस मिले-जुले योग के फलस्वरूप यह महीना शान्ति के ही माहोल में गुज़रेगा, घर पर सगे-सम्बन्धियों का आना जाना जोरों पर रहेगा।

फरवरीः- मास के आरम्भ पर दूसरा बुध तथा शुक्र होने से आनन्द की प्राप्ति, विद्या प्राप्ति का उत्तम योग यदि आप सियासत के साथ सम्बन्ध रखते हैं तो आशा से अधिक लाभ का योग, सामाजिक स्थिति में आचानक अच्छाई की ओर परिवर्तन, जमीन जायदाद इत्यादि से कुछ लाभ।

मार्चः- मास के आरम्भ पर दूसरा बुध, तीसरा सुर्य और शुक्र होने से शरीर स्वस्थ, अच्छे-अच्छे पुरुषों के साथ

मेल-मिलाप, पद प्राप्ति, आर्थिक स्थिति में अचानक वृद्धि परन्तु खर्च के प्रोग्राम में बढोतरी होती जायेगी, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

मकर राशि का वर्ष फल

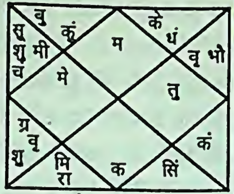

वर्ष के आरम्भ पर केन्द्र का खाली होना फलित ज्योतिष में मनहूस योग ही माना जाता है परन्तु छः ग्रहों का शुभ होना शुभ फल की ओर इशारा है इन ग्रहों के प्रभाव से रोगों से मुक्ति, सज्जनों एवं उच्च राज्याधिकारियों से मेल-मिलाप, पद प्राप्ति, शत्रुओं पर विजय, जनता से प्रेम, भाग्य में वृद्धि, धन धान्य की प्राप्ति, आमदनी में आशातीत वृद्धि, जमीन जायदाद से लाभ, वाहन का योग इत्यादि फलित शास्त्रों में दरज है। गोचर चक्र के ग्रहों को वेधाष्टक वर्ग तथा दृष्टि की कसौटी पर परखने से विदित होता है कि यह वर्ष मकर राशि वालों के लिये हर प्रकार से सुख, शान्ति तथा समृद्धि से युक्त होगा, आप जो भी कार्य करते है उसमें आशातीत सफलता तथा लाभ होगा, यदि आप कारोबार करते हैं तथा अपने कारोबार को बढावा देना चाहते हैं तो समय जाया मत कीजिये, आपके कारोबार को चार चान्द लगने का योग, यदि आप किसी सियासी पार्टी के साथ सम्बन्ध रखते हैं अथवा किसी सामाजिक संस्था से तो आप विश्वास रखें कि इस प्रकार के क्षेत्र में आप आशा से अधिक सफलता प्राप्त कर सकते हैं गृहस्थी होने पर यदि आप को लड़की अथवा लड़के के विवाह अथवा नौकरी सम्बन्धित कोई परेशानी हे तो इस प्रकार की परेशानी अवश्य हल होगी अथवा हल होने के आसार दिखाई देंगे, यदि आप में लेखक बनने की प्रवृति है तो आप विश्वास रखें इस प्रकार के स्वप्ने अवश्य पूरे होंगे, विद्यार्थियों के लिये यह वर्ष हर प्रकार से सफलता देने वाला वर्ष है यदि आप उच्च विद्या के लिये कहीं जाने का प्रोग्राम बनाते हैं तो उस प्रोग्राम को अमली रूप दीजिये।

मकर राशि का मासिक फल

अप्रैल:- मास के आरम्भ पर शुभ ग्रहों का पलड़ा भारी होना शुभ फल की ओर इशारा है इस शुभ योग के प्रभाव

से आप को प्रत्येक कार्य में सफलता के साथ-साथ लाभ का योग, नौकरी पेशा हो पर डिपार्टमेन्टल प्रमोशन का योग, घर पर सगे-सम्बन्धियों का आना जाना जोरों पर रहेगा।

मई :- बारहवां भौम आपके शरीर को प्रभावित कर सकता है अतः आप शरीर के विषय में सावधान रहें उपाय के रूप में रोज़ गौ माता को आटे का पिण्ड खिलाया करें, गृहस्थी होने पर घर के किसी वृद्ध पुरुष अथवा स्त्री के शरीर की चिन्ता का योग।

जून :- 10 जून को भौम वक्री होकर ग्यारहवें भाव में आता है जो कि आमदनी की दृष्टि से उत्तम है इस कारण आप की आमदनी में वृद्धि होगी परन्तु खर्च के प्रोग्रामों में भी वृद्धि होगी, यदि आप को वाहन इत्यादि लाने का कोई प्रोग्राम है तो इस मास के ग्रह उसके अनुकूल हैं।

जुलाई :- 15 जून को ही बृहस्पति मिथुन राशि में आता है जो कि शुभ फल का सूचक नहीं है यह मास दौड़ धूप में ही गुजरेगा परन्तु किसी हानि का कोई योग नहीं है, विद्यार्थियों के लिये भी संघर्ष का ही महीना रहेगा, गृहस्थी होने पर स्त्री पक्ष की ओर से चिन्ता।

अगस्त :- मास के आरम्भ पर केवल एक ग्रह ग्यारहवां मंगल शुभ स्थिति में है शेष सभी ग्रह अशुभ स्थिति में। इस प्रकार ग्रहों की स्थिति को देखने से मालूम होता है कि यह मास भी गत मास की तरह दौड़ धूप तथा संघर्ष के माहोल में ही गुजरेगा परन्तु आप की आमदनी में किसी प्रकार की कमी नहीं होगी क्योंकि ग्यारहवां मंगल आप की आमदनी को प्रभावित होने नहीं देगा।

सितम्बर :- 24 अगस्त को भौम फिर से आप के बारहवें भाव में आया है जो कि आप के शरीर को प्रभावित करेगा शेष ग्रहों की स्थिति को देखने से मालूम होता है कि महीना शान्ति के माहोल में ही गुजरेगा, आप का काम बिना किसी अड़चन के चलता रहेगा।

अक्टूबर :- मास के आरम्भ पर शुभाशुभ ग्रहों का पलड़ा एक जैसा होने के कारण यह मास सुख शान्ति के माहोल में गुजरेगा आप जो भी काम करते है आप का काम चलता रहेगा घर पर कोई महोत्सव मनाने का प्रोग्राम बनेगा चाहे वह विवाह के विषय में हो अथवा कोई धार्मिक कार्य।

नवम्बरः- मास के आरम्भ पर अशुभ ग्रहों का पलड़ा भारी होना अशुभ फल का ही सूचक है जिस कारण यह मास अस्त व्यस्त माहोल में ही गुजरेगा कभी धन की कमी कभी धन की अधिकता, कारोबारी होने पर कई प्रकार के उतार चढाव देखने में आयेंगे, जो आपके आत्म विश्वास में कमी ला सकता है।

दिसम्बरः- मास के आरम्भ पर केन्द्र का खाली होना शुभफल का सूचक नहीं है परन्तु शेष ग्रहों की स्थिति गत मास की अपेक्षा सुधरी हुई है जिस के फलस्वरूप यह मास शान्ति के ही माहोल में गुजरेगा, छठः बृहस्पति होने से विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का महीना।

जनवरीः- ग्रहों की स्थिति को देखने से मालूम होता है कि नये वर्ष का पहला महीना मकर राशि वालों के लिये शुभ फल लेकर ही आया है आपकी आमदनी भी सन्तोषजनक रहेगी, गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग अथवा पुत्र जन्म का योग जिस की प्रतीक्षा आप बहुत समय से कर रहे थे।

फरवरीः- मास के आरम्भ पर कारोबार में अचानक वृद्धि का योग नौकरी पेशा होने पर विभागीय तरक्की का योग, यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो आप थोड़ा सा परिश्रम कीजिये, आप को सफलता मिलेगी अथवा इस प्रकार के कागजात हरकत में आयेंगे।

मार्चः- मास के आरम्भ पर चौथा भौम होने से रक्त विकार अथवा चोट का भय, यदि आप अविवाहित हैं और विवाह के चक्कर में है तो इस में अभी समय लगेगा, आप की आमदनी सन्तोषजनक रहेगी, घर के किसी वृद्ध पुरुष के शरीर की चिन्ता का योग।

कुम्भ राशि का वर्ष फल

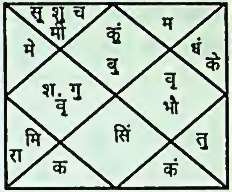

गोचर चक्र में दूसरा सूर्य, चन्द्रमा, पहला बुध चौथा बृहस्पति, शनि तथा दसवां भौम होने से दुष्ट तथा बुरे कर्म वाले लोगों के साथ मुलाकात, बुरे कार्यों की ओर प्रवृति, व्यापारी होने पर हानि का योग, मानसिक असन्तोष, कुटम्ब से अनबन, कार्यों में असफलता पाप कर्मो की ओर प्रवृति, विद्या में असफलता, तामसिक पदार्थों की ओर प्रवृति, किसी कारणवंश घर से

बाहर रहने का योग, धन प्राप्ति का योग, धन हानि, फजूल बन्धनों में फसने का योग, छोटे-छोटे झगड़ों के कारण धन हानि तथा मान हानि का योग, मानसिक अशान्ति हर एक के साथ शत्रुता का दौर, जमीन जायदाद सम्बन्धित उलझनों का भय इत्यादि फलित गोचर के अनुसार फल लिखा है वर्ष के आरम्भ पर केवल एक ग्रह दूसरा शुक्र शुभ स्थिति में है शेष सभी ग्रह अशुभ स्थिति में है परन्तु चार ग्रहों का वेध में होना शुभ फल की ओर इशारा है इस शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति को देखने से मालूम होता है कि कुम्भ राशि वालों के लिये यह वर्ष दौड़-धूप का होते हुये भी अन्ततः हर प्रकार से लाभदायक ही रहेगा, आर्थिक दृष्टि से यद्यपि यह वर्ष मध्यम ही है परन्तु खर्च के बड़े-बड़े प्रोग्राम बनते रहेंगे जो खर्च अच्छे कार्यों पर ही होगा जिस की प्रतीक्षा में आप बहुत समय से बैठे थे, विद्यार्थियों के लिये यह वर्ष सफलता देनें वाला वर्ष ही है परन्तु जिस प्रकार की आप आशा करते हैं ऐसा होना असम्भव ही है क्योंकि वर्ष के आरम्भ पर ही राहु आप के विद्या स्थान में बैठा है जो कि शुभ फल का सूचक नहीं है।

कुम्भ राशि का मासिक फल

अप्रैलः- मास के आरम्भ पर शुभाशुभ ग्रहों पर विचार करने से मालूम होता हे यह मास सर्वसाधारण रूप से गुजरेगा आप का काम बिना किसी अड़चन के चलता रहेगा कारोबारी होने पर भावों की अस्थिरता के कारण आप का काम मध्यम ही रहेगा, विद्या प्राप्ति का उत्तम योग।

मईः- मास के आरम्भ पर तीसरा सूर्य, छठः चन्द्रमा तथा ग्यारहवां भौम होने से रोगों से मुक्ति, सज्जनों एवं उच्च राज्याधिकारियों से मेल मिलाप, सगे सम्बन्धियों से धन लाभ, पदोन्नति, स्वस्थ शरीर, यश तथा आनन्द की प्राप्ति, खर्च की अधिकता, धन धान्य की प्राप्ति, आमदनी में आशा से अधिक वृद्धि।

जूनः- शुभाशुभ ग्रहों को वेधादि कसोटी पर परखने से मालूम होता है कि यह मास हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुजरेगा आप का प्रत्येक कार्य बिना किसी रुकावट के चलता रहेगा, गृहस्थी होने पर पुत्र जन्म का योग अथवा इस प्रकार का शुभ सन्देश मिलने का योग।

जुलाई:- मास के आरम्भ पर पांचवा बृहस्पति विद्या प्राप्ति के लिये शुभ है यदि आप को सन्तान पक्ष की ओर से कोई परेशानी है तो वह इस मास में दूर हो जायेगी अथवा इस प्रकार के आसार दिखाई देगें चाहे वह विवाह सम्बन्धित हो अथवा नौकरी सम्बन्धित।

अगस्त:- पांच ग्रहों का शुभ होना शुभ फल की ओर इशारा है इस शुभ योग से यह महीना हर प्रकार से लाभदायक रहेगा आमदनी की दृष्टि से भी यह महीना उत्तम है कारोबारी होने पर कारोबार में चार चान्द लगने का योग परन्तु यदि आप ड्राई फ्रूट से सम्बन्ध रखते है तो उस में कई प्रकार के उतार चढाव देखने में आयेंगे।

सितम्बर:- यह महीना भी गत मास की तरह हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुजरेगा घर पर कोई महोत्सव इत्यादि मनाने का प्रोग्राम बनेगा जिस की प्रतीक्षा आप बहुत समय से कर रहे थे आप की आर्थिक स्थिति भी सन्तोषजनक रहेगी, गृहस्थी होने पर पुत्र सुख का योग।

अक्टूबर:- शुभाशुभ ग्रहों के देखते हुये यह मास दौड़-धूप का होते हुये भी अन्ततः हर प्रकार से लाभदायक रहेगा नौकरी पेशा होने पर पदोन्नति का योग, यदि आप शेयर अथवा ठेकेदारी से सम्बन्ध रखते हैं तो आप हर प्रकार से लाभ में रहेंगे, विद्यार्थियों के लिये भी हर प्रकार से सफलता देने वाला मास।

नवम्बर:- मास के आरम्भ पर बारहवां भौम आप के शरीर को प्रभावित करेगा विशेष तौर से रक्त विकार अथवा चोट का भय, यदि आप शरीर से स्वस्थ है तो घर के किसी सदस्य की शारीरिक चिन्ता का योग, आप की आमदनी एक जैसी रहेगी, सगे सम्बन्धियों का आना जाना जोरों पर लगा रहेगा।

दिसम्बर:- भौम का लग्न में जाना किसी विशेष फल का सूचक नहीं है इस के प्रभाव से आप का स्वभाव भी चिड़चिड़ेपन से युक्त होगा आप जो भी काम करते हैं आप का काम चलता रहेगा नौकरी पेशा होने पर अपने अफसर लोगों के साथ मित्रता का जैसा माहोल बनेगा, विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम महीना।

जनवरीः- नये वर्ष का पहला मास कुम्भ राशि वालों के लिये शुभ समाचार लेकर ही आया है आप की आमदनी में आशा से अधिक वृद्धि होगी पर खर्च के बड़े-बड़े प्लान बनते रहेंगे परन्तु खर्च सार्थक कामों पर ही होगा, विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम महीना।

फरवरीः- मास के आरम्भ पर सूर्य तथा बुध का बारहवें भाव में आना हानि अथवा फजूल खर्च का सूचक है कारोबारी वर्ग को चाहिये कि वह सोच समझ से अपने कार्य में लगे नहीं तो हानि का मुंह देखना पडेगा।

मार्चः- शुभाशुभ ग्रहों के अनुसार यह महीना संघर्ष का होते हुये भी लाभदायक ही रहेगा आमदनी तथा खर्च का योग एक जैसा रहेगा, गृहस्थी होने पर सन्तान पक्ष की ओर से कुछ शुभ सन्देश मिलने का योग, घर पर मेहमानों का आना जाना जोरों पर रहेगा।

मीन राशि का वर्ष फल

वर्षारम्भ पर केवल तीन ग्रहों का शुभ होना तथा शेष ग्रहों का अशुभ होना संघर्ष की ओर ही इशारा है पहला चन्द्रमा शुक्र तथा तीसरा शनि होने से सुख और आनन्द की प्राप्ति, रोग मुक्ति, धन लाभ, शत्रु का नाश विवाह तथा सन्तान जन्म का योग, विद्या में सफलता, हर प्रकार से वैभव विलास की प्राप्ति, व्यापार में वृद्धि,

जलीय पदार्थों तथा सुगन्धित द्रव्यों तथा फैन्सी गुड्स आदि से धन की प्राप्ति, आरोग्य, पराक्रम तथा सुख में वृद्धि भूमि लाभ अथवा भूमि खरीदने का मौका इत्यादि गोचर शास्त्रों में दरज है इस प्रकार मीन राशि वालों के शुभाशुभ ग्रहों को वेधाष्टक वर्ग की कसौटी पर परखने से मालूम होता है कि यह वर्ष मीन राशि वालों के लिये संघर्ष का ही वर्ष है आप का कोई भी कार्य बिना किसी रुकावट के हल नहीं होगा यद्यपि आप की आर्थिक स्थिति सामान्य रूप से चलती रहेगी परन्तु खर्च के प्रोग्राम इस प्रकार के बनेंगे कि आप धन की कमी को महसूस करोगे परन्तु कमी होने पर भी किसी प्रकार की रुकावट नहीं आयेगी, यदि आप नौकरी करते हैं तो अपने अफसर लोगों के साथ बनती रहेगी परन्तु शत्रु पक्ष

आप पर हावी होने का प्रयत्न करेगा जो कि आप के लिये परेशानी का कारण बनेगा, यदि आप को जमीन जायदाद का कोई मसला है वह मसला लटकता ही रहेगा, शनि देव आप के पांचवें भाव को देख रहा है जिस के कारण विद्या प्राप्ति में रुकावटें आने का योग जिसकी आप कल्पना भी नहीं करते।

मीन राशि का मासिक फल

अप्रैल:- मास के आरम्भ पर अशुभ ग्रहों का पलड़ा भारी होना दौड़ धूप का ही सूचक है इस कारण इस महीने में दौड़ धूप अधिक रहेगी परन्तु किसी प्रकार की रुकावट का कोई योग नहीं है कारोबारी होने पर आप का काम जोरों पर रहेगा परन्तु भावों के उतार चढाव से मानसिक चिन्ता का योग।

मई:- मास के आरम्भ पर शुभाशुभ ग्रहों का पलड़ा एक जैसा होने के कारण यह मास शान्ति के माहोल में ही गुजरेगा आप की आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा आप जो भी काम करते है आप का काम बिना किसी रुकावट के चलता रहेगा, विद्या प्राप्ति के लिये संघर्ष का ही महीना।

जून:- इस मास के ग्रहों पर विचार करने से मालूम होता है कि यह मास हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुजरेगा आप नौकरी करते हैं या कारोबार आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा यदि आप अपने कारोबार को बढ़ावा देना चाहते हैं तो समय जाया मत कीजिये।

जुलाई:- इस मास के ग्रहों के अनुसार यद्यपि यह महीना दौड़ धूप का ही है परन्तु आर्थिक दृष्टि से हर प्रकार से लाभदायक, कारोबारी होने पर आशातीत लाभ का योग कई सज्जनों अथवा महात्माओं से मिलने का योग, गृहस्थी होने पर स्त्री पक्ष की ओर से कुछ लाभ की आशा।

अगस्त:- इस मास की ग्रहचाल को ध्यान में रखने से विदित होता है कि यह मास हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुजरेगा आप की आमदनी भी सन्तोषजनक रहेगी भाग्य स्थान में मंगल का होना शुभ माना जाता है, विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से सफलता देने वाला मास।

सितम्बर:- मास के आरम्भ पर शुभाशुभ ग्रहों का पलड़ा

एक जैसा होना शुभ फल का सूचक है आप जो भी काम करते हैं आप का काम विना किसी रुकावट के चलता रहेगा आप की आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक न होते हुये भी किसी प्रकार की हानी का योग नहीं है, विद्या प्राप्ति के लिये हर प्रकार से लाभदायक महीना।

अक्टूबरः- ग्रहों की स्थिति को देखने से मालूम होता है कि गत मास की अपेक्षा यह मास हर प्रकार से सुख, शान्ति तथा लाभ में रहेगा कारोबारी होने पर अचानक लाभ का योग नौकरी पेशा होने पर दफतर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा यदि आपको विभागीय पदोन्नति का प्रोग्राम है तो वह अवश्य मिलेगी।

नवम्बरः- मास के आरम्भ पर आठवां सूर्य तथा चौथा राहु आप के शरीर को प्रभावित करेगा अतः आप शरीर के विषय में सावधान रहें, अस्वस्थ शरीर आप को अपने काम में भी रुकावट ला सकता है आप नियमापूर्वक 'गायत्री मन्त्र' का उच्चारण किया करें तब कही आप आप स्वस्थ रह सकते हैं।

दिसम्बरः- मास के आरम्भ पर बारहवां भौम, चौथा राहु का होना शरीर सुख का सूचक नहीं है आप ऊपर लिखें उपाय को चालू रखें, शेष आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा आप की आमदनी भी सन्तोषजनक रहेगी, घर पर मेहमानों का आना जाना जोरों पर लगा रहेगा।

जनवरीः- नये वर्ष का पहला महीना यद्यपि कोई शुभ सन्देश लेकर नहीं आया है परन्तु किसी अनिष्ट का सूचक भी नहीं है अर्थात् यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुजरेगा, बारहवां भौम शरीर अस्वस्थ रहने का तथा फजूल खर्च का सूचक है, कारोबारी वर्ग के लिये हानी का सूचक भी है।

फरवरीः- मास के आरम्भ पर शुभ ग्रहों का पलड़ा भारी होना शुभ फल का सूचक है आप जो भी काम करते है उस में हर प्रकार से सफलता तथा लाभ रहेगा यदि आप अपने कारोबार को बढावा देना चाहते हैं तो यह समय उस के लिये अनुकूल है आप उसमें सफल रहेंगे।

मार्चः- शुभाशुभ ग्रहों को वेदादि कसौटी पर परखने से मालूम होता है कि यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल में ही गुजरेगा, आप की आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति में

विशेष परिवर्तन आने का योग नौकरी पेशा होने पर अपने अफसर लोगों के साथ अच्छी तरह बनती रहेगी।

शनि देव

शनि देव भगवान् सूर्य के लड़के है यह यमराज के भाई हैं, शनि का पराक्रम पूरी सृष्टि में व्याप्त है इन के गुरु भगवान् शंकर हैं, शनि को ज्योतिष में भी महत्व स्थान मिला है फलित ज्योतिष के अनुसार शनि जन्म कुण्डली में जिस स्थान में होता है उस के लिये वह शुभफलदायक होता है परन्तु जिस पर शनि देव की दृष्टि होती है उस स्थान के फल को वह नष्ट करता है, लिखा भी है।

"सौरिः स्वस्थान पालः परमभयकारी दृष्टिरस्य प्रणष्टा"

शनि का नाम लेने से ही मनुष्य कतराता है ज्योतिष में भी शनि को मारक तथा अशुभ माना गया है, पश्चिमी ज्योतिष भी इसे 'दुर्दैव' लाने वाला Evil Fate Bringer कहते हैं परन्तु इस बात को भूलिये मत कि शनि जिस पर अनुग्रह करेगा उस का तो कहना ही क्या, जन्म कुण्डली में यदि शनि की स्थिति अच्छी हो तो उस के लिये साढ सती का समय सोने पर सुहागा होता है।

साढ–सत्ती

मेष | वृष | मिथुन

मेषः- राशि वालों की साढ-सत्ती 7 अप्रैल 2003 को समाप्त होगी, शनि आप के चौथे, आठवें तथा ग्यारहवें भाव को प्रभावित कर रहा है आप की आमदनी में रुकावट का योग, यदि आप कारोबार करते हैं तो लोगों के पास पैसा फसने का योग जो आप के लिये परेशानी का कारण बनेगा यदि आप को जमीन, जायदाद का कोई मसला है उसके हल होने के आसार कम ही दिखते है, मातृ पक्ष की ओर से परेशानी का योग शनि देव आप के शरीर को भी थोड़ा बहुत प्रभावित करेगा परन्तु यह तभी होगा यदि जन्म कुण्डली में शनि की स्थिति अच्छी नहीं होगी। शनि के कुप्रभाव को कम करने के लिये शनि के वैदिक मन्त्र का जाप करें:- *"ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये, शंय्योरभिस्रवन्तु नः"*।

वृषः- राशि वालों की साढ-सत्ती 20 अप्रैल 1998 को आरम्भ हुई है तथा 5 सितम्वर 2004 को समाप्त होगी शनि का लग्न में होना शुभ माना जाता है परन्तु वृष राशि का शनि कोई चमत्कारिक ग्रह नहीं है यदि आप नौकरी करते हैं तो दफ्तर का माहौल आप के अनुकूल नहीं रहेगा अपने अफसर लोगों के साथ बनती बिगडती रहेगी जिस के कारण आप अपने आदर मान में कुछ कमी महसूस करोगे जो आप के लिये परेशानी का कारण बनेगा, यदि आप को अपंने भाईयों के साथ कुछ अनवन है तो इस मसले को आपस में वैठ मिल कर सुलझाने की कोशिश करनी चाहिये यदि आप गृहस्थी है तो किसी वृद्ध पुरुष के शरीर सम्बन्धित चिन्ता का योग यदि कहीं पर शादी की बातचीत चल रही है उस में विलम्ब का योग, शनि के कुप्रभाव को कम करने के लिये नित्य इस मन्त्र का जाप 111 बार करें:- *"ॐ शं शनैश्चराय नमः"*।

मिथुनः- मिथुन राशि वालों की साढ-सत्ती 7 जून 2000 से आरम्भ हुई है शनि देव का व्ययस्थान में होना कोई शुभ फल का संकेत नहीं है अपितु धन हानि, फजूल खर्च तथा अस्वस्थ शरीर का सूचक है शनि आप के शत्रुओं का नाश करके ही वैठेगा आप शत्रु पक्ष पर हर समय हावी रहेंगे जो कि आप के दरवार के लिये लाभदायक रहेगा, खर्च का योग होने पर भी आप की आमदनी सन्तोषजनक रहेगी, कारोबारी होने पर नुकसान का योग। शनि को शान्त करने के लिये नित्य प्रातः 'हनुमान चालीसा' का पाठ करें।

ढय्या

तुला   कुम्भ

तुलाः- राशि वालों की ढय्या 7 जून 2000 को आरम्भ हुई है आप नौकरी करते हैं या कारोबार शनि देव आप को विशेष रूप से दरबार तथा शरीर को प्रभावित करेगा यदि आप पहले से ही अस्वस्थ है तो आप शरीर की ओर ज्यादा ध्यान दे नहीं तो फिर पछताना होगा, नौकरी पेशा होने पर दफ्तर का माहोल ठीक होने पर भी चिन्ता का योग, शनि देव आप की आमदनी पर कोई प्रभाव डाल नहीं सकेगा शरीर को स्वस्थ रखने के लिये आप नित्य 'हनुमान चालीसा' का पाठ किया करें।

कुम्भः- राशि वालों की ढय्या भी 7 जून 2000 से आरम्भ हुई फलित ज्योतिष के अनुसार शनि देव जहां वैठता है उसके लिये लाभ प्रद होता है शनि आप के चौथे भाव में बैठा है आप को ज़मीन, जायदाद की ओर से लाभ मिलेगा यदि इस प्रकार का कोई मसला अटका हुआ है वह अवश्य हल हो जायेगा, यदि आप नौकरी करते हैं यह आप के दफ्तर के माहोल को प्रभावित कर सकता है। उपाय के रूप में नित्य प्रातः **"गायत्री चालीसा"** का पाठ किया करें।

दिल्ली वालों के लिए विशेष सूचना

यदि आप को विजयेश्वर पंचांग, ज्योतिष, धर्मशास्त्र, कर्मकाण्ड अथवा किसी प्रकार की कोई भी समस्या हो? तो दूरभाष : 5767456 से सम्पर्क करें क्योंकि सम्पादक 15 नवम्बर से 30 मार्च तक दिल्ली में ही होते हैं।

गीता प्रवचन

(अर्थ व्याख्या सहित काश्मीरी भाषा में)

प्रेम नाथ शास्त्री के जबान से

श्रद्धावान् - अनुसूयश्च, शृणुयात्-अपि-यो-नरः।
सोऽपि मुक्तः शुभान्-लोकान्-प्राप्नुयात्-पुण्यकर्मणाम्।।

अर्थ : दोष न ढूंढकर श्रद्धा के साथ जो कोई गीता सिर्फ सुनेगा वह भी पापों से मुक्त हो कर उन शुभ लोकों में पहुंचेगा जो पुण्यवान लोगों को मिलता है।

दैनिक लग्न सारिणी वैशाख मास (13 अप्रेल से 13 मई) तक के लिये -- भ.स्टै. समयानुसार																															
वैशा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	लग्न
अंग्रेजी	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	मई	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	
प्रातः	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	मे
तक	40	36	32	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	
दिन	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	वृ
तक	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	43	32	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	44	40	36	
दिन	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	मि
तक	49	45	41	37	33	29	25	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	23	19	15	11	7	3	59	55	51	
दिन	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	क
तक	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	27	23	19	15	
दिन	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	सिं
तक	34	30	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	
शां	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	क
तक	55	51	47	43	39	35	31	27	23	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	24	21	17	13	9	5	1	57	
रात	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	तु
तक	18	14	10	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	24	20	
रात	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	वृ
तक	39	35	31	27	23	19	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	24	20	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	
रात	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	ध
तक	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	44	
रात	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	म
तक	20	16	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	22	
रात	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	कुं
तक	46	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	52	48	
रात	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	मी
तक	5	1	57	53	49	45	41	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	32	39	35	31	27	23	19	15	11	7	

दैनिक लग्न सारिणी ज्येष्ठ मास (14 मई से 13 जून तक) के लिये -- भ.रैट, समयानुसार

ज्येष्ठ	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	
अंग्रेजी	14	15	16	17	19	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	जून	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	
प्रातः	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	वृ
तक	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	46	42	38	34	
दिन	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	मि
तक	47	43	39	35	31	27	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	
दिन	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	क
तक	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	29	25	21	17	13	
दिन	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	सिं
तक	32	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	
दिन	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	कं
तक	53	49	45	41	37	33	29	25	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	23	19	15	11	7	3	59	55	
शां	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	[illegible]	[illegible]	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	तु
तक	16	12	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	22	18	
रात	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	वृं
तक	37	33	26	25	21	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	22	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	
रात	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	धं
तक	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	46	42	
रात	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	म
तक	18	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	24	20	
रात	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2·	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	कुं
तक	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	54	50	46	
रात	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	मी
तक	3	59	55	51	47	43	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	
रात	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	.3	3	मे
तक	39	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	

दैनिक लग्न सारिणी आषाढ मास (14 जून से 15 जुलाई तक) के लिये -- भ.स्टै. समयानुसार

[illegible]	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	
अंग्रेजी	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	जुला.	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	
प्रातः	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	मि
तक	45	41	37	33	29	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	
दिन	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	क
तक	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	31	27	23	19	15	11	7	
दिन	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	सिं
तक	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	33	29	
दिन	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	कं
तक	51	47	43	39	35	31	27	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	
दिन	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	[illegible]	3	3	3	3	3	तु
तक	14	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	24	20	16	13	
शाम	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	वृं
तक	35	31	27	23	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	24	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	
रात	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	ध
तक	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	48	44	40	36	
रात	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	म
तक	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	22	19	15	
रात	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	कुं
तक	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	56	52	48	44	40	
रात	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	मी
तक	1	57	53	49	45	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	
रात	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	मे
तक	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	33	49	45	41	37	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	35	31	
रात	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	वृ
तक	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	48	44	40	36	32	28	24	

दैनिक लग्न सारिणी श्रावणमास (16 जुलाई से 15 अगस्त) तक के लिये -- भ.स्टै. समयानुसार

श्रावण	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	
अंग्रेजी	16	17	19	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	अगस्त	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	
प्रात:	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	क
तक	3	59	55	51	47	43	39	35	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	33	29	25	21	17	13	9	5	
दिन	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	सिं
तक	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	35	31	27	
दिन	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	कं
तक	45	41	37	33	29	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	
दिन	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	तु
तक	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	22	18	15	11	
दिन	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	वृं
तक	29	25	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	
शां	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	धं
तक	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	50	46	42	38	34	
रात	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	म
तक	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	24	21	17	13	
रात	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	कुं
तक	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	57	53	49	45	41	38	33	29	25	21	17	13	9	5	1	58	54	50	46	42	38	
रात	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	मी
तक	55	51	47	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	
रात	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	मे
तक	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	37	33	29	
रात	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	वृ
तक	20	16	12	8	4	0	56	52	54	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	50	46	42	38	34	30	26	22	
रात	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	मि
तक	35	31	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	

दैनिक लग्न सारिणी भाद्रमास के लिये (16 अगस्त से 15 सितम्बर) तक -- भ.स्टै, समयानुसार																																
भाद	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	
अंग्रेजी	16	17	19	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	सित	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	
प्रातः	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	सिं
तक	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	36	32	28	24	20	16	12	8	6	0	56	52	48	44	40	37	33	29	25	
दिन	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	क
तक	43	39	35	31	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	29	25	21	17	13	9	58	0	57	53	49	45	
दिन	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	तु
तक	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	24	20	17	13	9	
दिन	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	वृ
तक	27	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	
दिन	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	धं
तक	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	52	48	44	40	36	32	
शां	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	म
तक	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	23	19	15	11	
रात	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	77	7	7	7	6	6	6	6	6	6	कु
तक	34	30	26	22	18	14	10	6	2	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	0	56	52	48	44	40	38	
रात	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	मी
तक	53	49	46	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	
रात	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	मे
तक	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	38	35	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	39	35	31	27	
रात	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	वृ
तक	18	14	10	6	2	58	54	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	52	48	44	40	36	32	28	24	20	
रात	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	मि
तक	33	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	
रात	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	क
तक	57	53	49	45	41	37	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	

दैनिक लग्न सारिणी आश्विन मास (16 सितम्बर से 15 अक्तुबर तक) के लिये -- भ.स्टै, समयानुसार

आश्वि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	
अंग्रेजी	16	17	19	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	अक्तू	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	
प्रातः	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	कं
तक	41	37	33	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	
दिन	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	तु
तक	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	22	19	15	11	
दिन	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	वृं
तक	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	
दिन	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	धं
तक	28	24	20	16	12	8	4	0	56	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	54	50	46	42	38	34	
दिन	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	म
तक	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	25	21	17	13	
दिन	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	कुं
तक	32	28	24	20	16	12	8	4	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	2	58	53	49	45	41	37	
रात	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	मी
तक	51	49	45	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	
रात	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	मे
तक	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	41	37	33	29	
रात	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	वृ
तक	16	12	8	4	0	56	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	54	50	46	42	35	34	30	26	22	
रात	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	मि
तक	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	
रात	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	क
तक	55	51	46	43	39	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	
रात	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	सिं
तक	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	39	35	31	27	23	

दैनिक लग्न सारिणी कार्तिक मास (16 अक्टूबर से 14 नवंबर तक) के लिये -- भ.स्टै., समयानुसार

कार्तिक	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	
अंग्रेजी	16	17	19	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	नवं	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	
प्रातः	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	तु
तक	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	24	21	17	13	
दिन	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	वृं
तक	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	
दिन	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	धं
तक	30	26	22	18	14	10	6	2	58	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	1	59	56	52	48	44	40	36	
दिन	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	म
तक	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	27	23	19	15	
दिन	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	कुं
तक	34	30	26	22	18	14	10	6	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	4	0	56	52	48	44	40	
दिन	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	मी
तक	53	50	46	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	
शां	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	मे
तक	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	43	39	35	31	
रात	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	वृ
तक	18	14	10	6	2	58	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	56	52	48	44	40	36	32	28	24	
रात	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	मि
तक	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	
रात	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	क
तक	57	53	49	45	41	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	
रात	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	सिं
तक	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	41	37	33	29	25	
रात	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	कं
तक	39	35	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	33	29	22	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	

दैनिक लग्न सारिणी मार्ग मांस (15 नवम्बर से 14 दिसंबर तक) के लिये -- भ.स्टै, समयानुसार

मार्ग	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	
अंग्रेज़ी	15	16	17	19	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	दिसं	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	
प्रात:	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	वृं
तक	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	
दिन	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	धं
तक	32	28	24	20	16	12	8	4	0	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	58	54	50	46	42	38	
दिन	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	म
तक	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	29	25	21	17	
दिन	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	कु
तक	36	32	28	24	20	16	12	8	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	6	2	58	54	50	46	42	
दिन	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	मी
तक	55	52	48	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	
दिन	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	मे
तक	27	23	19	15	11	7	3	0	55	51	47	43	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	45	41	37	33	
शां	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	वृ
तक	20	16	12	8	4	0	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	58	54	50	46	42	38	34	30	26	
रात	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	मि
तक	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	
रात	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	क
तक	59	55	51	47	43	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	
रात	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	सिं
तक	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	43	39	35	31	27	
रात	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	कं
तक	41	37	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	
रात	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	तु
तक	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	23	19	15	11	

दैनिक लग्न सारिणी पौषमास (15 दिसम्बर से 12 जनवरी) तक के लिये -- भ.रैट, समयानुसार																														
पौष	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	
अंग्रेजी	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	जन.	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
प्रात:	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	धं
तक	34	30	26	22	18	14	10	6	2	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	0	56	52	48	44	
दिन	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	म
तक	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	31	27	23	
दिन	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	कुं
तक	38	34	30	26	22	18	14	10	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	8	4	0	56	52	48	
दिन	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	मी
तक	57	54	50	46	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	
दिन	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	मे
तक	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	42	38	34	30	25	22	18	14	10	6	2	58	54	50	47	43	39	
दिन	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	वृ
तक	22	18	14	10	6	2	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	0	56	52	48	44	40	36	32	
शां	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	मि
तक	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	
रात	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	क
तक	1	57	53	49	45	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	43	39	35	31	27	23	19	15	11	
रात	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	सिं
तक	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	45	41	37	33	
रात	2	2	2	2	2	2	2	2	2	22	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	कं
तक	43	39	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	
रात	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	तु
तक	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	25	21	17	
रात	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	वृं
तक	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	

दैनिक लग्न सारिणी माघमास (13 जनवरी से 11 फर्वरी) तक के लिये -- भा.स्टै.समयानुसार

माघ	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	
अंग्रेजी	13	14	15	16	17	19	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	फर्वरी	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	
प्रातः	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	म
तक	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	33	29	25	कुं
दिन	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	
तक	44	40	36	32	28	24	20	16	12	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	10	6	2	58	54	50	मी
दिन	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	
तक	3	59	56	52	48	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	मे
दिन	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	
तक	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	48	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	49	45	41	वृ
दिन	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	
तक	28	24	20	16	12	8	4	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	4	2	58	54	50	46	42	38	34	मि
दिन	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	.3	3	3	
तक	43	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	क
शां	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	
तक	7	3	59	55	51	47	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	45	41	37	33	29	25	21	17	13	सिं
रात	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	
तक	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	46	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	51	47	43	39	35	कं
रात	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	
तक	49	45	41	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	तु
रात	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	
तक	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	27	23	19	वृ
रात	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	
तक	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	ध
रात	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	
तक	36	32	28	24	20	16	12	8	4	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	2	58	54	50	46	42	

दैनिक लग्न सारिणी फाल्गुण मास (12 फर्वरी से 13 मार्च तक) के लिये -- भ.रैट, समयानुसार																															
फाल्गुण	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	
अंग्रेज़ी	12	13	14	15	16	17	19	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	मार्च	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	
प्रातः	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	कुं
तक	46	42	38	34	30	26	22	18	14	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	12	8	4	0	56	52	
दिन	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	मी
तक	5	1	58	54	50	46	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	
दिन	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	मे
तक	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	50	46	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	51	47	43	
दिन	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	वृ
तक	30	26	22	18	14	10	6	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	4	0	56	52	48	44	40	36	
दिन	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	मि
तक	45	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	
दिन	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	क
तक	9	5	1	57	53	49	46	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	47	43	39	35	31	27	23	19	15	
शां	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	सिं
तक	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	48	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	49	45	41	37	
रात	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	कं
तक	51	47	43	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	
रात	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	तु
तक	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	29	25	21	
रात	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	वृं
तक	36	32	8	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	
रात	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	धं
तक	38	34	30	26	22	18	14	10	6	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	4	0	56	52	48	44	
रात	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	10	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	म
तक	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	35	33	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	25	31	27	

दैनिक लग्न सारिणी चैत्र मास (14 मार्च से 12 अप्रेल तक) के लिये -- भ.स्टै. समयानुसार

चैत्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	
अंग्रेजी	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	अप्रैल	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
प्रातः	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	मी
तक	7	3	0	56	52	48	45	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	
दिन	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	मे
तक	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	52	48	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	53	49	45	
दिन	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	वृ
तक	32	28	24	20	16	12	8	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	6	2	58	54	50	46	42	38	
दिन	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	मि
तक	47	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	
दिन	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	क
तक	11	7	3	59	55	51	48	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	49	45	41	37	33	29	25	21	17	
दिन	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	सिं
तक	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	50	46	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	47	43	39	
सां	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	कं
तक	53	49	45	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	
रात	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	तु
तक	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	31	27	23	
रात	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	वृं
तक	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	
रात	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	धं
तक	40	36	32	28	24	20	16	12	8	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	6	2	58	54	50	46	
रात	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	म
तक	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	37	33	29	
रात	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	कु
तक	48	44	40	36	32	28	24	20	16	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	14	10	6	2	58	54	

हमारे प्रकाशन

(1) ***कर्म काण्डदीपक*** (हिन्दी तथा उर्दू में)

(जिस में धूप–दीप, विष्णु पूजन, प्रेप्युन, शिव पूजा, दिवचखीर पूजा, यक्षामावसी पूजा, जन्म दिन पूजा, बुनियाद मकान पूजा, गृह प्रवेश पूजा, दीपमाला पूजा, श्राद्ध संकल्प विधि, रुद्र–मंत्र, चमानु वाक्य, पत्र कथा तथा पत्र पूजा, शिवरात्रि पूजा, शिवमहिम्नस्तोत्र)

(2) ***पंचस्तवी*** (हिन्दी तथा उर्दू में) अर्थ तथा व्याख्या सहित।

(3) ***भवानी सहस्रनाम,*** महिम्नस्तोत्र, बहुरूप गर्भ, इन्द्राक्षी (उर्दू तथा हिन्दी में)।

(4) ***शिवरात्रि पूजा*** (हिन्दी तथा उर्दू में)

(5) ***सन्ध्या*** (हिन्दी तथा उर्दू में)

(6) ***सहस्तनामावली*** (पुष्पाचर्न) शिव, विष्णु, गणेश, सूर्य, भवानी शारिका, ज्वाला, महाराज्ञी।

(7) ***राम गीता*** (हिन्दी तथा उर्दू में)

(8) ***श्रीमत् भगवत् गीता*** (उर्दू में)

(9) ***अन्तिम संस्कार विधि***

(10) ***शारदा प्राईमर।***

विजयेश्वर कैसट्स

''प्रेम नाथ शास्त्री'' के ज़बान से

(1) गीता प्रवचन (11 कैसटों में), (2) लल्ल वाक्य (7 कैसटों में), (3) महिम्नापार (3 कैसटों में), (4) जगद्धमट्ट के विलाप, (5) कर्म भूमिकाय दिजि धर्मुक बल, (6) राम गीता, (7) अन्तिम संस्कार विधि, (8) शिव रात्रि पूजा, (9) भवानी सहस्रनाम, (10) नित्य नियम विधि, (11) पंचस्तवी, (12) भगवत् गीता (पाठ रूप में), (13) दूर्गा सप्तशती, (14) पोष पूजा तथा लग्न संस्कार। इसके अतिरिक्त दसवां, ग्यारहवां दिन, मेखला संस्कार इत्यादि अभी बन रहे हैं।

नोट :- असली कैसट् खरीदते समय कैसट् पर भगवान् कृष्ण का फोटो ट्रेड मार्क के रूप में अवश्य देखें।

पञ्चांग, पुस्तकें तथा कैसट् आप को मिलेगी

KASHMIRI PANDITS ASSOCIATION
Bawani Nagar, Marol Morshi Road, Andheri, East Mumbai. Phone :

KASHMIRI SAMITI
Kashmir Bhawan Marg, Amar Colony, Lajpat Nagar-IV, New Delhi, Phone : 6433399, 6465280

TANEJA ELECTRICALS & TENT HOUSE
4, Raghunath Mandir, Amar Colony, Lajpat Nagar, New Delhi Phone : 6429046

BRAHAM PUTRA COMPLEX
Shop No. 45, Sector-29, NOIDA Ph. : 8539338

SANJAY ELECTRONICS
Shop NO. 9, Kashmiri Market, I.N.A. New Delhi-23 Ph. : 4643029

D. P. B. PUBLICATIONS
110, Chowk Barshahbulla, Chawri Bazar, Delhi-6 Phone : 3273220

JAMMU :-

VIJAYASHWAR DHARMIK PUSTAK BHANDAR
Talab-Tilo, Jammu, Phone : 555763

J. K. BOOK SHOP
Talab-Tilo, Jammu, Phone : 554522

GUPTA STATIONERY STORE
City Chowk, Jammu

NAND LAL & SONS
Pacca Danga, Jammu

TRINITY STATIONERS
Pacca Danga, Jammu

UNIVERSAL NEWS AGENCIES
Mukherjee Bazar, Udhampur

ग्रहयोग एवम् दाम्पत्य जीवन

मेलापक-सम्बन्धी प्रत्येक समस्या का परिपूर्ण समाधान करने वाला अद्वितीय प्रकाशन

लेखक:प्रियव्रत शर्मा एम.ए., सिद्धांत ज्योतिषाचार्य, ज्योतिषरत्न (सम्पादक:-'श्रीमार्तण्ड पंचांग')

पुस्तक छः अध्यायों में विभाजित है- प्रथम अध्याय में अष्टकूट का विस्तृत विवेचन, द्वितीय में कुज (मंगली) दोष पर विस्तृत विमर्श, तृतीय में विवाहमूहूर्त्त साधन की सुबोध प्रक्रिया दी गई है । चतुर्थ अध्याय में अनेक मौलिक कोष्ठक दिए गए हैं, जिनसे १९७१ से २००० ई. तक पैदा हुए वर-कन्याओं का जन्मलग्न, जन्मनक्षत्र, जन्मनवांश और जन्मकुण्डली बिना पुराने पंचांगों की सहायता के १०-१५ मिनटोंमें बनाई जा सकती है। पंचम और छठे अध्याय में शोधपूर्ण मौलिक निबन्ध हैं,जो ज्योतिष के चौंका देने वाले रहस्य उद्घाटित करते हैं।

इस पुस्तक में दिए अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों में से इन कुछ विषयों पर दृष्टिपात कीजिए:-

(१) वर-कन्या के नक्षत्र-चरणों के आधार पर बनाई गई विस्तृत गुणमिलान-सारणी ३६ पृष्ठों पर फैली है, जिसमें अष्टकूटों के गुण और दोष तथा उनके परिहार एक ही दृष्टि में तुरन्त देखे जा सकते हैं।

(२) कुज दोष की मात्रा के सूक्ष्मतापूर्वक यथार्थ निर्णय के लिए सात 'कुजदोष कोष्ठक' दिए गए हैं, जिनकी सहायता से कोई भी दैवज्ञ मौखिक गणित द्वारा ही वर-कन्या के कुजदोष की मात्राओं के आंकिकमान (Numerical Values)२०-२५ मिनटोंमेंही ज्ञात कर उनकी तुलना द्वारा वह वर-कन्या के विवाहसम्बन्ध की शक्याशक्यता का निर्णय प्रामाणिक रूप में कर सकता है।

(३) 'नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्' आदि बीसों विवादास्पद वाक्यों का विश्लेषण विस्तारपूर्वक किया गया है। प्रतिपाद्य विषयों के खण्डन-मण्डन के समर्थन में 90 मूल ग्रन्थों में से सैंकड़ों प्रमाणवाक्य (श्लोक) पदे-पदे उद्धृत किए गए हैं।

पुस्तक का डाकव्यय सहित पूरा मूल्य 375 रुपये M.O. द्वारा नीचे लिखे पते पर भेजिए। वी.पी. नहीं की जाएगी।

मूल्य 350 रु.+ डाक व्यय 25 रु. *पृष्ठ संख्या 272* *साईज 24×18 सें.मी.* *बहुमूल्य पेपर पर मुद्रित*

श्रीमती वीना चतुर्वेदी,

59/6(अभिजित्), P.O. पंचकूला- 134109(हरियाणा)

ज्यो० आफ़ताब शर्मा

यत्-[illegible] सार्थम्-असत्कृतो [illegible]
विहारशय्या[illegible]भोजनेषु।
एको [illegible]-प्यच्युत तत्सम[illegible]
तत्-क्षामये-त्वाम्-अहम्-अप्रमेयम्।।

भावार्थः- हे गुरुदेव! विहार शय्या आसन भोजनादि में अकेले अथवा किसी के सामने यदि आप भूल से भी मेरे से अपमानित हुये होंगे, उस अपराध के लिये क्षमा मांगता हूँ।

ज्यो० प्रेम नाथ शास्त्री

विजयेश्वर पञ्चाङ्ग कार्यालय (रजि.)

ओंकार नाथ शास्त्री

अजीत कालोनी, (एक्स०)
गोलगुजराल जम्मू
स्वरदूत : 555607